SOCIAL WORK WITH INDIVIDUAL AND GROUP
VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY
पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

अध्यक्ष
प्रो. (डॉ.) एल. आर. गुर्जर
निदेशक, संकाय
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक एवं सदस्य

<table>
<thead>
<tr>
<th>सदस्य</th>
<th>संयोजक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>प्रो. (डॉ.) एन. सिंह</td>
<td>डॉ. डी. के. सिंह</td>
</tr>
<tr>
<td>आचार्य, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
<td>सह-आचार्य, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
</tr>
<tr>
<td>डॉ. राकेश डिवेवे</td>
<td>डॉ. ए. के. भरतिया</td>
</tr>
<tr>
<td>सहायक-आचार्य, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
<td>सहायक-आचार्य, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
</tr>
<tr>
<td>डॉ. रुपेश कुमार</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>सहायक-आचार्य, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

लेखन तथा संपादन

<table>
<thead>
<tr>
<th>लेखक</th>
<th>संपादक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>डॉ. डी. के. सिंह</td>
<td>डॉ. सरीता गौतम</td>
</tr>
<tr>
<td>सहायक-आचार्य, समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
<td>सहायक-आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ. प्र.)</td>
</tr>
<tr>
<td>व. म. खुला वि. डि. , कोटा</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

<table>
<thead>
<tr>
<th>अकादमिक</th>
<th>प्रशासनिक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>प्रो. (डॉ.) विनय कुमार पाठक</td>
<td>प्रो. (डॉ.) एल. आर. गुर्जर</td>
</tr>
<tr>
<td>कुलपति, निदेशक, संकाय</td>
<td>कर्ण सिंह</td>
</tr>
<tr>
<td>व. म. खुला वि. डि. , कोटा</td>
<td>निदेशक, पाठ्यसमाधी उपायन एवं वितरण विभाग</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>व. म. खुला वि. डि. , कोटा</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>(डॉ.) अनिल कुमार जैन</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>अतिरिक्त निदेशक</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>पाठ्यसमाधी उपायन एवं वितरण विभाग</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>व. म. खुला वि. डि. , कोटा</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उपलब्ध- सितम्बर 2014 ISBN :

समीपस्थ सूचित: इस पाठ्य समाधी के किसी भी अंश को व. म. खुला वि. डि. , कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में फिरियोग्राफी (वक्रमुण) के द्वारा या अन्य उद्देश्यों प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। [कुलपति : व. म. खुला वि. डि. , कोटा, द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिए मुद्रित एवं प्रकाशित]
<table>
<thead>
<tr>
<th>इकाई</th>
<th>इकाई का नाम</th>
<th>पृष्ठ संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>इकाई 1</td>
<td>वैश्विक समाज कार्य - अवधारणा एवं आवश्यकता</td>
<td>1-8</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 2</td>
<td>वैश्विक समाज कार्य अर्थ एवं परिभाषा</td>
<td>9-15</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 3</td>
<td>वैश्विक समाज कार्य के उद्देश्य</td>
<td>16-26</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 4</td>
<td>वैश्विक समाज कार्य के अहम</td>
<td>27-32</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 5</td>
<td>व्यवस्था व अनुकूलन</td>
<td>33-40</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 6</td>
<td>वैश्विक समाज कार्य के सिद्धांत</td>
<td>41-48</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 7</td>
<td>वैश्विकीकरण का सिद्धांत</td>
<td>49-54</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 8</td>
<td>स्वरूपता का सिद्धांत, भवनाओं के प्रकटन का सिद्धांत</td>
<td>55-63</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>तथा अर्थविश्लेषण मनोकृतां का सिद्धांत</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 9</td>
<td>गोपनीयता का सिद्धांत एवं नियन्त्रित संबंधित कराण विशेषता का सिद्धांत</td>
<td>64-69</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 10</td>
<td>आत्म सिद्धांत का सिद्धांत</td>
<td>70-74</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 11</td>
<td>समूह के समाज कार्य</td>
<td>75-81</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 12</td>
<td>समूह की विशेषताएं</td>
<td>82-90</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 13</td>
<td>समूहीकरण समाज कार्य - अवधारणा एवं आवश्यकता</td>
<td>91-97</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 14</td>
<td>समूहीकरण कार्य - अर्थ एवं परिभाषा</td>
<td>98-105</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 15</td>
<td>समूहीकरण कार्य - उद्देश्य एवं विशेषताएं</td>
<td>106-117</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 16</td>
<td>समूहीकरण समाज कार्य में कार्यरत्न</td>
<td>118-128</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 17</td>
<td>समूहीकरण समाज कार्य में नियोजन एवं विकास</td>
<td>129-137</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 18</td>
<td>समूहीकरण समाज कार्य में नेतृत्व - अर्थ एवं प्रकार</td>
<td>138-144</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 19</td>
<td>समूहीकरण समाज कार्य में व्यवसायिक नेतृत्व</td>
<td>145-150</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 20</td>
<td>समूहीकरण समूह समाज कार्य में कार्यरत्न की मूल्यिका</td>
<td>151-158</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 21</td>
<td>परामर्श - अर्थ एवं परिभाषा</td>
<td>159-166</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 22</td>
<td>परामर्श के सिद्धांत</td>
<td>167-174</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 23</td>
<td>परामर्श के प्रकार</td>
<td>175-188</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 24</td>
<td>परामर्श के लक्ष्य</td>
<td>189-196</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई 25</td>
<td>समूह समाज कार्य में परामर्श</td>
<td>197-206</td>
</tr>
</tbody>
</table>
वैयक्तिक समाज कार्यः अवधारणा एवं आवश्यकता

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 वैयक्तिक समाज कार्य की अवधारणा
1.3 वैयक्तिक समाज कार्य का विकास
1.4 भारत में वैयक्तिक समाज कार्य का विकास
1.5 वैयक्तिक समाज कार्य एक प्रणाली के रूप में
1.6 वैयक्तिक समाज कार्य की आवश्यकता
1.7 सारांश
1.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
1.9 सम्बंध प्रयोग

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप--
1. सर्वप्रथम वैयक्तिक समाज कार्य की अवधारणा को समझ सकेंगे।
2. वैयक्तिक समाज कार्य के विकास के बारे में जान सकेंगे। जिसके अन्तर्गत भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व तथा पश्चात् विभिन्न कालों को जान सकेंगे।
3. वैयक्तिक समाज कार्य की प्रणाली को समझ सकेंगे।
4. वैयक्तिक समाज कार्य की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वैयक्तिक समाज कार्य की अवधारणा पर विचार किया गया है। समाज कार्य एक ऐसी कला है जिसमें विभिन्न साधनों का प्रयोग वैयक्तिक, सामूहिक एवं समाजवादिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। इसके लिए एक ऐसी वैज्ञानिक प्रणाली का प्रयोग किया जाता है जिसमें लोगों की ऐसी सहायता की जाती है कि वह स्वयं अपनी सहायता कर सकें। इसमें सेवार्थी की स्थायी रूप से सहायता की जाती है। जिससे वह इस
यथायोग हो सके कि वह स्वयं आगे चलकर अपनी समस्याओं का समाधान निर्देशित मार्गों को अपनाकर करने में समर्थ हो सके।

1.2 वैयक्तिक समाज कार्य की अवधारणा

‘वैयक्तिक समाज कार्य, समाज कार्य की एक प्रणाली है जिसके द्वारा एक समस्या प्राप्त व्यक्ति की सहायता निदेशित तरीकों द्वारा की जाती है। इसका मूल उद्देश्य व्यक्तियों की समस्याओं को सुलझाकर इस योग्य बनाना है कि जिससे वह भविष्य में स्वायत्त बनकर अपने पर्यावरण के साथ उचित समाहयन स्थापित कर सके। विकास की प्रारंभिक अवधारणा में वैयक्तिक समाज कार्य मुख्य रूप से आर्थिक समस्याओं पर केंद्रित था। परन्तु कालक्रम के साथ इसके उद्देश्य में परिवर्तन तथा विस्तार आया और इसका उद्देश्य व्यक्ति की आत्मनिर्भर समस्याओं तथा व्यक्तिगत कठिनाईयों के उपचार पर केंद्रित हो गया।

सभी प्राचीन धर्मों ने सहायता करने के कार्यों को ‘प्रतापासना’ दिया गया है। हिन्दू धर्म अर्थात् अस्वीकारी, वैष्णोवन, तथा मिश्र की धार्मिक संस्कारों में, यूनान तथा रोम की प्रथाओं में विशेषकर यहूदी तथा ईसाई धार्मिक उपदेशों में इस उद्देश्य के भावना के लक्षण प्रकट होते हैं। सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य का भी उद्देश्य समाज कार्य के समान ही धार्मिक भावना से प्रेरित होकर हुआ।

मनुष्य एक मनोसामाजिक प्रणाली है। सामाजिक जीवन का इतिहास ही मानव का इतिहास है। परन्तु जहाँ पर सामाजिक जीवन ने मनुष्य को विशेष अर्थात् प्रदान कर सामाजिक गुणों को विकसित किया है वहाँ पर पारिवारिक एवं व्यक्तिगत दोनों ही प्रकार की समस्याओं का विकास हुआ है। इसी कारण समाज को अनेक सुक्ष्मता कदम उठाने पड़े हैं। समाज कार्य भी इसी प्रकार एक सुक्ष्मता कदम है जिसके द्वारा लोगों की सामाजिक तथा भावनात्मक अनुकूलन समस्याओं के समाधान में सहायता प्रदान किया जाता है। वैयक्तिक समाज कार्य चूंकि समाज कार्य की एक प्रणाली है इसलिए उसे समझने से पहले समाज कार्य का अर्थ स्पष्ट कर देना उचित प्रेरित होता है।

विद्वानों ने समाज कार्य की अनेकों रूपों का उल्लेख किया है जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं:-

1) फ्राइडलेंड (1955), “समाज कार्य का एक व्यक्तिवादी सेवा है जो वैज्ञानिक ज्ञान एवं मानव सम्बन्धों की निपुणता पर आधारित है। यह व्यक्तियों की अंकलें या समूह में सहायता करता है जिससे कि वे सामाजिक वैयक्तिक संतुष्टि एवं स्वतंत्रता प्राप्त कर सकें।”

2) एडिथ कन्फ्रेन्स ओवरसोरल (1975) के अनुसार, “समाज कार्य का एक कल्याणकारी क्रिया है जिसका आधार मानवों के लिए वैज्ञानिक ज्ञान एवं प्राथमिक निपुणता पर आधारित है। वैज्ञानिक ज्ञान एवं प्राथमिक निपुणता की उद्देश्य किया जाता है और जिसकी उद्देश्य व्यक्तियों, समूहों या समुदायों की सहायता करना है जिससे वे सुलभ और समृद्ध जीवन व्यतीत कर सकें।”

3) स्टूप (1960) के अनुसार, “समाज कार्य का एक ऐसी क्रिया है जिसमें विभिन्न साधनों का प्रयोग वैयक्तिक, सामुहिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है और जिसके लिए एक ऐसी वैज्ञानिक युगली का प्रयोग किया जाता है जिसमें लोगों की ऐसी सहायता की जाती है ताकि वे स्वयं अपनी सहायता कर सकें।”

समाज कार्य की उद्देश्य परिपाताओं से स्पष्ट होता है कि समाज कार्य एक सहायता का कार्य है जिसका उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं को सुलझाना है इसमें सेवाओं की स्थायी रूप से सहायता की जाती है। जिससे वह इस योग्य हो सके कि वह स्वयं आगे चलकर अपनी समस्याओं का समाधान निदेशित मार्गों को अपनाकर करने में समर्थ हो
1.3 वैयक्तिक समाज कार्य

समस्याग्रस्त व्यक्ति को वैयक्तिक स्तर पर सेवायें प्रदान करने का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानव सभ्यता का। सभी प्राचीन धर्मों में समस्याग्रस्त व्यक्तियों को सहायता प्रदान करने के कार्य को प्रोत्साहन दिया जाता था। चाहे इन्दू दर्शन हो, या पाश्चात्य दर्शन, चाहे वेबुलोनिया तथा मिश्र की धार्मिक सहितायें हो, चाहे यूनान तथा रोम की धार्मिक प्रथायें हो, इन सबमें समस्याग्रस्त व्यक्तियों की सहायता को एक प्रमुख स्थान प्रदान किया गया था।

वैयक्तिक समाज कार्य की प्रारंभिक अवस्था में वैयक्तिक स्तर पर सहायता प्रमुख रूप से अर्थिक समस्याओं से प्रस्त व्यक्तियों को प्रदान की जाती थी। क्योंकि पारंपरिक में भागिन के साथ-साथ वैयक्तिक समाज कार्य सहायता का सम्बन्ध व्यक्ति की आन्तरिक तथा बाह्य समस्या से समन्वित कठिनाइयों से हुआ। 1601 में एलिजाबेथ पूर्व लोगों से समञ्चित नियोजक निर्धारणों को सहायता प्रदान करने के लिए प्राधिकृत थे उनकी परिस्थितियों की जाँच करते थे और इसके आधार पर यह निर्णय लेते थे कि सहायता प्रदान की जायेगी या नहीं, और यदि सहायता दी जाए तो उसका स्वरूप क्या हो? दांवा चाँद ने अपने अनुभवों के आधार पर दात की इस पहली की कटू अनलॉक हार्स्क के त्योहार निर्धारणों का चारित्रिक पतन करती थी और उनकी स्वातन्त्रता की इत्यादि को निर्भर बनाती थी। चांद ने सहायता वैयक्तिक आधार पर जाँच किये जाने पर बत दिया। उनका यह विचार था कि व्यक्ति में पाई जानें वाली अज्ञानता एवं दूरसर्जना की कमी निर्धारणों को उपयोग करती है। उन्होंने वैयक्तिक निर्धारण के ही निर्धारण का प्रमुख कारण माना है। उन्हीं का धारणा था कि निराकारों को सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया में वैयक्तिक रूप से प्रभावित दिखा जाना आवश्यक है।

चांद के इन आग्रही विचारों के कार्य प्रयोग तथा लानें चांदी आर्गाइज़ेशन सोसाइटी ने सहायता का एक कार्यक्रम बनाया जो प्रमुख रूप से चांद के विचारों पर आधारित था। इस आंदोलन की आधारभूत चिंताकण्ठ यह थी कि सार्वजनिक निर्धारण सहायता अपने उद्देश्यों की प्रारंभ में असफल रही और सहायताधरी का इस प्रकार पुनरूर्जन होना चाहिए कि वह अभाव और अपने परिवार का उचित रूप से भरण-प्रेषण कर सके। इस उद्देश्य के पूर्व हेतु चांदी आर्गाइज़ेशन सोसाइटी के आयोजन में इस बात की ध्यान की गई कि निर्धारणों के खरे ज्ञान उनका निरोधक निर्धारण किया जायें, उन्हें परामर्श प्रदान किया जायें, अनुभवित कार्यों को करने से रोका जायें और उन्हें आधिक सहायता प्रदान की जायें। परिणामतः निर्धारणों के पुनरुर्जन के बाद उनकी परिस्थितियों की स्वागतिक निर्धारण में जाँच करना तथा उनकी समस्या के समन्वय में स्वयं तथा उनके समर्थन लोगों से बिचार किया जा सकता। आवश्यक माना जाने लगा। निर्धारणों तथा अभावप्रयोग व्यक्तियों को सहायता प्रदान किये जाने के इतिहास में यह एक ऐसा ऐतिहासिक मोड़ है जहाँ से वैयक्तिक समाज कार्य का होता है।

वैयक्तिक समाज कार्य शायद का पहली बार उल्लेख एडवर्ड टी डेविसन के लेख में हुआ जो उन्होंने चांदी आर्गाइज़ेशन सोसाइटी के सेक्रेटरी होने के बाद 1897 में प्रकाशित किया। 1909 में मर्स के सम्मानित जो ग्रीनविच हाउस, न्यूयॉर्क में थे, ने सुझाव दिया कि पुनरुर्जन की आवश्यकता रखने वाले परिवारों के साथ वैयक्तिक समाज कार्य अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। 1895 से लेकर 1920 के बीच मर्स रिचम्यंड के अनेक लेख प्रकाशित हुए। 1917 में पहली बार मर्स रिचम्यंड ने अपनी पुस्तक दार्शनिक प्रान्त में वैयक्तिक समाज कार्य के समन्वय में एक सुन्मिश्रित मत प्रस्तुत किया जिसमें वैयक्तिक समाज कार्य को एक वैज्ञानिक आधार प्राप्त हुआ।
1.4 भारत में वैयक्तिक समाज कार्य का विकास

भारत में दीन-दुखियों, असहायों तथा पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करने की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। मनोजितित्व समबन्धी कार्य भी प्राचीन समय से ही होते चलते आये हैं। कृपण का अर्थुता को उपदेश देना, बशिष्ठ का राम की कर्तव्य बोध कराना, चुंबु का अंगुलित्वाचार के व्यवहार को परिवर्तित करना आदि इसके उदाहरण हैं। भारतीय संस्कृति तथा धर्म का मुख्य उद्देश्य उन व्यक्तियों की सहायता करना है जो उत्तरीतित हैं तथा दयनीय जीवन व्यतीत करते हैं। प्राचीन काल में लेख आज तक भी मिथियार को दान देना, निर्धारित तथा असहायों की सहायता करना, धर्मशालायें बनाना, रोगियों की सहायता करना आदि पुरातन कार्य सबसे जाते रहे हैं। इतिहास से यह बात का साक्षी है कि ऐसी सहायता मूलक कार्य करने के लिए व्यक्तियों में होड़ लगती थी। भारत में विभिन्न कालों में समाज में असहाय लोगों की सहायता का विभिन्न स्वरूप मिलता है जो निम्नलिखित है -

बौद्ध काल

बौद्ध काल में समाज की भलाई के लिए अनेक प्रकार के उपदेश देने का प्रवृत्तिक्रम किया गया था। बौद्धसम्प्रदाय में इस बात का उल्लेख मिलता है कि दानी व्यक्तियों के कोन-कोन से कार्य थे। बौद्धसम्प्रदाय के अनुसार सहायताकर्ताओं को पहले अपने संग समविधियों तथा मित्रों की सहायता, उसके पश्चात् असहाय, रोगी, संकटप्रसार तथा दीर्घर व्यक्तियों की सहायता करनी चाहिए।

मौर्य काल

मौर्य काल में सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य का क्षेत्र अधिक व्यापक हो गया था। बच्चों, बुढ़ों तथा रोगप्रभुत्व व्यक्तियों की देखभाल का कार्य अत्यधिक धारित कमाया जाता था। गांव के बुढ़बुढ़ तथा मुंडिया अनाथ बच्चों की देखभाल का कार्य करता था। निर्धारित बच्चों के लिए नि:शुल्क शिक्षा तथा भोजन का प्रबंध अध्यापक करता था।

इस्लाम काल

13वीं शताब्दी से भारतीय लोक जीवन में इस्लाम का आविर्भाव हुआ। इस्लाम धर्म में प्रारंभ से ही भिक्षा देने की प्रथा रही है। यह दान उन व्यक्तियों को दिये जाने की व्यवस्था है जो हजरत पर जाने का व्यय न बराबर कर सके, जिनके पास भोजन न हो, भिक्षारी हों तथा जिन्हें अपना सम्पूर्ण जीवन ईंधन हेतु अर्थित कर दिया हो। इस कारण से प्राप्त धन का उपयोग समाज कल्याण के कार्य में ही किया जाता था। कुतुबुद्दीन, इल्तुमिश, नासिरुद्दीन आदि सुल्तानों ने इस व्यक्ति में अनेक कार्य किये। फिरोज ने ऐसे व्यक्तियों की सहायता करने के लिए जिनके पास पुत्रियों का विवाह करने के लिए पत्नी धन नहीं था एक दीवान-ई-ख़रात संस्था का निर्माण किया था। मुस्लिम काल में ऐसे अनेक ख़ुलने को चले दीजानी थीं जहाँ पर सर्व सर्व धन पर अनाज मिलता था। उस समय ऐसे विभाग का संगठन भी था जो आवश्यकता वालों व्यक्तियों की सूची रखता था। निरीक्षकों की नियुक्ति भोजनवाहिक आदि रोजगार के लिए की जाती थी। सुल्तान गायसुद्दीन तुलसी ने व्यक्तियों को रोजगार देने तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने का नृत्य कार्य करना था। उसका नियम था कि अपराधों का कारण आवश्यकताओं की संस्कृति का न होना था।
अंग्रेजी शासन काल

अंग्रेजी शासन काल में अनेक समस्याएँ आंदोलनों का सृष्टि जारी रहा। राजाराम, मोहन राय, ने बाल विद्यालय तथा सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया। उनके प्रयासों के फलस्वरूप सन् 1829 में, प्रतिबंध अधिनियम पारित किया गया जिस अधिनियम का अवधि पूरी कर दिया। सन् 1856 में, हिन्दू-विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ। गांधी जी के प्रयासों के फलस्वरूप अनेक समस्याओं के समाधान का साधन हो गया।

भारत में सन् 1936 के सेवन वैचारिक समाधान कार्य के एक ऐतिहासिक कार्य समझा जाता था। सन् 1936 के सेवन वैचारिक समाधान कार्य के लेखक रामनाथ कृष्णान ने इस कार्य के इतिहास को लेकर लिखा है।

वैचारिक समाधान कार्य का विचार वेतन में उपयोग होना प्रारंभ हुआ। जब भारतीय वैचारिक अमेरिका जैसे देशों ने इसका प्रयोग किया। दूसरी जाति के नेताओं ने इसका प्रयोग किया। इसका प्रयोग किया। पहली बार सन् 1947 के निर्देशन के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक संरचना स्थापित हुई।

इस संरचना के कार्य में समाज के अनेक चिकित्सालयों में चिकित्सा विभाग स्थापित हुए। सन् 1952 के तत्कालीन चिकित्सा रुपन्न के विभाग के विकास के लिए एक ऐतिहासिक समाधान कार्य का महत्वपूर्ण कार्य रहा।

वैचारिक समाधान कार्य का फलस्वरूप सन् 1946 के द्वारा स्पेनिश और अमेरिका के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक सामाजिक चिकित्सा कार्य का प्रभाव जारी रहा। इसके प्रभाव इस्लाम समस्याओं का समाधान के लिए विचारपत्र किया। इसके प्रभाव इस्लाम समस्याओं का समाधान के लिए विचारपत्र किया।

सन् 1946 के द्वारा स्पेनिश और अमेरिका के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक सामाजिक चिकित्सा कार्य का प्रभाव जारी रहा। इसके प्रभाव इस्लाम समस्याओं का समाधान के लिए विचारपत्र किया। इसके प्रभाव इस्लाम समस्याओं का समाधान के लिए विचारपत्र किया।
यद्यपि यह सत्य है कि वैज्ञानिक समाज कार्य का क्षेत्र व्यापक हो रहा है लेकिन कार्यकलाप अपनी भूमिकाओं को पूरा करने में अनेक बाधाएं अनुभव कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षित कार्यकर्ता ओं के चयन में कोई विशेष चरीवता नहीं मिलती है। अतः है समय परीक्षण के साथ-साथ इस तुलिपों में परिवर्तन आयेगा तथा वैज्ञानिक समाज कार्य का सामान्य विकास सम्भव हो सकेगा।

1.5 वैज्ञानिक समाज कार्य के प्राणाञ्जलि के रूप में

सामाजिक अन्तर्जातिक है कि सामाजिक वैज्ञानिक समाज कार्य, सामाजिक समाज कार्य तथा सामाजिक संगठन व्यक्तियों के साथ प्रत्यूत्पन्न समर्पण स्थापित कर सहायता प्रदान करता है। शेष तीन सामाजिक अनुसन्धान, सामाजिक अनुसंधान तथा सामाजिक किस्म की सामाजिक प्रियता के विश्लेषण प्रयोग में सहायता प्रदान करती है। वैज्ञानिक समाज कार्य द्वारा एक समय में केवल एक व्यक्ति की सहायता की जाती है तथा वही सेवा कार्य का केन्द्र बिना होता है। इस विधि से व्यक्ति की आत्मनिर्भरता एवं बाहुल्यता का ज्ञान होता है। कार्यकर्ता के सेवाधीन के इस प्रकार से सहायता करता है जिससे वह अपनी क्षमताओं में आवश्यकतात्मक विकास कर बाहुल्य रूप से सामाजिक स्थापित कर सके। अतः वैज्ञानिक समाज कार्य एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तियों (आत्मनिर्भरता सम्बन्ध) और सामाजिक परिस्थितियों (बाहुल्य सम्बन्ध) में सामाजिक स्थापित करने का प्रयास करती है।

वैज्ञानिक समाज कार्यकर्ताओं यद्यपि एक व्यक्ति (सेवाधीन) के साथ कार्य करता है, परंतु उसका कार्य उसी तक सीमित नहीं रहता है। सेवाधीन पर बाहुल्य कार्य प्रत्येक क्षण अपना प्रभाव दालते रहते हैं ऐसे रूप से समाज कार्यकर्ता के सम्बन्ध में भी कार्य करता है।

सामाजिक अन्तर्जाति के अनुसार स्वाभाविक रूप से प्रकार शाखाओं संगठनात्मक तथा विचित्रतात्मक रूप होती है। इनका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। जब तक संगठनात्मक शाखाओं का प्रभुत्व उस पर रहता है, तब तक सामाजिक रूप से कार्य करता रहता है। परंतु ऐसी भी स्थिति आती है जब संगठनात्मक शाखाओं कमजोर हो जाती है और वे व्यक्ति को सामाजिक सीमाओं में स्थायी उत्पन्न कर देती हैं। ऐसी दशा में व्यक्ति को बाहुल्य सहायता की आवश्यकता होती है। सामाजिक वैज्ञानिक सेवा कार्य व्यक्ति की सहायता वैज्ञानिक एवं अन्तर्जाति समस्याओं को हल करने में कार्य करते हैं। अन्तर्जाति से निर्भर प्राणी है उसमें सामाजिक एवं विद्वान का संयोग वैज्ञानिक सहायता द्वारा ही किया जा सकता है। वह तथा अपनी थीची हुई क्षमताओं एवं शक्तियों को सामाजिक कार्य में लागू सकता है जब उनका सामाजिक रूप से विकास सम्भव हो। यह तथा समाज से सहायता करता है जब व्यक्ति को आवश्यकतात्मक सहायता मिलती रहती है। इस प्रकार व्यक्ति को जन्म से लेकर प्रौद्योगिकी तक वैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रौद्योगिकी से उसे समस्याओं का समाधान करना पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से जब हम वैज्ञानिक समाज कार्य की आवश्यकता की ओर दृश्य समानार्थक रूप से, तो समय प्रतीत होता है कि इंड(1d), अर्हंग(Ego) तथा सुपरअर्हं (Super ego) में संतुलित बनाये रखने के लिए कभी-कभी मनोवैज्ञानिक आत्मन्त्रण की आवश्यकता होती है। जब इन शक्तियों में सामाजिक नहीं रहता है और अर्हंग रहने के लिए स्थिति में व्यक्ति सामाजिक कार्य नहीं कर पाता है, तब वे मनोवैज्ञानिक आत्मन्त्रण करते रहते हैं।

1.6 वैज्ञानिक समाज कार्य की आवश्यकता

सामाजिक अन्तर्जाति के अनुसार व्यक्ति की सहायता संगठनात्मक तथा विचित्रतात्मक प्रकट होती हैं। इनका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। जब तक संगठनात्मक शक्तियों का प्रभुत्व उस पर रहता है तब तक
सामान्य रूप से कार्य करता रहता है। परन्तु ऐसी भी स्थिति आती है जब संगठनात्मक शक्तियों कमजोर हो जाती हैं और वे व्यक्ति को समाज की जीवननियम में स्थापित उपाय कर देती हैं। ऐसी दशा में व्यक्ति को बाहर सहायता की आवश्यकता होती है। वैविकिक समाज कार्य व्यक्ति की सहायता वैविकिक एवं अन्तर्विकिक समस्याओं को सुलझाने में करता है।

व्यक्ति जन्म से निर्भर प्राणित है उसमें आसा एवं विभाजन का संचार वैविकिक सहायता द्वारा ही किया जा सकता है। वह तभी अपनी विशेषता की उपलब्धताओं एवं शक्तियों को रचनात्मक कार्य में लागू करता है जब उनका सामान्य विकास सम्भव हो। वह तभी सम्भव हो सकता है जब व्यक्ति को आवश्यकता यूक्सार सहायता मिलती रहे। इस प्रकार व्यक्ति को जन्म से सेकर प्रौढ़त्व के तत्कालीन वैविकिक सहायता की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक स्तर पर उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से जब हम वैविकिक सेवा कार्य की आवश्यकता की ओर दृष्टिकोण रखते हैं तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन्हें, अन्त: तथा परांत संतुलन बनाने के लिए कभी-कभी मनोवैज्ञानिक आलम्बन की आवश्यकता होती है। जब इन शक्तियों में सामन्यता नहीं होती है और अनह कमजोर हो जाता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति सामान्य कार्य नहीं कर पाता है उसे मनोवैज्ञानिक सहायता देनी आवश्यक हो जाती है।

1.7 सारांश
प्रस्तुत इकाई में सार्वजनिक वैविकिक समाज कार्य के अर्थ एवं परिभाषा का अध्ययन किया। तत्पश्चात वैविकिक समाज कार्य के विकास का अध्ययन किया तथा भारत में वैविकिक समाज कार्य के विकास के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। इकाई के अंत में वैविकिक समाज कार्य की प्रणाली का अध्ययन किया तथा इसकी आवश्यकता को समझा।

1.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. वैविकिक समाज कार्य क्या है? समाजात्मक?
2. वैविकिक समाज कार्य की आवश्यकता को समझाइये।
3. वैविकिक समाज कार्य को समाज कार्य की एक प्रणाली के रूप में समझाइये।

1.6 सन्दर्भ ग्रन्थ
सिंह, डी. के., भारती, एंटी, सोशल वर्क काउंसेल एंटी मैथिस, न्यू यॉर्क बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालीवाल, सीरियं, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संस्थान एवं विवाह के मूल तत्त्व, न्यू यॉर्क बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी. डी.के., मानविक और सामुदायिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1997.
सिंह, सूरेन्द्र, मिश्र, पी. डी.के., समाज कार्य – इतिहास, वर्ष एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्र, पी. डी.के., मानविक और सामुदायिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1996.
सिंह, डी. के., भारत में समाज विभाजन प्रशासन: अभावार्थ एवं विवेक क्षेत्र, रायल बुक दिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सूरेन्द्र, बर्मा, आर. बी. के., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी॰ दी॰, मिश्रा, बी॰, व्यक्ति और समाज, न्यूरायरल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
वैयक्तिक समाज कार्य : अर्थ एवं परिभाषा

2.0  उद्देश्य
2.1  प्रस्तावना
2.2.  वैयक्तिक समाज कार्य का अर्थ
2.3  वैयक्तिक समाज कार्य की परिभाषा
2.4  सारांश
2.5  अभ्यासार्थ प्रश्न
2.6  सन्दर्भ प्रम्य

2.0  उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात्

1.  वैयक्तिक समाज के अर्थ का वर्णन कर सकेंगे।
2.  वैयक्तिक समाज कार्य की परिभाषाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
3.  परिसर के वार्गीकरण का अध्ययन करेंगे जिसमें उन्होंने वैयक्तिक समाज कार्य को व्यक्ति समस्या, स्थान तथा प्रक्रियाओं चार प्रमुख अंगों में विभाजित किया है।
4.  इसाई, स्थीतिक बीमारी, मेरी रिचमन्ड तथा टेप्ट जैसे अनेक विद्याओं के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।

2.1  प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में वैयक्तिक समाज कार्य विषय पर चर्चा की गई है। वैयक्तिक समाज कार्य विभिन्न व्यक्तियों के साथ सहयोग करते हुए उनकी अपनी तथा समाज की एक साथ भलाई प्राप्त करने हेतु उनके साथ विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने की एक कला है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक समस्याओं को समझने तथा एक अधिक अच्छे सामाजिक एवं वैयक्तिक समायोजन को लाने में उनकी सहायता करने के प्रयास से कुसमायोजित व्यक्ति का सामाजिक उच्चार है। इसके अतिरिक्त वे प्रतिक्रियाएं जो व्यक्तियों को सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा निश्चित नीतियों के अनुसार और वैयक्तिक आवश्यकताओं को सामने रखकर सेवा प्रदान करते, आर्थिक सहायता देने या वैयक्तिक परामर्श देने में सम्बद्ध है।
2.2 वैयक्तिक समाज कार्य का अर्थ

वैयक्तिक समाज कार्य, समाज कार्य की एक प्रारंभिक इकाई है। वैयक्तिक सामाजिक कार्यकर्ता यद्यपि एक व्यक्ति (सेवाधीन) के साथ कार्य करता है परंतु उसका कार्य उसी तक सीमित नहीं रहता है। सेवाधीन पर बाहर कार्य प्रारंभ करने, प्रायः प्रारंभ बाल के संबंध में भी कार्य करता है। समाजस्वरूप व्यक्ति को वैयक्तिक स्तर पर सेवाएँ प्रदान करने का इंतजार उतना ही प्रारंभिक है जितना मानव समस्या का। सभी मानव धर्मों में समस्याग्रस्त व्यक्तियों को सहायता प्रदान करने के कार्य को प्रारंभिक नाम दी जाता था। चाहे हिन्दू दर्शन हो, या पाश्चात्य दर्शन, चाहे बेंगली चीनी तथा मिस्र की धार्मिक सहितायें हो, चाहे यूनान तथा रोम की धार्मिक प्राचीन हो, इन सभी में समस्याग्रस्त व्यक्तियों की सहायता का एक प्रमुख स्थान प्रदान किया गया था। वैयक्तिक समाज कार्य की प्रारंभिक अवस्था में वैयक्तिक स्तर पर सहायता प्रमुख रूप से आधिक समस्याओं के शिकार व्यक्तियों की प्रदान की जाती थी किन्तु कालान्तर में परिवर्तन के साथ-साथ वैयक्तिक समाज का सम्बन्ध व्यक्ति की आन्तरिक तथा बाहर समाज से सम्बन्धित समस्याओं से हुआ। 1601 में इटली में दक्षिण ला से सम्बन्धित निरीक्षक संस्थाओं को सहायता प्रदान करने के लिए प्रारंभिक पद देते थे, उनकी परिस्थितियों की जाँच करते थे और इसके आधार पर वे निर्णय लेते थे कि सहायता प्रदान की जाए या नहीं। यह स्थान दिखाया जा सकता है। चाहे यूनान तथा रोम की धार्मिक प्राचीन हो। यह निर्धारित की जाती थी कि व्यक्ति को अपने अनुभवों के आधार पर दान की इस प्रक्रिया की कल्पना की कमी के कारण उन्हें प्रति रूप में व्यक्ति का निर्धारण किया गया था। उन्हें धार्मिक मिथ्याध्यक्ष नाम का दिन निर्धारित किया गया था। उनके प्रारंभिक पद देते थें लागू करते थे और इसके आधार पर वे निर्णय लेते थे कि सहायता प्रदान की जाए या नहीं। यह स्थान दिखाया जा सकता है। चाहे यूनान तथा रोम की धार्मिक प्राचीन हो। चाहे यूनान तथा रोम की धार्मिक प्राचीन हो। यह स्थान दिखाया जा सकता है।
2.3 वैयक्तिक समाज कार्य की परिभाषाएँ

समय-समय तक विभिन्न विद्वानों द्वारा वैयक्तिक समाज कार्य की भिन्न-भिन्न परिभाषाओं प्रदान की गयी हैं जो एक नियम एवं स्थायी विशेष पर वैयक्तिक समाज कार्य के समर्थन में पाये जाने वाले ज्ञान का प्राप्त रखने की है। वैयक्तिक समाज कार्य की प्रणाली परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:-

मैरी रिचमॉन्ड (1915): वैयक्तिक समाज कार्य "विभिन्न व्यक्तियों के साथ सहयोग करते हुए उनकी अपनी तथा समाज की एक साथ भलाई प्राप्त करने हेतु उनके साथ विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने की एक कला है।" उपरोक्त परिभाषा के निम्न तत्व हैं:-

1. वैयक्तिक समाज कार्य एक कला है।
2. इसके माध्यम से व्यक्ति की समस्याएं सुलझाई जाती हैं।
3. समस्याओं की मिलनता के कारण भिन्न-भिन्न कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।
4. सेवाओं का सहयोग विकल्पता प्रक्रिया में आवश्यक होता है।

मैरी रिचमॉन्ड ने अपनी परिभाषा में यद्यपि समस्याओं का उल्लेख किया है परन्तु इस बात का स्पष्ट नहीं किया है कि किस प्रकार की समस्याओं का समाधान वैयक्तिक समाज कार्य द्वारा किया जाता है। इन कथियों को दूर करने के लिए सन् 1922 ई. को इसी परिभाषा प्रस्तुत की। सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य में वे प्रक्रियाएँ आती हैं जो एक-एक करके व्यक्तियों एवं उनके सामाजिक पर्यावरण के बीच संबंधित रूप से समायोजन स्थापित करती हैं।

मैरी रिचमॉन्ड (1917): वैयक्तिक समाज कार्य ** "व्यक्ति के रूप में पुरुषों तथा महिलाओं अथवा बच्चों के सामाजिक समस्याओं में अधिक अच्छे समायोजन लाने की एक कला है।

टेट्टर (1920): वैयक्तिक समाज कार्य ** "व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक समस्याओं को समझने तथा एक अधिक अच्छे सामाजिक एवं वैयक्तिक समायोजन को लाने में उसकी सहायता करने के प्रयास में कुशल कार्य करने के सामाजिक उपचार है।

टेट्टर ने अपनी परिभाषा में निम्न तत्वों का उल्लेख किया है:-

(1) वैयक्तिक समाज कार्य एक सामाजिक चिकित्सा है। इसका अर्थ यह है कि इस प्रक्रिया द्वारा सामाजिक संतुलन को स्थिर रखना जाता है और यदि आवश्यकता हुई तो असंतुलन उत्पन्न करने वाले कारकों को दूर करके व्यक्ति को सुसंगत बनाना जाता है।

(2) समायोजन रहित व्यक्ति की चिकित्सा की जाती है। अनेक ऐसी राशियाँ होती हैं जो व्यक्ति को झकझोर देती हैं और इस भंग में पड़ता वह समायोजन रहित हो जाता है। ऐसी दशा में वैयक्तिक समाज कार्य उसका सामाजिक संतुलन स्थापित करने में सहायता करने है।

(3) इस प्रणाली द्वारा सर्वप्रथम समायोजन रहित व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार एवं सामाजिक संबंधों को समझा जाता है और तब उसकी सहायता का रूप निर्धारित किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की समस्याएँ समाधान होने पर भी उसका कारण तथा उनकी व्यक्ति में प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न होती है।

सन् 1939 में सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य का उद्देश्य महत्वपूर्ण कार्य अधिक सहायता देना भी समन्वित किया गया।
मेरी रिचमण्ड (1922): वैयक्तिक सामाजक कार्य का अर्थ 'ऐसी प्रक्रियाओं जो व्यक्तियों एवं उनके सामाजिक पर्यावरण के बीच एक-एक करके चेतन रूप में लाये गये समायोजन के माध्यम से व्यक्ति का विकास करती है, से हैं।

डक्सीनिज (1939): ‘ये प्रतिक्रियाएं जो व्यक्तियों को सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा निखिल नीतियों के अनुसार और वैयक्तिक आवश्यकताओं को सामने रखकर सेवा प्रदान करते, आर्थिक सहायता देने या वैयक्तिक परामर्श देने से सम्बद्ध हैं’ सामाजिक वैयक्तिक सामाजक कार्य के अन्तर्गत समिलित की जाती है।

उपरोक्त परिभाषा से यह बात स्पष्ट होती है कि

1. सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य द्वारा वैयक्तिक परामर्श एवं आर्थिक सहायता दोनों ही प्रदान की जाती है।

2. सहायता प्रदान करने का कार्य किसी सामाजिक संस्था के कर्मचारी द्वारा किया जाता है।

3. सहायता प्रदान करने के कुछ निकितन नियम व तरीके एवं नीतियाँ होती हैं जिसका सेवा प्रदान करने वाला कर्मचारी अनुशंसा करता है।

स्वीपान बीबर्स (1949): ‘वैयक्तिक सामाजक कार्य एक ऐसी कला है जिसमें अन्तर्गत मानव सम्बन्धों के विज्ञान के ज्ञान तथा समाज की नियुक्ति का प्रयोग व्यक्ति की उपयुक्त ज्ञानात्मकता तथा समुदाय के संस्थानों को सेवायों तथा उसके सम्पूर्ण पर्यावरण के समस्त अंगों अथवा किसी अंग के बीच अधिक अच्छे समायोजन के लिए गतिशील बनाने हेतु किया जाता है।’

बीबर्स ने अपनी परिभाषा द्वारा वैयक्तिक सामाजक कार्य को एक नया रूप प्रदान किया। उन्होंने निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया।

1. वैयक्तिक सामाजक कार्य एक कला है और इस कला का उपयोग व्यक्ति के असमायोजनकारी ज्ञान को दूर करने के लिए किया जाता है।

2. इस कला को ज्ञान में लाने के लिए विशेष ज्ञान एवं नियुक्ति की आवश्यकता होती है।

3. यह कला मानव सम्बन्धों के ज्ञान पर आधारित है।

4. मानवीय ज्ञान के ज्ञान तथा नियुक्ति का प्रयोग अत्यन्त सावधानी से करता है।

5. इस कला द्वारा सेवायों की शक्तियों को गतिसंचालन किया जाता है। उसके अंतर्गत कोशिश शाली बनाया जाता है तथा समायोजन प्राप्त किया जाता है।

6. इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समाज के सथापनों को गतिसंचालन किया जाता है।

देसाई (1956): वैयक्तिक सामाजक कार्य ‘व्यक्ति की न ज्ञात यथास्थिति के साथ समायोजन करने बल्कि परिवर्तन तथा नव-नये स्तरों पर अपने परिवर्तित होते हुए पर्यावरण के साथ संशोधण करने की प्रक्रिया के सक्रिय भागीदार बनाने में सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है’।

पर्लमैन (1957): वैयक्तिक सामाजक कार्य कुछ मानव अवस्थाओं के द्वारा व्यक्तियों की सामाजिक क्रिया में अपनी समस्याओं का अधिक प्रभावपूर्ण रूप से समाधान करने में सहायता प्रदान करने हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली एक प्रक्रिया है।
पर्लमैन (1957): वैयक्तिक समाज कार्य एक प्रक्रिया है जिसका प्रयोग कुछ मानव कल्याण संस्थाएं करती हैं ताकि व्यक्तियों की सहायता की जाये कि वे सामाजिक कार्यक्रमकात्री की समस्याओं का समाप्त उच्चतर प्रकार से कर सकें। पर्लमैन ने वैयक्तिक समाज कार्य के 4 अंशों का उल्लेख अपनी परिभाषा में किया है: (1) व्यक्ति, (2) समस्या, (3) स्थान तथा (4) प्रक्रिया।

व्यक्ति

सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य का मुख्य उद्देश्य समस्याप्रमाणे व्यक्ति की सहायता करना है जिससे वह आत्मरक्षक एवं भाषा समाज योजना स्थापित कर सके। व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक दो प्रकार की आवश्यकताएं होती हैं वह इन आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी क्षमता एवं साधन उपलब्धियों के आधार पर करता है। पर्लमैन अभी-कभी वह पूर्ति करने में असफल होता है अतः वैयक्तिक सहायता द्वारा उसको इस योजना बनाया जाता है कि वह अपना कार्य संचालन सुविधा रूप से कर सके। व्यक्ति की असफलता के कई कारण हो सकते हैं, जैसे-वह रोग सत्यम न हो, आवश्यकता पूर्ति के साधनों का हारने न हो, आवश्यकता स्थान न हो, सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं से अनमोल हो, संस्था में सहायता के पूर्ति साधन उपलब्ध न हो या उसकी आवश्यकताओं वातावरण न हो। ऐसी स्थिति में व्यक्ति भाषा सहायता के लिए संस्था में आता है जहां पर उसके व्यक्तित्व एवं समस्या का अध्ययन कर सहायता की जाती है।

समस्या

समस्या के कई रूप होते हैं पर्लमैन द्वारा समस्या के व्यक्तित्व एवं समस्याक्रमण्माणि होती है और जिनसे व्यक्ति की सामाजिक क्रियाशीलता कम हो जाती है, वैयक्तिक समाज कार्य के क्षेत्र में आती है। इस समस्या के कारण व्यक्ति अपने कार्यों को न तो सुविधा रूप से कर पाता है और न वातावरण को स्थापत्य रूप से देख पाता है। अभी-कभी समस्या की उपत्यका भाषा कार्यरतों से होते हैं। अतः वैयक्तिक कार्यक्रम आत्मरक्षक एवं कार्यक्रम दोनों प्रकार के कारणों पर अपना ध्यान आकर्षित करता है।

स्थान

सहायता प्रदान करने हेतु स्थान एवं संस्था होती है। कुछ संस्थाओं विशेष प्रकार की सेवाएं प्रदान करती हैं तथा कुछ संस्थाओं सामान्य लक्ष्यों की पूर्ति करती हैं। द्वितीय प्रकार की कारणों हैं जो समाज कार्य विधियों का उपयोग उद्देश्य प्राप्त करते हैं। इनमें प्रविष्ट वैयक्तिक कार्यक्रम द्वारा समस्याप्रमाणे व्यक्ति की सहायता की जाती है। द्वितीय प्रकार की के संस्थाएं हैं जो समाज कार्य विधियों का उपयोग द्वैत प्राप्ति के लिए करते हैं और ये विधियों गोष्ठ स्थान रखते हैं। विद्वानों, विद्यालय, समाज सुधार गृह आदि इसके उदाहरण हैं। भारत वर्ष में अधिकांश सामान्य प्रकार की संस्थाएं हैं।

प्रक्रिया

वैयक्तिक समाज कार्य की प्रक्रिया में कार्यक्रम अनुसार संबंध मुद्दत: तीन कार्य से रहता है:-

1. सेवाओं के समाज के समबन्ध में आत्मरक्षक एवं भाषा वातावरण से सम्बन्धित आंदोलन का संचालन एवं अध्ययन।
2. समस्या का वैज्ञानिक चिन्हित द्वारा निदान।
3. इस प्रकार प्रक्रिया के तीन अभिन्न अंग हैं:-
   क) अध्ययन
   ख) निदान एवं मूल्यांकन
   ग) चिकित्सा

कार्यकर्ता समस्या का अध्ययन निरीक्षण, अन्वेषण तथा वैज्ञानिक इतिहास के आधार पर करता है। निदान का कार्य भी अध्ययन के साथ ही चलता रहता है। कार्यकर्ता सेवार्थी के व्यक्तित्व तथा समस्या के मूल्यांकन द्वारा यह देखता है कि उसकी समस्या क्या है, उसकी समस्या का रूप क्या है, वातावरण क्या समाज से क्या सम्बन्ध है। इसके पश्चात् वह निश्चित करता है कि सेवार्थी को किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है।

उपरोक्त परिभाषाओं पर विश्लेषणात्मक दृष्टि ढालने पर यह पता चलता है कि वैज्ञानिक समाज कार्य सविभाग प्रति रिचमण्डल द्वारा एक बात का रूप में वर्णित किया गया जिसका उद्देश्य अपनी तथा समाज की उन्नति करना था। तदुस्वाम्य टेप्स ने वैज्ञानिक समाज कार्य को एक सामाजिक चिकित्सा के रूप में चिह्नित करते हुए इसका उद्देश्य अधिक अच्छा वैज्ञानिक एवं सामाजिक समायोजन बनाया। बाद में वैज्ञानिक समाज कार्य को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार कर लिया गया तथा इस प्रक्रिया के दौरान यह जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा अंशभूत का निरूपण करते हुए समायोजन लाने को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त परिवर्तन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के उद्देश्य पर भी बल दिया जाता गया।

2.4 सारांश
प्रस्तुत इकाई में वैज्ञानिक समाज कार्य के अर्थ का अध्ययन किया गया। वैज्ञानिक समाज कार्य की अनेक विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का विश्लेषण किया जिसमें प्रमुख हैं मेरी रिचमण्डल, टेप्स, देसाई तथा स्वीकार वर्ग के निरूपने वैज्ञानिक समाज कार्य का अलग-अलग दृष्टिकोण से वर्णन किया है।

2.5 अव्यासार्थ प्रश्न
1. वैज्ञानिक समाज कार्य का अर्थ बताइए।
2. वैज्ञानिक समाज कार्य की परिभाषाओं को विस्तृत रूप से वर्णित कीजिए।

2.6 सन्दर्भ ग्रन्थ
मिथ्रा, पी.डी.सी., सामाजिक वैज्ञानिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी.सी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, राँची बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुनीता, वर्मा, आर. बी., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, राँची बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिथ्रा, पी.डी.सी., मिथ्रा, बीना, वैज्ञानिक और समाज, न्यू राँची बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सिंह, डी॰ के॰, भारती, प॰ के॰, सोशल वर्क कांसेप्ट एंड मैथड्स, न्यू राण्यल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, डी॰ के॰, पालिकाल, सीरेक, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विषयक के मूल तत्त्व, न्यू राण्यल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्र, पी॰ डी॰, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.

सिंह, सुरेन्द्र, मिश्र, पी॰ डी॰, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, राण्यल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
प्रस्ताव इकाई के अध्ययन के पक्षात

1. वैयक्तिक समाज कार्य के उद्देश्यों के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
2. सेवार्थी की समस्याओं के समाधान का वर्णन कर सकेंगे।
3. सेवार्थी में आत्म निरांकित मनोवृत्ति के विकास का अध्ययन कर सकेंगे एवं सहायता के लिए प्रेणा, नेतृत्व की क्षमता के विकास के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
4. सेवार्थी की समस्याओं के निदान एवं उपचार तथा सेवार्थी के वैयक्तिक अध्ययन के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वैयक्तिक समाज कार्य के उद्देश्यों का वर्णन किया गया। समस्या कृत्रिम आवश्यकताओं, बाधाओं या भर्तियों के एकीकरण या समायोजन आदि के एक या संयुक्त होकर व्यक्ति की जीवन स्थिति पर या समाधान करने के प्रयासों की उपयुक्तता पर धमकी देता है या आक्रमण कर चुका होता है, से उत्पन्न होता है। सेवाधर्मी की मनोवृत्ति पूर्व ज्ञान रूपी प्रतिक्रिया का स्वरूप और क्रिया का आरम्भ है जिसका पूर्व ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। इसलिए अतिरिक्त प्रतिक्रिया की इस तरह या चिकित्सा फलस्वरूप संसाधन परिस्थिति मिलता रहती है। वैयक्तिक समाज कार्य का उद्देश्य वैयक्तिक मनोसामाजिक समस्याओं के निदान व उपचार में सहायता करना है। मानव प्रकृति की विशेषता है कि वह अपनी मूल समस्याओं के लोकों को जहाँ तक सम्भव होता है छिपाने का प्रयास करता है और समस्या के कारण को दूर करना प्रयास करता है। विभिन्न नैतिक संस्थािि और व्यापक स्थिति का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

3.2 वैयक्तिक समाज कार्य के उद्देश्य

वैयक्तिक समाज कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

3.2.1 सेवाधर्मी की मनोसामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना तथा समाधान करना

मानव समाज की ऐसी कोई समस्या नहीं है जो संस्था में सेवाधर्मी द्वारा न लायी जाती हो। भूख मिटाने तथा भूख लगने की समस्या, भूख मिटाने तथा भूख लगने की समस्या, प्रेम करने तथा प्रेम न करने की समस्या, साथ रहने अथवा बूढ़ जाने की समस्या, विवाह करने तथा विवाह न होने की समस्या, बच्चे न होने तथा बच्चे अभ्यास करने होने की समस्या, धन अभाव करने तथा खर्च करने की समस्या, जीवन करने तथा जीवन करने तिरस्कृत लिए जाने की समस्या, दान देने नहीं तथा कार्य करने की दशकों की खराब व अदृश्य समस्या, वैयक्तिक संसाधन आदि समस्याएं सेवाधर्मी द्वारा संस्था में लायी जाती है। इन सभी समस्याओं को समझना तथा उनका समाधान करना अत्यन्त दुःखकार्य है। इसका कारण भिन्न-भिन्न समस्याओं के लिए भिन्न-भिन्न संस्थाओं एंव वन गवर्त है जो एक विशेष समस्या का समाधान करती है।

परंपरा के अनुसार, “समस्या आवश्यकताओं, बाधाओं या भर्तियों के एकीकरण या समायोजन आदि के एक या संयुक्त होकर व्यक्ति की जीवन स्थिति पर या समाधान करने के प्रयासों की उपयुक्तता पर धमकी देता है या आक्रमण कर चुका होता है, से उत्पन्न होता है।

समस्या के कारक:

निम्नलिखित कारक समस्या उत्पन्न करते हैं:

1. वैदिक स्थिति से अस्थित्व या असंतोष
2. वैदिक स्थिति में परिवर्तन जिससे एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हो।
3. सक्राकार तथा नकल तथा क्रिया की आवश्यकता जिससे कि वैदिक को इतिहास दिशाए निपटाते रहे।
4. समस्या की प्रकृति तथा जटिलता उद्देश्य की प्रकृति तथा जटिलता पर निर्भर होती है।
वैयक्तिक कार्यक्ता को समस्या के सम्बन्ध में निम्नलिखित जानकारी आवश्यक है:—

1. सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य की परिधि में उन्हीं समस्याओं को सम्मिलित किया जाता है जो सामाजिक कार्यवात्तक का प्रभावित करती है या सामाजिक कार्योत्पक्ता द्वारा प्रभावित होती हैं।

2. सेवार्थी की समस्या के अनेकानेक रूप तथा गत्यात्मक प्रक्रिया, समस्या के किसी एक अंग का चुनाव करने के लिए कार्यक्ता व सेवार्थी को मजबूत करती है।

3. समस्या सदैव शृंखलाबद्ध रूप में प्रतिक्रिया करती है।

4. कोई भी समस्या जिससे व्यक्ति प्रसिद्ध होता है वस्तुगत (बाह्य) तथा विषयगत (आंतरिक) दोनों प्रकार से महत्वपूर्ण होती है।

5. समस्या के बाह्य तथा आंतरिक तत्त्व न केवल एक साथ घटित होते हैं बल्कि इनमें से कोई भी एक दूसरे का कारण हो सकता है।

6. समस्या जिसको कि सेवार्थी संस्था में ले जाता है उसकी प्रकृति कैसी भी हो प्रत्यह सदैव या अधिकांशतः सेवार्थी होने की समस्या से जुड़ी रहती है।

समस्या समाधान करने के लिए आवश्यक योग्यताएँ

1. समस्या के तथ्यों का पूर्ण ज्ञान होना।

2. समस्या के सभी तथ्यों के अनुसंधान का ज्ञान होना।

3. तत्त्वों को व्यवस्थित करने की योग्यता तथा विकास की गति का ज्ञान।

4. परिस्थिति का उचित प्रत्यक्षीकरण।

5. पूर्व अनुभवों का उचित उपयोग।

6. सम्प्रेषणों की जटिलता तथा प्रकार का ज्ञान।

समस्या समाधान की प्रक्रिया को दो चरणों में विभक्त किया जा सकता है:— (1) समस्या विश्लेषण चरण, (2) निर्णय लेने का चरण।

समस्या विश्लेषण

समस्या विश्लेषण में निम्न बातों का झांक प्राप्त किया जाता है:—

1. अपेक्षित कर्तव्य पूर्ति का स्तर तथा वास्तविक कर्तव्य पूर्ति में अन्तर का स्पष्टीकरण।

2. कर्तव्य पूर्ति स्तर से भिन्न व्यवहार समस्या का कारण स्पष्ट करना।

3. स्तर से निम्नता का स्पष्ट अवलोकन, प्रत्यक्षीकरण तथा विवरण।

4. कुछ महत्वपूर्ण कारक।

5. समस्या का कारण, कुछ महत्वपूर्ण बंटों, विषयों तथा स्थितियों से बदलता रहता है जिसका अवांछनीय प्रभाव पड़ता है।

6. समस्या उपनन करने के एक प्रमुख कारक की खोज करना।
3.2.2 सेवार्थी की मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाना

मनोवृत्ति शब्द की उपत्ति लैटिन भाषा से है जिसका अर्थ योग्यता से है। अर्थात् व्यक्ति की योग्यता को निर्धारित करने तथा विकसित करने में मनोवृत्तियों का विशेष हाथ होता है।

यदि, किम्बाल के अनुसार, ‘‘आवश्यक रूप से मनोवृत्ति पूर्व ज्ञान रूपी प्रतिक्रिया का स्थर और क्रिया का आरंभ है, जिसका पूर्ण होना आवश्यक नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रतिक्रिया की इस तपास में किसी प्रकार की विशिष्ट या सामान्य परिस्थिति निहित रहती है।

श्रीन बी, एफ. के अनुसार, ‘‘मनोवृत्ति की अवधारणा में एक क्रमशीलता या प्रतिक्रियाओं के बारे में भविष्यवाणी करना निहित है।’’

अकोलकर के शब्दों में, ‘‘एक वस्तु या व्यक्ति के विषय में सोचने, अनुभव करने या उसके प्रति विशेष दंग से कार्य करने या उसके प्रति विशेष दंग से कार्य करने की तपास की स्थिति को मनोवृत्ति कहते हैं।

मनोवृत्ति की विशेषताएं
1. मनोवृत्ति सीखी जाती है।
2. मनोवृत्ति स्थायी होती है।
3. मनोवृत्तियों तथा सम्प्रेषणाओं में सम्बन्ध होता है।
4. मनोवृत्ति तथा विषयवस्तु में सम्बन्ध होता है।
5. मनोवृत्तियां व्यवहार के दंग निक्षित करती हैं।
6. मनोवृत्तियाँ प्राप्त: व्यक्ति की आवश्यकताओं तथा समस्याओं से समन्वित होती हैं।
7. मनोवृत्ति का प्रभाव सार्वजनिक होता है।
8. मनोवृत्ति का सम्बन्ध संवेदन तथा भावना से होता है।
9. मनोवृत्ति पर व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है।
10. मनोवृत्ति अन्तर्भूत होती है।

मनोवृत्ति का वर्गीकरण
आल्पोर्ट ने मनोवृत्तियों को 3 वर्गों में विभक्त किया है:-
1. सामाजिक मनोवृत्तियाँ
2. विशिष्ट व्यक्तियों के प्रति मनोवृत्तियाँ
3. विशिष्ट समूहों के प्रति मनोवृत्ति

मनोवृत्तियों का निर्माण
मनोवृत्तियों के निर्माण में निम्नलिखित कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं:-
1. सांस्कृतिक कारक
2. सामाजिक या सामूहिक कारक
3. सामाजिक सीखना
4. प्रेरणात्मक कारक
5. मनोवैज्ञानिक कारक
6. उद्दीपक
7. परिचय प्रभाव
8. क्रियात्मक कारक
9. सूचना एवं प्रसार
10. व्यक्तित्व

मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाने के उपाय
1. प्रचार
2. शिक्षा
3. सम्पर्क
4. प्रतिष्ठित व्यक्ति का प्रभाव
5. व्यक्तिगत अनुभव
6. संस्कृति का मिलाप
7. मनोवृत्ति की विशेषताओं तथा परिवर्तन

3.2.3 सेवार्थी में समायोजन लाने की क्षमता का विकास करना

जब हम किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि वह अच्छी प्रकार से समायोजित, मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ तथा सुव्यवस्था में बीतता है तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह या उसकी परिस्थितियाँ किसी एक प्रकार की विलम्बित उत्कृष्टता में स्थित हो गयी हैं बल्कि इसका तात्पर्य वह है कि वास्तविक समस्याएं जिनसे वह संघर्ष करता है वे न तो संदर्भ में अधिक हैं और न ही अधिक शक्तिशाली, बल्कि वे उसके प्रभाव की सीमा में हैं तथा दिन-प्रतिदिन की समस्याओं से निपटने के लिए उसकी प्रणाली यथोचित तथा अत्यधिक है।

समायोजन एक सार्वभौमिक तथा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जीवित अवधि साधारण से जटिल अवस्था से निरंतर समायोजन का प्रयास करता है। इन समायोजनों का समस्त ग्रामीणशास्त्रीय आवश्यकताओं जैसे-भूख, प्यास की मुनाफा से सम्बंधित होता है अथवा मानवीय स्तर पर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं जैसे सम्बन्ध स्थापन की इच्छा, प्रेम तथा वातस्लय प्राप्त करने की इच्छा, स्वीकृति अथवा स्थिति प्राप्ति करने की इच्छा या रचनात्मक आत्म प्रदर्शन के अवसर प्राप्त करने की इच्छा की पूर्ति से होता है।
हमारी दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं का अधिकांश सम्बन्ध समायोजन तथा अनुकूलन से होता है। हम अनेक चतुर्वेदी को इस प्रकार से व्यवहारक मूल्यवान करते हैं जिससे उनकी कार्यान्वयन में बृद्धि होती है।

इस अर्थ में समायोजन का तत्त्वय किसी वस्तु को इस प्रकार से व्यवस्थित करना एवं संगठित करना जिस उद्देश्य के लिए वह बनाया गया है, उससे पूर्ण समभव हो। इसी प्रकार हम सामाजिक परिस्थितियों तथा दशाओं को पर्याप्त में इस प्रकार समायोजित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे क्रियाओं के प्रतिदिन के कार्यक्रम सरलता से चल सकें।

समायोजित व्यक्ति की विशेषताएं

1. वैयक्तिकता की भावना

बालक प्रारम्भ से ही वह जान लेता है कि उसका अतिरिक्त द्वारा भिन्न है। जैसे-जैसे वह बढ़ता जाता है जैसे-जैसे वह बढ़ता जाती है। एक समायोजित व्यक्ति समाज के आदर्शों के अनुसार अपने आपको परिवर्तित कर लेता है और यह भी निश्चित करने में समय होता है कि वह कौन सी परिस्थिति होगी जब समाज की मांगों को पूरा करना अनुभवित होगा।

2. आत्मनिर्भरता

समायोजित व्यक्ति स्वयं की समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं आत्मनिर्भर होता है। अपने उद्देश्यों एवं इच्छाओं की पूर्ण स्वयं कर लेता है।

3. विष्णु

विष्णु के आधार पर ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करता है। वह अपनी शक्तियों एवं कौशलों को समझता है तथा उसके अनुसार कार्य करता है।

4. स्वयं तथा अन्य व्यक्तियों की स्वीकृति

समायोजित व्यक्ति अपनी स्थिति को सही-सही समझता है तथा अपना स्वयं समाज में निश्चित करता है तथा उनके अधिकारों की रक्षा करता है।

5. सुखदी की भावना

समायोजित व्यक्ति अपने को आत्मनिर्भर एवं बाह्य स्वभाव से सुखदी महसूस करता है।

6. उत्तरदायित्व की भावना

समायोजित व्यक्ति अपने कार्यों का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है और कार्यों के परिणामों को स्वीकार करता है तथा दूसरों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। वह उन उत्तरदायित्वों को पूरा करता है जो परिचार, समय एवं समाज द्वारा निश्चित किये जाते हैं।

7. अधिकारी

समायोजित व्यक्ति नया ज्ञान की खोज के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह अपनी प्रेमण शक्ति को अपनी योग्यताओं एवं समझाओं को विकसित करने के लिए अधिकाधिक उपयोग करता है। उसके निश्चित उद्देश्य होते हैं तथा लक्ष्य की दिशा भी निश्चित होती है।
8. अनुभव का उत्पन्न

एक समापोषित व्यक्ति वर्तमान समस्याओं से निपटने तथा क्रियाओं के समाधान में अपने पूर्व अनुभव का समुचित उपयोग करता है।

9. समस्या समाधान की मनोवृत्ति

समापोषित व्यक्ति की मनोवृत्ति की सदृश परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहती है। वह समस्या का सामना करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है तथा परिस्थिति में परिवर्तन करना जानता है।

10. व्यक्तिगत मूल्य एवं जीवन दर्शन

समापोषित व्यक्ति के मूल्य सामाजिक मूल्यों के समान विकसित होते हैं। उसके जीवन का दर्शन व्यक्तिगत एवं सामाजिक कट्टरण करना होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि समापोषित व्यक्ति में विश्वास, सुख, उत्तरदायित्व, अनुभव से सीखने की क्षमता, व्यक्तिगत मूल्य एवं आदर्शों की उपयुक्त आदि विशेषताएं पायी जाती हैं।

3.2.4 सेवाधीन में आत्मनिर्णयात्मक मनोवृत्ति का विकास करना

वैश्विक सेवा कार्य सम्बन्ध का यह एक विशेष गुण है। कार्यकर्ता अपनी प्रक्रिया में इसकी मनोवृत्ति को अपनाता है। इस मनोवृत्ति का आधार वैश्विक समाज कार्य का दर्शन है जो यह मानता है कि व्यक्ति की समस्या उत्पन्न करने में कोई दोष नहीं है या वह अपराधी नहीं है बल्कि परिस्थितियों इसके लिए उत्तरदायी है। यह व्यक्ति की मनोवृत्ति स्वरूप तथा विश्राम-प्रतिरक्षा के कार्यों को महत्व देता है।

“निर्णय” का तात्पर्य व्यक्ति को किसी कार्य के लिए उत्तरदायी या उसकी अज्ञानता को निकृष्ट करने से होता है। यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा निश्चित किया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति उत्तरदायित्व के लिए स्वतंत्र दोषी है या उसने यह अपराधपूर्ण कार्य नहीं किया है। उसी आधार पर इसे दोषी दर्शाया जाता है।

वैश्विक समाज कार्य के भी निर्णय का यह अर्थ लिया जाता है। अर्थात् सेवाधीन के दोषारोपण मौखिक या अन्य किसी प्रकार अपनी समस्या के लिए करना। समस्या के कारण चाहे पचास साली हों या व्यक्तिगत से समन्वित हों, सेवाधीन की सहायता करने में यद्यपि उसकी असफलताओं तथा कमियों को जानना आवश्यक होता है। लेकिन वैश्विक समाज कार्यकर्ता का निर्णय करने का कोई उत्तरदायित्व एवं कार्य नहीं होता है। निर्णय करने का अधिकार दूसरे अधिकारियों का होता है। समाज कार्य दर्शन, विश्वास, प्रेम, सहानुभूति तथा दयालुता सिखाते हैं। इसका दूसरा विश्वास है कि व्यक्ति के विषय में कोई निर्णय लेना अतात्मायक तथा अन्यायाधिक होता है। दोषी को तिस्कर करना अथवा बहिर्गत करना कोई बुद्धिमानी नहीं है। वे भावनाएं सहायता प्रक्रिया में बाधा पहुँचाते हैं तथा सेवाधीन आत्मवादन अनुभव करता है। समाज कार्य दर्शन के स्थान पर सहायता में विचार करता है।

सेवाधीन की सहायता करने, समुदाय के घोटालों का उपयोग करने, आत्मात्मक क्षमाओं में समस्या-समाधान के लिए वृद्धि करने, उत्कृष्ट समायोजन प्राप्त करने, व्यक्तित्व का विकास एवं वृद्धि करने के लिए वैश्विक समाज कार्यकर्ता की सेवाधीन तथा उसकी समस्या दोषों को समझना होता है। सहायता का प्रभाव बनाने के लिए आवश्यक होता है कि वैश्विक समाज कार्यकर्ता सेवाधीन की समस्या के कारणों को जाने। इस प्रक्रिया में वैश्विक समाज कार्यकर्ता सेवाधीन पर न तो दोषारोपण करता है न ही उसे अपराधी बताता है और न ही उसे समस्या उत्पन्न करने का कारक निदेश करता है। यह कार्यकर्ता सेवाधीन को आत्म निर्णय के करने के लिए तैयार करता है।
3.2.5 सेवार्थी को स्वयं सहायता करने के लिए प्रेरित करना

वैयक्तिक समाज कार्य में कार्यकर्ता द्वारा सेवार्थी को स्वयं सहायता करने के लिए प्रेरित किया जाता है जिससे कि वह अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए सक्षम होता है। इससे सेवार्थी को अपनी समस्याओं का पहचानना एवं उसकी विश्लेषण करने तथा उसको किस प्रकार बौद्धिक समय रस्ता का समाधान कर पता है।

इसके अन्तर्गत वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता द्वारा सेवार्थी को अपने अंतर्गत कार्यकर्ताओं द्वारा सेवार्थी को अपनी समस्याओं का पहचानना एवं उसकी विश्लेषण करने तथा उसको किस प्रकार बौद्धिक समय रस्ता का समाधान कर पता है। इसके अन्तर्गत वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता द्वारा सेवार्थी को अपने अंतर्गत कार्यकर्ताओं द्वारा सेवार्थी को अपनी समस्याओं का पहचानना एवं उसकी विश्लेषण करने तथा उसको किस प्रकार बौद्धिक समय रस्ता का समाधान कर पता है।

1. समस्याएं इच्छुकताएं को वातावरण अन्तर्गत में समझना तथा प्रत्येक करने में सेवार्थी की सहायता करना।
2. समस्याएं इच्छुकताएं को वातावरण अन्तर्गत में समझना तथा प्रत्येक करने में सेवार्थी की सहायता करना।
3. समस्याएं इच्छुकताएं को वातावरण अन्तर्गत में समझना तथा प्रत्येक करने में सेवार्थी की सहायता करना।
4. समस्याएं इच्छुकताएं को वातावरण अन्तर्गत में समझना तथा प्रत्येक करने में सेवार्थी की सहायता करना।
इस प्रकार का दृष्टिकोण कार्यकर्ताओं तमिल अपनाता है जब वह समझता है कि उसकी भूमिका का क्षेत्र कम हो रहा है। परन्तु वांछित क्षामता यह कभी नहीं होती है। कार्यकर्ताओं को सेवार्थी को अपना निर्देश या अपनी स्वयं सहायता करने का अधिकार देकर बहुत बड़ी सहायता मिलती है। इसके पात्र से सेवार्थी अपने भविष्य की समस्याओं को समझने तथा समाधान करने की क्षमता विकसित कर लेता है एवं आत्म-निर्भरता एवं निर्देशन का विकास होता है।

3.2.6 सेवार्थी का वैयक्तिक अध्ययन करना

वैयक्तिक समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्ति की मनोसामाजिक समस्याओं के निवारण व उपचार में सहायता करना है। मानव प्रकृति को विशेषता नहीं है कि वह अपनी मूल समस्या के स्रोत को जानने तक समझता है चिप्पने के उपाय करता है और समस्या के कारण को सूर्खे कारण पर प्रश्निष्ठत कर देता है जिसके कारण सेवार्थी की मनोन्हतित तथा बाह्य स्थिति का वातावरण ज्ञान प्राप्त करने की तलाश हो जाता है। साहीत्कार के समय सेवार्थी ऐसी जटिल समस्याएं उपलब्ध करता है जिसके कारण अनुभवी कार्यकर्ता भी कभी-कभी असमस्थत में भड़क जाता है और विकितसत्तात्कार कार्य में बाधा उत्पन्न हो जाती है। अतः सेवार्थी का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने वैयक्तिक समाज कार्यकर्ताओं का प्रथम उद्देश्य होता है। वह सेवार्थी की आत्मीकरण तथा मूल दोषों प्रकार की स्थितियों का अध्ययन करता है और समस्या से समयभर सभी पहलुओं का साक्षर निकालता है। अतः वैयक्तिक समाज कार्यकर्ताओं के लिए आर्थिक प्रशासन करता है।

वैयक्तिक समाज कार्य समाज कार्य की एक महत्वपूर्ण भूमिका है जिसके द्वारा एक व्यक्ति की प्रभाव नहीं होती है जिससे वह अपनी समस्याओं को सूचना सके तथा भविष्य में इतिहास अनुसरण न हो। उसे आत्म निर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है। अत: सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पूर्ण व्यक्तित्व ज्ञाना आवश्यक होता है तभी उसमें निहित शक्ति एवं क्षमता को उभार कर सक्रिय रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। वैयक्तिक अध्ययन से व्यक्ति की संपूर्ण स्थिति का निर्णय होता है, उसकी समस्याओं का समाधान होता है, प्रभाव निर्माण के लिए आधार प्रदान करता है। इन सूचनाओं के आधार पर ही वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता उपचार एवं सहायता कार्य करने में सफल होता है।

3.2.7 सेवार्थी की समस्याओं का सामाजिक निवारण करना तथा उपचार करना

समस्या कोई एक या एक से अधिक आवश्यकता होती है जो व्यक्ति के जीवन तथा उपचार करने के लिए उपचार करता है जब भूमिका तथा सामाजिक भूमिका ज्ञात करने में आधार अनुभव करता है। अत: वह अपने को समस्याओं के समाधान करने के लिए उपचार अनुभव करता है। संस्था में आने का सेवार्थी का उद्देश्य सहायता प्राप्त करना है जिससे वह अपनी भूमिका को पूरा कर सकते। अत: वैयक्तिक कार्यकर्ता का कार्य सेवार्थी की सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए मनोक्षीत का उपयोग करता है। सामाजिक व्यवस्थाओं तथा समस्याएं अंतर्भवन से बढ़ती हैं एवं अंतर्भव करती हैं। अतः वैयक्तिक उपचार प्राप्त करता है। वह इस अंतर्भव का अर्थ ज्ञात करता है तथा उन प्रभावों का ज्ञात करता है जो सामाजिक अनुकूलन के लिए आवश्यक होते हैं।
यथापि समस्या का पूर्ण ज्ञान आवश्यक होता है परंतु समस्या का पूर्ण समाधान कठिन होता है। कार्यक्तां समस्या के केन्द्र बिन्दु पर ध्यान देता है तथा समस्या को पूर्णता में देखता है। समस्या के चुनाव में कार्यक्तां तीन बा तों पर ध्यान देता है:-

1. सेवार्थी क्या चाहता है या उसकी प्रमुख आवश्यकता क्या है?
2. कार्यक्तां क्या महत्त्वपूर्ण समझता है?
3. संस्था में कौन-कौन सी सुविधाएं उपलब्ध हैं?

कार्यक्तां के लिए आवश्यक होता है कि वह अपना कार्य बहां से प्रारम्भ करे जहां से सेवार्थी इच्छा रखता है परंतु अपने अनुभव द्वारा समस्या के केन्द्र बिन्दु पर पहुंच जाता है।

समस्या चाहे जितनी आसान हो, समाधान चाहे जितना सरल हो परंतु सेवार्थी के लिए महत्त्वपूर्ण अवश्य होती है। परंतु समान समस्या से ग्रस्त व्यक्तियों की प्रतिविपक्षी समान नहीं होती हैं। अतः कार्यक्तां समस्या के बाह्य तथा अन्तर्गत या वस्त्रुत एवं विश्लेषण दोनों पहलुओं को समझता है।

समस्या समाधान की प्रक्रिया के दो चरण होते हैं:-

1. समस्या विश्लेषण चरण
2. निर्णय प्रक्रिया।

समस्या विश्लेषण में निम्न बातों का ज्ञान आवश्यक है:-

1. अपेक्षित व्यक्ति पूर्ति का स्तर तथा वास्तविक कर्तव्य पूर्ति में अंतर,
2. स्तर से व्यवहार का विचलन या भूमिका की अपूर्ति,
3. भूमिका का स्पष्ट अंतर, प्रत्यक्षकरण तथा उसका विचरण,
4. समस्या उत्पन्न करने वाले कारकों के प्रभाव में परिवर्तन,
5. प्रमुख कारकों की खोज जो समस्या उत्पन्न करने में सक्रिय रहा है।

निर्णय प्रक्रिया में उद्देश्यों का स्पष्टकरण, महत्व के आधार पर उद्देश्यों का वर्गीकरण, समाधान के बैकलेट्रिक उपयोग, उपयोगों का मूल्यांकन तथा निर्णय के सम्बन्धित प्रभाव आदि ज्ञात करना कार्यक्तां के लिए आवश्यक होता है।

3.2.8 विभिन दिवजों का सहारा लेते हुए सेवार्थी में चेतना का प्रसार करना

कभी-कभी सेवार्थी बाहरी परीक्षणों की जरिए उनके कारण समायोजन नहीं कर पाता है। कार्यक्तां इस उद्देश्य का सहारा लेते हुए उसके निर्धारण में परिवर्तन लाता है तथा तनावपूर्ण स्थिति को कम करता है। इसके लिए कार्यक्तां को विभिन्न सामाजिक विज्ञानों का सहारा लेते हुए सेवार्थी में उत्पन्न समस्या के कारणों की खोज करना तथा उनके प्रभावों का अध्ययन करना चाहिए तथा उनका निर्देश देने हुए सेवार्थी में चेतना प्रसार किया जाना चाहिए।
3.3 सारांश

प्रस्तुत इकाई में वैयक्तिक समाज कार्य के उद्देश्यों के विषय में अध्ययन किया गया। सेवाधीन की मनोवृत्ति में परिवर्तन को समझा गया। समायोजन लाने की क्षमता के विकास का अध्ययन किया गया। अनिर्णायक अभिवृत्ति के विकास को समझा, समस्याओं के सामाजिक निदान एवं उपचार के महत्त्व को समझा। सेवाधीन के वैयक्तिक अध्ययन के बारे में अध्ययन किया तथा सेवाधीन की सोच में परिवर्तन लाने के प्रयास के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।

3.4 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. वैयक्तिक समाज कार्य के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।
2. वैयक्तिक समाज कार्य में समायोजन लाने की क्षमता के विकास एवं स्वयं सहायता करने के लिए प्रेरित करने के बारे में समझाइये।
3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए:
   1. वैयक्तिक अध्ययन करना
   2. मनोसामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना तथा समाधान करना।
   3. समस्याओं का सामाजिक निदान करना।

3.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

सिंह, डी. के.0., पालवान, सौभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विपर्यय के मूल तत्त्व, न्यू रांयल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी. डी.0., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.
मिश्र, पी. डी.0., सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी. के.0., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय भौत रांयल बुक डिजाइन लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुरेन्द्र, दर्जन, आर. बी.एस.0., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रांयल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी. डी.0., मिश्रा, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रांयल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सिंह, डी. के.0., भारती, ए. के.0., सोशल वर्क काउंसेलिंग ऐंड मैथड्स, न्यू रांयल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, सुरेन्द्र, मिश्रा, पी. डी.0., समाज कार्य- इतिहास, दर्जन एवं प्राणालियाँ, रांयल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 अहम्म का अर्थ एवं परिभाषा
4.3 वैयक्तिक समाज कार्य में अहम्म
4.4 अहम्म की प्रमुख विशेषताएँ
4.5 सारांश
4.6 अध्यायांक प्रश्न
4.7 सन्दभ ग्रन्थ

4.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के पश्चात वैयक्तिक समाज कार्य के अहम को समझ सकेंगे। वैयक्तिक समाज कार्य के अहम की परिभाषाओं का वर्णन कर सकेंगे। विभिन्न विभागों द्वारा दी गई अहम की परिभाषाओं के वर्णिकरण का उल्लेख कर सकेंगे। तत्पश्चात वैयक्तिक समाज कार्य में अहम की भूमिका का अध्ययन कर सकेंगे। अहम की विशेषताओं के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में वैयक्तिक समाज कार्य में अहम की भूमिका का वर्णन किया गया है। अहम्म वैयक्तिक के चेतनात्मक कार्यकारी भाग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं को व्यक्त करता है तथा बूढ़ों से संबंध व्यवस्था स्थापित करता है। अहम प्रत्यय का तात्पर्य उन अंतर्वैयक्तिक शक्तियों से है जो निरंतर व्यक्ति के विभिन्न तथा कभी-कभी एक बूढ़े से संबंधित सम्पर्कों तथा बाह्य जगत की मांगों के साथ संयुक्त बनाये रखने का प्रयत्न करता है। जन्म के बाद से ही अह उन सभी गणणात्मक क्रियाओं का विकास करता है, जिनके द्वारा अंतर्वैयक्तिक चालाकी, बाह्य खतरा तथा परांत के निषेधों से निपटा जा सके। इस तथा अहम में प्रमुख अंतर यह है कि इन केवल मस्तिष्क के विशेषतम वास्तविकता पर आधारित होता है जबकि अहं मस्तिष्क की वस्तु तथा बाह्य स्थिति में अंतर स्पष्ट करता है।
4.2 अहं का अर्थ एवं परिभाषा

अहं, (Ego) वैज्ञानिक समाज कार्य के केन्द्रीय महत्त्व का विषय है। इसके अन्तर्गत वही बातें आती हैं एवं उन्हीं तथ्यों का स्पष्टीकरण होता है जो वैज्ञानिक समाज कार्यक्रमों को पहले से ही ज्ञात होता है। इसमें मनोविश्लेषण सम्पन्नता सिद्धांतों का भी उपयोग होता है। अहं सुख तथा दुःख के भावनापर प्रयास से परिचालित करता है। अहं का कार्य व्यक्ति में उत्पन्न तनाव को उभिष्ट साधनों एवं विधियों के माध्यम से निरोपित करना होता है। भूखे व्यक्ति की भूख तभी दूर होती है जब वह भोजन की खोज करने वाले खोज रहे लेता है। अतः उसके वास्तविक भोजन तथा प्रतिबिंब में अन्तर का ज्ञान सीखना होता है।

डेबिसन के अनुसार, “अहं व्यक्ति के चेतनास्वरूप कार्यक्रम भाग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं को व्यक्ति करता है तथा दूसरों से संबंध व्यक्ति स्वयं करता है।”

प्रीडलैंडर के अनुसार, “अहं प्रत्यय का तत्त्व उन अन्तर्विष्करण शक्तियों से है जो मिलता व्यक्ति के विभिन्न तथा कभी-कभी एक दूसरे से संपर्क तथा समर्पण करता है वह अहं जगत की मूर्तियों के साथ संयुक्त बनाए रखने का प्रयत्न करता है।”

पाराड, हार्वेस ने इस संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि “मैं अहं का व्यक्तित्व में एकीकरण करने वाले प्रश्नों के समपूर्ण योग अथवा दूसरे शब्दों में संयथ समाधान की याचिका व्यक्ति व्यक्ति के समपूर्ण योग, के रूप में परिभाषित करूंगा।”

अहं लैटिन शब्द आई (I) से बना है जिसका तात्पर्य होता है व्यक्ति का अपना बहुत व्यक्ति और जिसका अपने बाह्य जगत के संसाधन प्रस्तुत करता है। अहं को निदेशकारी तथा एकीकरण करने वाली शक्ति के रूप में जाना जा सकता है। व्यक्ति इसका कार्य व्यक्ति के बाह्य जगत तथा अंतर्गत में संयुक्त स्वयं प्रक्रिया करता है।

अहं मन का चेतन स्तर है जिसके द्वारा इड (Id) पर नियामक लगाता रहता है। यह व्यक्ति का वास्तविकता का बोध करता है। पाराड ने अहं के 3 कार्यों का उल्लेख किया है: रुको (Stop), देखो (Look), तथा सुनो (Listen). इस बाह्य सत्य में पाराड तथा अहं उन्में आधार का प्रयोग करता है। इस प्रकार यह तीन तरीकों का सामना करता है।

मूल ध्यान किया इड में उत्पन्न होती है और अन्तर्नेत्र द्वारा निरोपित होती है। इस प्रकार जगत के बाहर से ही अहं उन सभी प्रणालियों का विकास करता है जिनके द्वारा अलंकरित चालकों, बाह्य खतरा तथा पराध के निषेधों से निपट जा सके।

सारांश में अहं:
1. परिणामों के विषय में सोचता है।
2. स्थितियों का पूर्वानुमान करता है जो अभी घटित नहीं हुई है।
3. समाधान के उपाय निर्धारित करता है।

फ्रांस अलेक्जैंडर ने अहं के कार्यों को 4 वर्गों में विभाजित किया है:
1. आन्तरिक विषयात्मक इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का प्रत्यक्षिकरण।
2. बाह्य तथा मानव वास्तविक मूर्तियों तथा अवसरों का प्रत्यक्षिकरण।
3. वास्तविक सिद्धांत के द्वारा संतुष्टि के लिए चयन तथा साधनों के प्रयोग करने में दो प्रकार के प्रत्येककरण के बीच एकीकरण तथा समझौता करना।

4. चेतन ऐच्छिक व्यवहार का नियोजन तथा प्रथम करना।

4.3 वैश्विक समाज कार्य में अहम

अहम का प्राथमिक एवं मूलभूत कार्य व्यक्तित्व में संलग्न बनाये रखना है। व्यक्तित्व पर दो कारकों का प्रभाव पड़ता है: आन्तरिक आवश्यकताओं एवं बाह्य वास्तविकता। आन्तरिक आवश्यकताओं अपनी पूरी शक्ति के साथ उहें अपने को संतुष्ट करने का प्रयास करती हैं परंतु बाह्य पर्यवेक्षण केवल उन्हें आवश्यकताओं को पूरा करने देता चाहता है जो केवल मान्य हैं अतः दोनों में संगति चलना करता है। अहं इस संगति को दूर करता है और आन्तरिक आवश्यकताओं पर नियंत्रण लगाता है। यह एक सक्रिय कारक है जिसके द्वारा एक कठिन परिस्थिति का सामना किया जाता है। अहं अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अचेतन तथा चेतन दोनों प्रकार के पंटरों तथा साधनों का प्रयोग करता है। यह उस समय तक सामाजिक प्रकरण से कार्य करता है जब तक व्यक्ति की आन्तरिक एवं बाह्य आवश्यकताओं में एकीकरण बना रहता है तथा कम से कम अचेतन होता है। अहं की शक्ति आलू से समन्वित होती है। आलू बदने के साथ-साथ इसमें संयुक्त, नियंत्रण एवं एकीकरण की शक्ति बढ़ती जाती है।

वैश्विक समाज कार्य में सेवार्थी के अंत की शक्ति को समझने का सबसे पहले प्रयत्न किया जाता है। उसके आगाम पर ही चिकित्सक की विधियों का उपयोग होता है। कमजोर अहं को अनेक साधनों एवं विधियों द्वारा सुदृढ़ बनाकर समस्या-समाधान करने का प्रयत्न किया जाता है। वैश्विक समाज कार्यकर्ता का प्रमुख लक्ष्य सेवार्थी में स्वयं ऐसी शक्ति (अहं) का विकास करना होता है जिससे वह स्वयं आन्तरिक एवं बाह्य कठिनाईयों को निपटाने में योग सिद्ध हो सके।

यद्यपि वैश्विक सेवा कार्यकर्ताओं ने सदैव ही अहं की समृद्धि कार्यक्रमका को ध्यान में रखकर कार्य किया है परंतु अधिकांशतः अहं को पूर्ति समझने का प्रयत्न नहीं किया है। वे बाह्य पर्यवेक्षण के संदर्भ में तो अच्छी जानकारी रखते हैं परंतु आन्तरिक व्यवहार को समझने में अपनी पूरी क्षमता प्राप्त नहीं कर पाती है। अहं समझान को समझने के लिए उहें अर्थ अचेतन अहं, जो दिन प्रतिदिन के कार्यक्रमों में निहित होता है, को समझना आवश्यक प्रतीत होता है। मैरी रिचमन्ड ने कहा है कि वैश्विक समाज कार्य में सामाजिक पृथ्वी शैक्षणिक कर्म करना प्रयास करता है। सामाजिक वास्तविकता का अर्थ यह नहीं है कि हम अचेतन तथा मूल प्रावृति सम्बन्धी व्यवहार को कम महत्व दें परंतु इसका अर्थ यह है कि इन दोनों का हमें अधिकांश ज्ञान हो। सामाजिक पहलुओं के अचेतन महत्व को समझा जाय तथा दिन प्रतिदिन की मान्यता इसमें अनेक व्यावहारिक प्रयासों को समझा जाय। सामाजिक कार्यकर्ता को चाहिए कि वह केवल स्थानान्तरण, अवरोध तथा अहं सुक्षमता प्रतिकृतों पर ही केवल ध्यान न दे बल्कि साधारणीपूर्खात्मक सामाजिक सूचनाओं को भी एकत्र करे। उसके अंत की समृद्धि गतिविधि का ज्ञान होना आवश्यक होता है। अंबः कार्यकर्ता इस ओर काफी ध्यान देने लगे हैं जिसके कारण मनोविश्लेषणत्मक ज्ञान तथा आधुनिक वैश्विक कार्य में सहयोग बढ़ता जा रहा है। वैश्विक कार्यकर्ता सदैव सेवार्थी के किया जाता है जोने का प्रयास करता है कि वह किस प्रकार से अपनी वैश्विक स्थिति का प्रत्येककरण करता है, किस प्रकार अपने पूर्व अनुभव का उपयोग करता है तथा किस प्रकार समय समाधान करने का प्रयास करता है। वैश्विक समथा के कितने से सेवार्थी तनावपूर्ण स्थिति होने के कारण, सही प्रत्येककरण नहीं कर पाता है। अतः कार्यकर्ता यह जानने का प्रयत्न करता है कि सेवार्थी ने किस प्रकार से सिमट दिनों में समान
परिस्थितियों का प्रत्यक्षीकरण किया है। कार्यकर्ता इस ज्ञान की उपलब्धि के पश्चात समस्या समाधान करने की शक्ति की खोज करता है। वह यह शक्ति का विकास करता है जिससे सेवाधीन समस्या का अधिक प्रभाव पूर्ण दंग से सामना कर सके। अंतः धर्मोत्सव का अध्ययन तथा निदान कार्यकर्ता को सेवाधीन के प्रत्यक्षीकरण, विचार तथा ज्ञान को जानने का अवसर प्रदान करता है।

वैयक्तिक कार्यकर्ता सेवाधीन के सम्प्रेषणाओं को भी जानने का प्रयाश करता है। वह यह भी जानता है कि सेवाधीन किस प्रकार अपनी समस्या का समाधान करना चाहता है। विदि सेवाधीन की सम्प्रेषण शक्ति अधिक श्रद्धा होती है तो वह समस्या समाधान में अपनी कोई भी रुचि नहीं प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त यदि संपर्कसङ्गम सम्प्रेषणाएं होती हैं तो सेवाधीन भ्रमित रहता है और वह निश्चय नहीं कर पाता है कि किस प्रकार समस्या समाधान सम्भव हो। जब तक सेवाधीन में नातव, भिन्नता तथा संघर्ष बना रहता है तब तक वह उचित प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पाता है। वैयक्तिक कार्यकर्ता इन बाधाओं को तून कर सेवाधीन के अंत को सुदृढ़ करता है। वह सेवाधीन से वर्तमान स्थिति में संतुलन बनाने की शक्ति का विकास करता है जिससे सेवाधीन स्वयं समस्या समाधान कर लेता है।

समाजवादी वैयक्तिक सेवा कार्य के द्वारा सेवाधीन की समाजवादी लक्ष्यवस्तु का विकास करके दिन प्रतिदिन के जीवन में संतोष प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। सेवाधीन को प्रायः समस्याओं की समस्या होती है। उसकी इस समस्या के अतिरिक्त समाजवादी समायोजन की भी समस्या होती है। इस समस्या का विकास व्यक्ति में समाजवादी कार्यकर्ता की कमी के कारण होता है। आधुनिक वैयक्तिक सेवा कार्य का विश्वास है कि व्यक्ति में समस्या होती है। इस समस्या का विकास व्यक्ति में समाजवादी कार्यकर्ता की कमी के कारण होता है। आधुनिक समाज कार्य का विश्वास है कि व्यक्ति में समस्या समाधान करने की अपेक्षा का कारण मिनी कारकों में से किसी भी कारक की कमी हो सकती है।

(1) उचित तरीकों द्वारा समस्या पर कार्य करने की सम्प्रेषण की कमी।
(2) उचित तरीकों द्वारा समस्या पर कार्य करने की क्षमता की कमी।
(3) अवसर (साधनों व तरीकों) की कमी।

उपयुक्त विश्वास के आधार पर वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता निम्न कार्य करता है:–
(1) सेवाधीन की सम्प्रेषण में परिवर्तन लाने के लिए दिशा निर्देशित करता है, शक्ति प्रदान करता है तथा अनुरोधताओं के आधार पर प्रयोग करने को प्रोत्साहित देता है। वह सेवाधीन की अपेक्षा की विचित्री को कम करने के आवश्यक तथा सुझाव प्रदान करता है जिससे अंतः सुझावात्मक प्रयोगों में कमी आती है। परिवर्तन की आशा में वृद्धि होती है जिससे कार्य में संलग्न अंत: शक्ति बल के साथ कार्य करती है।
(2) सेवाधीन की मानसिक, सांस्कृतिक तथा ब्रिज्यात्मक क्षमताओं का ज्ञान कराकर उनका उपयोग समस्या समाधान के लिए करता है। इस कार्य के अन्तर्गत कार्यकर्ता अंतः के कार्यों, प्रत्यक्षीकरण, भावना, ज्ञान, चयन, निर्णय तथा किमियों को समस्या समाधान के लिए अवसर प्रदान करता है।
(3) कार्यकर्ता उन साधनों, शौचों तथा तरीकों को प्रदान करता है जो समस्या समाधान के लिए आवश्यक होते हैं।

4.4 आहम के प्रमुख विशेषताएं
1. यह व्यक्तित्व का चेतन भाग है।
2. यह तागित्व होता है।
3. इसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है।
4. ये अनुसार से विकसित होती है।
5. अचेतन मन की इच्छाओं प्रशस्त करता है।
6. यह समायोजन का मार्ग प्रशस्त करता है।
इड तथा आन्तर यह है कि इड केवल मस्तिष्क के विषयात्मक वास्तविकता पर आधारित होता है जबकि अहम मस्तिष्क की बस्तु तथा बाह्य स्थिति में अन्तर स्पष्ट करता है।
अहं द्वितीयक प्रक्रिया है जिसका तत्पर्य बलार्थ को ऐसी कार्य योजना के द्वारा प्राप्त किया जाये जिसका विकास तर्क द्वारा हो। इसी समस्या को सुलझाना या चिंता करना कहते हैं।
अंह की ऊर्जा नहीं होती है। विषय समरण, निर्माण चिंतन आदि द्वारा यह कार्य करता है। तनाव से मुक्ति पाने के लिए अहं की आवश्यकता होती है। विषय तथा यथार्थ भेद करना होता है। जब किसी विषय का चिंता विषय के अनुकूल होता है तो चिंता और बाह्य में तात्त्विक स्थापित हो जाता है। तात्त्विक की प्रक्रिया के फलस्वरूप ऊर्जा को चित्र में न खर्च करने बाहर जाता है। उचित विषय की ओर मोड़ दी जाती है। यहाँ पर इच्छापूर्ति के रूप में तात्त्विक चित्र आ जाता है। ऊर्जा का इड से संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में आ जाने अंह की विकास का प्रमुख चरण है।

4.5 सारांश
प्रस्तुत इंकाई में वैचित्र्यक समाज कार्य के अहम का वर्णन किया गया है। इसके अर्थ तथा परिभाषाओं का विश्लेषण किया है। विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग तरीक़ों का प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात वैचित्र्यक समाज कार्य में अहम के महत्व को दर्शाया गया है तथा अंत में अहम की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. वैचित्र्यक समाज कार्य में अहम के अर्थ एवं परिभाषाओं का वर्णन कीजिए।
2. वैचित्र्यक समाज में अहम को समझाइये।
3. अहम की प्रस्तुत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ
सिंह, डी. के. 0., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डियोल लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुनेत्र, वर्मा, आदि 0. श्री, भारत में समाज कार्य के क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी. डी. 0., मिश्रा, बी. ओ. ए. और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सिंह, डी. के. 0., भारती, ए. के. 0., मोल्यत भारत कोर्ट प्रेस मैथम 009, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, सुनेत्र, मिश्रा, पी. डी. 0., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
सिंह, डी. के., पालीवाल, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विधि के मूल तत्त्व, नयूरायल कुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्र, पी. डी., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.

मिश्र, पी. डी., सामाजिक वैष्णव सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
व्यक्ति व अनुकूलन

इकाई की संपर्का
5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 व्यक्ति व अनुकूलन
5.2.1 व्यवहार
5.3 मानव व्यवहार के प्रमुख सिद्धांत
5.4 व्यवहार का उद्देश्य
5.4.1 व्यवहार का प्रभाव
5.4.2 व्यक्तित्व
5.4.3 प्रस्थिति तथा भूमिका
5.4.4 दबाव
5.5 सारांश
5.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
5.7 सन्दर्भ प्राप्त

5.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के उपरांत व्यक्ति के व्यवहार का वर्णन कर सकेंगे मानव व्यवहार के प्रमुख सिद्धांतों का उल्लेख कर सकेंगे। मानव व्यवहार के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे। तपासाने व्यवहार के प्रभाव तथा व्यक्तित्व के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। प्रस्थिति तथा भूमिका के विषय में अध्ययन कर सकेंगे तथा दबाव के महत्त्व को समझ सकेंगे तथा अंत में व्यक्ति व अनुकूलन के विषय पर चर्चा कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में व्यक्ति व अनुकूलन का वर्णन किया गया है। व्यवहार का तत्परता व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण के प्रति किये गये प्रयुक्त से है। व्यक्ति प्रतिउत्तर समायोजन करने के लिए करता है। प्रत्येक क्षण व्यक्ति को बाह्य प्रेरक, आवश्यकताएं तथा सामाजिक प्राणी प्रभावित करते हैं, जिसके कारण उस पर दबाव पड़ता है। फलतः उसे तनाव
एवं चित्राफ की अनुभूति होती है। इस चित्राफ की कम करने तथा दबाव के तनाव को हटाने के लिए व्यक्ति जो कार्य करता है, उसे उस व्यक्ति का व्यवहार कहा जाता है। क्रायड़ ने जीवन शासक, अवरोध व्यवस्था, संगठन व नियंत्रण शक्तियों को इदमु, अधिमु तथा परहेमु कहा है। जब इन शक्तियों के कार्य के प्रवर्धन उपन्यास हो जाता है तथा अवरोध संन्दर्भ की स्थिति आ जाती है तब व्यवहारिक विषय होता है।

5.2 व्यक्ति व अनुकूलन

जो व्यक्ति मनोसामाजिक तथा सांसंगिक सहायता के लिए संस्था में आता है वह व्यक्ति चाहे पुकार हो, बैठी हो अथवा बालक हो, सेवार्थी कहा जाता है। यदापि सामाजिक संस्था में आने वाले सेवार्थी अन्य व्यक्तियों के समान ही होता है। उसकी भाग्या तथा संस्कृति प्राप्त, अथवा उसे बाल व्यक्तियों के समान होती है परंतु कुछ भिन्नताएं भी होती हैं। भिन्नताएं उस समय परिपथित होती है जब हम सेवार्थी को एक व्यक्ति के रूप में देखने का प्रयत्न करते हैं। उसका व्यक्तिव भिन्न होता है, उसके संबंधित तथा मानसिक गुण भिन्न होते हैं। परंतु प्रत्येक स्थिति में वह पूर्ण अनुभु किया जाता है। समस्या उसकी तर्क संबंधित हो, मनोवैज्ञानिक हो अथवा सांसंगिक हो वह प्रत्येक स्थिति में शारीरिक मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक विशेषताओं के साथ प्रतिक्रिया करता है। शारीरिक, भौतिक, सामाजिक, अनुभव, प्रतिक्रियागत, आकांक्षाएं, इच्छाएं, आदि संयुक्त होकर व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। वह शारीरिक मनोवैज्ञानिक-सामाजिक विशेषता तथा विविधता का चक्र व्यक्ति के साथ सभी रिश्तों में रहता है और इसके भाग का पृथक्कृत नहीं हो सकता है।

व्यक्तिक कार्यकर्ता सेवार्थी के समन्वय में जो जानकारी चाहता है उसका समन्वय उसकी समस्या से अधिक होता है। वह उन तथ्यों की खोज करता है जिनसे समस्या समझने, उसके निदान करने तथा समाधान करने में सहायता मिलती है। समस्या की प्रकृति ही निर्धारित करती है कि किस प्रकार के ज्ञान के कार्यकर्ता को आवश्यकता है तथा किस प्रकार सेवार्थी सामाजिक अनुकूलन पुनः प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

5.2.1 व्यवहार

व्यवहार का तात्पर्य व्यक्ति के बाह्य पर्यावरण के प्रश्न किये गये प्रत्युत्तर से है। व्यक्ति प्रत्युत्तर समायोजन करने के लिए करता है। प्रत्येक क्षण व्यक्ति को आत्मार्थित तथा बाह्य प्रेरक, आवश्यकताएं तथा सामाजिक पर्यावरण प्रभावित करता है जिसके कारण उस पर दबाव पड़ता है। फलतः उसे नाच एवं चित्राफ की अनुभूति होती है। इस चित्राफ को कम करने तथा दबाव के तनाव को हटाने के लिए व्यक्ति जो कार्य करता है उसे उस व्यक्ति का व्यवहार कहा जाता है। इस प्रकार व्यवहार के अन्तर्गत एक समय में व्यक्ति द्वारा किये गये समस्त संबंध, विचार, दृष्टिकोण तथा कार्य आते हैं। व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों के अन्तर्गत वे सभी नाच आते हैं जिनका समाज का सदस्य होते हैं और सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने के कारण व्यक्ति से आशा की जाती है।

व्यक्ति क्यों व्यवहार करता है?

व्यक्तिक संगठन की विशेषताओं के कारण व्यक्ति के समस्त व्यवहार संरचित होते हैं। फ्रायड के अनुसार व्यक्तिव से तीन अंग या तीन शक्तियाँ हैं जो अनुसंधानित होकर कार्य करती हैं तथा व्यवहार करने के लिए बाध्य करती हैं। ये शक्तियाँ हैं - (1) इदमु, (2) अहमु, (3) परहेमु। इदमु का स्वरूप अवधारणा तथा प्रस्ताव जो आवश्यकताओं को भूल रूप में संतुष्ट करना चाहती है। अस्तव्यवहितक को बताता है तथा इच्छाओं पर
नियन्त्रण रखता है। परामितर व्यक्ति में आदर्श का निर्माण करता है। इस प्रकार व्यक्ति के अंतर्गत इच्छुक उपनृ हुई असामाजिक तथा असांस्कृतिक इच्छाओं पर अंह द्वारा नियन्त्रण किया जाता है तथा परामित्र द्वारा व्यक्ति को समाज के आदर्शों अथवा मूल्यों के अनुसूचित चलने के लिए प्रेरित किया जाता है।

5.3 मानव व्यवहार के प्रमुख सिद्धांत

मानव व्यवहार अनेक सिद्धांतों पर आधारित है। यहां पर कुछ प्रमुख सिद्धांतों या आधारभूत तथ्यों का उल्लेख किया जा रहा है:

1. व्यवहार अर्थ पूर्ण होते हैं।
2. व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थिति व्यवहार को प्रभावित करती है।
3. विभव अनुभव व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
4. सामाजिक पृष्ठभूमि व्यवहार के अंग को प्रभावित करती है।
5. वंश परम्परा पर विशेषताओं का प्रभाव पड़ता है।
6. व्यवहार चेतन व अचेतन दोनों प्रकार का होता है।
7. चर्चाएं स्थितियों का प्रभाव व्यवहार पर पड़ता है।
8. भविष्य की आशाओं का भी व्यवहार में महत्त्वपूर्ण स्थान है।
9. समर्पण में आने वाले व्यक्तियों का व्यवहार व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है।
10. कभी-कभी एक निश्चित आवश्यकता और लक्ष्य द्वारा परिचालित व्यवहार नवीन तथ्यों को जानकारी के पश्चात बदलता भी रहता है।

5.4 व्यवहार का उद्देश्य

व्यक्ति के व्यवहार का अर्थ एवं उद्देश्य संबंधित प्राप्ति करना, भनना को दूर करना एवं समस्या समाधान करना तथा कार्यात्मक संचालन बनाना है। व्यक्ति जीवन के प्रारंभिक काल से ही अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहता है। प्रारंभ में ये आवश्यकताएं प्रारंभिक होती हैं जैसे भोजन की आवश्यकता, शारीरिक एवं मानसिक भूख शांत करने के लिए होती हैं, सुरक्षा की आवश्यकता के कारण धन अर्जन, भ्रम, रूचियाँ उपलब्ध होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति की प्रसिद्ध तथा विशेष भिन्न-भिन्न होने के कारण उसके प्रसाधन तथा संस्कृति का स्तर भिन्न-भिन्न होता है। उसका व्यवहार अपने विचारों, रूचियों, भावनाओं तथा जीवाणुओं के अनुसरण होता है।

वैयक्तिक कार्यक्रम के लिए आवश्यक होता है कि वह सेवार्थि के सूत्र से सूत्रम व्यवहार का अवलोकन करे। यह यह समझे कि सेवार्थि क्या अनुभव कर रहा है, क्या सोच रहा है, क्या जिम्मेवारी कर रहा है, विगत जीवन में उसके निक विक्रांत से समस्याओं का समाधान किया है, विभिन्न स्थितियों में वह किस प्रकार प्रत्युत्तर करता है, उसका वास्तविकता के विकास सम्बन्ध है आदि। ये बातें जान लेने के पश्चात ही कार्यक्रम सेवार्थि की सहायता कर सकता है। विगत जीवन में इच्छाओं की संस्कृति से सम्बन्धित किये गये प्रत्युत्तर एवं व्यवहार जो सफलता एवं असफलता को प्रदर्शित करते हैं वे भविष्य के प्रस्तुतियों एवं व्यवहार करने के तरीके निक्षित करते हैं। अतः कार्यक्रम के सेवार्थि के पूर्व प्रस्तुताओं को जानना आवश्यक होता है।
5.4.1 व्यवहार का प्रभाव

व्यक्ति का व्यवहार उसका हित करने में प्रभावकारी है वा नहीं यह मूल रूप से उसके व्यक्तित्व संरचना की कार्यान्वयनका द्वारा निक्षिप्त होता है। मानव व्यक्तित्व में मनमोहक तीन शक्तियाँ पायी जाती हैं।

1. जीवन शक्ति, जिससे व्यक्ति राज्य प्रचार करता है तथा संयुक्त की ओर प्रवास करता है।

2. अवरोध व्यवस्था, रचना एवं भंधक होती है। इसके द्वारा इच्छाओं पर रोक लगाती है। इन्हें तथा उनके संयुक्त के दंग परिवर्तित होते-रहते हैं।

3. संगठित व नियमन कार्य जो समझौते को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति क्या चाहता है तथा उसमें किसी शक्ति है इसमें संयुक्त होना आवश्यक होता है। इन शक्तियों के द्वारा वैक्तिक एवं सामाजिक संयुक्त को बनाये रखा जाता है।

प्रयाद ने इन शक्तियों को इदम्, अहम् तथा पराहम् कहा है। जब इन शक्तियों के कार्यों पर व्यवधान उत्पन्न हो जाता है अथवा असंयुक्त की स्थिति आ जाती है तब व्यवहारिक विघटन होता है।

अचेतन सम्प्रेषणांके वेदत इदम् की मूल प्रबुद्धता के भ्राम से ही कार्य नहीं करती हैं। व्यक्ति का पराहम् भी युवावस्था तक अचेतन हो जाता है। अर्थात् इसका कुछ भाग अवयव चेतन में रहता है। व्यक्ति चेतन के प्रति उस समय अधिक सजज होता है जब वह कुछ करना चाहता है। परस्तु वह समाज द्वारा नया माहौल नहीं होता है। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी परीक्षा में रहा है। उसे कभी भी दूसरे की न तो नकल की है और न ही अनुचित साधनों का उपयोग किया है। क्योंकि ऐसा करना वह नैसिक अपराध मानता है तथा ऐसा करने से अप्रशिक्षा अनुभव करता है।

परस्तु यदि उसे परीक्षा में एक अच्छी कठिन प्रश्न-पत्र मिला जाता है जिसका उत्तर उसे नहीं आता है। उस समय इसका इदम् कहता है कि अब उसकी प्रतिशत जाने वाली है। इसका जीवन खतरे में है (अर्थात् परीक्षा में फेल हो जायेगा) अब वह चेतन के प्रति जागरूक होता है। क्योंकि प्रश्न पत्र का उत्तर न जानने से उसे क्लेश भी होता है। चेतन कहता है कि अनुचित साधनों का उपयोग न करो, आत्म सम्मान बनाये रखो, सफलता असफलता पर ध्यान न दो या आप नकल में पकड़े गये तो क्या होगा। इस प्रकार चेतन की ये तीन मिन-मिन आवाजें आती हैं। प्रथम पैतृक सीख का प्रभाव, दूसरा स्वयं का प्रभाव तथा तीसरा मनस्तंभ के चेतन भाग का प्रभाव क्योंकि वह परिणाम जानता है तथा चतुर्थ के भय से हृदय रखना चाहता है। परस्तु नकल करना गलत नहीं मानता। विद्यार्थी में आनेवाली संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। अभि संघर्ष को दूसरे का प्रयास करता है। अभि वर्तमान कार्य को उद्धीत ठहराने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए पूर्व का पूरा उपर नकल से दिया जाये, केवल कुछ प्लाइट देखना नकल नहीं है। इसका अर्थ उसे उचित उत्तर का व्यक्ति को संबंधित दिलाता है। परस्तु मुद्दा पराहत शक्तिशाली होता है तो कार्य के पश्चात् अपराध की भावना धीर-धीरे जाग्रत हो जाती है। पराहम् बालक में आयामगति तथा पश्चाताप की भावना को निकासित करता है।

5.4.2 व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की संरचना तथा कार्यान्वयन की उपस्थिति वंशानुगत तथा शारीरिक विशेषताओं से होती है तथा जो सदैव भौतिक मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक पर्यावरण एवं वैक्तिक अनुभवों से निर्देश अन्तर्भूत करता है।

वंशानुगत विशेषताएं व्यक्तित्व की विशेषताओं को निर्धारित करती हैं। ऐसे अनेक परीक्षाओं तथा अनुभवों से सिद्ध किया जा चुका है। प्रारंभिक अवस्था में वंशानुगत गुण प्रभावकारी होते हैं परस्तु आये बच्चों
पत्रिका अपना प्रभाव दालता है। परिवार, स्कूल, पढ़ाई, खेल तथा साथी, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक संस्कृति, व्य्करण अथवा अर्थव्यवस्था के साथी को भी जीवन में खोजना होता है। उसका वर्तमान स्थिति-भूमिका, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक से सम्पर्क बना रहता है और निर्देश परिवर्तन होता रहता है।

वैयक्तिक कार्यक्रम के लिए सेवाएँ के व्यक्तित्व की विशेषताओं को जानना आवश्यक होता है।

जीवन के किसी भी स्तर पर व्यक्ति ने केवल प्रौढ़ता था और प्रक्षेपण से विकसित होता है बल्कि वर्तमान तथा भविष्य से भी प्रभावित होता है तथा विकास की स्थिति में रहता है।

बचपन की अवस्था में सीखने की क्षमता अधिक होती है। परन्तु सुविधाओं में कम हो जाती है, शरीर का बढ़ावा कम हो जाता है तथा प्रत्युतर में अन्तर आता जाता है। कुछ प्रत्युतर पूरी करने के कारण व्यक्ति का अंग बन जाते हैं। प्रतिक्रिया का एक रूप हो जाता है और प्रयोक्ति का एक ढंग, तरीका व कार्य पद्धति विकसित हो जाती है। परन्तु इन विशेषताओं के दृष्टिकोण होने पर भी जीवन के अन्तिम क्षणों तक परिवर्तन सम्पन्न होता है। यह परिवर्तन प्रयागभाव या विपरात, उन्नति तथा विकास, रचनात्मक तथा ध्वनिसाधक दोनों प्रकार का हो सकता है। यह तथ्य दिन प्रतीत किया जाता है जिस से प्रकट होता है। हम चाहें ही सीखा हो या बाहुल, अवसाद हो या अप्रसन, खुश हो या उखड़ी दोनों की प्रक्रियाओं में न केवल पूर्व अनुभव का प्रभाव होता है बल्कि वर्तमान जो अनुभव करते हैं उसका भी प्रभाव पड़ता है।

अत: प्रत्युतर में अन्तर आ जाना स्वभाविक हो जाता है। पूर्वकृ प्रत्युतर में सुधार होता है तथा उक्त पुनर्गतित्व भी होता है। अत: यह सिद्ध हो जाता है कि व्यक्ति पर न केवल रचनात्मक बल्कि वर्तमान अनुभव भी अपना महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। अत: कार्यक्रम के लिए आवश्यक होता है जो वह सेवाएँ की वर्तमान जीवन पद्धति व स्थितियों से अवगत हो। उन वास्तविकताओं का ज्ञान प्राप्त करने वाले सेवाकर्ता दोनों सेवाओं पेश करने का है जिसमें सेवाएँ पेश करना हो रहा है। वह इसको भी समझ ले कि इन वास्तविकताओं में कितना परिवर्तन हो सकता है जिससे कि उपचार प्रक्रिया होने पर सांगीतिक असंख्य उपचार हो जाय।

अत: वैयक्तिक कार्यक्रम के लिए आवश्यक होता है कि वह सेवाएँ की वर्तमान जीवन पद्धति व स्थितियों से अपगात हो। उन वास्तविकताओं से अपगात हो जिनसे सेवाएँ पेश करना हो रहा है।

व्यक्ति पूर्व अनुभव से प्रत्येकवर्तित होता है तथा वर्तमान से प्रभावित होता है परन्तु भविष्य का भी काफी सीमा तक प्रभाव प्रभाव पड़ता है। हम क्या सीमा हैं, हम क्या कर सकते हैं, हम किस प्रकार अनुभव करते हैं, हम क्या उद्देश्य निर्धारित कर रहे हैं, भविष्य की क्या आशाएँ हैं, आकांक्षाएँ क्या हैं और अभिव्यक्ति का भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार वर्तमान की संस्कृति भविष्य के रूप ने प्रभावित होती है।

वैयक्तिक कार्यक्रम के लिए आवश्यक होता है कि वह जाने कि सेवाओं की सहायता की तरीका सकारात्मक हो अथवा नहीं, कहाँ तक सहायता की तरीका सकारात्मक हो भविष्य में सेवाओं की क्या आशाएँ हैं तथा वह क्या चाहता है।

5.4.3 प्रस्तिथिति तथा भूमिका

व्यक्ति का वर्तमान व्यवहार तथा भविष्य में परिवर्तित होने वाला व्यवहार उन आकांक्षाओं द्वारा निर्धारित एवं निर्धारित होता है जिसको उसने तथा उसकी संस्कृति ने उसकी स्थिति में तथा उन सामाजिक भूमिकाओं में जिनको वह पूरी करना है, पिरोया है।
5.4.4 दवाच

भाषा जो सेवार्थी के लिए आता है सदैव दवाच की स्थिति में होता है।

समाज की प्रकृति कुछ भी हो-पर्यावरण का दवाच या असफलता, आन्तरिक संघर्ष, सामाजिक भूमिकाओं से उत्पन्न भवनाशा, उदेश्य पूरा करने के मार्ग में अनेक बाधाएं आदि, सेवार्थी सदैव मानसिक दवाच की स्थिति में रहता है। सेवार्थी पर दवाच दो प्रकार का होता है।

(अ) सेवार्थी जिसको स्वयं समस्या मानता है तथा तनाव एवं दवाच अनुभव करता है।

(ब) असमान्तरता जिससे तनाव बढ़ता है।

अंद की शक्ति समस्या समाधान करने में कमजोर हो जाती है तथा अस्थायी रूप से बाधित हो जाता है। चूंकि व्यक्ति एक शारीरिक मनो-सामाजिक संगठन है अतः जब किसी एक अंग पर भ्रामक पड़ता है तो सभी अंगों प्रभावित होते हैं। अतः वैयक्तिक कार्यक्रम को सेवार्थी की शारीरिक व मनोसामाजिक स्थिति का ज्ञान आवश्यक होता है।

वैयक्तिक समाज कार्य में सेवार्थी की अनुकूलन प्रविद्याओं की शक्तियों, शक्तियों, प्रभावों आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। सेवार्थी में अनुकूलन करने की कितनी शक्ति एवं क्षमता है, यह निश्चित करती है कि सेवार्थी सामाजिक पर्यावरण से समापन करने में कहीं तक सफल होंगा। तनावपूर्ण स्थिति को किस प्रकार सुलझाने का प्रयास करता है तथा अपने प्रत्यक्षों को किस प्रकार परिवर्तित करता है। यह निश्चित करता है कि उसको कठिनाई एवं समस्या को कितनी जल्दी दूर किया जा सकेगा। वैयक्तिक समाज कार्यक्रम यह जान लेने के पक्षात्तील प्रकार के प्रयास करता है वह या तो व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को सम्मत प्रदान करके अनुकूलन को सम्भव बनाता है या फिर सामाजिक स्थिति में ही परिवर्तन का प्रयास करता है। व्यक्ति तनावपूर्ण स्थिति से अनुकूलन तीन प्रकार से करता है।

1. अभ्यस्त एवं पूर्ण निश्चित तरीकों के उपयोग द्वारा।
2. संघर्ष समापन अथवा कल्पना की उठान द्वारा।
3. उदासीनता, मानसिकता उम्मीद, प्रत्याहार, अगतिशीलता अथवा अतिक्रिया द्वारा।
यदि से सबसे सर्वश्रेष्ठ अपनी समस्या का समाधान अपने पूर्व तरीकों एवं अभ्यस्त प्रतिविधियों द्वारा करने का प्रयत्न करता है। यदि इस प्रकार उसकी समस्या का समाधान नहीं होता है और कठिनाइयाँ से प्रभावित होती हैं। इस स्थिति में वह या तो संख्यात्मक करता है या अपने को उस स्थिति के अनुकूलन बना लेता है अथवा उस स्थिति के दूर होने का प्रयत्न करता है। यदि वह भी तरीके असफल हो जाते हैं तो वह समस्या के प्रति उदासीन होकर मानविक विकास के लक्षण उद्देश्य कर लेता है।

यदि से सबसे सर्वश्रेष्ठ अपनी समस्या का समाधान अपने पूर्व तरीकों एवं अभ्यस्त प्रतिविधियों द्वारा करने का प्रयत्न करता है। यदि इस प्रकार उसकी समस्या का समाधान नहीं होता है और कठिनाइयाँ से प्रभावित होती हैं। इस स्थिति में वह या तो संख्यात्मक करता है या अपने को उस स्थिति के अनुकूलन बना लेता है अथवा उस स्थिति के दूर होने का प्रयत्न करता है। यदि वह भी तरीके असफल हो जाते हैं तो वह समस्या के प्रति उदासीन होकर मानविक विकास के लक्षण उद्देश्य कर लेता है।

5.5 सारांश
प्रस्तुत इकाई में यथिविवेक अनुकूलन की अवधारणा का वर्णन किया गया है। व्यवहार के अर्थ तथा मानव व्यवहार के प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन कर जान प्राप्त होता है। व्यवहार के प्रमुख उद्देश्यों में व्यवहार का प्रभाव, व्यक्तित्व, प्रतिष्ठितता तथा भूमिका और द्वारा का अध्ययन किया गया है।

5.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. अनुकूलन क्या है? समझाएं
2. मानव व्यवहार के प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।
3. व्यवहार क्या है? वर्णन कीजिए।
4. व्यवहार के उद्देश्यों को संक्षिप्त रूप से वर्णित कीजिए।

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ
सिंह, सुरेन्द्र, मिश्र, पी॰ डी॰, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2006.

सिंह, डी॰ के॰, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुरेन्द्र, वर्मा, आर॰ बी॰ एस॰, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्र, पी॰ डी॰, मिश्र, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.

सिंह, डी॰ के॰, भारती, ए॰ के॰, सोशल वर्क कांसेप्ट एंड मैथमेटिक्स, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, डी॰ के॰, पालीबाल, सोरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विपणन के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्र, पी॰ डी॰, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.

मिश्र, पी॰ डी॰, सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
इकाई की रुपरेखा

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 वैयक्तिक समाज कार्य के सिद्धांत
6.2.1 वैयक्तिकरण का सिद्धांत
6.2.2 भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन का सिद्धांत
6.2.3 नियंत्रित सांबंधित अन्तर्भाषितता का सिद्धांत
6.2.4 स्वीकृति का सिद्धांत
6.2.5 अनिर्णायक मनोवृत्ति का सिद्धांत
6.2.6 सेवाओं आत्मनिध्य का सिद्धांत
6.2.7 गोपनीयता का सिद्धांत
6.3 सरासर
6.4 अभ्यासार्थ प्रश्न
6.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

6.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत वैयक्तिक समाज कार्य के सिद्धांत को समझ सकेंगे। वैयक्तिक समाज कार्य के सिद्धांतों में प्रमुखता वैयक्तिकरण के सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे। भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन के सिद्धांत के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इसके पश्चात् नियंत्रित सांबंधित अन्तर्भाषितता का सिद्धांत तथा स्वीकृति के सिद्धांत का उल्लेख कर सकेंगे। अनिर्णायक मनोवृत्ति के सिद्धांत के विषय में भी अध्ययन कर सकेंगे तथा अंत में सेवाओं आत्मनिध्य के सिद्धांत तथा गोपनीयता के सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे।
6.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाइयाँ में वैैतिक समाज कार्य के सिद्धांत का वर्णन किया गया है। वैैतिक समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्ति की सहायता करना है जिससे वह अच्छा समायोजन कर सके। वैैतिक समाज कार्य की सहायता करता है, समस्या समाधान करता है तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। कार्यकर्ताओं के लिए मानव सम्बन्धों की प्रकृति का ज्ञान होना आवश्यक होता है, क्योंकि वह व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करता है। वैैतिक समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्ति की सहायता करना है जिससे वह अच्छा समायोजन कर सके। परन्तु ज्ञान की तब तक विशेष उपयोगिता नहीं होगी जब तक वह सम्बन्ध स्थापित करने की निर्देशन में दक्ष नहीं होगा। सम्बन्धों की चर्चितता सिद्धांतों पर आधारित होती है।

6.2 वैैतिक समाज कार्य के सिद्धांत

वैैतिक समाज कार्य एक कल्ता है जिसमें मानव सम्बन्धों के ज्ञान तथा सम्बन्धों की निरुपन का व्यक्ति की क्षमताओं तथा समुदाय के साधनों को क्रियाशील बनाने के लिए उपयोग किया जाता है ताकि वह अन्य लोगों अथवा पर्यावरण के साथ व्यवस्था करने में समर्थ हो सके। इस परिभाषा के अनुसार वैैतिक समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्ति की ‘सहायता करना’ है जिससे वह अच्छा समायोजन कर सके। वैैतिक समाज कार्य की सहायता करता है, समस्या-समाधान करता है तथा आवश्यकता की पूर्ति करता है। कार्यकर्ताओं के लिए मानव सम्बन्धों की प्रकृति का ज्ञान होना आवश्यक होता है क्योंकि वह व्यक्तिओं से सम्पर्क स्थापित करता है। ‘सम्बन्ध’ वह माध्यम होता है जिसके द्वारा कार्यकर्ताओं व सेवार्थियों के बीच मानव प्रकृति के ज्ञान का उपयोग किया जाता है। परन्तु ज्ञान की तब तक विशेष उपयोगिता नहीं होगी जब तक वह सम्बन्ध स्थापित करने की निर्देशन में दक्ष नहीं होगा।

"वैैतिक समाज कार्य एक कल्ता है जिसमें मानव सम्बन्धों के ज्ञान तथा सम्बन्धों की निरुपन का व्यक्ति की क्षमताओं तथा समुदाय के साधनों को क्रियाशील बनाने के लिए उपयोग किया जाता है ताकि अन्य लोगों अथवा पर्यावरण के साथ व्यवस्था करने में समर्थ हो सके।"

इस परिभाषा के अनुसार वैैतिक समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्ति की ‘सहायता करना’ है जिससे वह अच्छा समायोजन कर सके। वैैतिक समाज कार्य की सहायता करता है, समस्या समाधान करता है तथा आवश्यकता की पूर्ति करता है। कार्यकर्ताओं के लिए मानव सम्बन्धों की प्रकृति का ज्ञान होना आवश्यक होता है क्योंकि वह व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करता है। "सम्बन्ध" वह माध्यम होता है जिसके द्वारा कार्यकर्ताओं व सेवार्थियों के बीच मानव प्रकृति के ज्ञान का उपयोग किया जाता है। परन्तु ज्ञान की तब तक विशेष उपयोगिता नहीं होगी जब तक वह सम्बन्ध स्थापित करने की निर्देशन में दक्ष नहीं होगा। सम्बन्धों की चर्चितता कुछ सिद्धांतों पर आधारित है जिसका वर्णन अग्रिमलिखित इकाइयों में किया जा रहा है।

- वैैतिक समाज कार्य के निम्न प्रमुख सिद्धांत हैं:-
  1. वैैतिककरण का सिद्धांत
  2. भावनाओं का उद्देश्यपूर्ण प्रकटन का सिद्धांत
  3. नियंत्रित संबंधिक अनुभावितता का सिद्धांत
  4. स्वीकृति का सिद्धांत
6.2.1 वैष्णविकरण का सिद्धान्त

यूक्ति का वास्तविक अर्थ वैष्णविकरण से ही स्पष्ट होता है। तीव्रतियस के अनुसार यूक्ति तार्किक प्रकृति का वैष्णविक सारांश है। मानव प्रकृति जाति में समान होती है लेकिन प्रत्येक यूक्ति की वैष्णविक पहचान होती है। प्रत्येक यूक्ति अपने वंशानुक्रम, पर्यावरण, अन्तर्वेद ज्ञानात्मक क्षमताओं, योग्यताओं आदि में भिन्न होता है। प्रत्येक यूक्ति की भिन्न-भिन्न अनुभुति होते हैं तथा भिन्न-भिन्न आन्तरिक बाद्ध उत्तरक रूपों होते हैं। उसके संबंध तथा स्वीकार, विचार, भावनाओं तथा व्यवहार को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक यूक्ति की प्रस्तुति अपनी शक्तियों को विविध प्रकार से संगठित करके उन्हें निर्देशित करता है जिससे वे दूसरे यूक्ति की प्रस्तुति से भिन्न हो जाते हैं।

सन् 1930 में बर्जाजना राहिमने वैष्णविकरण के सिद्धान्त को वैष्णविक समाज कार्य के लिए महत्वपूर्ण बताया। मेरी रिस्काउ ने भी प्रभावपूर्ण वैष्णविक समाज कार्य के लिए वैष्णविकरण पर जोर दिया। वह सिद्धान्त प्रत्येक यूक्ति की विविध विशेषताओं को समझने पर बल देता है। यथापि बाहरीक रूप से सभी यूक्ति समान होते हैं, परंतु उनकी शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक आदि शक्तियों में अंतर होता है। जब तक इन विशेषताओं को पृथक-पृथक नहीं समझा जाएगा, तब तक सबसे समाज का उचित समाधान उपलब्ध नहीं होगा। और उचित समाधान स्थापित कर सकेगा। प्रत्येक यूक्ति को यह अधिकर है कि उसको एक यूक्ति के रूप में समझा जाय न कि मानव प्राणी के रूप में तथा अन्यत्र को महत्व दिया जाय। इसी मूलभूत पर वैष्णविकरण का सिद्धान्त आधारित है।

आधुनिक वैष्णविक समाज कार्य संस्थाओं केंद्रित है। यह यूक्ति विशेष की समस्या पर निर्भर है। निदान तथा उपचार का कार्य पृथक-पृथक संस्थाओं के लिए पृथक-पृथक होता है। योजना अलग-अलग बनानी जाती है। यूक्ति वैष्णविक से अलग अलग समाज स्वीकार किया जाता है। प्रत्येक संस्थाएं एक वैष्णविक है, प्रत्येक समाज एक विविध समस्या है तथा सामाजिक सेवा प्रत्येक संस्थाएं की परिस्थिति के अनुसार होनी चाहिए। समाज कार्य में यथापि सामाजिक मानव प्रकृति की विशेषताओं का ज्ञान प्रदान किया जाता है साथ ही साथ सामाजिक मानव व्यवहारों के तरीकों को बताया जाता है परंतु यह वैष्णविकरण पर विशेष बल देता है। इस प्रकार के ज्ञान से वैष्णविक समाज कार्यकलाओं को विस्तार करता तथा व्यवहार बिचार, भावनाओं, समस्याओं तथा कठिनाइयों को समझने में सहायता मिलती है।

इससे स्पष्ट होता है कि यूक्ति-व्यक्ति में अंतर होता है। प्रत्येक संस्थाएं भिन्न विशेषताएं रखता है। अतः उसकी आवश्यकताएं भी बदलती हैं जिससे यूक्ति विशेष की सहायता सम्भव होने से और संस्थाओं अपनी योग्यताओं और विशेषताओं को समस्या समाधान के लिए उपयोग में ला सके।

6.2.3 भावनाओं का उद्देश्यपूर्ण प्रकटन का सिद्धान्त

मनुष्य एक तार्किक प्राणी है। उसमें ज्ञान का भाषण है तथा कार्य करने की इच्छा व अनिच्छा होती है। उसमें परम्पर विशेषताएं जैसे चालक जैसी मूल प्रकृतियां भी होती हैं। भावनाएं, संबंध ज्ञानन्द्रियाँ अपना-अपना कार्य
करती है। व्यक्ति की ये सभी विशेषताएं संयुक्त होकर कार्य करती है। संयोग व्यक्ति की प्रकृतिका अभिनंदन आंग है और यह विशेषता पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक भी है।

मानव जीवन की सबसे बड़ी चुनौती संस्कृति को पॊलितिक व्यवस्थित रखने की है। कठिनाइयों के समय संयोग व्यक्ति पर आपिपत्र जमा लेते हैं जिसके कारण व्यक्ति नियंत्रण खो देता है। वह अताकिक मांगों के लिए जीवन्यापन करना चाहता है। इससे व्यक्तित्व का विश्लेषण होता है और मानसिक विकृतियां उत्पन्न हो जाती हैं।

व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता के अंतर्गत प्रेम, सृष्टि, प्रस्थिति, भावनाओं का स्पष्टीकरण, उपलब्धि, आत्म निर्भरता, आवश्यकताएं सम्मिलित है। अनुभूति में भाग लेना, समूह की स्वरूपवृत्ति प्राप्त करना, समूह के तरीकों को व्यवहार का आंशिक बनाने वे सभी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं हैं। यदि इन भावनाओं का उचित प्राप्त नहीं होता है तो निराशा उत्पन्न होती है। यद्यपि सभी निराशा की विद्युतियां हानिकारक नहीं होती है क्योंकि परिपक्वता के लिए निराशा उत्पन्न होना आवश्यक होता है लेकिन निराशा से हानिकारक मनोसुरक्षात्मक उपाय प्रयोग होने लगते हैं परिस्थितक असमान्य व्यावहारिक प्रतिक्रियाएं होने लगती हैं।

भावनाओं का उद्देश्य प्रकार का तात्पर्य सेवाएं को अपनी भावनाओं के स्पष्टीकरण में पूरी तरह हो देना है। प्राप्त नकाशात्मक भावनाओं का स्पष्टीकरण नहीं हो पाता है जिसके कारण संस्कृति का समझना कठिन होता है।

6.2.3 नियंत्रित सांस्कृतिक अनुभविता का सिद्धान्त

प्राचीन समझ को दिखाया प्रक्रिया है। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कुछ कहता है तो उससे भी प्रत्यक्ष चाहता है। यदि वह व्यक्ति कोई प्रस्तुति नहीं करता है तो समझना की अवस्था प्रक्रिया काम नहीं करती है। सामान्य रूप से समझने की विश्लेषण को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं: केवल विचार, केवल हार्मोनियां तथा विचार एवं हार्मोनिया की दोनों। यदि व्यक्ति स्पष्ट समझे पुकारा फूटाए है यह दिखाई देंगे के कारण कारण समझना भावनाओं का स्पष्टीकरण न के व्यक्ति स्वैपूर्व के लिए आवश्यक है बल्कि चिकित्सा, सम्बन्ध, सहयोग, संस्कृति के बीते के लिए भी आवश्यक है।

व्यक्ति में समझ कार्य में समझने की विश्लेषण प्राय: विचार तथा भावनाओं का मिश्रण होता है। विश्लेषण की प्रकृति कई कारकों पर प्रभावित करती है। जैसे-सेवाओं एवं संस्कृति का समझ, संस्कृति के कार्य, सेवाओं की आवश्यकताएं तथा भावनाएं, साकारतार से सेवाओं के परिपक्वता होने वाले विचार एवं धारणाएं, व्यक्तिक कार्यकर्ताओं का उद्देश्य अध्ययन, निराशा तथा उद्देश्य का रूप भी विश्लेषण की प्रकृति को निर्धारित करता है।

व्यक्तिक कार्यकर्ताओं को विचार तथा भावनाओं के समझने के लिए भावनाओं से स्वयं करना आवश्यक होता है। जब विश्लेषण कार्यकर्ताओं पर आपिपत्र होता है उस समय सहायता को प्रभावित करने के लिए व्यक्तिक कार्यकर्ताओं के संवेदन नहीं, नीतियों तथा समस्त उपलब्ध अनुभवों का ज्ञान हो जाए। जब भावना मात्र समझ होती है और व्यक्तिक कार्यकर्ता सहायता प्रदान करना चाहता है यह भी स्थिति में जब सेवाओं की भावनाओं के प्रकारों में होता होना सही है। व्यक्तिक समझ के तरीका की यह भावनाता सब से महत्वपूर्ण होती है।
6.2.4 स्वीकृति का सिद्धान्त

समाज कार्य में स्वीकृति शाब्द का उपयोग अत्यधिक किया जाता है। प्रत्येक समाज कार्यकर्ता इस शाब्द के महत्व से अवगत है तथा वैचारिक समाज कार्य में जहाँ पर कार्यकर्ता की सफलता समन्ध की प्रकृति पर निर्भर है, स्वीकृति सिद्धान्त का विशेष महत्व है। परंतु इस शाब्द की स्पष्ट परिभाषा अभी तक नहीं हो पाई है। स्वीकृति शाब्द के कई अर्थ हैं। जब किसी बस्ते के संदर्भ में उपयोग होता है तो इसका तत्त्व क्रांति करने से है या उपहार स्वीकार करने से है। जब बीडी प्रत्यय के रूप में उपयोग किया जाता है तो इसका तत्त्व वास्तविकता की जानने से है या अनुसूची प्रत्यय करने से है। जब व्यक्ति के संदर्भ में उपयोग होता है तो इसका तत्त्व व्यक्ति का आदर करते हुए उससे समन्ध स्थापित करना है। समाज कार्य साहित्य में स्वीकृति शाब्द की परिभाषा तक भी स्पष्ट रूप से नहीं दी गई है। कहाँ-कहाँ आधिक रूप से इसका स्पष्टीकरण मिलता है उसी को क्रमबद्ध रूप से वहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

रेनोल्ड, बेरथा सी के अनुसार, जब हम सेवाधीं को जैसा है बैसा समझ लेते हैं तथा मानव साधी के रूप में उसका समान करते हैं तो हम सेवाधीं को स्वीकृति प्रदान करते हैं।

हुसू, हेमा के शब्दों में, ‘‘वैचारिक समाज कार्य क्षेत्र को जैसा है बैसा स्वीकार करता है, वह विश्व स्पष्ट रूप से स्वीकृति के देता है’’। यह भौतिकता नहीं बल्कि व्यावसायिक उद्देश्य के कारण ऐसा करता है। यह सहाय्यकता, स्वीकृति प्रेम आदि प्रदर्शित करता है।

वैचारिक समाज कार्यकर्ताओं सेवाधीं को जैसा है बैसा ही जानने का प्रयास करता है, वहाँ प्रत्यक्षीकृत करना चाहता है, वहाँ रूप देखना चाहता है तथा उन्होंने गुणों को समझना चाहता है। इसी आधार पर वह सेवाधीं से समन्ध भी स्थापित करता है। इसका तत्त्व है कि सेवाधीं में वास्तविकता का चाहे जितना विषम हो, चाहे जितना सेवाधीं के प्रत्यक्षीकरण से उसका प्रत्यक्षीकरण भिन्न हो, पूर्व्यों में जितना भी अन्तर क्यों न हो, हम उसे बैसा ही स्वीकार करते हैं जैसा वह अपने को प्रदर्शित करता है। इसका यह तत्त्व नहीं है कि सेवाधीं में परिवर्तन की आशा नहीं रखते हैं बल्कि इसका तत्त्व यह है कि सहायता की कला स्वीकृति तत्त्व पर आधारित है और वहाँ से प्राप्त की जाय तो विशेष लाभकारी सिद्ध होगी। समाज कार्य का दृष्टि विश्वास है कि सेवाधीं के स्तर से ही कार्य प्राप्त होना चाहिए जिससे सफलता प्रत्येक स्तर पर मिलती रहे। इस अर्थ में स्वीकृति व्यावसायिक मनोवृत्ति या जीवन का एक गुण या एक सिद्धान्त है। स्वीकृति के निम्नलिखित अंग होते हैं:

1. समान करना
2. प्रेम करना
3. चिन्तकसात्मक समझा
4. प्रत्यक्षीकरण
5. सहायता
6. प्राप्ति करना

स्वीकृति क्रिया तीन प्रकार की होती है:-

1. प्रत्यक्षीकरण
2. उपचारात्मक समझा
3. अभ-स्वीकृति
6.2.6 अनिर्दिष्ट मनोवृत्ति का सिद्धान्त

समाज कार्य की यह दुःखी धारणा है कि व्यक्ति में आत्म निश्चय करने की अनुमति क्षमता होती है। इसी प्रकार के आधार पर वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता सेवार्थी को अपना मार्ग स्वयं निष्क्रिय करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सेवार्थी को अपनी रुचि के अनुसार वैयक्तिक समाज कार्य प्रक्रिया में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता होती है। उसके अधिकारों तथा आवश्यकताओं को महत्व दिया जाता है। कार्यकर्ता सेवार्थी की आत्म निर्देशात्मक क्षमता को तीव्र करता है तथा संस्था में उपलब्ध साहित्य का ज्ञान करता है सेवार्थी का आत्म निश्चय करने का अधिकार उसकी दीर्घकालिक प्रारंभिक निर्णय शक्ति की सीमा पर निष्क्रिय होता है। संस्था के कार्य के भी इस अधिकार को प्रभावित करते हैं।

वैयक्तिक समाज कार्य समन्वय का यह एक विशिष्ट गुण है। कार्यकर्ता अपनी प्रक्रिया में इसकी मनोवृत्ति को अनुप्रयोगिता है। इस मनोवृत्ति का उद्देश्य वैयक्तिक समाज कार्य का दर्शन है जो यह मानता है कि व्यक्ति का समस्या उत्पन्न करने में कोई दोष नहीं है या वह अपराधी नहीं है बल्कि परिस्थितियों इसके लिए उत्तरदायी हैं। यह व्यक्ति की मनोवृत्ति, स्तर तथा क्रिया-प्रक्रिया के कार्यों को महत्व देता है।

"निर्णय" का तात्पर्य व्यक्ति को किसी कार्य के लिए उत्तरदायी या उसकी आपातता को निष्क्रिय करने से रोकता है। यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा निष्क्रिय किया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति उस कार्य के लिए स्वयं दोषी है या उससे यह अपराधपूर्ण कार्य नहीं किया है। उसी आधार पर इसे दोषी ठहराया जाता है।

वैयक्तिक समाज कार्य के में भी निर्णय का यह अर्थ लिया जाता है। अर्थात् सेवार्थी पर दोषारोपण मौखिक या अन्य किसी प्रकार अपनी समस्या के लिए करता। समस्या के कारण चाहे पर्याप्तार्थी हों या व्यक्तित्व से सम्बन्धित हों सेवार्थी की सहायता करने में यद्यपि उसकी असफलताओं तथा कमियों को जानना आवश्यक होता है। लेकिन वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता का निर्णय करने का कोई उत्तरदायित्व नहीं होता है। निर्णय करने का अधिकार दूसरे अधिकारियों का होता है। समाज कार्य दर्शन, विश्लेषण, प्रेम, सहायता तथा सहयोग सिखाता है। इसका तेज विश्लेषण है कि व्यक्ति के विषय में कोई निर्णय लेना अतात्किक तथा अल्पावहारिक है। दोषी का तिरस्कार करना अथवा वाहिका करना कोई वृद्धिमानी नहीं है। ये भावनाएं सहायता प्रक्रिया में बाधा पहुंचाती हैं तथा सेवार्थी आत्मनिर्भर अनुभव करता है। समाज कार्य दर्शन के स्थान पर सहायता में विश्लेषण करता है।
6.2.6 सेवार्थी आत्म निधन का सिद्धान्त

प्रत्येक सम्प्रदाय की धिमुखी प्रक्रिया है। जब एक व्यक्ति कुछ व्यक्ति से कुछ कहता है तो उससे भी प्रत्युत्तर चाहता है। यदि वह व्यक्ति कोई प्रत्युत्तर नहीं करता है तो सम्प्रदाय की अभाव प्रकट होती है। फलतः संसार प्रक्रिया काम नहीं करती है। समाज के सम्प्रदाय की विशेषता को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं: केवल विचार, केवल भावनाएं तथा विचार एवं भावनाएं दोनों। जो व्यक्ति स्तर पर जाकर पूछताछ खिड़की पर किसी गाढ़ी जाने का समय पुकारता है इसका तात्पर्य वह केवल विचार सम्प्रेषित कर रहा है। वह केवल सूचना प्राप्त करना चाहता है तथा वास्तविक तथ्यों की आशा करता है। जब पति या पत्नी की मृत्यु पर किसी सम्पर्क से लुक दर्द बताता है, इसका तात्पर्य वह भावनाओं को सम्प्रेषित कर रहा है।

वैयक्तिक समाज कार्य में सम्प्रदाय की विशेषता प्राप्त होती है। विशेषता की प्रकृति कई कारणों पर निर्भर करती है। जैसे-सेवार्थी की समस्या, सशक्त वे कार्य, सेवार्थी की आवश्यकताएँ तथा भावनाएं, साक्षात्कार से सेवार्थी के परिवर्तनों के बाद विचार और धारणाएं, वैयक्तिक कार्यकर्ता का उद्देश्य आदि। अध्ययन, निदान तथा उपचार का रूप भी विशेषता की प्रकृति को निर्धारित करता है।

वैयक्तिक कार्यकर्ता का विचार तथा भावना के सम्प्रदाय के दोनों स्तरों पर नियुक्तावथा की आवश्यकता होती है। जब विशेषता स्तर पर आभारित होता है उस समय सहायता को प्रभावित नजर आने के लिए वैयक्तिक कार्यकर्ता को संस्था के तरीकों नीतियों तथा समूह में उपलब्ध अन्य स्रोतों का ज्ञान होता चाहिए। जब भावना प्रधान सम्प्रदाय होती है और वैयक्तिक कार्यकर्ता सहायता प्रदान करना चाहिए ऐसी स्थिति में उसे सेवार्थी की भावनाओं के प्रत्युत्तर में नियुक्त होना चाहिए। वैयक्तिक समाज कार्य की यह नियुक्ति सबसे महत्वपूर्ण नियुक्ति है।

6.2.7 गोपनीयता का सिद्धान्त

समाज कार्य मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं में विभिन्न तरीकों द्वारा उपयोग में लाया जाता है। जीवन के बहुत से पहलू ऐसे होते हैं जिसकी व्यक्ति बहुत ही गोपनीयता रखता है और जिससे घटित होने से उसे ही बताता है। अतः गोपनीयता सिद्धांत का दो रूपों में देखा जा सकता है: व्यावसायिक आचार संरचित के रूप में तथा वैयक्तिक समाज कार्य सम्बन्धित के रूप में।

गोपनीयता का तात्पर्य सेवार्थी की उन गोपनीय सूचनाओं को जिनको वह कार्यकर्ता से बताता है, गोपनीय रखने से है। यह सेवार्थी के मूल अधिकार से सम्बन्धित है। वह वैयक्तिक समाज कार्यकर्ता का उद्देश्य पक्षी है तथा वैयक्तिक समाज कार्य का मूलाधार है।

सेवार्थी जब संस्था में आता है तो वह समझ कर आता है कि उसे वैयक्तिक सामाजिक कार्यकर्ता से अनेक गोपनीय बातें बतानी होगी परंतु वह भी चाहता है कि अन्य लोग उन बातों की न जाने क्योंकि ऐसा होने से मानवहित होगी तथा वैयक्तिक भावनाओं को तब पूर्वनामों होते हैं। इसलिए पहले जब सेवार्थी को जाना है कि उसकी बातचीत गर्मी बातें कार्यकर्ता द्वारा गोपनीयता रखी जाएगी तभी वह स्पष्ट करेगा। वह जब जान लेता है कि संस्था की सहायता प्राप्त करने के लिए इस सूचनाओं को बताता आवश्यक हो, तभी बताता है और विवरण करता है कि वे सूचनाओं सहायक प्रक्रिया में लगे व्यक्तियों से परे लोगों को जान नहीं होगी। वह किसी भी प्रकार से अपनी ख्याति को कम नहीं करना चाहता है।
6.3 सारांश
प्रस्तुत इकाई में वैज्ञानिक समाज कार्य के सिद्धांतों का अध्ययन किया। वैज्ञानिक करण के सिद्धांत तथा भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन सिद्धांत के विषय में जाना। तपश्चात् निर्मित वैज्ञानिक अन्तभाविता के सिद्धांत का अध्ययन किया। स्वीकृति के सिद्धांत तथा अनिवार्यक मनोवृत्ति के सिद्धांत के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। इसके पश्चात् गोपनीयता के सिद्धांत तथा आत्म मिश्रण सिद्धांत के विषय में ज्ञानकारी प्राप्त की।

6.4 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. वैज्ञानिक समाज कार्य में सिद्धांतों के उपयोग पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. वैज्ञानिक करण तथा भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
3. निम्नलिखित पर दिया गया विषय लिखिए:-
   1. निर्मित सांस्कृतिक अन्तभाविता का सिद्धांत
   2. स्वीकृति का सिद्धांत
   3. अनिवार्यक मनोवृत्ति का सिद्धांत
   4. सेवार्थी में आत्म मिश्रण का सिद्धांत
   5. गोपनीयता का सिद्धांत

6.5 सन्दर्भ ग्रन्थ
मिश्र, पी. डी. (२००७), मिश्र, बौद्ध, व्यक्ति और समाज, न्यूरायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष २००७।
मिश्र, डा. प्रयागराम, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९९२।
मिश्र, पी. डी. (२०१२), मिश्र रोहित, समूह समाज कार्य, न्यूरायल बुक कंपनी, लखनऊ।
सिंह, डी. (२००८), भारती, ए. (२०००), सोशल वर्क कासेट एड मैथव्स, न्यूरायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष २००९।
सिंह, डी. (२०१०), पालीवात, सोशल, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विपटन के भूमिका, न्यूरायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष २०१०।
मिश्र, पी. (२००७), सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष १९७७।
सिंह, सुरेंद्र, मिश्र, पी. डी. (२००५), समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष २००६।
मिश्र, पी. (२०८५), सामाजिक वैज्ञानिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष १९८५।
सिंह, डी. (२०१२), भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय, रायल बुक डिग्रो लखनऊ, वर्ष २०११।
सिंह, सुरेंद्र, वर्मा, आर. बी. (२००९), भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष २००९।
उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के उपरांत बैठकिक समाज कार्य के सिद्धांत में बैठकिकरण सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में बैठकिकरण के सिद्धांत पर परिचय दिया गया है। बैठकिक समाज कार्य सेवाओं केन्द्रित है। वह बैठकिक सेवा के समस्याओं पर निर्भर करता है। निदान का उपचार का कार्य वृद्धि-पृथक सेवाओं के लिए पृथक-पृथक होता है। योजना अलग-अलग बनायी जाती है। बैठकिक सेवा के अलग-अलग समष्टि स्थापित किया जाता है।

प्रत्येक सेवाओं एक व्यक्ति है, बैठकिक समस्या एक विशेषता या समस्या है तथा सामाजिक सेवा प्रत्येक सेवाओं की परिस्थिति के अनुसार होती चाहिए। समाज कार्य में, यदि समाजान्वरण प्रकृति विस्तार प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान या प्रतिक्रियाओं में सहायता मिलती है।
7.2 वैष्णवीकरण का सिद्धान्त

सन् 1930 में ब्रजबान्धा रविवांने वैष्णवीकरण के सिद्धान्त का वैष्णविक समाज कार्य के लिए महत्वपूर्ण बताया। रूपांतरण के भी प्रभावण क्षणिक समाज कार्य के लिए वैष्णवीकरण पर जोर दिया। यह सिद्धान्त प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं को समझने पर बल देता है। व्यक्ति शारीरिक रूप से सभी व्यक्ति समान होते हैं। परंतु उनकी शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक आदि श्रमणताओं में अन्तर होता है। जब तक इन विशेषताओं को पृथक-पृथक नहीं समझा जायेगा तब तक सेवार्थी समस्या का उन्मुक्त समाधान दूर न होगा। और न उन्मुक्त समाजों में स्थापित कर सकेगा। वैष्णवीकरण की तरह अधिकार है कि उसको एक व्यक्ति के रूप में समझा जाय न कि मानव प्राणी के रूप में तथा अन्तरों को महत्व दिया जाय। इसी बौद्धाधार पर वैष्णवीकरण का सिद्धान्त आधारित है।

आधुनिक वैष्णविक समाज कार्य सेवार्थी वेतनित है। यह व्यक्ति विषेष की समस्या पर निर्भर है। निदान तथा उपचार का कार्य पृथक-पृथक सेवार्थी के लिए पृथक-पृथक होता है। योजना अलग-अलग बनायी जाती है। व्यक्ति व्यक्ति से अलग अलग समस्या स्थापित किया जाता है। प्रत्येक सेवार्थी एक व्यक्ति है। प्रत्येक समस्या एक विशिष्ट समस्या है। तथा सामाजिक सेवा प्रत्येक सेवार्थी की परिस्थिति के अनुसार निर्माण चाहिए। समाज कार्य में व्यक्ति सामान्य मानव व्यक्ति की विशेषताओं का ज्ञान प्रदान किया जाता है, साथ ही साथ सामाजिक मानव व्यवहारों के तरीकों को बदल जाता है परंतु यह वैष्णविक पर विषेष बल देता है। इस प्रकार के ज्ञान से वैष्णविक सामाजिक कार्यक्रम का विषयात्मक तथा वस्तुत विचारों, भावनाओं, समस्याओं तथा कठिनाइयों को समझने में सहायता मिलती है।

7.2.1 सेवार्थी के लिए आवश्यक वैष्णवीकरण

व्यक्ति का वास्तविक अर्थ वैष्णवीकरण से ही स्पष्ट होता है। बोधिसत्व के अनुसार व्यक्ति तार्किक प्रकृति का वैष्णविक सतर्कता है। मानव प्रकृति जाति में समान होती है तबकि प्रत्येक व्यक्ति का वैष्णविक अलग होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने वंशानुक्रम, परिवार, अन्तर्भूत जनात्मक श्रमणताओं, योजनाओं आदि में भिन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति के भिन्न-भिन्न अनुभव भिन्न होते हैं। तथा भिन्न-भिन्न आत्मात्मक बादल उठते हैं। उनके संबंधों, स्थितियों, विचारों, भावनाओं तथा व्यवहार को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति अपनी शक्तियों को विशिष्ट प्रकार से संगठित करके उन्हें निर्देशित करता है। जिससे वे दूसरे व्यक्ति की प्रकृति से भिन्न हो जाते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति-व्यक्ति में अन्तर होता है। प्रत्येक सेवार्थी भिन्न विशेषताएं रखता है। अतः उनकी आवश्यकताएं भी दूसरी से किसी न किसी रूप में भिन्न होती हैं। अतः वैष्णविक कार्य सहायता में भी भिन्नता होना अनिवार्य है। जिससे व्यक्ति विषेष की सहायता सम्भव हो सके और सेवार्थियों तथा योजनाओं तथा गौरवों को समस्या समाधान के लिए उपयोग में ला सकें।

7.2.2 वैष्णविक समाज कार्यक्रम की भूमिका

वैष्णवीकरण सिद्धान्त का उपयोग मनोगृह, ज्ञान तथा योजना पर निर्भर होता है। वैष्णविक कार्यक्रम में भिन्न गौरवों के होने पर भी वह इस सिद्धान्त का उपयोग सफलतापूर्वक कर सकता है।

50
(अ) अभिनव तथा पूवास्राह से स्वतन्त्र

सेवार्थी की समस्या के कारकों को दूर करने में ही उपचार प्रक्रिया सम्भव हैं। अतः कारणात्मक कारकों का उत्पन्न प्रत्यक्षीकरण एवं अभिज्ञान तथा इसमें निष्पक्षता का होना आवश्यक समझा जाता है। अभिनव तथा पूवास्राह होने पर कार्यकर्ता पूर्व संज्ञित आधार पर कार्य कारण सम्बन्ध निर्धारण में स्थापित कर सकता है। ये अभिनव जाति, धर्म, प्रजाति, तिंग, आर्थिक स्तर आदि किसी के प्रति हो सकते हैं। कार्यकर्ता को अपनी भावनाओं, आवश्यकताओं, प्रतिस्पर्धानात्तरण प्रतिपादियों का स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक होता है।

(ब) मानव व्यवहार का ज्ञान

मानव व्यवहार के तरीकों का ज्ञान होना आवश्यक होता है क्योंकि इसी संदर्भ में सेवार्थी को समझा जाता है तथा सहायता की जाती है। महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन करने में वैचारिक कार्यकर्ता को निर्देशन प्राप्त होता है। कार्यकर्ता का अन्य अनुभव यथार्थ सहायता होता है, परन्तु इसमें के व्यवहार को समझने के लिए पर्याप्त नहीं होता है। सामाजिक व्यवहार, ज्ञान अधिक प्रभावकारी एवं सहायता होता है। परन्तु व्यावसायिक सहायता पहुँचाने के लिए विज्ञान से प्राप्त व्यवहार का ज्ञान भी अनुभव के साथ सम्बन्धित होना चाहिए। कार्यकर्ता के लिए औषधिशास्त्र, मनोविज्ञान, मनोविकार विज्ञान, समाजवादिय तथा दर्शन का ज्ञान आवश्यक समझा जाता है क्योंकि इन विज्ञानों से व्यवहार के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़ता है।

(स) सुनना तथा अवलोकन करने की क्षमता

सुनना तथा अवलोकन करना दो महत्वपूर्ण साधन सेवार्थी को समझने के लिए हैं। सेवार्थी बात करना चाहता है तथा कार्यकर्ता सुनना चाहता है। जितना ही सेवार्थी की अपनी कहानी बताने के लिए उत्साहित किया जाता है, भावनाओं को स्पष्ट करने का अवसर दिया जाता है जबना ही अधिक ज्ञान कार्यकर्ता प्राप्त करता है। वह धीरे-धीरे व्यक्ति विवेचन की बातों से पृथक होकर समुदाय के समस्याओं के विषय में सोचता है। वह सम्पूर्ण सामाजिक परिस्थिति का अवलोकन करता है तथा इस सम्पूर्णता में व्यक्ति की भावनाओं एवं समस्याओं से सम्बन्धित का ज्ञान प्राप्त करता है।

(द) सेवार्थी की प्रगति के साथ-साथ कार्य करने की योग्यता

कार्यकर्ता प्रयोक्त सेवार्थी का अध्ययन करता है। वह उसकी क्षमताओं, योग्यताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करता है। परन्तु उसके लिए आवश्यक होता है कि वह उसी मानसिक स्तर से कार्य करना प्रारंभ करें जिस स्तर का सेवार्थी है। तभी सेवार्थी सामाजिक वैश्विक सेवा कार्य प्रक्रिया में भाग लेगा तथा संकलन में सहयोग प्रदान करेगा, निदान तथा उपचार प्रक्रिया में अपना योगदान करेगा। यदि सेवार्थी के स्तर का ज्ञान कार्यकर्ता को नहीं होगा तो वह यह समझेगा कि कार्यकर्ता उसकी सहायता नहीं करना चाहता है। सेवार्थी के पैदा से पर्यंत मिलाकर चलने से ही कार्यकर्ता सफल हो सकता है तथा सेवार्थी का पूर्ण विवेचन साधन कर सकता है।

(थ) सेवार्थी की भावनाओं को समझने की योग्यता

सेवार्थी के विशिष्ट विवेचना उसकी भावना होती है। एक ही समस्या भिन्न-भिन्न भावनाओं उपयोग करती हैं। वैचारिक कर्ताओं के द्वारा इन भावनाओं को जाना जा सकता है। तभी उसी के अनुसार प्रत्यय सम्बन्ध हो सकते हैं। वैचारिक कार्यकर्ता को सेवार्थी से आर्थिकता स्थापित करना अभिव्यक्ति होता है। उसे सेवार्थी के अनुभवों को
समझने की लालचा होनी चाहिए, उसके बिचारों को सुने तथा समाधान के तरीकों को उसी की इच्छानुसार निर्धारित करें।

(१) परिप्रेक्ष्य को बनाने रखने की योग्यता

सांबंधिक सम्मलन निर्धारित होना चाहिए जिससे कि वैयक्तिक कार्यक्षता परिस्थिति की विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझ सकें तथा जिससे वह समस्या का वस्तुत एवं विषयगत तथ्य प्राप्त कर सकें। परिचार तथा अन्य सामाजिक स्थितियों से सेवार्थी के सम्बन्ध की प्रकृति को जान सकें। वैयक्तिक कार्यक्षता सेवार्थी की पूर्णता में अध्ययन करना चाहिए है नया-नया उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने एवं समस्या समाधान करने की प्रीति से उसकी शारीरिक विशेषताओं की ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं। अचेतन मन की सम्प्रेरणाओं को जानने की उत्सुकता में चेतन इच्छाओं को उपेक्षित कर देते हैं। परतु ऐसा करने से सेवार्थी को सहायता पहुँचाने में आधा पड़ती है।

7.2.3 वैयक्तिकरण के साधन

सामान्यतः वैयक्तिकरण के निम्नलिखित साधन होते हैं:-

अ) विचार में विचार विचार

विस्तृत विचार विचार विचार से वैयक्तिकरण प्रकट होता है। समय का निर्धारण बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। सेवार्थी की सुविधानुसार यदि साक्षात्कार का समय निर्धारित होता है तो सेवार्थी को आत्मीयता का अभास होता है। इसके साथ ही साथ वैयक्तिक कार्यक्षता को अधिक से अधिक विचार-विचार करना चाहिए जिससे सेवार्थी की सहमति प्राप्त कर सकें।

ब) साक्षात्कार की गोपनीयता

साक्षात्कार का स्थान महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसी की विशेषता पर सेवार्थी का विचार निर्भर करता है। स्थान ऐसा होना चाहिए जहां पर वैयक्तिक तथा सेवार्थी के अतिरिक्त कोई न हो तथा आत्मीयता ध्यान दिया जाए। इस स्थिति में ही कार्यक्षता पूरा ध्यान सेवार्थी की ओर लगा सकेगा तथा सेवार्थी में कार्यक्षता के प्रति विचार जागत होगा।

स) साक्षात्कार के समय की पारंपरी

जब साक्षात्कार का समय पूरा निर्धारित होता है तो सेवार्थी को पूर्ण विचारायत होता है कि अमूक समय उसके लिए है और कार्यक्षता उस समय केवल उसी की समस्या सुलगना। यदि सेवार्थी को इंतजार करना पड़ता है तो भी वे के कारण समय कम मिल पाता है तो उसे संतोष नहीं होता है।

द) साक्षात्कार की तैयारी

कार्यक्षता के साक्षात्कार के लिए सेवार्थी से समझाएँ अभिलेख पढ़ें। इससे स्मृति में सभी बातें आ जाती है और सेवार्थी समझने लगता है कि कार्यक्षता उसमें रूचि ले रहा है। कार्यक्षता को भी बारतीय
का विषय चुनने में आसानी रहती है। वह व्यक्ति विशेष की समस्याओं को अधिक कुशलतापूर्वक समझ सकता है तथा विचार-विमर्श कर सकता है।

य) सेवार्थी को सहायता प्रक्रिया में सम्मिलित करना

यदि कार्यकर्ता को उनकी क्षमता के अनुसार समस्या के अध्ययन, निदान तथा उपचार में लगाय जाता है तो वह अपने को सुधारित अनुभव करता है। साथ ही साथ उसे आभास होता है कि वह एक व्यक्ति के रूप में समझा जा रहा है। उसे वह जान कराना आवश्यक होता है कि उससे जो आंकड़े एकत्रित किये जा रहे हैं उनकी क्या आवश्यकता है तथा समस्या के संदर्भ में उनकी क्या उपयोगिता है। उपचार के साधनों को सेवार्थी की स्वीकृति से निर्धारित करना चाहिए। उसे अपना निर्णय करने का अधिकार देना चाहिए। इससे सेवार्थी का आत्म-विश्वास जाग्रत होता है।

र) नमीयता

सामाजिक मैथिलक सेवा कार्य प्रक्रिया में नमीयता का होना भी मैथिलकरण में सहायता होता है। उपचारात्मक उद्योगों में समय के अनुसार परिवर्तन की आवश्यकता होती है। मैथिलक कार्यकर्ता में यह कामीयता होनी चाहिए कि वह समय और परिस्थिति के अनुसार प्रक्रिया में परिवर्तन कर सके।

7.3 सारांश

प्रस्तुत इकाई में मैथिलकरण के सिद्धांत का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात सेवार्थी के लिए मैथिलकरण की आवश्यकता के विषय में अध्ययन किया। मैथिलक सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका के विषय में जान प्राप्त किया तथा इकाई के अंत में मैथिलकरण के साधनों पर विचार किया गया है।

7.4 अभ्यासशार्थ प्रश्न

1. मैथिलकरण के सिद्धांत का विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।

2. मैथिलकरण सिद्धांत में सेवार्थी के लिए आवश्यक तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

3. मैथिलक सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका का वर्णन कीजिए।

4. मैथिलकरण के साधनों को समझाइयें।

7.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

मिठ्रा, पी॰ डी॰, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था, वर्ष 1977.
मिठ्रा, पी॰ डी॰, सामाजिक मैथिलक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था, वर्ष 1985.
मिठ्रा, पी॰ डी॰, मिठ्रा, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल कुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
मिठ्रा, डा. प्रयागदीन, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था, लखनऊ, 1992.
मिश्र, पी. डी. एवं मिश्र रोहित, समूह समाज कार्य, न्यू रायल बुक कम्पनी, लखनऊ, 2012.
सिंह, डी. के., भारती, ए. के., सोशल वर्क कान्सेप्ट एंड मैथडस, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालीब्राल, सीरम, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विभिन्न प्रकार के मूल तत्व, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
सिंह, सुनेत्र, मिश्र, पी. डी. के., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियां, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुनेत्र, बर्मा, आर. बी. एस. के., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 स्वीकृति का सिद्धान्त
8.2.1 स्वीकृति गुण के मापक
8.2.2 सेवाधीन की आवश्यकताएं
8.2.3 कार्यकर्ता की भूमिका
8.3 भावनाओं के प्रकटन का सिद्धान्त
8.4 अनिर्णायक मनोवृत्ति का सिद्धान्त
8.4.1 सेवाधीन की आवश्यकता
8.4.2 मूल्य तथा प्रतिमान
8.4.3 सांवेणिक तत्त्व
8.5 सारांश
8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
8.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

8.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-
1. स्वीकृति के सिद्धान्त के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. स्वीकृति गुण के मापक तथा सेवाधीन की आवश्यकताओं के विषय में वर्णन कर सकेंगे।
3. कार्यकर्ता की भूमिका को समझ सकेंगे।
4. तत्परता भावनाओं के प्रकटन के सिद्धांत के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
5. अंत में अनुगमनिक मनोवृत्ति के सिद्धांत के विषय में भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में स्वीकृति के सिद्धांत के विषय पर चर्चा की गई है। स्वीकृति शब्द के कई अर्थ हैं जब किसी वस्तु के सम्बंध में उपयोग होता है तो इसका तात्पर्य प्राप्त करने से ही या उपहार स्वीकार करने से है। जब बौद्धिक प्रत्यय के रूप में उपयोग किया जाता है, तो उसका तात्पर्य वास्तविकता की जानने से है या अनुकूल प्रत्युत्पाद करने से है। जब व्यक्ति के संदर्भ में उपयोग होता है तो इसका तात्पर्य व्यक्ति का आदर करने हुए उससे सम्बन्ध स्थापित करना है। इसके अतिरिक्त जब सेवार्थी को जैसा है वैसा समझ लेते हैं तथा मानव साध्वी के रूप में उसका समान करते हैं तो सेवार्थी को स्वीकृति प्रदान करते हैं। स्वीकृति व्यावसायिक मनोवृत्ति या जीवन का एक गुण या एक सिद्धांत है।

8.2 स्वीकृति का सिद्धांत
समाज कार्य में स्वीकृति शब्द का उपयोग अत्यधिक किया जाता है। प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता इस शब्द के महत्व से अवगत है तथा वैज्ञानिक समाज कार्य में जहाँ पर कार्यकर्ता की सफलता समान की प्रकृति पर निर्भर है, स्वीकृति सिद्धांत का विरोध महत्व है। परंतु इस शब्द की स्पष्ट परिभाषा अभी तक नहीं हो पाई है। स्वीकृति शब्द के कई अर्थ हैं जब किसी वस्तु के संदर्भ में उपयोग होता है तो इसका तात्पर्य प्राप्त करने से ही या उपहार स्वीकार करने से है। जब बौद्धिक प्रत्यय के रूप में उपयोग किया जाता है तो इसका तात्पर्य वास्तविकता की जानने से है या अनुकूल प्रत्युत्पाद करने से है। जब व्यक्ति के संदर्भ में उपयोग होता है तो इसका तात्पर्य व्यक्ति का आदर करने हुए उससे सम्बन्ध स्थापित करना है। समाज कार्य साहित्य में स्वीकृति शब्द की परिभाषा कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं दी गयी है। कहाँ-कहाँ आश्चर्य के रूप से इसका स्पष्टीकरण मिलता है। उसी को क्रमबद्ध रूप से यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

रेनोल्ड, बेरा सी के अनुसार, “जब हम सेवार्थी को जैसा है वैसा समझ लेते हैं तथा मानव साध्वी के रूप में उसका समान करते हैं तो हम सेवार्थी को स्वीकृति प्रदान करते हैं।“

हूस, बेरा के शब्दों में, “वैज्ञानिक समाज कार्य व्यक्ति को जैसा है वैसा स्वीकार करता है, वह बिना पूर्व-प्राप्त के स्वीकृति देता है। यह मित्रतावश्यक नहीं बल्कि व्यावसायिक उद्देश्य के कारण ऐसा करता है। वह सहायता, स्वीकृति प्रेम आदि प्रदान करता है।“

वैज्ञानिक सामाजिक कार्यकर्ता सेवार्थी को जैसा है वैसा ही जानने का प्रयास करता है, वहाँ प्रत्यक्षीकृत करना चाहता है, वहीं रूप देखना चाहता है तथा उन्हें गुणों को समझना चाहता है। इसी आधार पर वह सेवार्थी से समझ में भी स्थापित करता है। इसके तात्पर्य है कि सेवार्थी में वास्तविकता का चाहे जितना विघटन हो, चाहे जितना सेवार्थी के प्रत्यक्षीकरण से उसका प्रत्यक्षीकरण भिन्न हो, मूल्यों में कितना भी अन्तर क्यों न हो, हम उसे जैसा ही स्वीकार करते हैं जैसा वह अपने को प्रदर्शित करता है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि सेवार्थी में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं हो रही है बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि सहायता की कदम स्वीकृति तत्त्व पर आधारित है और वहाँ से प्रारंभ की जाय तो विशेष लाभकारी सिद्ध होगी। समाज कार्य का दूर विचार है कि सेवार्थी के स्तर से ही
कार्य प्रारंभ होना चाहिए जिससे सफलता प्रत्येक स्तर पर मिलती रहे। इस अर्थ में स्वीकृति व्यक्तियाँ या जीवन का एक गुण या एक सिद्धांत है। स्वीकृति के निम्नलिखित अंश होते हैं:

1. सम्मान करना
2. प्रेम करना
3. चिंतितसात्मक समझ
4. प्रत्यक्षीकरण
5. सहायता
6. प्राप्त करना

स्वीकृति क्रिया तीन प्रकार की होती है:-

1. प्रत्यक्षीकरण
2. उपचारात्मक समझ
3. अभिस्वीकृति

सेवाएं की स्वीकृति का तात्पर्य निम्नलिखित बातों से है:-

1. मानने के रूप में उसकी एकता, क्षमता, योग्यता में विश्वास
2. व्यक्ति के रूप में जैसा है उसी रूप में उसे स्वीकार करता है तथा सीमाओं सहित
3. मनोवृत्ति तथा व्यवहार असहयोग्य पूर्ण होने पर भी उसको स्वीकार करता
4. उसकी वास्तविक क्षमताओं को स्वीकार करता
5. सेवारूपी के रूप में उसे मानना तथा अपनी भावनाओं एवं रुचियों पर नियन्त्रण लगाना
6. सकारात्मक तथा नकारात्मक भावनाओं की स्वीकृति

8.2.1 स्वीकृति गुण के मापक

निम्नलिखित प्रकार के व्यवहार से स्वीकृति प्रदर्शित होती हैं:

1. स्मृति देना
2. खास कंधा
3. शिकायत को सुनना
4. आदर करना
5. रुचि प्रदर्शित करना
6. जीवन के अनुभवों को जानने की उत्सुकता प्रदर्शित करना आदि।

स्वीकृति के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं:

1. मानने के रूप में मूलभूत क्षमताओं में विश्वास तथा उनका आदर करना।
2. कठिनाई के समय सहायता करना।
3. दूसरे व्यक्ति के सुख में बुद्धि करना।
4. रोगमुक्त होने में सहायता करना।
5. जीवन दशा तो पुनः नियन्त्रण प्राप्त करने में व्यक्ति की सहायता करना।

8.2.2 सेवार्थी की आवश्यकताएं

जो व्यक्ति सहायता के लिए संस्था में आता है उसकी मुख्य विशेषता उसका असंतोष होता है। वह अपनी वर्तमान स्थिति के प्रति क्रुद्ध होता है, उसे अपनी दिनचर्या से असंतोष अनुभव होता है। वह परीक्षण चाहता है। लेकिन वह पर्यावरणीय दबाव तथा सीमाओं एवं बंधनों के कारण स्वयं परीक्षण करने में असमर्थ होता है। वह अपने से खुश नहीं होता तथा उसमें युग्मामुद्दी की स्थिति कभी-कभी प्रकट होती है। एक तरफ तो वह अपनी कठिनाइयों एवं असफलताओं के विषय में जागरूक रहता है दूसरी तरफ उसे अपनी महत्ता तथा मूल्य का भी ज्ञान होता है। परीक्षण की इच्छा तथा परीक्षण करने की क्षमता प्रत्येक व्यक्ति में मिलन-भिन्न होती है। जब वह अपनी समस्याओं से निपटने के लिए सहायता लेता है तो उसमें एक विशेष प्रकार की भावना तथा मनोवृत्ति जागृत हो जाती है।

सेवार्थी चाहता है कि वह अपनी कठिनाई को वैयक्तिक कार्यक्रम के लिए बताये जिससे वह सहायता अधिक कर सके, परन्तु वह साथ-ही-साथ यह भी सोचता है कि कहीं कार्यक्रम उसे ‘व्यक्ति’ से कम न समझने ले। उसे भय या डर रहता है कि कार्यक्रम उसे शक्तिहीन, कमजोर तथा अपराधी न समझने ले। वह अनुशंसन से डरता है। इस भय के उपरान्त अनेक प्रतिक्रियाएं होती हैं। वे प्रतिक्रियाएं समस्या की प्रकृति तथा सेवार्थी के व्यक्तित्व पर निर्भर करती हैं।

8.2.3 कार्यक्रम की भूमिका

वैयक्तिक समाज कार्य में कार्यक्रम की निम्नलिखित भूमिकाएं इस सिद्धांत के पालन के अंतर्गत आती है:-
1. वैयक्तिक कार्य सम्बन्ध को वास्तविक आधार पर बनाना।
2. निर्देश समस्या के वास्तविक तथ्यों की खोज करना।
3. सेवार्थी की शक्तियों एवं कठिनाइयों को जानना।
4. सेवार्थी की असफलताओं का पता लगाना।
5. असफलताओं से अवगत होना।

सेवार्थी की स्वीकृति के लायक में निम्नलिखित वादाध्य आती है:-
1. मानव स्वभाव के तरीकों का अपूर्ण ज्ञान।

वैयक्तिक कार्यक्रम की मनोवैज्ञानिक तथा मनोवृत्तात्मक सीमाओं मानव स्वभाव के ज्ञान की आवश्यकता होती है। उसे सामान्य सांस्कृतिक तथा आर्थिक समस्या की प्रतिक्रियाएं तथा मनो-रचनाओं का भी ज्ञान होना चाहिए। इससे
कार्यकर्ताओं में दक्षता बढ़ती है और सेवार्थी को स्वीकृति देने में सहायता मिलती है। इसकी अनुसूचिति में वह वास्तविक तथ्यों एवं कारकों को अपने में ही छोड़ देता है।

2. आत्मा के कुछ तथ्यों को स्वीकार न करना।
कार्यकर्ताओं कभी-कभी अपने समाज ही नकारात्मक तथा अवांछनीय कारकों को सेवार्थी में पाता है। यदि वह अपने इन कारकों को प्रतिक्रियापूर्वक न कर देता है तो सेवार्थी की भी सहायता करने में असमर्थ रहता है। जब वह अपनी भावनाओं से निपटने में असमर्थ हो चुका होता है तो वह उन्हीं दशाओं में सेवार्थी की सहायता नहीं कर सकता है।

3. अपनी भावनाओं को सेवार्थी पर आरोपित करना।
कार्यकर्ताओं को सेवार्थी पर अपनी भावनाओं को आरोपित नहीं करना चाहिए। न ही सेवार्थी के व्यवहार का अर्थ अपने से नहीं जोड़ना चाहिए।

4. पश्चात तथा पूर्वाग्रह से पूर्ण होना।
पश्चात तथा पूर्वाग्रह की भावनाएं कार्यकर्ताओं के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। अतः वह सेवार्थी को स्वीकृति देने में असमर्थ रहता है।

5. अनावस्थक पुनर्लिखण करना।
कार्यकर्ताओं सेवार्थी को विश्वास दिलाता है और यह विश्वास मनोवैज्ञानिक आलम्बन का कार्य करता है। यदि यह विश्वास अवास्थक होता है तो सेवार्थी कार्यकर्ता की क्षमता के प्रति शक्ति उत्पन्न करता है।

6. स्वीकृति तथा अनुमोदन में भ्रम होना।
कार्यकर्ताओं सेवार्थी की नकारात्मक भावनाओं तथा विचलित व्यवहार को स्वीकार करता है परंतु उसको उचित नहीं समझता है और न ही उसका अनुमोदन करता है। इसके लिए उसे समाज के नियमों, परम्पराओं, नीतियों, नैतिकता का ज्ञान होना आवश्यक होता है। यदि इसमें कमी होती है तो वह स्वीकृति तथा अनुमोदन में अनावश्यक नहीं कर पाता है।

7. सेवार्थी के आदर में कमी करना।
जब कार्यकर्ता सेवार्थी की क्षमताओं में विश्वास नहीं करता, उसका निराधार करता है अथवा प्रतिकृति भावनाएं प्रदर्शित करता है तो सेवार्थी सहायता सम्बन्ध स्थापित करते में कठिनाई अर्थव्यवस्था करता है।

8.3 भावनाओं के प्रकटन का सिद्धांत
मनुष्य एक तार्किक प्राणी है। उसमें ज्ञान का भन्दार तथा कार्य करने की इच्छा व भिन्नता होती है। उसमें पश्चात विश्वास शालक, मूल प्रकृतियों भी होती हैं। भावनाएं, संबंध, ज्ञानविश्वास अपना-अपना कार्य करती हैं। व्यक्ति की ये सभी विश्वषांत एवं संयुक्त होकर कार्य करती है। संबंध व्यक्ति की प्रकृति का अभिन्न अंग है और यह विश्वषांत यथान्य विकास के लिए आवश्यक भी है।

मानव जीवन की सबसे चौड़ी चुनौती संबंधों को भलीभांति व्यवस्थित रखने की है। कठिनाइयों के समय संबंध व्यक्ति विभिन्न जगत जब देते हैं जिसके कारण व्यक्ति अपना नियंत्रण खो देता है। यह अत्यंत मांगों के द्वारा जीवनचालन करना चाहता है। इसलिए व्यवस्थित का विपटन होता है और मानसिक विकृतियों उत्पन्न हो जाती हैं।
वैश्लेषिक समाज कार्य में व्यवसित सांविक जीवन की आवश्यकता को महत्व दिया गया है। मनोविज्ञान तथा मनोविकार विज्ञान ने संबंधों की भूमिका पर प्रकाश डाला है और सिद्ध कर दिया है कि रोगी व्यक्ति को संगठित एवं बिचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक जीवन तथा सांविक स्थिति में परस्पर सम्बन्ध होता है तथा ये व्यक्ति विकास में महत्वपूर्ण होते हैं।

व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता के अन्तर्गत प्रेम, सुस्थ, प्रशिक्षित, भावनाओं का स्पष्टीकरण, उपलब्धि, आत्म निर्भरता, आवश्यकताएं आदि समझित है। अनुभूति में भाग लेना, समूह की स्वैस्वैतिक प्राप्त करना, समूह के तरीकों को व्यक्ति का अंग बनाया ये सभी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं हैं। यदि इन भावनाओं का उचित प्राप्त नहीं होता है तो निराशा उत्पन्न होती है। यद्यपि सभी निराशा की स्थितियाँ हानिकारक नहीं होती है क्योंकि परिपक्वता के लिए निराशा उत्पन्न होना आवश्यक होता है लेकिन निराशा से हानिकारक मनोसृजनक उपाय प्रयोग होने लगते हैं परिणामस्वरूप असामान्य व्यवहारिक प्रतिक्रियाएं होने लगती है।

यद्यपि यह सत्य है कि इन आवश्यकताओं की सीमा प्रतिक्रिय व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होती है परंतु इसी मानव मात्र की आवश्यकताएं हैं। वैश्लेषिक समाज कार्य के सम्बन्ध में आवश्यकताओं एवं भावनाओं के स्पष्टीकरण पर बल दिया गया है। सभी प्रकार की समस्याओं में उपचार कार्य में सेवायें की भावनाओं का स्पष्ट चिह्नण आवश्यक है। सामाजिक वैश्लेषिक कार्यकर्ता उन व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करता है जो कठिनाई तथा उनका संस्कार ला रखता है तथा वे सहयोग के लिए संस्था में आते हैं। कार्यकर्ता समस्या समझता है तथा प्रयास करता है कि वह अपनी कठिनाई को पूरी तरह से स्पष्ट करे। यहाँ पर कार्यकर्ता के दो उद्देश्य होते हैं:

1. जब सेवायें अपनी भावनाओं तथा कठिनाइयों को पूरी तरह से स्पष्ट करना तो उसका मानसिक बोझ कम होगा, ताकि वे अपनी भावनाओं तथा आस्वादन बढ़ाना कर सकें। भावनाओं में परिवर्तन होने पर उसमें शक्ति की वृद्धि न होगी और वह समस्या को अच्छी प्रकार से समाधान करने की दिशा में सोच सकेगा।
2. सेवायें की मनोभावनाओं को समझने पर समझने में दृढ़ता आयेगी तथा समस्या को समझने में आसानी होगी।

भावनाओं का उद्देश्य प्रकट करना तात्पर्य संघ तथा सेवायें को अपनी भावनाओं के स्पष्टीकरण में पूरी तरह से होना है। प्रायः नकारात्मक भावनाओं का स्पष्टीकरण नहीं होता है जिसके कारण समस्या को समझना कठिन होता है। वैश्लेषिक कार्यकर्ता सेवायें की भावनाओं की पूरी धारणा से सुरक्षित है। वह न तो भावनाओं को स्पष्ट करने में होता नहीं है और न वादन करता है। वह जहां आवश्यक हो तो वातावरण का रूप बदलने में सहयोग करता है जिससे कि उपचारिक प्रक्रिया लाभप्रद सिद्ध हो सके। भावनाओं का स्पष्टीकरण के केंद्र स्वैस्वैतिक रूप से आवश्यक है जिससे कि व्यक्ति सामाजिक, समृद्ध, सहयोगी, संस्कृति के सोतों के लिए व सामाजिक व्यवस्था के लिए हो सके।

8.4 अनिर्णय नमोनृत्य का सिद्धान्त

वैश्लेषिक समाज कार्य के अन्तर्गत यह एक विशेष गुण है। कार्यकर्ता अपनी प्रक्रिया में इसकी नमोनृत्त को अपनाता है। इस नमोनृत्त का आधार वैश्लेषिक समाज कार्य का दृष्टि है जो यह मानता है कि व्यक्ति की समस्या उत्पन्न करने में कोई दोष नहीं है और वह अपराधी नहीं है बल्कि परिस्थितियाँ इसके लिए उत्तरदायी है। यह व्यक्ति की मनोनृत्त, सत्ता तथा क्रिया-प्रतिक्रिया के कार्यों को महत्व देता है।
“निर्णय” का तात्पर्य व्यक्ति को किसी कार्य के लिए उत्तरदायी या उसकी अन्वारता को निश्चित करने से होता है। यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा निश्चित किया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति उस कार्य के लिए स्वयं दोषी है या उसने यह अपराधपूर्ण कार्य नहीं किया है। उससे आगाम पर इसे दोषी ठहराया जाता है।

वैयक्तिक समाज कार्य में भी निर्णय का यही अर्थ लिया जाता है। अर्थात् सेवाकी करने के लिए पोषण या अन्य जीवनकारक और आपकी अनुपस्थता या अपराधी करने के अंतर्गत समस्याएँ के लिए समस्याओं को समझने के लिए समय की सहायता करने में यद्यपि उसकी अपराधपूर्ण कार्यक्रमों तथा कामों की जानना आवश्यक होता है। लेकिन वैयक्तिक समाज कार्यक्रमों का निर्णय करने का कोई उत्तरदायत्व एवं कार्य नहीं होता है। निर्णय करने का अधिकार त्रूटि अप्रभावित करने का कोई तत्त्वाधारण है। समाज कार्य दशन, विश्वास, प्रेम, सहायता तथा सहयोग सिखाता है। इसका दृष्टि विश्वास है कि व्यक्ति के विषय में कोई निर्णय लेना अत्याधुनिक तथा अव्यावहारिक है। दोषी को तलाशने करने अथवा बहुत प्रदर्श करने कोई बुद्धिमानी नहीं है। वे भावनाएँ सहायक प्रक्रिया में बाधा पहुँचाती हैं तथा सेवाकी आत्मप्राप्ति अनुभव करता है। समाज कार्य दशन के स्थान पर सहायता में विश्वास करता है। सेवाकी की सहायता करने, समुदाय के ग्रामी का उपयोग करने, आत्मक समस्याओं में समस्या-समाधान के लिए वृद्ध करने, उचित समयोजन प्राप्त करने, व्यक्तित्व का विकास व्यवहार वृद्धि करने के लिए वैयक्तिक समाज कार्यक्रमों को समस्या करने तथा उसकी समस्या दोषी के रूप में समझना होता है। सहायता की प्रभावपूर्ण प्रमाणण के लिए अवश्यक है कि वैयक्तिक समाज कार्यक्रमों सेवाकी की समस्या के अहंकार को जाने सहायता में वैयक्तिक समाज कार्यक्रमों सेवाकी पर न तो दोषारोपण करता है न ही उसे अपराधी बताता है और न ही उसे समस्या उत्पन्न करने का कारण निश्चित करता है।

8.4.1 सेवाकी की आवश्यकता

सेवाकी में अपराधी, अपराधपूर्ण तथा अपराधीता के लक्षण होते हैं। इन विशेषताओं के कारण उसकी भावना भ्रामित होती है। सहायता लेने में उसे कोई सुख नहीं प्राप्त होता है। वैचिक आत्मविश्वास ही उसे अनुभव होता है। उसमें बहुत उत्तरदाय करने के लिए है कि क्या हम उसका प्रतिच्छेद न किया जाए क्योंकि विभिन्न जीवन में लोगों ने उसकी असफलता को उस पर आरोपित किया तथा दोषी ठहराया जाता है। लोगों ने उसकी व्यक्ति भावना की है तथा अप्रभावित ज्ञान ज्ञान ज्ञात किया है। संस्था में आने पर वह वैयक्तिक कार्यक्रम को समाज का एक अंग मानता है और उससे भी पूर्व: निर्णय की आशा रखता है। वह अप्रभाव होता है कि वैयक्तिक कार्य को उसकी समस्या के लिए दोषी ठहरायें। अर्थ: वह आत्म सूक्ष्मतम नमोरूप का विकास करता है और तथ्यों की छिपाई का पूरा प्रयत्न करता है। वह स्वयं सावधान करता है कि उस निर्णय का भर्ती प्राप्त हो जाए तथा सहायता के समस्या नहीं होने का भर्ती प्राप्त होने का उपयोग करें।

जब तक सेवाकी के निर्णय का भर्ती प्राप्त होता है तब तक वह स्वतंत्र होकर वातावरण में हिस्सा नहीं लेता है तथा खुलकर बातरंग नहीं करता है। ऐसी स्थिति में वह नकारात्मक भावनाओं को स्थान नहीं करता है क्योंकि उसे भ्रूण होता है कि उसके द्वारा दी गयी सुविधायें उसके लिए बाह्यवाद बिखर रही हो सकती है। वह आलोचना के प्रति स्वभाव करता है, वैयक्तिक कार्यक्रम के प्रति प्रक्रियाओं के विषय में विचार करता रहता है तथा वह निश्चित नहीं कर पाता है कि वह तथ्य बताए चाहिए तथा क्या छिपाया चाहिए।
जब सेवार्थी को जात हो जाता है कि कार्यकर्ता न तो उसकी आलोचना कर रहा है और न ही दोषारोपण करने का विचार रखता है तो आत्म सुरक्षात्मक उपायों में कभी आती है। उसका भय दूर होता है तथा उसे विबाह होने लगता है कि वैश्विक कार्यकर्ता वास्तव में सहायता करना चाहता है। वह प्रश्नों का उपर ठीक तथा सही सही देने का प्रयत्न करता है क्योंकि वह जान लेता है कि जो प्रश्न पूछे जा रहे हैं वे उसी के हित के लिए हैं। उर्फ़ उन्हें कार्यकर्ता से कोई समझदार नहीं है। अनिश्चित मनोवृत्ति होने पर ही कार्यकर्ता समस्या की गहराई में पहुंच पाता है तथा तथ्यों का संकलन करता है।

8.4.2 मूल्य तथा प्रतिमान

वैश्विक कार्यकर्ता ने सेवार्थी के मूल्यांकन के स्थान पर उसकी मनोवृत्ति, प्रतिमान, जिया आदि का मूल्यांकन करता है। सेवार्थी स्वयं का जब मूल्यांकन करता है तो उसे कठिन एवं गलती होती है परंतु जब उसके व्यवहार को मूल्यांकित किया जाता है तो उस पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता है। वैश्विक कार्यकर्ता व्यवहार का मूल्यांकन सेवार्थी के समझने में कोई निर्णय लेने के लिए नहीं करता है बल्कि व्यक्तित्व को समझने के लिए करता है। तथापि उस मूल्यांकन तथा प्रतिमानों से बिचला जानने में रूचि रहती है परंतु वह दोषारोपण के उद्देश्य से ऐसा नहीं करता है। वह व्यवहार की ज्ञान समस्या समाधान के लिए करता है जिससे सेवार्थी समायोजन उठाने प्रकार से करने में सभी हो सकें। निदान तथा मूल्यांकन के लिए सेवार्थी के अहंकार की विशेषताओं को जानना आवश्यक होता है। अतः वह उसकी क्रियाओं, शर्माओं तथा संघषाओं को जानने का प्रयत्न करता है। प्रतिमान तथा मूल्य वैश्विक कार्य प्रक्रिया के अभ्यंग अंग हैं क्योंकि कार्यकर्ता समस्या का ध्यान रखकर ही सहायता करता है। समस्या का निदान तथा मूल्यांकन समाजिक कार्यों के आधार पर करता है तथा उपचार कार्य भी सामाजिक हो जाता है।

8.4.3 सांबंधितता

कार्यकर्ता के अनिश्चित मनोवृत्ति को सिद्ध करने के लिए सेवार्थी की भावनाओं के प्रति अति संबंधित होना चाहिए उसे जात होना चाहिए कि उसकी असफलता, निर्भरता तथा हार का उस पर क्या प्रभाव पड़ा है। जब तक वह समस्या के सांबंधित पक्ष को नहीं समझेगा तब तक वह सफल नहीं हो सकता है।

कार्यकर्ता की इस मनोवृत्ति को सेवार्थी के लिए भी जानना आवश्यक होता है। उसका अनुभव के बारे में वैश्विक प्रश्न का ध्यान देना ही चाहिए कि जिसमें वह संबंधित होता है। जब तक वह समस्या के सांबंधित पक्ष को नहीं समझेगा तब तक वह सफल नहीं हो सकता है।

8.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में स्वीकृति के सिद्धांत के विषय में अध्ययन किया। स्वीकृति के गुण के माध्यम का अध्ययन किया तथा सेवार्थी की आवश्यकताओं के विषय में जानकारी प्राप्त की। कार्यकर्ता की भूमिका के विषय में अध्ययन किया। तपशीलांत्र प्रभावों के प्रकटन के सिद्धांत तथा मनोवृत्ति के विषय में जानकारी प्राप्त की।

62
8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. स्वीकृति के सिद्धान्त को समझाइए।

2. स्वीकृति गुण के मापक एवं सेवार्थी की आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।

3. भावनाओं के प्रकटन तथा अनिर्णायक मनोवृत्ति के सिद्धान्त का संक्षिप्त रूप से वर्णन कीजिए।

4. मूल्य तथा प्रतिमान पर संक्षिप्त रूप से टिप्पणी लिखिए।

5. भावनाओं के प्रकटन तथा अनिर्णायक मनोवृत्ति में सावधानिकता का वर्णन कीजिए।

8.7 सन्दर्भ प्रणाली

मित्र, पी. डी०, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.

मित्र, पी. डी०, सामाजिक बैविक भेदभाव एवं सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.

मित्र, पी. डी०, मित्र, बी.एल, लीला के अन्य कार्य, न्यूयॉर्क बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.

मित्र, पी. डी०, डा. प्रयाग दीन, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1992

मित्र, पी. डी०, द्वितीय परिभाषा: समूह समाज कार्य, न्यूयॉर्क बुक कम्पनी, लखनऊ, 2012.

सिंह, पी. डी०, भारती, पा।, कॉर्ट क्लास सेंट्रल एंड मैथ्यू, न्यूरायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, पी. डी०, पालीबाला, सौरभ, मित्र, प्रोफेसर, मानव समाज, संगठन एवं विकास के मूल तत्त्व, न्यूरायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.

सिंह, सुंदर, मित्र, पी. डी०, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्राणातियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.

सिंह, पी. डी०, भारत में समाज बन्धन प्रशासन: अवधारणा एवं विषय एजेंट, रायल बुक डिपोल लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुंदर, वर्मा, आरा।, मित्र, पी. डी०, भारत में समाज कार्य का केन्द्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009,

गोपीनाथ का सिद्धान्त एवं नियमित संवेदनात्मक संबंधों का सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 गोपीनाथ का सिद्धान्त

9.2.1 गोपीनाथ का अधिकार

9.2.2 समाज कार्यकर्ताओं का नैतिक उत्तरदायित्व

9.3 नियमित संबंधों का सिद्धान्त

63
9.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई में
1. स्वीकृति के सिद्धान्त के विषय में अध्ययन किया।
2. स्वीकृति के गुण के मापक का अध्ययन किया तथा सेवाधीनों की आवश्यकताओं के विषय में जानकारी प्राप्त की।
3. कार्यरत्न की भूमिका के विषय में अध्ययन किया।
4. तपश्चातः भावनाओं के प्रकटन के सिद्धान्त तथा मनोवृत्ति के विषय में जानकारी प्राप्त की।

9.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में गोपनीयता के सिद्धान्त का उल्लेख किया गया है जो वैज्ञानिक से सिद्धान्त का एक प्रमुख अंग है। गोपनीयता से तात्पर्य सेवाधीनों की उन गोपनीय सूचनाओं को, जिनको वह कार्यरत्न से बताता है, गोपनीय रखने से है। यह सेवाधीनों के मूल अधिकारों से सम्बन्धित है। यह वैज्ञानिक सामाजिक कार्यरत्न का उत्तरदायित्व है तथा वैज्ञानिक समाज कार्य का मूलधार है। गोपनीयता सिद्धान्त को दो रूपों में देखा जा सकता है: व्यवसायिक आचार सहित के रूप में तथा वैज्ञानिक समाज कार्य के समक्ष के तत्त्व के रूप में। गोपनीयता तथ्य तथा वैज्ञानिक समाज कार्य के समक्ष के तत्त्व के रूप में। गोपनीयता तथ्य तथा सीहिता के रूप में तथा वैज्ञानिक समाज कार्य के समक्ष के तत्त्व के रूप में।

9.2 गोपनीयता का सिद्धान्त
समाज कार्य मानव जीवन के बिंदु वहलुओं में बिन्दु तरंगों द्वारा उपयोग में लाया जाता है। जीवन के बहुत से पहलू ऐसे होते हैं जिसकी व्यक्ति बहुत ही गोपनीयता रखता है और जिससे प्रतिबन्ध समन्वय होते हैं, उसे ही बताया जाता है। अतः गोपनीयता सिद्धान्त को दो रूपों में देखा जा सकता है: व्यवसायिक आचार सहित के रूप में तथा वैज्ञानिक समाज कार्य समन्वय के तत्त्व के रूप में।
गोपनीयता का तत्पर्य सेवार्थी की उन गोपनीय सूचनाओं को जिनको वह कार्यकर्ता से बताता है, गोपनीय रखने से हैं। यह सेवार्थी के मूल अधिकार से समन्वित है। यह वैष्णव सामाजिक कार्यकर्ता का उत्तराधिकार है तथा वैष्णव समाज कार्य का मूलधार है।

सेवार्थी के संस्था में आता है तो वह समझ कर आता है कि उसे वैष्णव समाज कार्यकर्ता से अनेक गोपनीय बातें बतानी होंगी परंतु वह यह भी चाहता है कि अन्य लोग उन बातों को न जाने क्योंकि ऐसा होने से मानहानि होगी तथा वैष्णव सामाजिक भावनाओं को देख पुहुंचेगी। इसीलिए पहले जब सेवार्थी को जान हो कि उसकी बतायी गयी बातें कार्यकर्ता द्वारा गोपनीय रही जायेंगी तभी वह राज करेगा। वह जब जान लेता है कि संस्था की सहायता प्राप्त करने के लिए इन सूचनाओं को बताना आवश्यक है, तभी बताता है और बिश्वास करता है कि ये सूचनाएं सहायक प्रक्रिया में लगे व्यक्तियों से पें लोगों को जान नहीं होगी। वह किसी भी प्रकार से अपनी ख्याति को कम नहीं करना चाहता है।

9.2.1 गोपनीयता का अधिकार

व्यक्ति को दो प्रकार के नैसर्गिक अधिकार प्राप्त हैं:

(अ) जीवन का अधिकार
(ब) बृद्धि व विकास करने का अधिकार।

बृद्धि व विकास का अधिकार के अन्तर्गत:

1. शारीर को स्वस्थ रखना का अधिकार
2. आवश्यक आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, मकान पूरा करने का अधिकार
3. भविष्य सुखमय बनाने का अधिकार
4. सांस्कृतिक, सामाजिक बौद्धिक विकास करने का अधिकार।

उपरोक्त अधिकार गोपनीयता के मूल तत्त्व हैं और जिनको वैष्णव सामाजिक कार्यकर्ता आवश्यक मानता है।

9.2.2 समाज कार्यकर्ता का नैसर्गिक उत्तराधिकार

गोपनीय सूचना के तीन वर्ग होते हैं:

(1) नैसर्गिक गोपनीयता
(2) प्रतिव्याप्तिक गोपनीयता
(3) समझौतात्मक गोपनीयता

नैसर्गिक गोपनीय तथ्यों को यदि बता दिया जाता है तो व्यक्ति निन्दा का पात्र बनता है तथा आत्मिक ग्लानि होती है। इन तथ्यों का ज्ञान संस्था के कर्मचारी के रूप में वैष्णव कार्यकर्ता को नहीं होता है चूंकि जब समझौता घनिष्ठ जो जाते हैं तभी सेवार्थी बताता है और उसे अपना हितीष्ठ समझने लागता है। अतः कार्यकर्ता इन तथ्यों को गोपनीय रखता है।

65
9.3 नियन्त्रित संबंधायक संबंधों का सिद्धांत

प्रत्येक सम्प्रेषण की हिम्मती प्रक्रिया है। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कुछ कहता है तो उससे भी प्रत्युत्तर चाहता है। यदि वह व्यक्ति कोई प्रत्युत्तर नहीं करता है तो सम्प्रेषण की अर्थव्यमित प्रक्रिया नहीं होती है। फलतः संचार प्रक्रिया कायम नहीं करती है। सामान्य रूप से सम्प्रेषण की विषयवस्तु को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं: केवल विचार, भावनाएं, केवल तथा विचार एवं भावनाएं। जब व्यक्ति स्टेटस पर जाकर पूछताछ झड़ी हुई, तो विस्फोट का अंश बनता है। इसका तत्त्व न चेतना करने वाले व्यक्ति के सिद्धांत का तत्त्व नहीं होता है। यदि केवल सूचना प्राप्त करना चाहता है तथा व्यक्तित्व के लिए अप्रत्याशित होता है। केवल पता या पत्री की मृत्यू पर किसी समवधि से निकट दर्द बताता है, इसका तत्त्व नकहावाओं को समर्पित कर रहा है।

वैज्ञानिक समाज कार्य में सम्प्रेषण की विषयवस्तु प्रायः विचार तथा भावनाओं का प्रतिकृत होता है। विषयवस्तु की प्रकृति कई कारणों पर निर्भर करती है। जैसे-जैसे सेवारथी की समस्या, संस्था के कार्य, सेवारथी की आवश्यकताएं तथा भावनाएं, साश्वास्कार से सेवारथी का निर्णय निर्धारित होता है विचार एवं धारणाएं, वैज्ञानिक कार्यांक अवस्थें, अध्ययन, निदान तथा उपचार का रूप भी विषयवस्तु की प्रकृति को निश्चित करता है।

वैज्ञानिक कार्यांक को विचार तथा भावना के सम्प्रेषण के दोनों स्तरों पर निष्पादन की आवश्यकता होती है। जब विषयवस्तु तथ्यों पर आधारित होता है उस समय सहयोगी को ध्यानपूर्वक सुनने के लिए वैज्ञानिक कार्यांक को संस्था के लोगों, नीतियों तथा सामाजिक अनुष्ठानों का ज्ञान होना चाहिए। जब भावना प्राप्त समय बढ़कर होती है और वैज्ञानिक कार्यांक सहयोगी प्रदान करना चाहता है ऐसी स्थिति में उसे सेवारथी भावनाओं के प्रति की निर्णय होना चाहिए। वैज्ञानिक समाज कार्य की यह निर्णय सबसे गहरी निष्पादन का है। नियन्त्रित संबंधायक संबंधों का तत्त्व वैज्ञानिक कार्यांक की सेवारथी की भावनाओं, कठिनाइयों के प्रति संबंधेन्द्रितता, भावनाओं के ज्ञान तथा उद्देश्यपूर्ण एवं उचित प्रत्युत्तर से ही है। नियन्त्रित संबंधायक संबंधों के तीन प्रमुख अंग हैं:--

9.3.1 संबंधेन्द्रितता

संबंधेन्द्रितता का तत्त्व सेवारथी की भावनाओं को सुनना तथा देखना है। कभी-कभी सेवारथी अपनी भावनाओं को श्रद्धा में स्थायी नहीं कर पाता है या भावनाओं नहीं चाहता है। ऐसा प्रायः स्थानीय साक्षात्कार में होता है जब सेवारथी वैज्ञानिक कार्यांक से तत्त्व परिवर्तित होता है और उन्हें भी कम होता है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक एवं व्यक्तित्व की विशेषताओं की भिन्नता के कारण भी तत्त्व मूल-जोल बढ़ा नहीं पाता है। इसके अतिरिक्त उस समय भावनाएं भी इतनी गहराइयों में होती हैं कि वे बाहरीकृत करते हैं समय लेती हैं। सेवारथी की भावनाओं को इस स्वर पर अनुप्रयोग किया जा सकता है। इन भावनाओं की अभिव्यक्ति बोलने के ढंग, बातचीत करने में तेजी,
9.3.2 बोध

बैयोटिक कार्यक्रम सेवार्थी की भावनाओं को समझना आवश्यक समझता है क्योंकि वे भावनाएं समस्या तथा समस्या के कारक दोनों से समझने होती हैं। वह जानना चाहता है कि सेवार्थी क्या कर रहा है, वह क्या क्या उपयोग उपयोग में लाया है, वह किस प्रकार सेवार्थी के विचारों के स्पष्टीकरण में सहायता कर सकता है तथा किस प्रकार यह अभिव्यक्ति सेवार्थी से समझने तक लिया जाना पड़ेगा। समझ या बोध एक निर्देश प्रदान वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक साक्षात्कार में समझ धीरे-धीरे बढ़ती है। लेकिन किसी-किसी केस में बैयोटिक कार्यक्रम को केवल कुछ अंश का ज्ञान ही हो पाता है। उसी से संतोष करना पड़ता है परंतु वह सदैव अधिक से अधिक समझ बढ़ाने का प्रयत्न करता है।

मानव व्यवहार को समझना अत्यन्त कठिन है। इसका ज्ञान मनोविज्ञान, मनोविकार विज्ञान तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों से होता है। आत्म ज्ञान तथा व्यावसायिक अनुभव मानव व्यवहार का ज्ञान होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आवश्यकताओं का ज्ञान, प्रतिक्रियाओं के तरीके, विचार के समय मनोरमाणों का उपयोग जानना बैयोटिक कार्यक्रम का उद्देश्य होता है। सेवार्थी की विवेचनाओं को इन आधारों पर रखकर समझने का प्रयास किया जाता है। वह सेवार्थी की भावनाओं का उसके प्रति अर्थ जानने का प्रयास करता है। एक अनुभव एक सेवार्थी के लिए दूसरा अर्थ प्रकार कर सकता है। जबकि दूसरा सेवार्थी अन्य प्रकार से अनुभव कर सकता है। सेवार्थी की भावनाओं तथा उन भावनाओं के प्रति सेवार्थी का दृष्टिकोण बैयोटिक कार्यक्रम के लिए ज्ञाना आवश्यक होता है। वैयक्तिकण से भी सेवार्थी का समझा तथा उसके संबंधित और परवर्ती झड़ी खारों में समझना तथा ज्ञान होता है। बैयोटिक कार्यक्रम को भावनाओं के अर्थ जानने के लिए निष्पादित कर्मों चाहिए। अधीक्षण तथा परामर्श दो प्रमुख सहायक साधन है। भावनाओं के स्पष्टीकरण का दंग बहुत सीमा तक समझना का अर्थ प्रकट करता है।

9.3.3 प्रत्युत्तर

संवेदना तथा बोध दोनों अपने आप में अपूर्ण हैं। वे प्रत्युत्तर के साधन हैं। सेवार्थी की भावनाओं के प्रति बैयोटिक कार्यक्रम का प्रत्युत्तर समाधान स्थापना का महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तत्त्व है। यह सबसे कठिन प्रविधि है। अनुभवी कार्यक्रमों ही इसका वास्तविक अर्थ समझता है और अपने व्यवहार में ला सकता है। सेवार्थी की भावनाएं तथा उसकी मनोवृत्ति बदलती रहती है अतः इसका ध्यान रखकर ही कार्यक्रम अनुकूल प्रत्युत्तर कर सकता है।

67
प्रत्युत्तर केवल मौखिक ही नहीं होता है बल्कि यह मनोवृत्ति और भावनाओं से समबन्धित होता है तथा ज्ञान और उद्देश्य से निर्देशित होता है। वैयक्तिक कार्यकलाप चेतन रूप से तथा उद्देश्य को ध्यान में रखकर सेवार्थी की भावनाओं से प्रत्युत्तर करता है। इस प्रकार से यह एक प्रकार का सेवार्थी की भावनाओं से भागीदारी होता है।

यद्यपि प्रत्युत्तर मुल्य से आत्मरक्ष होता है परन्तु यह वादिकृत्त किसी न किसी रूप में किया अवश्य जाता है, जिससे सेवार्थी को इसका ज्ञान हो सके। परन्तु यद्यपि प्रकार के प्रत्युत्तर का बहुत अधिक महत्व नहीं होता है तथा वैयक्तिक कार्यकलाप का आत्मरक्ष की मिशरी को विकसित करने में सहयोग करना चाहिए। प्रत्युत्तर का उद्देश्य सेवार्थी की मनोवैज्ञानिक सहायता करता है जिससे वह अपनी कठिनाई को उचित प्रकार से समझ सके तथा अंत: को जोड़ कर समाधान का प्रयास कर सके।

9.4 सारांश

प्रत्युत्तर इकाई में गोपीनाथ के अधिकार का अध्ययन किया। समाज कार्यकर्ताओं के नैतिक उद्देश्यों के विषय में जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात नियमन संबंधित संबंधों को सिद्धान्त का अध्ययन किया। इसके अंतर्गत संबंधशीलता, बोध तथा प्रत्युत्तर के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।

9.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. गोपीनाथ के सिद्धान्त को समझाइये।
2. गोपीनाथ के सिद्धान्त में समाजिक कार्यकर्ताओं के नैतिक उद्देश्यों को वर्णित कीजिए।
3. नियमन संबंधित संबंधों के सिद्धान्त को समझाइये।
4. संबंधशीलता क्या होती है? इसका वर्णन कीजिए तथा बोध को भी समझाइये।

9.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

सिंह, पी. के., भारती, ए. के., रोशन बर्क कार्यकर्ता एंड मैथिडस, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, पी. के., पालितियाल, सीस्टिन, मिश्र, रोहित, वानर समाज, संगठन एवं विचार के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्रा, पी. के., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.
मिश्रा, पी. के., सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
मिश्र, पी. डी., मिश्रा, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
मिश्र, डा. प्रयागदीन, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1992
मिश्र, पी. डी. एवं मिश्र रोहित, समय समाज कार्य, न्यू रायल बुक कम्पनी, लखनऊ, 2012
सिंह, सुरेंद्र, मिश्र, पी. डी. वानर कार्य: इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुरेंद्र, वर्मा, आर. बी. एस., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
आत्मनिश्चय का सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 आत्म निश्चय का सिद्धांत
10.2.1 सेवार्थी की आवश्यकता एवं अधिकार
10.2.2 वैत्तिक कार्यकर्तादेश की भूमिका
10.2.3 आत्मनिर्णय लेने की सीमाएं
10.3 सारांश
10.4 अभ्यासार्थ प्रश्न
10.5 सन्दर्भ प्राप्त

10.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पक्षातः
1. आत्म-निश्चय सिद्धांत से सम्बन्धित बातों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. सेवार्थी की आवश्यकता तथा अधिकार के विषय में ज्ञान कर सकेंगे।
3.इसके पश्चात वैत्तिक सामाजिक कार्यकर्तादेश की भूमिका का अध्ययन कर सकेंगे।
4.वैत्तिक समाज कार्य में आत्म-निश्चय सिद्धांत के अंतर्गत आत्मनिर्णय लेने की सीमाओं के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में आत्म-निश्चय सिद्धांत के विषय पर विचार किया गया है। निर्णय की स्वतंत्रता क्षति में परिपक्वता तथा चौदह, सामाजिक, सांवेदिक तथा आध्यात्मिक विकास करती है। वैत्तिक सेवा कार्य तब अधिक महत्वपूर्ण होता है, जब सेवार्थी की स्वयं समस्या समाधान के साधनों को चुनने तथा अपना निर्णय लेने का अधिकार होता है। सामाजिक उत्तरदायित्व, सांवेदिक समायोजन तथा व्यक्तित्व विकास तथ्यों होता है जब व्यक्ति को अपना निर्णय लेने तथा विकल्प चुनने की स्वतंत्रता होती है। वैत्तिक सामाजिक कार्यकर्तादेश इस तथ्य को पूरी
10.2 आत्मनिर्भरता का सिद्धान्त

समाज कार्य की वह दृष्टि धारणा है कि व्यक्ति में आत्मनिर्भरता करने की अनुभूति क्षमता होती है। इसी प्रकार के आधार पर वैयक्तिक सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपना मार्ग स्वयं निदेशित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सेवार्थी के अपने रचने के अनुसार वैयक्तिक समाज कार्यक्रम में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता होती है। उसके अधिकारों तथा आवश्यकताओं को हल्ला दिया जाता है। कार्यकर्ता सेवार्थी की आत्म निर्देशन क्षमता को तीव्र करता है तथा संस्था में उपलब्ध साधनों का ज्ञान कराता है। सेवार्थी का आत्मनिर्भरता करने का अधिकार उसकी सकारात्मक एवं रचनात्मक निर्णय शक्ति की सीमा पर निष्ठूत होता है। संस्था के कार्य भी इस अधिकार को प्रभावित करते हैं।

10.2.1 सेवार्थी की आवश्यकता एवं अधिकार

प्रत्येक मानव प्राणी के तरह सेवार्थी को भी अपनी शक्तियों को बिकसित करने का अधिकार होता है।

उसका अपने उद्देश्यों को पूरा करने का उत्तरदायित्व भी होता है। प्रत्येक उत्तरदायित्व के साथ अधिकार जुड़ा होता है, अतः सेवार्थी को अपना मार्ग चुनना तथा उद्देश्य प्राप्त करने के साधन निदेशित करने का अधिकार भी होता है।

सेवार्थी यद्यपि परेशान, हताश तथा हार्दिक होता है परंतु वह अपनी स्वतंत्रता तथा अधिकार नहीं खोना चाहता है। वह संस्था में सहायता तथा सहयोग के लिए आता है। वह वैयक्तिक कार्यकर्ता को सहायता प्रदान करने वाला तथा समस्या समाधान करने की भिंति बताने वाला मानता है। कार्यकर्ता से वह आशा करता है कि वह समस्या समाधान के साधन तथा साहल ज्ञान निर्धारण करे। कार्यकर्ता से वह आशा करता है कि समस्या समाधान के विकल्पों को बताने तथा प्रत्येक विकल्प का उचित मूल्यांकन करे। यद्यपि सेवार्थी अपनी समस्या समाधान करने असमधस्त होता है तथा वैयक्तिक कार्यकर्ता से मनोज्ञातिक सहायता चाहता है परंतु वह अपना स्वयं निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी चाहता है।

उदारदायित्व को पूरा करना व्यक्तिक विकास तथा उसकी परीक्षण के लिए आवश्यक होता है। निर्णय की स्वतंत्रता शक्ति में परीक्षण करने बौद्धिक, सामाजिक, संवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक विकास करती है।

वैयक्तिक सेवा कार्य तथा अधिकार प्राप्त करता है जब सेवार्थी को स्वयं समस्या समाधान के साधनों को चुनने तथा अपना निर्णय लेना का अधिकार होता है। समाज के उत्तरदायित्व, संवैज्ञानिक समाधान तथा व्यक्तिक विकास तब भी होता है जब व्यक्ति को अपना निर्णय लेना तथा विकल्प चुनने की स्वतंत्रता होती है। वैयक्तिक कार्यकर्ता इस तथ्य को पूरी तरह से समझता है तथा सेवार्थी को अपना निर्णय लेने की स्वतंत्रता देता है।

10.2.2 वैयक्तिक कार्यकर्ताओं की भूमिका

वैयक्तिक कार्यकर्ता ही सेवार्थी में आत्मनिर्भर तथा अधिकार को व्यवहार में लाता है। उसके अपना अनुशंसा तथा अपनी भूमिका इन सिद्धांतों के पालन में सहायता करती है। कार्यकर्ता की मनोवृत्ति तथा व्यक्तित्व भी सहायक रूप में कार्य करता है। कार्यकर्ता की भूमिका इस सिद्धान्त के आधार पर दो प्रकार की होती है: सकारात्मक तथा नकारात्मक। सकारात्मक रूप में निम्नलिखित भूमिका होती है: -
अ) समस्या एवं आवश्यकता को वास्तविक अर्थ में समझने तथा प्रत्यक्षीकृत करने में सेवार्थी की सहायता करता है। जहां पर यह होता है धीर-धीर वह सभी कारकों को स्पष्ट करता है जिससे सेवार्थी के ज्ञान में वृद्धि होती है एवं स्पष्ट कारण दिखाई देते हैं।

ब) समुदाय में उपलब्ध ध्योतों से अवगत कराता है। कार्यकर्ता सेवार्थी को सभी उपलब्ध ध्योतों को बताता है। विकल्पों को स्पष्ट करता है तथा प्रत्येक विकल्प के महत्त्व को स्पष्ट करता है। कार्यकर्ता विकल्प चुनने के विषय प्रस्तुत करता है तथा सुझाव भी प्रस्तुत करता है। परंतु इन सभी भूमिकाओं को वह जब तक पूरा करता है जिससे सेवार्थी किसी प्रकार का दबाव न अनुभूत करे।

d) सेवार्थी की अपनी निर्णय लेने के लिए उत्साहित करता है। इस भूमिका में वह सेवार्थी के तनाव को कम करता है, भय को दूर करता है तथा जो सहायता सेवार्थी चाहता है, प्रदान करता है।

य) सम्भाव्यों की प्रकृति इस प्रकार से बनती है जिसमें सेवार्थी अपनी समस्या के संदर्भ में स्वयं कार्य करने का प्रयास करता है। कार्यकर्ता सेवार्थी की बात को सुनता है, सक्रिय भाग लेता है तथा समस्या समझने में पूरी सहायता करता है।

सारांश में कहा जा सकता है कि कार्यकर्ता बायुत प्रतिक्रिया आने के लिए दर्शाने खोल देता है जिससे सेवार्थी सुखद रूप से अनुभव करता है और अपनी खुशी को स्पष्ट देखने में सहायता होता है। वैयक्तिक कार्यकर्ता के निम्नलिखित कार्य इस सिद्धांत के विपरीत भूमिका निभाते हैं:

क) समस्या सम्बन्धी मूल्य उत्सर्जन को स्वयं प्राप्त करना तथा सेवार्थी को गौण स्थान प्रदान करना। उदाहरण के लिए उपचार को निक्षेप करने के साधन की ओर मानने के लिए निर्देश देने से पर भूमिका पड़ता है।

ख) सेवार्थी का सहायता चाहता है, इसको ध्यान में न रखकर प्रत्येक सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति का सूक्ष्म अवलोकन करने का प्रयास करने से भी विशेष प्रभाव पड़ता है।

g) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सेवार्थी को अपना (कार्यकर्ता का) निर्णय मानने के लिए मजबूर करना। कभी-कभी कार्यकर्ता सेवार्थी को अपनी इच्छा व्यक्त करने का अवसर ही नहीं देता है तथा स्वयं रास्ता बताते चलता है।

इस प्रकार का दृष्टिकोण कार्यकर्ता तथा अपना अपना अपना निर्णय तथा अपने अपने अभ्यास के क्षेत्र में कम हो रहा है। परंतु वास्तविकता यह कभी नहीं होती है। कार्यकर्ता को सेवार्थी को अपना निर्णय का अधिकार देकर बहुत बड़ी सहायता मिलती है। इस सिद्धांत के पालन से सेवार्थी अपनी भविष्य की समस्याओं को समझने तथा समाधान करने की क्षमता विकसित कर लेता है एवं आत्म-निर्भरता एवं निर्भरता का विकास होता है।

10.2.3 आत्मनिर्भर लेने की सीमाएं

आत्मनिर्भर के सिद्धांत का कोई महत्व नहीं रह जाता है यदि सेवार्थी के इस अधिकार की सीमा निश्चित न की जाय। अधिकार तथा कर्तव्य दोनों साध-साध रहते हैं। मानव स्वतन्त्रता साधन है साध्य नहीं है। अतः असीमित नहीं हो सकती है। सेवार्थी के आत्मनिर्भर लेने का चार प्रमुख विषयात्मक हैं:

1) सकारात्मक तथा रचनात्मक निर्णय लेने की सेवार्थी की क्षमता

कोई भी सिद्धांत पूरी तरह से सभी व्यक्तियों के साथ उपयोग में नहीं लाया जा सकता है। वैयक्तिक कार्यकर्ता प्रत्येक सेवार्थी का वैवधाकिरण करता है, अतः वह प्रत्येक की शक्ति का भी अनुभव लगा देता है। चूँकि
निर्णय लेने की शक्ति प्रमुख व्यक्ति में भिन-भिन्न होती है अतः वह सेवाध्यक्ष की क्षमता से परे आत्म निर्णय का अधिकार नहीं देता है।

2) कानून द्वारा सीमा का निश्चय

समुदाय व समाज के कानून भी सेवाध्यक्ष के आत्म निर्णय की सीमा को निर्धारित करते हैं। कानूनों के अनुसार ही उसे अपना निर्णय लेना होता है।

3) नैतिक कानूनों द्वारा सीमा का निश्चय

नैतिक मूल्यों के अनुसार ही वै०क्तिक कार्यकर्ता सेवाध्यक्ष को अपना निर्णय लेने के लिए उपस्थित करता है। उदाहरण के लिए दूसरा विवाह धर्म में वर्जित है तो कार्यकर्ता कभी भी सेवाध्यक्ष को ऐसा निर्णय लेने के लिए स्वीकृति नहीं देगा।

4) संस्था के कार्यों द्वारा सीमा का निश्चय

संस्था में उपलब्ध सेवाओं के अन्तर्गत ही सेवाध्यक्ष कोई निर्णय ले सकता है तथा उन्हें साधनों का उपयोग इन्हें निर्देशित कर सकता है।

उपरोक्त सिद्धांत वै०क्तिक समाज कार्य को प्रभाविक बनाते हैं तथा कार्यकर्ता इन सिद्धांतों का पालन करने को पूर्ण भूमिका चाहिए सफल होता है। इन सिद्धांतों को जानना तथा व्यक्तित्व में लाना वै०क्तिक कार्यकर्ता के लिए आवश्यक होता है।

10.3 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आत्म-निर्धार वै०क्तिक उपरोक्त के विषय में अध्ययन किया। सेवाध्यक्ष की आवश्यकता तथा अधिकार का ज्ञान प्राप्त किया। इसके उपरांत वै०क्तिक समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका का वर्णन किया गया है। जिसका अध्ययन किया एवं तत्पश्चात आत्मनिर्णय लेने की सीमाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की।

10.4 अध्यासार्थ प्रश्न

1. आत्मनिर्धार के वै०क्तिक का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
2. सेवाध्यक्ष की आवश्यकता एवं उसके अधिकार का समझाइये।
3. आत्मनिर्धार के वै०क्तिक कार्यकर्ताओं की भूमिका का वर्णित कीजिए।
4. सेवाध्यक्ष में आत्मनिर्णय लेने की सीमाओं का वर्णन कीजिए।

10.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नेशनल एसोसिएशन आफ़ सोशल वर्कर्स, मेडिकल सोशल वर्क प्रोफेशन, वर्ष 1956.
2. शाख्बी, राजाराम, वेडिंगल सोशल वर्क, इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल वर्क, वर्ष 1970.
3. सचेतन, दी. अरन्तू, भारत में समाज कल्याण प्रशासन, इलाहाबाद किलाब महल, वर्ष 1994.
4. सिंह, सुरेंद्र, वर्मा, आर. बी. एस., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
5. श्रीमता, पी. दी., श्रीमता, बी.बी., व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
6. सिंह, दी. देवी, भारती, ए पी, न्यूसोशल वर्क कार्येट एंड मैथ्रस, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
7. सिंह, दी. देवी, दालोबाल, सौरभ तथा मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विषयक भूमिका के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
8. मिश्र, पी. दी., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.
9. मिश्र, पी. दी., सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
समूह के साथ समाज कार्य

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 समूह समाज कार्य
11.3 संयुक्त राज्य अमेरिका में समूह समाज कार्य
11.4 इंग्लैण्ड में समूह समाज कार्य
11.5 भारत में समूह समाज कार्य
11.6 सारांश
11.7 अभ्यासप्रश्न
11.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

11.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-  

1. समूह समाज कार्य के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. इसके पश्चात संयुक्त राज्य अमेरिका में समूह समाज कार्य के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. तत्पश्चात इंग्लैण्ड में समूह समाज कार्य के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा अंत में भारत में समूह समाज कार्य के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में समूह समाज कार्य पर विचार किया गया है। सामूहिक समाज कार्य एक प्रणाली है। यह केवल काम करने का एक तरीका ही नहीं है बल्कि एक क्रमानुसार व्यवस्थित तथा नियोजित समूह के साथ काम करने का तरीका है। प्रणाली उद्देश्य प्राप्त करने का चेतन तरीका तथा अभिकल्पित साधन होती है। कार्यकर्ताओं समूह का वैयक्तिक करके उसकी आवश्यकताओं, इच्छाओं तथा अंतिमतिहारी क्षमताओं का ज्ञान प्राप्त करता है। वह उद्देश्यों के निर्धारण में समूह की सहायता करता है तथा कार्यक्रमों के चलाने व उनकी आवश्यकता के विषय में ज्ञान प्रदान करता है। यह समूह को मंजूर ही देता है तथा कार्यों के समापन के लिए उल्लेखित भी करता है। कार्यकर्ताओं समूह की सहायता सामूहिक प्रक्रियाओं के प्रत्येक स्तर पर आवश्यकतानुसार करता है।

11.2 समूह समाज कार्य
इसका ताल्लूक यह है कि सामूहिक कार्य के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है। कार्यकर्ताओं को जब तक समूह की विशेषताओं, दशाओं, मनोवृत्तियों, आदि का ज्ञान होगा तब तक वह कार्य नहीं कर सकता है। उसको
सामूहिक कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्तियों की सहायता की जाती है। ट्रेकर की परिभाषा का द्वारा सामूहिक कार्य के समस्त दोनों का होना महत्वपूर्ण है अर्थात् व्यक्ति की सहायता समूह के माध्यम से की जाती है। समूह की अपनी विभिन्नता होती है तथा उसके गठन का भी एक उद्देश्य होता है। यह समूह किसी संस्था के अन्तर्गत ही गठित किया जाता है। वे समूह समुदाय की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार होते हैं। संस्था से बाहर यदि उससे समन्वित होता है तो समुदाय में अन्य समूहों के साथ भी इसका प्रयोग होता है।

सामूहिक कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्तियों की सहायता की जाती है। ट्रेकर की परिभाषा का द्वारा सामूहिक कार्य के समाप्त कार्यक्रम की भूमिका को भूमिका की ज़रूरत होती है। अतः जैसे उसमें योग्यता एवं क्षमता होती है, समूह उसी प्रकार की उपलब्धि प्राप्त करता है। वह अपनी व्यक्तियों का समाप्त कार्यक्रम की स्वीकृति की आवश्यकता का प्रमाण करता है। जिस सीमा तक समूह उसकी अपनी भूमिका पूरी करने की आजा देता है वह वहीं अपने कार्य क्षेत्र की सीमा बढ़ाता है। कार्यक्रम कार्य के अन्तर्गत समूह का विभिन्नता करने के उद्देश्यों में समूह की सहायता करता है तथा कार्यक्रमों के चलाने व उनकी आवश्यकताओं के विषय में ज्ञान प्रदान करता है। वह समूह को भाग ले देता है तथा कार्ययोग्यताओं के अनुसार होते हैं। संस्था से बाहर यदि उससे समन्वित होता है तो समुदाय में अन्य समूहों के साथ भी इसका प्रयोग होता है।

जब हम कहते हैं कि सामूहिक समाज कार्य का अर्थ होता है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि यह केवल काम करने का एक तरीका ही नहीं है वरिष्ठ एक क्षेत्र में, व्यवस्थित तथा नियोजित समूह के साथ काम करने का तरीका है। ग्राहकों उद्देश्य प्राप्त करने का चेतन तरीका तथा अभिकल्पित साधन होता है। सामाजिक अर्थमें ग्राहकों कोई भी कार्य करने का तरीका है परंतु यहाँ पर हम सदैव ज्ञान भोग तथा सिद्धांतों की एकीकृत व्यवस्था की खोज करते हैं।
प्रणाली और नियुक्ति में अन्तर है। प्रणाली का तात्पर्य ज्ञान और सिद्धांतों के आधार पर उद्देश्यों का ध्यान से अंतर्दृष्टि तथा समझ का उपयोग है। नियुक्ति ज्ञान और बोध का एक निश्चित परिस्थिति में उपयोग करने की क्षमता है।

11.3 संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में समूह समाज कार्य

अमेरिका में सन् 1961 में डाउनशिप के लिए ओवरसिस्मों एवं सुपरवाइजर्स की नियुक्ति इंस्टीट्यूशन के पारंपरिक निर्धारण कानून के आधार पर ही की गई। सन् 1657 में पहला भिक्षु गृह अस्तित्व निर्धारण के लिए छोटी गया। तत्परता सरकारी निर्धारण के लिए सन् 1658 में एक कार्यकारी की स्थापना की गई। सन् 1699 में सीसोफ्रेम्स में आवाज़, भिक्षुओं तथा अन्य विश्वसनीय लोगों के सुरक्षागृहों में रहने तथा काम करने के लिए कानून बनाया गया। सन् 1823 में न्यूयॉर्क में जे.पी.एन. वेट्स की निर्धारण कानून की कार्य ग्राहकी और संबंधित सूचना एक्ट करने का निर्देश दिया गया। फिर्ते के आधार पर अमेरिका के कई राज्यों में अन्याय, एवं कार्यक्षेत्र की स्थापना की गई। सन् 1824 में न्यूयॉर्क ने ‘काउंटी निर्धारण कानून’ पारित किया गया। सन् 1873 में ‘लातन दान संगठन’ के कार्यों की सरकार की गई एवं सन् 1877 में न्यूयॉर्क में ‘एस.एस. गीटी’ ने ‘न्यूयॉर्क दान संगठन समिति’ की स्थापना की। सन् 1894 में न्यूयॉर्क में एटलस ट्रास्ट सेटलमेंट की स्थापना की गई। सेटलमेंट का उद्देश्य व्यक्तियों के आत्म-संयम का विकास करना था। डा. जान ने अपने वर्षों के सेटलमेंट हाउस के अनुभव के बाद सन् 1915 में सामाजिक चेतना पर बल देते हुए कहा कि ‘लोगों की सहायता केवल इसलिए ही नहीं की जानी चाहिए कि वे स्वयं अपनी सहायता करने में समर्थ हैं। बलिक्षण करनी चाहिए कि हम अपनी स्वतंत्रता के लिए कार्य करने से ही प्राप्त किया जा सकता है।’

सन् 1922 में राष्ट्र बुद्धि सेटलमेंट शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्यों को स्पष्ट किया। यही उद्देश्य तर्कालंब समूह कार्य में व्यक्तिगत विकास हेतु आवश्यक समझे जाते हैं। राष्ट्र बुद्धि के कहा कि ‘सेटलमेंट का पूरा कार्यक्रम शिक्षास्त्र होना चाहिए जिसमें प्रत्येक स्तर में स्वयं सुविधा, उच्च जीवन स्तर की प्रति, वैकल्पिक तथा आध्यात्मिक संस्कृति आदि सभी कार्य प्रारम्भिक तथा अंतिम स्थितियों में शिक्षास्त्र रूप में देखे जाने चाहिए।’

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में समूह समाज कार्य का विकास कई तरहों में हुआ है। प्रारंभ में यह केबल मनोरंजनात्मक ही था परन्तु धीर-धीर विभाजन होता गया और समूह कार्य का रूप समाप्त आता गया। समूह समाज कार्य में मनोरंजन तथा विश्वासात्मक कार्य क्रम सम्मिलित किया गया तथा धीर-धीर इसका विस्तार सेटलमेंट हाउस, शिक्षा, वारों, एम.सी.ए. इत्यादि तक होता गया। इस कार्यक्रमों का विस्तार समाज के सभी समूहों में हुआ और सन् 1935 आगे आगे समूह कार्यक्रमों में व्यावसायिक चेतना जागतिक हुई व्यक्तिक इसी वर्ष समाज कार्य के राष्ट्रीय अध्येतावशेष में समूह कार्य को समाज कार्य की एक पृथक प्रणाली के रूप में स्वीकार किया गया।

गैस क्राएल ने सन् 1937 में कहा कि ‘समूह समाज कार्य का उद्देश्य सामूहिक स्थितियों में व्यक्तियों की पारस्परिक क्रियाओं द्वारा व्यक्तियों का विकास करना तथा ऐसे सामूहिक स्थितियों को उत्पन्न करना जिससे समाज उद्देश्यों के लिए एक संयोजन सुविधा क्रिया उत्पन्न हो सके।’

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में समूह समाज कार्य के कई प्रत्ययों का जन्म हुआ। जिनें प्राजातांत्रिक प्रक्रिया का जन्म हुआ जै. इंसान ने समूह की समस्या समाधान में वैज्ञानिक विधि के उपयोग पर बल आदि प्रभाव कर चुके थे। जो बाद में समूह समाज कार्य के सिद्धांतों के निर्माण में आधार बने।
एम.ई.हार्टफर्ड ने बताया कि सन् 1950 तक समूह समाज कार्य के तीन प्रमुख क्षेत्र थे जो कि 
निम्नलिखित हैं:

1. व्यक्ति का मानव रूप में विकास तथा सामाजिक समायोजन करना,
2. ज्ञान और निपुणता में वृद्धि द्वारा व्यक्तियों की रुचि में बढ़ाने करना, तथा 
3. समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।

पहले सिगमैफ्राइड क्रास्कर के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का अस्तित्व जब सन् 1940-50 के मध्य हुआ, तो समझा 
जाने लगा कि सांस्कृतिक संरचना सामाजिक अकसरायमत्व के कारण उत्पन्न होता है और इसी कारण व्यक्ति के 
अचेतन मस्तिष्क के कारण तो महत्व दिया जाने लगा तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान चिकित्सीय तथा 
मनोचिकित्सीय समूह समाज कार्य प्रकार में आया। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने-होते समूह समाज कार्य को 
सामाजिक, राजनीतिक तथा अर्थव्यवस्था कारों ने प्रभावित किया और अमेरिका में विभिन्न विद्वानों ने इसके कई 
प्रारूपों का निर्माण किया।

11.4 इंग्लैंड में समूह समाज कार्य

इंग्लैंड में सहायता के कार्य पुरुष: चर्च के द्वारा किए जाते थे। सन् 1349 में किंग एडवर्ड तृतीय द्वारा आदेश 
दिया गया कि पुरुष शरीर वाला प्रथम व्यक्ति कोई न कोई कार्य अवश्य करे। सन् 1531 में हेन्री नियमावली ने 
भिष्का माँगने हेतु पंजीकरण अनिवार्य कर दिया। यह पहली बार हुआ जब निर्देशों के प्रति उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य 
को महत्व किया गया। सन् 1536 में निर्देशों की सहायता हेतु पैरिसों में निर्देशों के पंजीकरण हेतु एक योजना का 
निर्माण हुआ। पुरुष शरीर वाले भिष्का यादावों का काम करना आवश्यक किया गया तथा उन बच्चों, जिनकी आयु 5 से 
14 वर्ष के मध्य में थी और वे काम नहीं करते थे, के माता-पिता को प्रशिक्षण दिया जाने लगा। सन् 1576 में सुधार 
गृह की स्थापना की गई, जिसमें बच्चों को कार्य करने हेतु बाध्य किया जाता था। सन् 1601 में निर्देशों हेतु एक 
नया कानून बना जो ‘43 एलिजाबेथ’ के नाम से जाना है। इस कानून में निर्देशों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया 
गया। सन् 1662 में सेटरलेम कानून बनाया गया, जिसमें ‘शासन के न्यायाधीशों’ को यह अधिकार दिया गया कि 
उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में 40 दिन के भीतर जरूर तथा अनिवार्यता पाए जाने पर उनके निष्कासन की प्रार्थना 
करें। परंतु सन् 1795 में इस कानून में कुछ परिवर्तन किए गए।

सन् 1696 में ‘कार्यशाला कानून’ बनाया गया, जिससे प्रत्येक तथा बच्चों के बच्चों की लुइ, कटाई-लुइ, जारी 
तथा पाली के उपयोग आदि हेतु शिक्षा व प्रशिक्षण आरम्भ किया गया। सन् 1767 में 6 वर्ष के कम आयु के 
बच्चों को हटाया गया तथा उन्हें पोषक परियोजना में रखने की योजना की गई। सन् 1795 में बृद्ध, बीमारों तथा 
अपाहिजों की सहायता‘स्पिनहैम लैण्ड कानून’ बनाया गया।

सन् 1832 में विभिन्न निर्देश कानूनों के प्रसारण के बाद व्यावहारिक कार्यविधि आाँचने के लिए एक राजकीय आयोग 
बनाया गया। इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर सन् 1834 में नवीन कानून पारित किया गया। तत्पश्चात सन् 
1874 में निर्देश कानून आयोग के स्थान पर ‘निर्देश कानून बोर्ड’ की स्थापना की गई, जिसका विभिन्निर्देश तके 
कारणों तथा सामाजिक सुधार के प्रभावशील साधनों के लिए कार्यों का निर्धारण करना था।

इंग्लैंड समूह कार्य के विकास में समस्त अधिक प्रभावशील भूमिका ‘दान गठन समिति’ ने निभाई है। समिति ने 
यह स्वीकार किया कि निर्धार व्यक्ति अपने निर्धारणों हेतु स्वयं उत्तरदायी है। इस समिति का गठन सन् 1868 में 
‘हेन्री सौल’ ने किया था, जिसका पूरा में नाम ‘परोपकारी कल्याण संगठन एवं भिक्षावृत्ति उपलब्ध समिति’ था।
इस क्रम में सन् 1873 में कैनन बारनेट ने कहा कि जो मानसिक भेद या यूजियी निर्धार एवं सम्पन्न लोगों के बीच उपन्यास हो गई है, उसे तब तक दूर नहीं किया जा सकता जब तक विश्वसनीयता सम्पन्न लोग निर्धार ने किया नहीं जाएगा तथा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता नहीं करेगा।

कैनन ने यह भी कहा कि ‘‘व्यक्तियों की शक्ति को अधिक शक्तिशाली समूह में ही बनाया जा सकता है। जहाँ पर समाज लक्ष्य, उद्देश्य के प्रति चेतना उपन्यास करता है जहाँ मित्रता आरम्भ देती है एवं संवृद्धि सहयोग करने के लिए बाध्य करती है’’।

सन् 1944 में ‘‘रोशेडल’’ में पहला सहकारी भंडार खोला गया जिसके मालिक स्वर्ण श्रमिक थे। ‘‘रबर्ट ओवन’’ ने एक औद्योगिक समुदाय की स्थापना की जहाँ पर वह स्वच्छता तथा क्रीड़ास्थलों से संबंधित स्वास्थ्यप्रद सुविधाओं की उपलब्धता मजबूत हुई तथा उनके परिवारों के लिए थी। इसके अतिरिक्त वहाँ पुस्तकालय एवं मनोरंजन की सुविधाएं भी थी।

सन् 1844 में जार्ज़ बिलिंग्स ने नौजवानों को इंसाई जीवन प्रशिक्षण पर चलने की प्रेमणा देते हुए ‘‘युवा पुरुष इंसाई संघ’’ की स्थापना की गई। जिसमें बालकों के लिए खेलाधूरु, संगीत नृत्य एवं मनोरंजन की सुविधाएं भी थीं।

इंग्लैंड में बीसवीं शताब्दी के पहले समूह समाज कार्य का उद्देश्य सामाजिक चेतना तथा सामाजिक उदारबिश्व की भाषण का विवाद करना था। परन्तु सन् 1920 के पहले इसका उपयोग व्यक्ति के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन तथा उसके विकास के लिए किया जाना लगा। इतिहासिक विश्व युद्ध के अंत इंग्लैंड के शिक्षा महानगर द्वारा युवा सेवाओं के रूप में समूह समाज कार्य का मानवता प्राप्त हुई। युवाओं के प्रशिक्षण में समूह समाज कार्य का ज्ञान जाना लगा। परन्तु सन् 1960 तक समूह समाज कार्य हेतु शिक्षा अथवा थी और परन्तु बाद में विभिन्न समाज कार्य संगठनों में इसका तेजी से विस्तार हुआ।

11.5 भारत में समूह समाज कार्य

भारतीय समाज व्यवस्था: व्यक्ति के व्यवहारकरण की प्रक्रिया पर ही आधारित रहा है, जहाँ प्राचीनकाल से ही प्रयोक्ति व्यक्ति की सहायता का उदारबिश्व समुदाय के प्रति व्यक्ति के प्रायथन था, जिसके लिए धर्म की सहायता भी हो गई। राजा का वर्तमान था कि वे अपने राज्य नागरिकों की सहयोग सेवा को तथा धर्म की सहायता की। राजा इसके लिए मंदिरों तथा मठों की स्थापना करता था तथा मंदिरों और आषार्मों के माध्यम से श्रद्धा के लिए आवास का निर्माण, गृहों को मंदिरों इत्यादि में रहने की यौगति, बूढ़ों एवं लौटरों के लिए विभिन्न प्रकार के आषार्मों तथा विभिन्त्वप्रदायों का निर्माण इत्यादि कराता था। महानगर जन ने बीजां धर्म की स्थापना की जिसमें संघ का निर्माण किया गया। संघों की स्थापना में सामूहिकता को बल मिला क्योंकि संघ को दी जाने वाली कोई भी समस्ति किसी भी व्यक्ति के लिए व्यक्तित्व रूप से अधिकार में नहीं ली जा सकती थी। समूह के सच्चाप मध्य भारत में बड़े-बड़े सामूहिक उद्योगों का उद्योग हुआ, जिनमें गुमल, गुमल तथा समूह सामूहिक युवा सामूहिक जनता का सहायता हेतु विभिन्न प्रकार के कार्य किए। सरसों नवाय, कुंड़ खुदाया, विभिन्त्विधायों की स्थापना इत्यादि कार्य व्यापक पैमाने पर किए गए। इसी तरह मुगल काल में अकबर महान द्वारा जन-कल्याण के कार्य संसाधित किए गए।

मुगलों के सामूहिक उद्योग के पतन के बाद जब ब्रिटिश सामूहिक युवा स्थापना भारत में हुई तो एक और तो उसने भारतीयों पर विभिन्न प्रकार के महर्षि बनाकर उनके प्राचीनतमाद अधिकार देने नवीनीत और भारतीयों में उनकी दमकल की नीतियों के दौरे पर अधिकार एवं सामूहिक चेतना के प्रति जागरूकता भी मजबूत हुई। क्योंकि अमेरिका के भारत आगमन पर ही भारतीय, पक्षिमी जाति के विकास पर परिवर्तित हुआ। इसी सामूहिक सहयोग के चरम तक सन् 1780 में बंगाल (बंगाल में पश्चिमी बंगाल) में ‘‘श्रीरामपुर मिशन’’ की स्थापना हुई। इस मिशन ने बाल-विवाह,
बालिकाओं की हत्या, सती-प्रथा को तथा विधवा विवाह को करने हेतु बहुत प्रयास किए। सन् 1828 में राजा राम
मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की, जिसने निर्धरण एवं कुर्बिक्ष कल्याण, बालिकाओं की शिक्षा, विधवाओं
की स्थिति में सुधार इत्यादि अनेक प्रकार के कार्य किए। जाति प्रथा तथा सती प्रथा के विरुद्ध राजा राम मोहन राय
द्वारा बहुत सारे कार्य किए। इसी प्रकार सन् 1861 में न्यायाधीश रानाडे द्वारा ‘विधवा विवाह संधि’ की स्थापना
अवस्था प्रारंभित करी। सन् 1877 में पूर्णा में ‘प्रार्थना सभा’ की स्थापना की गई, और भण्डारक, चित्रामणि
चन्द्रवर्कर, तथा नरेंद्र नाथ ने भारत में समाज सुधार के क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

सन् 1877 में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई। भारतीय समाज में ‘आर्य समाज’
समाज सुधार का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण आंदोलन था। सन् 1881 में मैडम व्लास्की तथा कर्नल आल्काट द्वारा
‘वियोसोफिकल सोसाइटी’ की स्थापना की। सन् 1882 में रामावाई द्वारा ‘आर्य महिला समाज”, सन् 1887 में
शंकिपद बनर्जी द्वारा हिन्दू विधवाओं हेतु ‘विधवा गुहा’ की स्थापना आदि समूह समाज आर्य के विकास हेतु मौल
का पत्थर सिद्ध हुआ।

सन् 1905 में गोपाल कुण्डलोगे द्वारा ‘सबेंदूस आफ इण्डिया’ की स्थापना की गई, जिसने लोगों में सामाजिक,
राजनीतिक तथा आर्थिक कार्यों की जागरूकता हेतु समूह कार्य का प्रयोग किया। शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु सन्
1906 में बी.आर. शिवाजे ने ‘विलेस्यर कार्य मिशन सोसाइटी’ की स्थापना की। सन् 1908 में बाँधने संघ ने ‘सेवा
सदन’ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य विविधता संबंधी सहायता व कार्यशालाएं चलाना और महिला
कार्यक्रमों को प्रशिक्षित करना था। धीर-धीरे भारत में समूह समाज का विकास तेजी पकड़ता गया। आज
बतूरान में भारत में कई प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों में समूह समाज कार्य की शिक्षा दी जा रही है।

11.6 सारांश
प्रस्तुत इकाई में समूह समाज कार्य के विषय में अध्ययन किया। इसके पश्चात संयुक्त राज्य अमेरिका में समूह समाज
कार्य की पहचान, तत्कालीन इंग्लैंड में समूह समाज कार्य के विषय में विचार किया तथा अंत में भारत में समूह समाज
कार्य के बारे में जान प्राप्त किया।

11.7 अध्यायासर्वोत्तम प्रश्न
1. समूह समाज कार्य की समझाइयें।
2. संयुक्त राज्य अमेरिका में समूह समाज कार्य के विकास का वर्णन कीजिए।
3. इंग्लैंड में समूह समाज कार्य के विकास की विस्तृत रूप से समझाइयें।
4. भारत में समूह समाज कार्य के विकास का विस्तृत वर्णन कीजिए।

11.8 सन्दर्भ प्रणय
सिंह, डी. के., 1965, भारती, ए. के., 1963, सोपल वर्क केनरीटॆंड मैथड्स, न्यू रायल इंक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालीवाल, सोफिया, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विध्यन एवं कूल तत्त्व, न्यू रायल इंक
कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010. 80
मिश्र, पी॰ डी॰, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुरेंद्र, मिश्र, पी॰ डी॰, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्र, पी॰ डी॰, सामाजिक वैज्ञानिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी॰ के॰, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अबधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुरेंद्र, वर्मा, आर॰ बी॰ एस॰, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी॰ डी॰, मिश्रा, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.
समूह की विशेषताएं

इकाई -12

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य
12.1 प्रस्तावना
12.2 समूह की विशेषताएं
12.3 समूह समाज कार्य की विशेषताएं
12.4 समूह समाज कार्य के विषय में भार्तत्व श्रेणि
12.5 समूह समाज कार्य के अंग
12.6 समूह समाज कार्य का महत्व
12.7 सारांश
12.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
12.9 सन्दर्भ प्रणय

12.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के उपरांत आप

1. समूह की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
2. तत्पश्चात् समूह समाज कार्य की विशेषताओं के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. इसके पश्चात् समूह समाज कार्य के विषय में भार्तत्व श्रेणि के बारे में वर्णन कर सकेंगे।
4. इसके पश्चात् उल्लेख कर सकेंगे तथा इकाई के अंत में समूह समाज कार्य के महत्व का अध्ययन कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में समूह की विशेषताओं के विषय में वर्णन किया गया है। समूह की प्रमुख विशेषताओं के अध्ययन एक से अधिक व्यक्तियों का संग्रह, पारस्परिक सम्बन्ध, सामान्य हित एंवं उद्देश्य, एकता की भावना, सांपेक्षिक स्थायित्व तथा समूह आदर्श नियमों का उल्लेख किया गया है। समूह समाज कार्य, समाज कार्य की एक प्रणाली है। जिसका आधार प्रजातात्विक प्रक्रिया है। इसमें समूह को विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के बाध्य नहीं किया जाता है। समूह को पूरा अधिकार होता है कि वह अपने लक्ष्यों, कार्यक्रमों एवं प्रक्रियाओं को अपनी रूचि के अनुसार व्यवस्थित एवं संगठित करे। समूह समाज कार्य समूह के सदस्यों में आत्म निर्देशन की योग्यता का विकास करता
है। कार्यक्ता समूह की सहायता उसी सीमा तक करता है। जहाँ तक समूह आवश्यक समझा जाता है। समूह का उपयोग सामाजिक जीवन की सुसंगठन बनाने के लिए किया जाता है। इस प्रणाली की अपनी विशिष्ट निपटानें, सिद्धांत एवं प्रविष्टियाँ है।

12.2 समूह की विशेषताएँ
सामाजिक समूह की विभिन्न समाजशास्त्रियों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं —

एक से अधिक व्यक्तियों का संग्रह
समूह में सदस्य एक से अधिक व्यक्ति होते हैं। अर्थात् कम से कम दो व्यक्ति का होना आवश्यक है। जो किसी भी समूह की प्राथमिक विशेषता कहीं जा सकती है। जैसे-परिवार समूह का निर्माण पति-पत्नी के द्वारा होता है।

पारस्परिक सम्बन्ध
मनुष्यों के किसी भी संग्रह मात्र को समूह नहीं माना जा सकता है। समूह के सदस्यों में परस्पर अन्तः सम्बन्ध होने चाहिए। वास्तव में ये सामाजिक सम्बन्ध ही समूह का आधार है। यही कारण है कि किसी मेले या भीड़ को सामाजिक समूह नहीं कहा जाता है।

सामान्य हित और उद्देश्य
समूह के सदस्य सामान्य हित और लक्ष्य के बलते एक साथ रहते हैं। वास्तव में व्यक्ति सामाजिक समूह का सदस्य समान हित एवं उद्देश्य होने पर ही बनता है। समूह में प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ अपना स्वार्थ जुड़ा होता है। परन्तु यह स्वार्थ समूह के सभी सदस्यों का समान रूप से होता है।

एकता की भावना
सामाजिक समूह के सभी सदस्य एकता और परस्पर सहानुभूति की भावना से बंधे रहते हैं।

सामूहिक स्थापना
प्रत्येक समूह सामूहिक दृष्टि से विभिन्न व्यक्तियों के एकत्रीकरण की तुलना में अधिक स्थाई प्रकृति का होता है। जैसे किसी मेले या भीड़ की तुलना में परिवार, क्रीड़ा-समूह, पढ़ो-दोढ़ो, आदि अधिक स्थाई समूह है।

समूह आदर्श नियम
प्रत्येक प्रकार के समूह में अपने सदस्यों के व्यवहार हेतु निश्चित नियम कानून होते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि यह नियम कानून लिखित रूप से हो। समूह अपने स्वाभाविक हेतु सदस्यों से यह अपेक्षा रखता है कि वे समूह के नियम कानूनों का पालन ठीक से करें।

कार्य विभाजन
समूह के सभी सदस्यों के अलग-अलग कार्य होते हैं जिनके पूर्व होने पर ही समूह के उद्देश्य प्राप्त होते हैं। कहाँ ना कहाँ तात्पर्य यह है कि समूह के सदस्य पारस्परिक सम्बन्धों से जुड़े रहते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी सदस्य एक ही प्रकार का कार्य भी करते हैं। 83
समूह की सदस्यता
सामाजिक समूह का सदस्य होना व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने विभिन्न हितों और उद्देश्यों के अनुसार समूह का सदस्य होना स्वीकार या अस्वीकार करता है। इस प्रकार कुछ समूह ऐसे होते हैं जिसकी सदस्यता व्यक्ति जब चाहे त्याग सकता है अथवा प्रहण कर सकता है। परन्तु कुछ प्राथमिक समूहों जैसे परिवार, नातेयारी आदि की सदस्यता आसानी से नहीं छोड़ी या प्रहण की जा सकती है।

सामाजिक पहचान
प्रत्येक सामाजिक समूह की अपनी एक पहचान होती है। जिसके फलस्वरूप लोग यह जानते हैं कि अंतिक व्यक्ति अंतिक समूह का सदस्य है। यह आवश्यक नहीं है कि किसी समूह के सदस्यों में भली-भाँति पहचान हो। परन्तु समूह या बाहर के लोग किसी व्यक्ति को किसी समूह के सदस्य के रूप में सामाजिक पहचान रखते हैं।

हम की भावना
सामाजिक समूह की एक विशेषता हम भावना का होता है। समान लक्ष्य, स्वार्थ एवं दृष्टिकोण के कारण सदस्यों में परस्पर सहयोग पाया जाता है जो हम की भावना का विकास करते हैं।

12.3 समूह समाज कार्य की विशेषताएं
जब हम समाज कार्य की निम्नलिखित परिभाषाओं का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि:

1. समूह समाज कार्य, समाज कार्य की एक प्रणाली है। जिसका आधार प्रजातांत्रिक प्रवृत्ति है। इसमें समूह को विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बाह्य नहीं किया जाता है। समूह को पूरा अधिकार होता है कि बहु लघु लघु अन्य समूहों एवं क्षेत्रों को आत्मीय रूप से अनुसार व्यवस्थित एवं संगठित करे।

2. समूह समाज कार्य व्यक्तियों में प्रजातांत्रिक जीवन के आदर्शों एवं नेतृत्व की योग्यता का विकास करता है।

3. समूह समाज कार्य द्वारा समूह के सदस्य में रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है। कार्यक्रम एक विशेषता के रूप में कार्य करता है।

4. समूह समाज कार्य समूह के सदस्यों में आत्म निर्देशन की योग्यता का विकास करता है। कार्यक्रम द्वारा समूह की सहायता उसी सीमा तक करता है जहाँ तक समूह आवश्यक नहीं है।

5. समूह का उपयोग सामूहिक जीवन को सुधारने के लिए किया जाता है।

6. इस प्रणाली की अपनी विशिष्ट निपटाएं, सिद्धांत एवं प्रतिकृतियां है।

7. समूह समाज कार्य संस्था के माध्यम से कार्य करता है।

8. यह व्यक्तियों की माननीयता में विकास रहता है और प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक जीवन में बराबर का भाग देते और अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर देते हैं।

9. समूह के सदस्यों के लिए समूह कार्य एक नवीन अनुभव होता है।
12.4 समूह समाज कार्य के विषय में भारतीयों

समाज कार्य एक नवीन व्यवसाय है, इस कारण अधिकांश लोग यहाँ तक कि चिंतित लोग भी इसके अर्थ से पूर्व अब नहीं हैं। समूह कार्य विषय में भी अनेक अर्थकर्ता लगायी जाती हैं और अलग-अलग विचार प्रस्तुत किये जाते हैं। द्रव्यक ने निम्नलिखित भारतीयों का उल्लेख किया हैं:

समूह कार्य एक अभिकरण के रूप में

कुछ लोगों की धारणा है कि समूह कार्य एक ऐसा सामाजिक अभिकरण है जिसके द्वारा कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। परंतु यह कथन किसी भी प्रकार से सत्य नहीं है क्योंकि समूह कार्य द्वारा अभिकरण के सभी अथवा कुछ कार्य पूर्व किये जाते हैं।

समूह कार्य एक विशेष कार्यक्रम के रूप में

कुछ व्यक्ति सोचते हैं कि समूह कार्य एक विशेष कार्यक्रम है परंतु यह व्यवस्था में एक प्रणाली है जिसके द्वारा विभिन्न क्रियाओं को सम्पन्न किया जाता है।

समूह कार्य एक विशेष प्रकार के समूह के रूप में

कुछ लोग बताते हैं कि समूह समाज कार्य ऐसा समूह है जिसमें विशेष क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं। परंतु यह कोई विशेष समूह नहीं होता है। जहाँ जैसे आवश्यकता होती है, समूह का निर्माण कर लिया जाता है और उसके माध्यम से कार्य समाधान किये जाते हैं। कुछ लोग विदेश को समूह कार्य मानते हैं क्योंकि इसके द्वारा विभिन्न क्रियाओं या समूहों के कार्यों को सम्पन्न किया जाता है।

12.5 समूह समाज कार्य के अंग

समूह समाज कार्य एक प्रणाली है जिसके द्वारा कार्यकर्ताओं व्यक्ति को समूह के माध्यम से किसी संस्था में सेवा प्रदान करता है, जिससे उसके व्यक्तित्व का संरचनित विकास सम्भव है। इस प्रकार समूह समाज कार्य निम्नलिखित तीन अंगों पर आधारित हैं:

(i) समूह
(ii) कार्यकर्ता, एवं
(iii) संस्था (अभिकरण)

समूह

समूह मानव मान की अवधारणा है। कार्यकर्ताओं व्यक्ति को समूह सदस्य के रूप में जानता है और उसकी विशेषताओं को पहचानता है। समूह एक आवश्यक समान तथा यथार्थता होता है, जिसको उपयोग में लाकर सदस्यों अपने उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। समाज के गतिविधियों के लिए समूह सदस्यों के कुछ सीमांत तक संघटित, उद्देश्यों, वैद्यकिक स्थापना अवश्य में समानता होनी आवश्यक होती है। इसी समानता पर यह निश्चित होता है कि सदस्य समूह में समान अवस्था कहीं तक पा पाएं और कहीं तक उद्देश्यों तथा प्रणाली सम्बन्ध स्थापित हो सकें। समूह तथा कार्यकर्ताओं सामाजिक, मनोरंजनात्मक तथा शिक्षात्मक क्रियाओं को सदस्यों के साथ सम्पन्न करते हैं, तथा इसके द्वारा वह निपुणताओं का विकास करते हैं। व्यक्ति, समूह के माध्यम से अनेक प्रकार के समूह
अनुभव्यों को प्राप्त करता है, जो उसके लिए आवश्यक होते हैं। समूह द्वारा वह भिन्न तथा संधियों का भाव उत्पन्न करता है, जिससे सदस्यों की महत्वपूर्ण आवश्यकता। इससे ‘भिन्न के साथ रहने की’, पूर्ति होती है। वे माता-पिता के नियंत्रण से अलग होकर अन्य लोगों के साथ सामाजिक बीमार होते हैं तथा निपुणता विकसित करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यक्ति के विकास के लिए समूह आवश्यक होता है। समूह ही वह एकमात्र साधन है जहाँ पर व्यक्ति का सामाजिक विकास सम्भव होता है। समूह के अन्दर ही वह उन संबंधों की व्यापक करता है जो उसके विकास हेतु अन्य आवश्यक होते हैं। समूह की आवश्यकता को उसे महत्वक़ाँशी सामाजिक प्राणी बनाती है।

कार्यकर्ताएँ

समूह समाज कार्य में कार्यकर्ताएँ उस समूह का सदस्य नहीं होता है, जिसके साथ वह कार्य करता है। कार्यकर्ताएँ में कुछ निपुणता होती है, जो व्यक्तियों के संबंधों व्यवहारों तथा भावनाओं आदि के ज्ञान पर आधारित होती है। उससे समूह के साथ कार्य करने की अदृश्य श्रमिक होता है तथा किसी भी प्रकार की सामाजिक सिद्धि से निपटने की शक्ति और सत्तानीतात्मक होती है। वह अपने सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति (सेवाधीन) में परिवर्तन लाता है तथा उसका विकास करता है। इस हेतु कार्यकर्ताओं को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है:

1. सामुदायिक स्थिति एवं समूह का प्रकार
2. संस्था के कार्य तथा उद्देश्य
3. संस्था के कार्यक्रम तथा सुविधाएँ
4. समूह की विशेषताएँ
5. सदस्यों के संबंध, आवश्यकताएँ तथा योग्यताएँ
6. संस्था के संसाधन
7. कार्यकर्ताओं की स्थिति की निपुणताएँ तथा श्रमिकता
8. समूह की कार्यकर्ताओं से सहायता प्राप्त करने की इच्छा,
9. समूह की स्थिति की विस्तार करने की इच्छा, एवं
10. समूह विशेष रूप से संचालित योजनाएँ एवं नीतियाँ आदि।

समूह कार्यकर्ताएँ अपनी सेवाओं द्वारा निर्धारित सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह व्यक्ति के स्वतंत्र विकास तथा उन्नति के अवसर प्रदान करने हेतु समृद्ध बातचीत का निर्माण करता है तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। वह सामाजिक सम्बन्धों को आधार मानकर शिक्षावात्सल तथा विकासात्मक जिम्मेदारों का आयोजन व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए करता है। कार्यकर्ताओं ही वह मात्र होता है जिसके द्वारा सामूहिकता की भावना को बना मिलता है क्योंकि वह व्यक्ति समूह के द्वारा अपनी रीढ़ स्थिर रखने के लिए अवधि ध्यान देने लगता है। तो कार्यकर्ताओं ही उसे इस प्रयास से बचाता है तथा सामूहिक हित के विषय में उसे ज्ञान कराता है। कहना गलत नहीं होगा कि कार्यकर्ताओं समूह के विकास का अभिभावक आधार है।
कार्यकर्ताओं को समूह कार्य करने वाली संस्था के विषय में निम्नलिखित तथ्यों से भलीभावि परिचित होना आवश्यक है:

1. कार्यकर्ताओं को संस्था के उद्देश्यों तथा कार्यों का ज्ञान होना चाहिए,
2. अपनी रूढियों की उन कार्यों से तुलना करके कार्य करने की तैयारी रहना चाहिए,
3. संस्था के सामान्य विशेषताओं से अवगत होना चाहिए तथा साथ ही साथ उसके कार्य क्षेत्र का भी ज्ञान होना चाहिए,
4. कार्यकर्ताओं को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि संस्था के पास समूह की सहायता के लिए क्या- क्या साधन तथा शोध हैं,
5. संस्था में सामूहिक समबन्ध स्थापन की दशाओं का ज्ञान होना चाहिए,
6. संस्था के कर्मचारियों से अपने समबन्ध के प्रकारों की जानकारी होनी चाहिए,
7. कार्यकर्ताओं को जानकारी होनी चाहिए कि ऐसी संस्थाएं तथा समूह कितने हैं, जिनमें किसी समस्याग्रस्त सदस्य की सहायता की जा सकती है, तथा
8. कार्यकर्ताओं को संस्था द्वारा समूह के मूल्यांकन की पद्धति का ज्ञान होना चाहिए।

संस्था

यह समूह समाज कार्य का तीसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। संस्था की प्रकृति एवं कार्य, कार्यकर्ताओं की भूमिका को निश्चित करते हैं। समूह कार्यकर्ताओं अपनी नियुक्तियों का उपयोग संस्था के प्रतिनिधित्व के रूप में करता है व्यक्ति समुदाय संस्था के महत्व को समझता है तथा कार्य करने की स्वीकृति देता है। अतः कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक होता है कि वह संस्था के कार्य से भलीभावि परिचित हो। समूह के साथ संस्था निम्नलिखित कार्य करती है:

1. समूह में एक जुड़ना बनाए रखती है,
2. समूह विकास हेतु संसाधनों का प्रबन्ध करती है,
3. कार्यकर्ताओं हेतु कार्यक्रम संचालन के लिए आधार प्रदान करती है।
4. कार्यक्रम विकास में कार्यकर्ताओं की सहायता करती है, एवं
5. समुदाय के विषय में आवश्यक जानकारी एवं अंक के एकत्र करती है, आदि।

इस प्रकार समूह समाज कार्य में क्रिया विधियों के समूहित संचालन हेतु संस्था का होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि कार्यकर्ताओं कार्यक्रम का निर्माण तथा संचालन संस्था के द्वारा ही करता है और संस्था ही वह साधन है जो कार्यकर्ताओं की सीओ को आधार प्रदान करता है।
12.6 समूह समाज कार्य का महत्त्व

मनुष्य की भौतिक तथा मानवीय आवश्यकताएं समूह में ही रहकर पूरी हो सकती हैं। समूह समाज कार्य
इन आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करता है। अतः समूह समाज कार्य एक आवश्यक सेवा है। इसके महत्त्व
को निम्नलिखित प्रकार से आकार जा सकता है:

1. व्यक्ति समूह में ही जमा लेता है, बड़हा है तथा सामाजिक यात्रा करता है। समूह से पृथक उसका कोई
असिद्धता नहीं है। सामूहिक जीवन हो व्यक्ति का वार्तालापी जीवन है। व्यक्ति का विकास सामूहिक अनुभव पर ही
nिर्भर करता है। भौतिक कथित वृथा के कारण सामूहिक जीवन असत-व्यस्त हो गया है। वर्तमान वृथा ही नहीं चलने
बिकास के प्रत्येक चरण में मनुष्य ने स्वयं को एकता की पाया है। वह इसी कारण से मानसिक संतोष की स्थिति में
nहीं पहुँच पाया है। इसी कारण से समूह समाज कार्य की आवश्यकता को बताना मिलता है।

2. विकास के परिणामस्वरूप कहीं भी आतंतिक रूप से एकता देखने को नहीं मिलता है। भी लोग अपने
तक सीमित होकर रह गए हैं तथा पृथक्‌बाद की विचारधारा दिनोदिन बढ़ रही है। इस विचारधारा के कारण मानव
अपने को कभी निरोध, तो कभी असहयोगी समझ लेना है। वह सदैव चिंता में रहता है, जिससे मानसिक विकारों
का शिकार हो जाता है। समूह कार्य इस दिशा में प्रयत्न करता है कि व्यक्ति कितने भी अवस्था में एकात्र जीवन न
व्यस्तीत करे।

3. प्रत्येक व्यक्ति की मूल इच्छा होती है कि उसका समाज में स्थान हो, लोग उसका आदर एवं सम्मान करे।
समूह कार्य अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रत्येक सदस्य को यह अनुभव देता है कि उसका भी
कोई महत्व है। समूह समाज कार्य उसकी इस इच्छा की संतुष्टि करता है।

4. समाज में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो यह न चाहता हो कि उसके कार्यों, व्यवहारों तथा विचारों को
समाज में मान्यता प्राप्त हो। लेकिन आज व्यक्ति का जीवन इतना संकटमय है कि स्वयं ही पेशावर है। उसका
प्रयत्न सदैव को अनआत्मक बनाने में लगा ही रहता है। समूह कार्य द्वारा प्रत्येक सदस्य को अपनी उपस्थिति एवं
उपलब्धि की स्वीकृति प्राप्त करना होता है। कार्यकारिणी समूह की विभिन्न गतिविधियों में व्यक्ति की इच्छाओं तथा सृष्टियों
को स्वीकृति प्रदान कर उसके आंदोलन का संतुष्टि करता है।

5. समूह में प्रत्येक सदस्य अपनी भौसिक तभी पूरी कर सकता है, जब दूसरे सदस्य उसे अनुभव प्रदान करे।
इस प्रकार यह दूसरों के साथ रहना, काम करना तथा व्यवहार करना सीखता है, जिसका परिणाम होता है कि वह
अपने जीवन का रास्ता समाजीयतात्मक बना लेता है और धीरे-धीरे वह समाजीय सार सीख लेता है।

6. समूह कार्य व्यक्ति के समग्र होने की इच्छा की पूर्ति करता है। सभी व्यक्तियों की यह इच्छा होती है कि
वह समूह का अंग बने तथा उसे समाज के एक आवश्यक अंग के रूप में मान्य त्योहार हो। समूह कार्यक्रमों के
माध्यम से इस इच्छा की संतुष्टि होती है।

7. समूह अनुभव द्वारा सहयोग से कार्य करने तथा रहने के गुण का विकास होता है। वर्तमान समय में
सहयोगिक जीवन में सहयोगिक क्रियाएं अत्यन्त आवश्यक हैं, याचिका मनुष्य की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति दूसरों के सहयोग पर
निर्भर है। समूह कार्य द्वारा उन्हें सहयोगिक क्रियाओं का अनुभव होता है। इसके लिए समूह कार्य उद्देश्यपूर्ण सम्बन्धि
स्थापित करने में सहायता करता है। व्यक्ति समूह का सदस्य किसी विशेष उद्देश्य को लेकर बना है। इन उद्देश्यों के
आधार पर ही समस्त कार्य स्थापित करता है। इस प्रकार वह संबंधों का उपयोग उद्देश्यपूर्ण ढंग से करना सीखता है।

8. समूह कार्य द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास होता है। सामूहिक अनुभव प्रत्येक सदस्य को समानता,
स्वतंत्रता तथा सामाजिक न्याय प्रदान करता है।
9. समूह मानवीय क्षमताओं को बढ़ा करता है। यह व्यक्ति एवं समूह की क्षमताओं को सुधार बनाता है तथा उनमें वृद्धि करता है। सामृद्धिक अनुभव द्वारा व्यक्ति की छिली क्षमताएं तथा योग्यताएं उभरकर प्रकट होती है, जिससे वह अपना प्रभाव सुखमय बनाता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आधुनिक समय में समूह समाज कार्य महत्वपूर्ण प्रणाली के रूप में सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। साथ ही साथ यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि युग चाहे कोई भी रहा हो, समूह की आवश्यकता मनुष्य को सता ही रहती है, क्योंकि वह ग्राम्य से हो जाना था कि वह एककी रूप से जीवित रह सकता है परंतु सामृद्धिक रूप से उससे अधिक शक्ति शाली अन्य कोई नहीं है। मनुष्य के सामृद्धिक प्रयासों ने ही वर्तमान में सर्वाधिक शक्तिशाली बना दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं समूह समाज कार्य का अभ्युदय व्यक्ति की सामृद्धिकता की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हुआ है। समूह समाज कार्य स्वयं में अत्यंत ही महत्वपूर्ण प्रणाली है जिसके माध्यम से कार्यकर्ता व्यक्ति को समूह की तथा समूह को व्यक्ति की आवश्यकता को परिचालित करते हुए व्यक्ति को समाजनीतिक जीने के गुणों का विकास करता है और समूह में प्रजातात्त्विक ध्वनियों की बढ़ति करता है जिससे समूह का नेतृत्व तानाशाह न होने पाए।

### 12.7 सारांश
प्रस्तुत इकाई में सर्वप्रथम समूह की विशेषताओं के विषय में अध्ययन किया। समूह समाज कार्य की विशेषताओं के विषय में जान प्राप्त किया। तत्पश्चात समूह समाज कार्य की भावनाओं को समझा। समूह समाज कार्य के अंगों के बारे में अध्ययन किया तथा इकाई के अंत में समूह समाज कार्य के महत्त्व के विषय में जानकारी प्राप्त की।

### 12.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. समूह की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।
2. समूह समाज कार्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. समूह समाज कार्य के विषय में फैली भावनाओं को समझायें।
4. समूह समाज कार्य के अंग का वर्णन करते हुए इसके महत्त्व को समझाये।

### 12.9 सन्दर्भ ग्रंथ
सिंह, डी. के., भारती., ए., के., सोलाल वर्म कान्सेंट ऐंड मेथ्डियस, न्यू रायल बुक कम्पनी लाखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालीवाल, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विश्व नव मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कम्पनी लाखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी., डी. के., सामाजिक सामृद्धिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुरेंद्र, मिश्र, पी., डी. के., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लाखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्र, पी., डी. के., सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक हिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुगंत्र, वर्मा, आर. बी., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्रा, पी. डी., मिश्रा, बी.ना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सामूहिक समाज कार्य: अवधारणा एवं आवश्यकता

इकाई-13

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2. सामूहिक समाज कार्य की अवधारणा
13.3 सामूहिक कार्य की भ्रान्तियाँ
13.4 सामूहिक कार्य की मूल मान्यताएँ
13.5 सामूहिक कार्य दर्शन
13.6 सामाजिक सामूहिक कार्य की आवश्यकता एवं महत्व
13.7 सारांश
13.8 अभ्यासार्थ प्रश्न
13.9 सन्तर्भ प्रायक

13.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्याय के उपरांत आप...

1. सामूहिक कार्य की अवधारणा एवं अर्थ का अध्ययन कर सकेंगे।
2. सामूहिक कार्य की भ्रान्तियों के विषय में जान लेंगे।
3. सामूहिक कार्य की मूल मान्यताओं का वर्णन कर सकेंगे।
4. सामूहिक कार्य दर्शन का वर्णन कर सकेंगे।
5. तत्प्रत्यावर्तन सामाजिक सामूहिक कार्य की आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में सामूहिक समाज कार्य की अवधारणा एवं आवश्यकता के विषय का वर्णन किया गया है। व्यक्ति के विकास के लिए व्यक्ति की सामूहिक जीवन सम्बन्धी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की संतुष्टि आवश्यक होती है, दूसरी ओर सामाजिक रूप से समूचे लाभ प्राप्त करने के लिए सामूहिक जीवन में भाग लेने, अपनत्व की भावना का अनुभव करने, अन्य व्यक्तियों से परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने, मतभेदों को निपटाने तथा
अपने हितों तथा समूह के हितों को ध्यान में रखकर कार्यक्रम नियोजित और संचालित करने की योग्यता होना जरूरी है। जब सामूहिक जीवन में कोई व्यवधान उत्पन्न हो जाता है, तो व्यक्ति का जीवन अस्त व्यस्त तथा व्यक्तित्व विचित्रित हो जाता है। सामूहिक कार्य इस प्रकार की समस्याओं के समाधान करने का प्रयत्न करता है।

मनुष्क अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूह में रहता है। उसकी भौतिक तथा मानसी आवश्यकताएं समूह में ही रहकर पूरी हो सकती है। सामाजिक सामूहिक कार्य इन आवश्यकताओं की संतुलित में सहायता करता है।

13.2 सामूहिक समाज कार्य की अवधारणा

सामूहिक समाज कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली है, जो सामूहिक क्रियाओं के द्वारा रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने की योग्यता का विकास करती है। विभिन्न सामाजिक विषयों के विकास ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्ति के विकास के लिए व्यक्ति की सामूहिक जीवन समस्याएं इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की संतुलित आवश्यक होती है। जहाँ एक और सामूहिक समस्यागति व्यक्ति के लिए आवश्यक होती है, वहाँ सुरू हो और भागीदारण से समृद्ध लाभ प्राप्त करने के लिए सामूहिक जीवन में भाग लेने, अपनत्व की भावना का अनुभव करने, अन्य व्यक्तियों से सहयोग स्थापित करने, मतभेदों को निपटाने तथा अपने हितों तथा समूह के हितों को ध्यान में रखकर कार्यक्रम नियोजित और संचालित करने की योग्यता होना जरूरी होता है। सामूहिक कार्य द्वारा इन विशेषताओं एवं योग्यताओं का विकास किया जाता है। व्यक्ति के लिए सामूहिक जीवन उत्तम ही महत्वपूर्ण है जितना कि उसकी भौतिक आवश्यकताएं महत्वपूर्ण है। जब सामूहिक जीवन में कोई व्यवधान उत्पन्न हो जाता है, तो व्यक्ति का जीवन अस्त व्यस्त तथा व्यक्तित्व विचित्रित हो जाता है। सामूहिक कार्य इस प्रकार की समस्याओं के समाधान करने का प्रयत्न करता है।

13.3 सामूहिक कार्य की भान्तियाँ

समाज कार्य एक नवीन व्यवसाय है। इसे अधिकांश लोग यहाँ तक कि शिक्षित लोग भी इसके अर्थ से पूर्वात्मक अब्राम्न नहीं हैं। सामूहिक कार्य विषय में भी अंक अंक अंकलें लगायी जाती है तथा अलग-अलग विचार प्रस्तुत किये जाते हैं। ट्रेकर ने निम्नलिखित भान्तियाँ का उल्लेख किया है।

सामूहिक कार्य एक अभिकरण के रूप में

कुछ लोगों की धारणा है कि सामूहिक कार्य से सामाजिक अभिकरण के सभी उद्देश्य होते हैं। परन्तु यह कथन किसी भी प्रकार से सत्य नहीं है व्यक्ति सामूहिक कार्य द्वारा अभिकरण के सभी अर्थव्यक्ति कुछ कार्य पूरे किये जाते हैं।

सामूहिक कार्य एवं विशेष कार्यक्रम के रूप में

कुछ व्यक्तियों की धारणा है कि सामूहिक कार्य एक विशेष कार्यक्रम स्वयं नहीं है बल्कि इसके द्वारा विभिन्न कार्यक्रम क्रियाओं को सम्पन्न किया जाता है। यदि स्वयं कार्यक्रम होता तो कोई एक ही कार्यक्रम चलाया जाय। परन्तु यहां पर अनेक कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते हैं।
सामूहिक कार्य एक विशेष प्रकार के समूह के रूप में:
कुछ लोगों का विचार है कि सामाजिक सामूहिक कार्य एक ऐसा समूह है जिसमें विशेष क्रियाओं सम्पन्न की जाती है। यह कोई विशेष समूह नहीं होता है। जब हाँ जैसी आवश्यकता होती है, समूह का निर्णय कर लिया जाता है और उसके माध्यम से कार्य समाप्तित किये जाते हैं। कुछ लोग क्षब को सामूहिक कार्य मानते हैं, क्योंकि इसके द्वारा विभिन्न क्षबों व समूहों के कार्यों को सम्पन्न किया जाता है।

13.4 सामूहिक कार्य की मूल मान्यताएँ
सामाजिक सामूहिक कार्य की निम्नलिखित प्रमुख मान्यताएँ हैं:
1. शिक्षात्मक तथा मनोरंजनात्मक क्रियाओं व्यक्ति तथा समाज के लिए लाभदायक होती हैं। सामूहिक कार्यक्रम इसी माध्यम से समस्याओं को समूह के माध्यम से शिक्षात्मक तथा मनोरंजनात्मक दोनों प्रकार की सेवायें तथा उसका अनुभव प्रदान करता है।
2. कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाने की अन्तरिक्षीयता होती है। वह सदृश समूह के अन्तर्गत दो बातों का ध्यान रखता है। एक तरफ वह कार्यक्रम, क्रियाओं तथा उनकी उन्नति देखता है तथा दूसरी ओर समूह में सामाजिक समस्याओं की भूमिका को ध्यान में रखता है। अतः वह अपने सम्बन्धों को भी साथ ही साथ समझता जाता है।
3. कार्यक्रम सदृश व्यक्तियों पर प्रभावित होना चाहिए। यह मान्यता इस बात को मिलाता है कि कार्यक्रम के समन्वय व्यक्ति के साथ सहभागिता इतनी हो जितनी क्रियाएँ की जातीं हों। कार्यक्रम की उन क्रियाओं को दृष्टि से सफलता प्राप्त करने के माध्यम से नहीं बल्कि सदस्यों के अनुभवों से समर्थनित होती है। कार्यक्रम सदृश उन अनुभव के अनुसार आयोजित किये जाने चाहिए।
4. सामूहिक कार्य के अन्तर्गत कार्यक्रम तथा क्रियाओं कार्यशिरति, पारिवारिक सम्बन्ध तथा सामुदायिक मनोवृत्ति पर आधारित हों। कार्यक्रम की न केवल सांस्कृतिक, सामाजिक तथा शारीरिक तत्वों के कारणों का ज्ञान हो बल्कि उसे समूह के सदस्यों कार्यशिरति, दशा, पारिवारिक सम्बन्ध तथा सामुदायिक मनोवृत्तियों से अवगत होना चाहिए।
5. सदस्यों के व्यवहार का ज्ञान आवश्यक होता है। यदि कार्यक्रम की शिक्षात्मक तथा मनोरंजनात्मक क्रियाओं द्वारा पूर्ण सफलता प्राप्त की जाए, उद्देश्य से सहायता करना चाहिए तो उसे उनके व्यवहार का ज्ञान अवश्य इसके लिए सहायता होगी। इसका ज्ञान उसके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
6. कार्यक्रम कार्यक्रम के रूप में सक्षम हो। इसका तात्पर्य यह है कि कार्यक्रम में आवश्यक कोष्ट्क, नियुक्ति, ज्ञान तथा कार्य करने की आन्तरिक इच्छा हो और वह व्यक्तिगत रूप से अपने उद्देश्यों को कार्यान्वित करने में निरुपन हो।
7. सामाजिक कार्य की आवश्यकता की संरचना पर भी व्यवहार दिखाए गए हैं। जब व्यक्ति की आवश्यकताओं का समाधान नहीं होता है, तब उसका सामाजिक संरचना बिगाड़ जाता है। इस स्थिति में समाज कार्य क्रियाओं की वैश्विक रूप से या समूह के माध्यम से सहायता करता है।
13.5 सामूहिक कार्य दर्शन

व्यक्ति के अकेले नहीं रहता है। वह परिवार जाति तथा द्रितीयक समूहों में रहकर ही उन्मत्तिए एवं विकास कर सकता है। उसका उचित विकास तभी हो सकता है जब वह समूह का एक अंग के रूप में रहता है तथा कार्य करता है। उसके अन्य सभी शारीरिक तथा मानविक कार्य तभी सही, सामाजिक व व्यक्तिगत रूप से होते हैं। जब वे परिस्थितियों के लिए कार्य करते हैं व यह सहयोग के लिए संगठित रहते हैं। मानव जीवन की सभी समस्याओं सहयोग की क्षमता तथा उसकी तैयारी की मांग करती है। यही सामाजिक भावनाओं के दृष्टिकोण चित्र है।

प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे की आवश्यकता होती है क्योंकि समूह में वह अधिक शक्तिशाली हो जाता है। सामाजिकता मुनुष्य एक निर्भर प्राणी है। जब से वह दूसरों पर निर्भर होता है। वह अपनी शारीरिक, मानवीज्ञानिक, वैज्ञानिक तथा आत्मिक शक्तियों का विकास समूह के ही माध्यम से करता है।

सामूहिक अनुभव की आवश्यकता मालिक एवं सर्वभावना है। प्रेस क्वांटल के अनुसार सामूहिक अनुभव 5 प्रकार से महत्वपूर्ण हैः

(3) परिपक्वता प्रक्रिया में जिस प्रकार तथा परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उसी प्रकार से लघु समूहों के भूमिका अतुलनी होती है। बालकों का सम्बन्ध तत्कालिक शिक्षा, खेल समूह तथा इसी प्रकार के अन्य समूहों से जो अनुभव प्राप्त होता है उसी के अधार पर उसका व्यक्तित्व निर्मित होता है।

(4) दूसरे सम्बन्धों के लिए पूरकः सामूहिक अनुभव न केवल व्यक्तित्व का विकास करते हैं बल्कि वे सम्बन्धों को और अधिक प्रभावित बनाने व उनका सकारात्मक योगदान करने में महत्वपूर्ण होते हैं। सामूहिक अनुभव से प्रोटो भी लाभ प्राप्त करते हैं तथा सम्बन्धों का उचित प्रयोग करना सीखते हैं।

(5) सक्रिय नागरिकता की तैयारीः जब व्यक्ति सामूहिक क्रियाओं में भाग लेता है तो वह अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करता है। समूह में नागरिकता की शिक्षा देने की बड़ी रोजगार होती है। वह स्थानीय तथा राष्ट्रीय समस्याओं से अपनाने है। तथा उन समस्याओं को हूँ करने की प्रक्रिया में भाग लेता है।

(6) सामाजिक विषयों के लिए उपयोगः समूह का उपयोग बाल अपराधियों तथा अपराधियों के साथ इसीलिए किया जाता है क्योंकि इसके माध्यम से वे नये तरीके से रहना सीखते हैं और नकारात्मक प्रूढ़ितियों का हास होता है।

(7) अभ्यास दल मनोवैज्ञानिक असामान्य तथा कार्यक्रम उपयोगः यह मानविक रोगियों के साथ महत्वपूर्ण कार्य करता है। सामूहिक कार्य की धारणा है कि सामाजिक संस्था के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास और मनोवैज्ञानिक में परिवर्तन दूसरे में अनुभवों का योगदान किया जा सकता है। व्यक्तियों के लिए सामाजिक संस्थाओं एक बंटन का कार्य करती है। इसके लिए वे अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को संभव करते हैं तथा विकास की ओर बढ़ते हैं। संस्थाओं और सम्बन्धों को बुद्धिमत्ता तथा कुछ विशिष्ट आवश्यकताओं की संरचना के लिए सुधार करते हैं तथा उनका प्रतिनिधित्व करती है।

जब समूह में सामूहिक कार्यकर्ताओं अपनी सेवाओं का सदृश्य करते हैं उनके सदस्य में न केवल एक गुण का विकास होता है वरने समूह प्रतिभा का विकास होता है। व्यक्ति न केवल समूहों में विकास करते हैं बल्कि समूहों द्वारा ही विकास सम्भव होता है।
समूह द्वारा व्यक्ति का विकास, अभिरूचियों में परिवर्तन तथा आदर का संप्रभु होता है। इसलिए यदि समूह का निर्माण सुनिश्चित दंग से किया जाता है तो उद्देश्य की पूर्ति सुमानता से हो सकती है।

पारंपरिक व्यक्ति के बिना सामाजिक जीवन का कोई महत्व नहीं है। व्यक्ति अस्वीकृति की पदतन समूह में उस समय पश्चिम होती है, जब समूह में अनुवादक्या होती है तथा विचारों, अभिरूचियों और इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है।

सामूहिक कार्य का विवाद है कि जनतांत्रिक व्यवहार सीखा हुआ व्यवहार है। उसका विवाद है कि प्रजातांत्रिक दो बातों पर निर्भर हैं: (1) व्यक्तियों को प्रजातंत्र समझने का अवसर मिलेगा, (2) उन्हें जनतांत्रिक दंग से रहने का अवसर प्राप्त होगा।

13.6 सामूहिक सामूहिक कार्य की आवश्यकता एवं महत्व

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूह में रहता है। उसकी भौतिक तथा मानवीय आवश्यकताओं में ही रहकर पूरी हो सकती है। सामाजिक सामूहिक कार्य इन आवश्यकताओं की संतुलित में सहायता करता है। अतः सामूहिक कार्य एक आवश्यक सेवा है। उसकी आवश्यकता को किसी प्रकार से अंका जा सकता है।

1. सामूहिक कार्य द्वारा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। व्यक्ति समूह में ही जनम लेता है, बढ़ता है तथा सामाजिक प्राणी बनता है। समूह से पृथक उसका कोई अस्तित्व नहीं है। सामूहिक जीवन ही व्यक्ति का वास्तविक जीवन है। व्यक्ति का विकास सामूहिक अनुभव पर ही निर्भर करता है। विभिन्न अभिव्यक्तियों से पता चलता है कि समूचे सामूहिक जीवन के अभाव में व्यक्ति व्यक्ति नहीं बनता है। चर्चित मसूरी युग के कारण सामूहिक जीवन का अस्तित्व अजीबोगरीब हो गया है। व्यक्ति रहता है तो लोगों के बीच है लेकिन अपना का उसका आवश्यक अंग नहीं समझ पा रहा है। धीरे-धीरे वह अपने को मार्शिन समझने लगा रहा है। यह विचार स्वयं उसके तथा समाज के लिए हानिकारक है। वह भ्रम, सीमांत, भ्रमर आदि का अभाव देखता है। अतः ऐसी रिति में सामूहिक कार्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

2. सामूहिक कार्य व्यक्ति के पुलकितकरण एवं एकात्मकता की प्रकृति को कम करता है। नरियोगियों के परिणामस्वरूप कहीं भी आत्मवादी रूप से एकता देखने को नहीं मिलती है। लोग अपने तक ही सीमित होकर रह गये हैं तथा पृथक्कार की विवाहारियां बनी होती हैं। इस विवाहारिया के कारण मानव अपने को कभी निरीक्ष, कभी असहयोगी समझने लगता है। वह सदेव चिंतातुरुंह रहता है, जिससे मानविक रोगों का शिकार हो जाता है। सामूहिक कार्य इस दिशा में प्रयत्नशील है कि व्यक्ति किसी भी अवस्था में एकात्म जीवन व्यक्तित्व करे, जो व्यक्ति द्वारा ध्यानमण्डल बन जाए।

3. सामूहिक कार्य व्यक्ति की महत्ता की इच्छा संतुलित करता है। प्रथम व्यक्ति की मौलिक इच्छा होती है कि उसका समाज में स्थान हो, लोग उसका आदर एवं समान नहीं। सामूहिक कार्य अपने कार्यक्रमों के माध्यम से प्रथम सदस्य को यह अनुभव का अवसर देता है कि उसका भी अनुभव अहंकार महत्व है।

4. सामूहिक कार्य स्वीकृति किये जाने की इच्छा को संतुलित करता है। समाज में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो यह न चाहता हो कि उसके कार्यों, व्यवहारों तथा विचारों का मान्यता प्राप्त हो। लेकिन आप व्यक्ति का जीवन इतना संकेतित है कि वह स्वयं ही परेशान रहता है। उसका सदेव प्रयत्न अपने को अनुकूल बनाने में ही लगा रहता है। सामूहिक कार्य द्वारा प्रथम सदस्य को अपनी उपलब्धि की स्वीकृति प्राप्त होती है।
5. सामूहिक कार्य व्यक्ति को आत्म-निर्भर बनाता है। सामूहिक कार्य के माध्यम से लघु उद्योगों तथा हस्तशिल्प का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे सदस्यों में आधिक क्षमता बढ़ती है।

6. सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति सामाजिक स्थापन करना सीखता है। समूह में प्रत्येक सदस्य को अपनी-अपनी भूमिका पूरी करनी होती है। वह अपनी भूमिका तभी पूरी कर सकता है, जब दूसरे सदस्य उसे अवसर प्रदान करें। इस प्रकार वह दूसरों के साथ रहना, काम करना तथा न्यवहार करना सीखता है, जिसका परिणाम यह होता है कि वह अपने जीवन का रास्ता समायोजनात्मक बना लेता है।

7. सामूहिक कार्य निर्भरता को स्वीकार करने की क्षमता उत्पन्न करता है। शारीरिक रूप से बाधित अस्तित्व तथा वृहद जब सामूहिक जीवनकाल करता है तो उनमें एक ओर आशा का संचार होता है तथा दूसरी ओर अपनी निर्भरता को स्वीकार करने की शक्ति आती है।

8. सामूहिक कार्य समग्र होने की इच्छा की पूर्ति करता है। सभी व्यक्तियों की यह इच्छा होती है कि वह समस्त का अंश बने तथा एक आवश्यक अंश के रूप में मान्यता प्राप्त हो। सामूहिक कार्यक्रमों के माध्यम से इस इच्छा की संतुष्टि सम्मिल सर्वाधिक होती है।

9. सामूहिक अनुभव द्वारा सहयोग से कार्य करने तथा यह कुछ न कुछ का विकास होता है। वर्तमान समय में सहयोगिता क्रियाओं के अवलोकन से ज्ञान आदर्श हैं, जो उसकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति दूसरों के सहयोग पर निर्भर है। सामूहिक कार्य द्वारा उनहें सहयोगिता क्रियाओं का अनुभव होता है।

10. सामूहिक कार्य उद्देश्यपूर्ण समग्र स्थापित करने में सहयोग करता है। व्यक्ति समूह का सदस्य किसी विशेष उद्देश्य को लेकर बनता है। इन उद्देश्यों के आधार पर ही समन्वय स्थापित करता है। इस प्रकार वह सम्मच्छों का उपयोग उद्देश्यपूर्ण होगे से करना सीखता है।

11. सामूहिक कार्य द्वारा प्रजातात्विक मूल्यों का विकास होता है। सामूहिक अनुभव प्रत्येक सदस्य को समानता, स्वतन्त्रता तथा सामाजिक न्याय प्रदान करता है।

12. सामूहिक कार्य मनोसामाजिक समस्याओं को दूर करता है। सामूहिक कार्य न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, सामूहिक जीवन ने माध्यम से मानसिक बोध्य भी हल्का होता है तथा मन को राहत मिलती है।

13. मानवीय क्षमताओं को दूर करता है। सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति की छिपी क्षमताओं तथा योग्यताओं उभरकर प्रकट होती है, जिससे वह अपने भविष्य को जीवन सुखमय बनाता है।

इस प्रकार वह कहा जा सकता है कि आधुनिक समय में सामाजिक सामूहिक कार्य महत्त्वपूर्ण प्रणाली के रूप में सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए उपयोग में लायी जा रही है।

13.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई में सामूहिक कार्य की अवधारणा को समझा। उसके पश्चात सामूहिक कार्य की भावनाओं के विषय में पढ़ा और धार प्राप्त किया। तत्पश्चात सामूहिक कार्य की मूल मान्यताओं का अध्ययन किया। जो सामूहिक कार्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। फिर सामूहिक कार्य दर्शन के विषय में धार प्राप्त किया तथा अंत में सामाजिक सामूहिक कार्य की आवश्यकता तथा महत्त्व का अध्ययन किया।
13.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. सामूहिक समाज कार्य की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

2. सामूहिक समाज कार्य की भारतीयों को समझाते हुए इनका वर्णन कीजिए।

3. सामूहिक समाज कार्य की मूल मन्त्रात्मक एवं सामूहिक समाज कार्य दर्शन का विस्तृत रूप से समझाते हुए विस्तृत रूप से वर्णित करता हुआ।

4. सामाजिक सामूहिक कार्य की आवश्यकता एवं महत्व को संक्षिप्त रूप से समझाइये।

13.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

सिंह, डी. के.0, भारती. ए. के.0, सोशल वर्क कान्सेप्ट एंड मैथडज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, डी. के.0, पालीवाल, सौरव, निष्ठा, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विभाग के मूल तत्त्व- न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्र, पी.0, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.

सिंह, सुरेन्द्र, मिश्र, पी.0, डी.0, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.

मिश्र, पी.0, सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.

सिंह, डी. के.0, भारत में समाज विकास प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुरेन्द्र, वर्मा, आर.0 एस.0, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्रा, पी.0, मिश्रा, बीना, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सामूहिक कार्य : अर्थ एवं परिभाषा

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य
14.1 प्रस्तावना
14.2 सामूहिक कार्य का अर्थ
14.3 सामूहिक कार्य की परिभाषा
14.4 परिभाषाओं का विश्लेषण
14.5 सारांश
14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
14.7 सन्दर्भ ग्रंथ

14.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पक्षतात्मक आपके लिए सामूहिक कार्य के अर्थ एवं अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे।

1. सामूहिक कार्य के अर्थ एवं अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे।
2. तत्पश्चात्तिथितक विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई सामूहिक कार्य की परिभाषाओं के विषय में जान पाएंगे। सामूहिक कार्य की परिभाषाओं में नूतन रूप से न्यूज टेंटेक, क्रायल ग्रेस, बिल्सन एण्ड राइलैंड, हैमिल्टन तथा क्लेन आदि प्रमुख विद्वानों का नाम उल्लेखनीय है।

14.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में सामूहिक कार्य के अर्थ एवं परिभाषाओं का वर्णन किया गया है। सामूहिक समाज कार्य, उद्देश्यों की पूर्व अन्य प्रणालियां समाज द्वारा दी जाती है। अतः सामूहिक समाज कार्य के अर्थ, सिद्धांत, विचार, निपुणताओं तथा कार्यविधियों का ज्ञान होना आवश्यक है। सामूहिक समाज कार्य का उद्देश्य सामूहिक स्थितियों में व्यक्ति की अंतःक्रियाओं को उत्पन्न करना जिससे समाज उद्देश्यों के लिए एकीकृत, सहयोगिक सामूहिक क्रिया हो सके। इसके अलावा सामाजिक सामूहिक कार्य समाज कार्य की एक ऐसी प्रणाली है जो व्यक्तियों की सामाजिक कार्यान्वयन का आधार रूप से सहायता प्रदान करती है, उद्देश्यपूर्ण रुप से अनुभव द्वारा व्यक्तिगत, सामूहिक और सामुदायिक समस्तों की ओर प्रभावकर्ता दंगा से सुसंगठित में सहायता प्रदान करती है। सामाजिक सामूहिक कार्य एक मनो-सामाजिक प्रक्रिया है, जो नेतृत्व की योग्यता और सहकारिता के विकास से उतनी ही समर्पित है, जितनी सामाजिक उद्देश्य के लिए सामूहिक अभिरुचियों के निर्माण से है।
14.2 सामूहिक समाज कार्य का अर्थ

सामूहिक समाज कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली है, जो सामूहिक क्रियाओं के द्वारा रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने की योग्यता का विकास करता है। विभिन्न समाज विधानों के विकास ने यह सिद्ध कर दिया है कि व्यक्तिव ने के विकास के लिए व्यक्ति की सामूहिक जीवन समस्याओं एवं सामाजिक प्रक्रियाओं की संतुलित आवश्यकता होती है। जहाँ एक और सामूहिक सहभागिता व्यक्ति के लिए आवश्यक होती है, वहीं दूसरी और साहसीय करने से समृद्धिव लाभ प्राप्त करने के लिए सामूहिक जीवन में भाग लेने, अपनत्व की भावना का अनुभव करने, अन्य शैक्षिकीय और राष्ट्रीय सामंजस्य स्थापित करने, मध्यमांत्रण का निपटने तथा अपने हितों तथा समूह के हितों को ध्यान में रखकर कार्यरत नियोजित और संचालित करने की योग्यता होना जरूरी होता है। सामूहिक समाज कार्य द्वारा इन विषयों एवं विषयों का विकास किया जाता है।

सामूहिक जीवन का आधार सामाजिक सम्बन्ध है। मानवता के बारे में इसका स्पष्ट क्रम है कि सामाजिक सम्बन्धों का तरीका जैविक निरस्तरता पर आधारित है। जिस प्रकार से जीव की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार से सामाजिक अभिलक्ष्या भी उत्पन्न होती है। जीव के प्रकाश (Cell) दूसरे से उत्पन्न होते हैं, उनके लिए और जीवन के उत्पन्न होना सम्भव नहीं है। प्रत्येक प्रकोप अपनी कार्य प्रक्रिया के दौरान प्रकार से होने के लिए दूसरे प्रकोपों की अन्तर्निष्ठता पर निर्भर होती है और उन्हें प्रत्येक अवधि समय में कार्य करता है। सामाजिक अभिलक्ष्या भी उसका अंग है। यह मनुष्य का मूल प्रकृतिप्राप्तक्रम गुण है, जिसे उसने जैविकीय वृद्धि प्रक्रिया से तथा उसकी दुड़त से प्राप्त किया है।

व्यक्ति के लिए सामूहिक जीवन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उसकी भौतिक आवश्यकताओं महत्वपूर्ण हैं। जब सामूहिक जीवन में कोई व्यवधान उत्पन्न हो जाता है तो व्यक्ति की जीवन अस्त्यत तथा व्यक्तित्व विचरित हो जाता है। सामूहिक कार्य इस प्रकार की समस्याओं के समाधान करने का प्रयत्न करता है।

सामूहिक समाज कार्य एक प्रणाली है जो इसका अभिभावक केन्द्र यह एक काम करने का तरीका ही नहीं है बल्कि इसका अभिभावक एक क्रमानुसार व्यवस्थित तथा नियोजित, समूह के साथ काम करने का तरीका है। प्रणाली, उदेश्य प्राप्त करने का चेतन तरीका तथा अभिभावक साधन है। साधारण अर्थों में प्रणाली कोई भी कार्य करने का तरीका है, परंतु यहाँ हम हम सदृढ़ ज्ञान की संस्थान के व्यवस्था, प्रणाली तथा सिद्धांत की खोज करते हैं।

प्रणाली और नियुक्ति में अन्तर है। प्रणाली का तात्पर्य ज्ञान और सिद्धांतों के आधार पर उद्देश्य, ध्यान से अन्तर्दृष्टि तथा समझ का उपयोग है। नियुक्ति, ज्ञान और समझ को निर्धारित परिस्थिति में उपयोग करने की क्षमता है। प्रक्रिया करने का उपयोग प्रणाली है, नियुक्ति इसके उपयोग की क्षमता है।

सामूहिक समाज कार्य, समाज कार्य की एक प्रणाली है, जो द्वारा कार्य कार्य के उद्देश्यों की पूर्ति अन्य प्रणालियों के समान ही की जाती है। अतः हम सामूहिक समाज कार्य के अर्थ, सिद्धांत, दर्शन, नियुक्तियों तथा कार्यविषयों का ज्ञान होना आवश्यक है।

14.3 सामूहिक कार्य की परिभाषा

सामूहिक सामूहिक कार्य समूह के माध्यम से व्यक्ति की सहायता करता है। समूह द्वारा ही व्यक्ति में शारीरिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं के उत्पन्न कर समायोजन के दौरान बनाया जाता है। सामाजिक
सामूहिक कार्य को व्यस्थित ढंग से समझने के लिए हम यहां पर कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं का उल्लेख कर रहे हैं।

न्यूज़ टेडर (1935)

स्वीच्छक संघ द्वारा व्यक्ति के विकास तथा सामाजिक समायोजन पर बल देते हुये तथा एक साधन के रूप में इस संघ का उपयोग सामाजिक इच्छुक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा प्रक्रिया के रूप में सामूहिक कार्य को परिभाषित किया जा सकता है।

क्वायल प्रेस (1939)

सामाजिक सामूहिक कार्य का उद्देश्य सामूहिक स्थितियों में व्यक्तियों की अन्तःप्रक्रियाओं द्वारा व्यक्तियों का विकास करना तथा ऐसी सामूहिक स्थितियों को उत्तन करना जिससे समान उद्देश्यों के लिए एकीकृत, सहयोगिक सामूहिक क्रिया हो सके।

विल्सन एड राइलैंड (1949)

सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य एक प्रक्रिया और एक प्रणाली है, जिसके द्वारा सामूहिक जीवन एक कार्यक्रम द्वारा भारीत किया जाता है जो समूह की परस्पर समग्र प्रक्रिया को उद्देश्य प्राप्त के लिए सचेत रूप से निर्देशित करता है जिससे प्रजातात्मक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

हैमिल्टन (1949)

सामाजिक सामूहिक कार्य एक मनो-सामाजिक प्रक्रिया है, जो नेतृत्व का योगदान और सहकारिता के विकास से उत्तरी ही समाबेस्थित है, जितनी सामाजिक उद्देश्य के लिए सामूहिक अभिरुचियों के निर्माण है।

कल्ले, आडम (1950)

सामूहिक कार्य के पश्च के रूप में, सामूहिक सेवा कार्य का उद्देश्य, समूह के अपने सदस्यों के व्यक्तित्व परिधि का विस्तार करना और उनके मानवीय सम्पत्तियों का बढ़ाना है। यह एक ऐसी प्रणाली है, जिसके माध्यम से व्यक्ति के अंदर ऐसी क्षमताओं का निर्माण किया जाता है जो उसके अन्य व्यक्तियों के साथ समय बदलने की ओर निर्देशित होती है।

प्रेस क्वायल (1954)

सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य को वैयक्तिक सेवा कार्य, सामुदायिक संगठन प्रशासन और अनुसंधान कार्य की भांति समाज कार्य अभ्यास के एक मौलिक पक्ष के रूप में माना जाता है। इसकी भिन्न विशेषताएं इस बात में हैं कि सामूहिक कार्य का प्रयोग, सामूहिक अनुभव के अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धों में, व्यक्ति के विकास एवं संबंधित एक साधन के रूप में किया जाता है और सामूहिक कार्यक्रम का समग्र प्रजातात्मक समाज उन्नति के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व एक सक्रिय नागरिकता के विकास से होता है।

ट्रेंकर (1955)

सामाजिक सामूहिक कार्य एक प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं के अन्तर्गत समूहों में एक कार्यक्रम द्वारा सहयोग का जाता है। यह कार्यक्रम समस्त प्रक्रियाओं में व्यक्तियों के परस्पर समंदर प्रक्रिया का मार्ग दर्शाने करता है जिससे वे एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित कर सकें और वैधिक, सामूहिक एवं सामुदायिक विकास की दृष्टि से अपनी आबादीप्रतिकां एवं शक्तियों के अनुसार विकास के सुअवसरों को अनुभव कर सकें।

100
कोनोफ्का (1963),

"सामाजिक सामूहिक कार्य समाज कार्य की एक ऐसी प्रणाली है जो व्यक्तियों की सामाजिक कार्यात्मकता बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है, उदर्श्यमूल्य सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्तिगत, सामूहिक और सामुदायिक समस्याओं की ओर प्रभावकारी रंग से सुलझाने में सहायता प्रदान करती है।"

बिंटर (1965),

"सामाजिक सामूहिक कार्य लघु तथा आम आदमी के समूहों में तथा उनके द्वारा व्यक्तियों की विकास करने का सामूहिक कार्य एक तरीका है जिसके से सबकों भागीदारत लोगों में उत्पन्नतिकं परिवर्तन आ सके।"

जब हम सामूहिक कार्य की उपरोक्त परिभाषाओं का अध्ययन करते हैं तब जाना होता है कि -

1. सामूहिक समाज कार्य समाज कार्य की एक प्रजातात्मक प्रणाली है। समूह को इसी विशेषता लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वातावरण नहीं किया जाता है वन्द समूह को पूरा अधिकार होता है कि वह अपने लक्ष्यों, कार्यक्रमों एवं क्रिया कार्यक्रमों को अपनी रूचि के अनुसार व्यवस्थित एवं संगठित करे।

2. सामूहिक समाज कार्य व्यक्तियों में प्रजातात्मक जीवन के आदर्शों एवं नेतृत्व की योग्यता का विकास करता है।

3. सामूहिक समाज कार्य द्वारा समूह के सदस्यों में रचनात्मक सम्बन्ध विकसित करते हैं तथा यह कार्य करता है।

4. सामूहिक समाज कार्य समूह के सदस्यों में आत्म निर्विचार की योग्यता का विकास करता है। कार्यकर्ताओं समूह की सहायता उसी सीमा तक करता है जहाँ तक समूह आवश्यक समझता है।

5. समूह का उपयोग सामूहिक जीवन को सुधारने बनाने के लिए किया जाता है।

6. सामूहिक समाज कार्य प्रणाली की अपनी विशेषता निर्माण तथा संरचना एवं प्रविधियाँ है।

7. सामूहिक समाज कार्य एक संस्था के माध्यम से कार्य करता है।

8. सामूहिक समाज कार्य व्यक्तियों की समानता में विश्वास रखता है और प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक जीवन में भाग लेने और अपने व्यक्तित्व का विकास करने का अवसर देता है।

9. सामूहिक समाज कार्य समूह सदस्यों के लिए एक नवीन अनुभव होता है।

10. सामूहिक समाज कार्य के माध्यम से व्यक्तियों के एक दूसरे के साथ काम करने, रहने, समस्याओं को समझने तथा वास्तविकता को ज्ञात करने का अवसर मिलता है।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर हम सामूहिक समाज कार्य को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित कर सकते हैंः

"सामूहिक समाज कार्य एक प्रणाली है जिसमे कार्यकर्ताओं अभिकरण के माध्यम से समूह की उन्नति एवं आत्म विकास के लिए उन्हीं के माध्यम से कार्यक्रमों का निर्धारण करता है और अन्तर्गतिक ऊर्जा की इस उन्नति एवं विकास का आधार मानता है।"
14.4 परिभाषाओं का विश्लेषण

न्यूज टेलर ने अपनी परिभाषा में सामूहिक कार्य को एक शिक्षात्मक प्रक्रिया बताया है। उन्होंने कहा कि स्वेच्छिक संघ ही इस दिशा में काम करते हैं जो व्यक्ति के सामाजिक समायोजन तथा विकास को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं। परन्तु सामूहिक कार्य केवल शिक्षात्मक कार्य ही नहीं है बल्कि इसके द्वारा सेवा प्रदान की जाती है। यह कार्य केवल स्वेच्छिक संगठनों द्वारा ही नहीं होता है बल्कि दोनों प्रकार के संगठन स्वेच्छिक तथा सार्वजनिक सामूहिक कार्य प्राप्त करने का उपयोग करते हैं।

प्रेस क्वायल ने सन् 1937 में कहा कि सामूहिक कार्य व्यक्तियों का विकास करता है। इस विकास का माध्यम व्यक्ति स्वयं सामूहिक स्थितियों में होता है। जब उनमें आपस में अनु- अन्य दिशा प्राप्त होती है। इसका दूसरा कार्य ऐसी सामूहिक स्थितियों को उत्पन्न करता है जहां पर एकीकृत एवं सहयोगिक भावना इस सीमा तक कार्य कर जिससे समान उद्देश्यों की पूर्ति हो सकें। क्वायल ने समस्या समाधान की बात इसमें नहीं कही है।

विलसन तथा राइक्लेंड ने सामूहिक कार्य को एक प्रक्रिया तथा प्राणाली बताया है। इसका कार्य व्यक्ति के सामूहिक जीवन को प्रभावित करता है। सामाजिक कार्य कर्ता समूहों के साथ इस प्रकार कार्य करता है जिससे कार्यरतों के माध्यम से वे अपनी लक्ष्य प्राप्त कर सकें। वह वेतनपूर्व से अत-अन्य प्रक्रिया को उद्देश्य पूर्ति के लिए निर्देशित करता है। सामूहिक कार्य द्वारा प्रजातात्त्विक लक्ष्यों की प्राप्ति होती है।

हैमिल्टन के बिचार अपने समय में सभी विद्वानों के बिचारों से भिन्न है। उनका बिचार है कि सामूहिक कार्य एक मनोसामाजिक प्रक्रिया है अर्थात् इसके द्वारा व्यक्ति को मानसिक रूप से तथा सामाजिक रूप से दोनों प्रकार से प्रभावित किया जाता है। वह सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामूहिक अभिवृत्तियों के विकास का प्रयत्न करता है। साथ ही साथ उनके नेतृत्व एवं सहकारिता की भावना के विकास पर भी बरत देता है।

आडम का मत है कि सामूहिक कार्य के दो पक्ष हैं। सामूहिक कार्य का प्रथम लक्ष्य समूह के सदस्यों में व्यक्तित्व का विकास करना है। ऐसे कार्यक्रम आयोजित करना है जिससे आपसी समान्य प्रगति हो तथा वृद्धि एवं विकास के अवसर सुलभ हों। इसका दूसरा कार्य प्राप्ति के रूप में है जो अपने कार्यरतों के माध्यम से समूह सदस्यों में ऐसी क्षमताएं विकसित करना है जिससे वे दूसरों से अधिक समर्पण करने का प्रयत्न करते हैं।

क्वायल ने दूसरी परिभाषा में सामाजिक सामूहिक कार्य को विशेष रूप से स्पष्ट किया है जिससे एक और सामाजिक सम्बन्धों में प्रगति आये तथा र्मात्तिक सम्बन्धों का विकास हो, जहां दूसरी और इस अनुभव द्वारा व्यक्ति का विकास तथा उसकी समृद्धि हो। सामूहिक कार्यकर्ताओं को कार्य सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने की क्षमता तथा ऐसा नागरिक नामकरण होता है जिससे प्रजातात्त्व की जड़ मजबूत होती है।

सामूहिक समाज कार्य की सबसे उपयुक्त परिभाषा ट्रेकर ने दी है। उनके अनुसार:

अ) सामूहिक समाज कार्य एक प्राणाली है:

इसका तात्पर्य यह है कि सामूहिक समाज कार्य के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है। कार्यकर्ताओं को जब तक समूह की विशेषताओं, दशाओं, मनोवृत्तियों आदि का ज्ञान नहीं होगा तब तक यह कार्य नहीं कर सकता है। उनसे व्यक्ति के व्यवहार का ज्ञान तथा समूह के व्यवहार का ज्ञान दोनों का होना आवश्यक है। कार्यकर्ताओं में वैज्ञानिक ज्ञान होता है। उस कार्य-कारण का समन्वय ज्ञात होता है। उसमें समझ होती है जिससे वह भिन्न-भिन्न स्थितियों तथा समूहों के साथ कार्य करने में समर्थ होता है। उसको समूह की गतिविधि का ज्ञान होता है।
है। ट्रेकर का मत है कि सामूहिक कार्य के अपने कुछ सिद्धांत हैं जो दूसरों प्रणालियों से भिन्न है। नियोजित समूह
निर्माण का सिद्धांत, विशिष्ट उद्देश्यों का सिद्धांत, उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रम संबंधी सम्बन्ध, निरंतर वैयक्तिकरण, निर्देशित सामूहिक अन्त:क्रिया, जातात्विक सामूहिक आत्मनिर्भरीय क्रिया, लोकवाद वैयक्तिक संघटन, निरंतर
प्रगतिशील कार्यक्रम, स्थितियों का उपयोग तथा निरंतर मूल्यांकन का सिद्धांत इसके महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामूहिक कार्य की अपनी विशिष्ट निपुणता है, जिनको सामूहिक कार्यक्रम अपने व्यवहार में लाता है।
कार्यक्रम में उद्देश्य समबंध स्थापित करने की निपुणता होती है। वह सामूहिक स्थिति को विशेष प्रेरित करने में दक्ष होता है। वह समूह के साथ भाग लेने में निपुण होता है। अपनी भूमिका की व्याख्या तथा उसकी आवश्यकता की समयानुसार स्थिरता करने में समर्थ होता है। उसमें इस बात की निपुणता होती है कि वह प्रत्येक नयी स्थिति का
निष्ठुक नकदर अध्ययन करता है। समूह की सहायता तथा नकारात्मक भावनाओं को समझने ही कार्यक्रम को
आगे बढ़ाता है। वह समूह की संधियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार ही कार्यक्रम समन्वय करता है। इसमें संस्था
तथा समुदाय के स्थितियों का उपयोग में लाने की निपुणता होती है।

ब) सामूहिक समाज कार्य द्वारा समूह में संस्था के अन्तर्गत व्यक्तियों की सहायता की जाती है

ट्रेकर की परिभाषा की दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि सामूहिक समाज कार्य में समूह तथा संस्था दोनों
का होना महत्वपूर्ण है। अंतः व्यक्ति की सहायता समूह के माध्यम से ही जाती है। समूह की अपनी विशेषताओं
होती हैं तथा उनके गठन का भी एक उद्देश्य होता है। यह समूह किसी संस्था के अन्तर्गत ही गठित किया जाता है।
ये समूह समुदाय की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार होते हैं। संस्था से बाहर यदि उससे समर्थित है तो
समुदाय में बने समूहों के साथ भी इसका प्रयोग होता है।

स) सामूहिक कार्य एक कार्यक्रम द्वारा समन्वय होता है जो समूह की कार्यक्रम क्रियाओं में होने वाली
अंतर्निर्धारित को निर्देशित करता है।

सामूहिक समाज कार्य के कार्यक्रम की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वह सभी कार्यों की धूरी होती है।
अतः उसमें योगदान एवं शक्ति होती है, समूह उसी तकरीब की उपलब्धि प्राप्त करता है। वह अपनी भूमिका का
सम्पादन समूह की स्वीकृति के आधार पर करता है। जिस सीमा तक समूह उसकी अपनी भूमिका पूरी करने की
आज्ञा देता है वह वहीं तक अपनी कार्य क्षेत्र की सीमा बढ़ाता है। कार्यक्रम का वैयक्तिकरण करके उसकी
आवश्यकताओं, इच्छाओं तथा अन्तर्निहित श्रमिताओं का जान प्रकाश करता है। वह सहायता उद्देश्यों के निर्धारण में
समूह की करता है तथा कार्यक्रमों के चलाने या उनकी आवश्यकता के विषय में ज्ञान प्रदान करता है। वह समूह को
भाग्य भी देता है तथा कार्य के सम्प्रभु के लिए प्रेषित भी करता है। कार्यक्रम की सहायता सामूहिक
प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर जहां आवश्यक होती है, करता है। सामुदायिक स्थितियों के समुचित उपयोग में भी सहायता
करता है।
र) सामूहिक कार्य सहायता का उद्देश्य वैज्ञानिक, सामूहिक और सामुदायिक विकास है।

सामूहिक कार्यकर्ताओं का उपयोग व्यक्तियों के व्यवहार के परिवर्तन के लिए करता है। चाहे वह समस्या हो अथवा विकास का प्रश्न हो, दोनों ही स्थितियों में व्यवहार की बाधा बनता है। अतः यदि दोनों प्रकार से सफलता प्राप्त करनी हो तो व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा। इस परिवर्तन से व्यक्ति समूह में परिवर्तन आता है जिससे प्रजातात्त्विक लाभों की पूर्ति होती है।

14.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में सामूहिक समाज कार्य के अर्थ को समझा। सामूहिक समाज कार्य की अनेक विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के विषय में विशेष अध्ययन किया। सामूहिक समाज कार्य की परिभाषाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करके ज्ञान प्राप्त किया।

14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. सामूहिक कार्य का अर्थ समझाइये।
2. सामूहिक कार्य की परिभाषाओं का वर्णन कीजिए।
3. सामूहिक समाज कार्य की परिभाषाओं के विश्लेषण को समझाते हुए इसका वर्णन कीजिए।

14.7 सन्दर्भ प्रमाण

सिंह, डी. के. 0.0, भारती, ए. के. 0.0, सोशल वर्क कास्टेट एंड मैथमेटिक्स, न्यू रायल बुक कम्पनी लिखन, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के. 0.0, पालीवाल, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विपणन के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कम्पनी लिखन, वर्ष 2010.
मिश्र, पी. 0.0, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुलेमान, मिश्र, पी. डी. 0.0, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रधानतियाँ, रायल बुक कम्पनी लिखन, वर्ष 2006.
मिश्रा, पी. डी., सामाजिक वैचारिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुंदर, वर्मा, आर. बी., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी. डी., मिश्रा, बी.ए., व्यक्ति और समाज, न्यु रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सामूहिक कार्य : उद्देश्य एवं विशेषताओं

इकाई की रुपरेखा
15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 सामूहिक कार्य के उद्देश्य
15.2.1 सामाजिक सामूहिक कार्य के व्यावसायिक उद्देश्य
15.2.2 सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्य
15.2.3 उद्देश्यों का महत्व
15.3 सामूहिक समाज कार्य की विशेषताएं
15.4 सारांश
15.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
15.6 सन्दर्भ प्रम्त

15.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत सामूहिक कार्य के उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। जीवनपथों आदर्शों आदर्शकताओं की पूर्ति, सामाजिक स्थापित करने की सशक्ति का विकास करना, आत्म-विश्वास एवं आत्मनिर्भरता को विकसित करना, प्रजातात्त्विक नेतृत्व का विकास इत्यादि को समझ सकेंगे। इसके पश्चात् सामूहिक कार्य की विशेषताओं के विषय में अध्ययन करें। सामूहिक समाज कार्य सहायता के उद्देश्य, पैराफल, सामूहिक और सामाजिक विकास में सहायता होते हैं।

15.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्यों तथा विशेषताओं पर चर्चा की गई है। सामूहिक समाज कार्य का मूल रूप से उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का यथासम्भव अधिकार विकास करना है जो जनता तात्त्विक आदर्शों के प्रति समर्पित तथा अनुकूल हो। वह सामूहिक अनुभव के अभ्यास में सामाजिक प्रकार संभावित रूप से विकसित करता है। सामूहिक समाज कार्यक्षेत्र के व्यक्तियों में सामाजिक शक्ति को बढ़ाने और सामूहिक उत्तरदायित्व एवं चेतना का विकास करने में सहायता देता है। इकाई के अनुसार सामूहिक कार्य नियोजित समूह निर्माण, उद्देश्यपूर्ण कार्यक्षेत्र- सेवाधीन सम्बन्ध, निरंतर वैयक्तीकरण, निर्देशित सामूहिक अंतःक्रिया, प्रजातात्त्विक सामूहिक आत्मनिर्भरता के लिए कार्यरत है।
संगठन, निरंतर प्रगतिशील कार्यक्रम, संसाधन का उपयोग तथा निरंतर मूल्यांकन के सिद्धांत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

15.2 सामूहिक कार्य के उद्देश्य

सामूहिक कार्यक्रम के लिए समूह कार्य के उद्देश्यों तथा उसके आधारों का ज्ञान कार्य सम्पन्न करने के लिए आवश्यक होता है। उद्देश्य क्रमांक के समान होते हैं जो कार्यक्रम को रहने की दिशा का बोध कराते हैं। उद्देश्य वह स्थान करते हैं कि कार्यक्रम का प्रयास करने जा रहा है तथा किस दिशा में प्रयास की गति है। उद्देश्य ऐसे कथन या नियम है जो बताते हैं कि सामूहिक कार्य में हम या करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उद्देश्यों की स्पष्टता व्यवस्थित प्रक्रिया का आधार होती है। ये प्रेक्षा शक्ति का कार्य करते हैं जिसके सहयोग से सामूहिक समाज कार्य प्रक्रिया एक निक्षेपित दिशा की ओर गए:-शाने:-चलती रहती है।

15.2.1 सामाजिक सामूहिक कार्य के व्यवसायिक उद्देश्य

सन् 1935 में सामाजिक सामूहिक कार्य का विकास व्यवसायिक रूप में हुआ। इसी वर्ष पहली बार सामूहिक कार्य के उद्देश्यों पर समाज कार्य की राष्ट्रीय कार्यालय ने प्रकाश डाला। इसके अनुसार सामूहिक कार्य ऐच्छिक समयों द्वारा व्यक्ति के विकास एवं सामाजिक सामंजस्य को प्रोत्साहन देने तथा इन संयोगों के माध्यम से इच्छित सामाजिक उद्देश्यों को प्रयास करने की एक शिक्षात्मक प्रक्रिया है।

कोयले के अनुसार, “सामूहिक कार्यक्रम समूहों को इस प्रकार से कार्य करने के लिए उस्ताहित करता है जिससे सामूहिक अन्तर्क्रिया तथा कार्यक्रम क्रियायां व्यक्ति और वांछनीय सामाजिक लक्ष्यों की उपलब्धि की बृद्धि में योगदान देता है।”

ट्रेकर के मतानुसार, “मूलतः सामूहिक समाज कार्य का उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का सम्भव उच्चतम विकास करना है जो जनतात्मक आदर्शों के प्रति समर्पित तथा अनुसूचक हो।”

बिंदु के अनुसार, “सामूहिक समाज कार्य समूहों में तथा छोटे समूहों को आमने-सामने के द्वारा लोगों की सहायता करने का एक तरीका है जिसके से सेवार्थि भागीदार लोगों में बांधते परिवर्तन आ सके।”

कोनोक्का ने “समूह समाज कार्य, समाज कार्य के एक ऐसी प्रणाली है जो व्यक्तियों की उद्देश्यपूर्ण सामूहिक अनुभव द्वारा सामाजिक कार्यक्रम बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है तथा व्यक्तिक, सामूहिक और सामुदायिक समस्याओं को और प्रभावित कर दिखा सुलझाने में सहायता करती है।”

कोनोक्का ने सामूहिक कार्य के निम्नलिखित उद्देश्यों का उल्लेख किया है:-

1. वैचित्र्यकरण

सामूहिक कार्य द्वारा व्यक्ति की सहायता अपने को स्वतंत्र होने के लिए दी जाती है जिससे वह अपने साधियों के साथ स्वतन्त्र रूप से अन्तर्क्रिया कर सके।
2. सम्बद्धता की भावना का विकास
मनुष्य सबसे अधिक नष्ट एकान्तवासी होने की स्थिति में होता है। आत्महत्यार्थ प्राय: अकेलपन की समस्या के कारण ही होती है। यह समस्या भीड़ से नहीं सुलझती है। इसके लिए प्रगाढ़ सम्बन्धों का होना आवश्यक होता है। सामूहिक कार्य के द्वारा इस समस्या का निराशरण किया जाता है।

3. भागीकरण की क्षमता का मूलतः विकास किया जाता है
भागीकरण प्रजातांत्रिक प्रत्यक्षों में से एक प्रमुख प्रत्यक्ष है। प्रजातंत्र में व्यक्ति सभी लोग एकमत नहीं होते हैं लेकिन भाग सभी लेते हैं। क्योंकि प्रजातंत्र का असित्त्व ही भागीकरण पर आधारित है। सामूहिक कार्यकर्ता समूह सदस्यों की भावनाओं से अवगत होकर ऐसी परिस्थितियों उत्पन्न करता है जिससे सभी सदस्य समान रूप से भाग लेते हैं।

4. सामूहिक चर्चाओं के माध्यम से तथा तार्किक विचारों के आधार पर निर्णयों में भाग लेने की क्षमता में वृद्धि करना
साधारणतः या समाज में बहुत ही कम निर्णय तार्किक आधार पर लिये जाते हैं। किसी एक व्यक्ति का प्रभाव होता है। लेकिन समूह कार्य इसमें विश्वास नहीं रखता है। वह प्रजातांत्रिक दंगों का उपयोग करता है तथा प्रत्येक सदस्य को सामूहिक क्रियाओं के समर्थन में निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए उत्साहित करता है।

5. लोगों में अन्तरों के प्रति आदर की भावना में वृद्धि करना
अन्तरों का कारण सामूहिक एकरूपता की कमी होती है जिससे कार्यक्रम सुसंगमता से नहीं चल पाते हैं। अतः कार्यकर्ता का उद्देश्य इन अन्तरों के रहते हुए भी ऐसी स्थिति उत्पन्न करना होता है जहाँ पर एक दूसरे के अन्तरों का महत्त्व हो और सदस्य प्रतिद्वंद्वी न होकर सहयोगी की भूमिका निभाये।
सीहारपूर्ण अपनायी जाने वाली सामाजिक जलवायु का विकास करना
इस प्रकार की सामाजिक स्थिति का होना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि सामूहिक कार्य एवं क्रिया कलाप तभी हो सकता है जब सभी लोग आपस में घनिष्ठता अनुभव करें। सामूहिक कार्य में रचनात्मक सामूहिक जलवायु का निर्णय किया जाता है।

स्पेक्टर
स्पेक्टर के अनुसार सामूहिक कार्य के 4 प्रमुख उद्देश्य होते हैं:-
1. सामूहिक कार्य व्यक्तियों को आंतरिक व्यक्तित्व में विचार लाने के लिए प्रेरित करता है अथवा समायोगन के लिए उसकी भावनाएं और व्यक्तित्व कार्यक्षेत्रों को प्रोत्साहित करता है। इसलिए वे अपनी विभिन्न भूमिकाओं में जैसे माता-पिता, बालक, कार्यकर्ता, भित्ति आदि को, नैतिकता से जोड़ा जाना होता है, पूरा करने की क्षमता में वृद्धि करते हैं।

2. सामूहिक कार्य व्यक्तियों को नयी भूमिकाओं प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सामूहिक अनुभव द्वारा सदस्यों को नयी-नयी कार्यविधियों का जान कराया जाता है जिससे वे नयी चुनौतियों का सामना आसानी से कर लेते हैं।

3. सामूहिक कार्य समूह द्वारा व्यक्तियों के अंतर्संबंधों में गतिविधियां लाता है तथा वृद्धि करता है जिससे भौतिक तथा सांसारिक आवश्यकताओं की संतुलित होती है। यहाँ पर कार्यकर्ता का सुधार उद्देश्य परिपक्वता में वृद्धि अथवा मनोवैज्ञानिक वृद्धि करना है। यहाँ पर सामाजिकता सीखने की कला पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

4. सामूहिक कार्य का उद्देश्य दोनों व्यक्तियों में संयुक्त प्रतिभा में सुधार अथवा पारस्परिक आदान-प्रदान की स्थिति को सुधार करना है। उदाहरण के लिए स्कूलों में अभिभावक अध्यापक संबंध जिसका निर्माण बाल अपाराजी अभिरुचि को रोकने के लिए किया जाता है, ऐसे समयों वे अपनी विचारों में सुधार करने तथा सम्बन्धों में प्रागैतिहासिक का प्रयास किया जाता है। इन समूहों में सामाजिक चेतनता का विकास किया जाता है।

15.2.2 सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्य

सामूहिक समाज कार्य समूह द्वारा व्यक्तियों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं आत्मसंरचना का विकास करना है। सामूहिक समाज कार्यकर्ता व्यक्तियों में सामाजिक बदलाव और सामूहिक उत्तरदायित्व एवं चेतना का विकास करने में सहायता देता है। सामूहिक समाज कार्य द्वारा व्यक्तियों में इस प्रकार की भावना से संपर्कों के उत्तराधिकारियों में जिनके वे अंग हैं, वृद्धिमान पूर्व के भाग ले सकते हैं। उन्हें अपनी इच्छाओं, आंकड़ों, भावनाओं, पोषित, पवित्र, नायिक आदि की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

प्रेष वज्रायल ने सामूहिक समाज कार्य के निम्न उद्देश्य बताये हैं-:

1. व्यक्तियों को उनकी आवश्यकताओं और समस्याओं के अनुसार विकास लाने की आवश्यकता करता है।
2. व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों, समूहों और समुदाय से समायोजन प्राप्त करने में सहायता देता है।
3. समाज के विकास हेतु व्यक्तियों को प्रेरित करता है।
4. व्यक्तियों को अपने अधिकारों, सीमाओं और अपने अधिकारों का साथ-साथ अन्य व्यक्तियों के अधिकारों का पहचानने में सहायता देता है।

मेहता ने सामूहिक समाज कार्य के निम्न उद्देश्य बताये हैं-:

1. परिपक्वता प्राप्ती करने के लिए व्यक्तियों की सहायता करता है।
2. व्यक्तिगत सोच का सामाजिक खुशाल का प्रदान करता है।
3. नागरिकता तथा जनता सम्पर्क सम्बन्धों का बढ़ावा देता है।
4. असमायोजन तथा जैविक एवं सामाजिक विभाजन का उच्चार करता है।
विल्सन तथा राइलेन्द ने कहा है कि अधिकांश सामाजिक संस्थाएँ जो समूहों के लिए कार्य करती हैं, दो उद्देश्य होते हैं:-

1. समूह के माध्यम से व्यक्तियों के संबंधित संतुलन को बनाना तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रखना।
2. समूह की उन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करना जो आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जनतंत्र के लिए आवश्यक हैं।

ट्रेंट ने भी इसी प्रकार के उद्देश्यों का वर्णन किया है। उनके अनुसार सामूहिक समाज कार्य का मूल रूप से उद्देश्य मानने व्यक्तित्व का यथासम्भव अधिकतम विकास करना है जो जनतांत्रिक आदर्शों के प्रति समर्पित तथा अनुकूल हो।

फिलिप्स ने सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए कहा है कि इसका प्रमुख उद्देश्य सदस्यों का समाजीकरण करना है।

कोनेप्का का विचार है कि सामूहिक समाज कार्य सामूहिक अनुभव द्वारा सामाजिक प्रकार्यात्मकता में वृद्धि करता है।

उपरोक्त विचारों के अध्ययन के पश्चात हमारे मत में सामूहिक समाज कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

1. जीवनपर्योगी आवश्यकताओं की पूर्ति करना

सामूहिक समाज कार्य का प्रारंभ समस्याओं का समाधान करने से हुआ है। परन्तु कालान्तर में यह अनुभव किया गया कि आर्थिक आवश्यकताओं का समाधान सभी समस्याओं का समाधान नहीं है। स्वीकृति, प्रेरणा, सहभागिता, सामूहिक अनुभव, सुक्ष्म आदि अनेक ऐसी आवश्यकताओं हैं जिनको पूरा किया जाना भी आवश्यक है। इसी आधार पर अनेक संस्थाओं का विकास हुआ है और उन्होंने जीवनपर्योगी आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य प्रारंभ किया। आज सामूहिक समाज कार्यक्षेत्र समूह में व्यक्तियों को एकांत न करके उनके एकत्रीकन की समस्या का समाधान करता है, सहभागिता को प्रोत्साहन देता है तथा सुक्ष्म की भावना का विकास करता है।

2. सदस्यों का महत्व प्रदान करना

भीतिकवादी सूत्र के कारण आज व्यक्ति का कोई महत्व न होकर धन, मशीनों तथा चंद्रों का बोलबाला हो गया है। परिणामतः व्यक्ति में निराशा तथा हीनता के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगे हैं। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसका कुछ महत्व हो तथा समाज में समान हो। यह समस्या दुर्गमक्ष्य उन्नति गंभीर नहीं होती है जितनी बुद्धिवश्वास में। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि केवल बुद्धिवश्वास में ही समाज प्रदान किये जाने की आवश्यकता होती है। यदि हम मानने विकास के सत्रों का सूचना अवलोकन करें तो ऐसा कोई भी स्तर नहीं है जहां व्यक्ति श्रम प्रदान करने की इच्छा न रखता हो। यदि अपार अपार तुलना का कारण बने होते तो व्यक्ति को भी महत्व प्रदान किया गया है। सामूहिक समाज कार्य करने से नए स्वीकृति की समाज अवसार प्रदान करता है तथा उन्हें उचित समाज एवं स्वीकृति देता है।
3. सामजिक स्थापित करने की शक्ति का विकास करना

व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता साम�िक प्राप्ति करने की होती है। व्यक्ति इससे जीवन रक्षा के अवसर प्राप्त करता है तथा पर्यावरण को समझकर अपनी आवश्यकताओं को समायोजित करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति जब तक जीवित रहता है तब तक अनेक समयां वे एक ही रहती हैं और उसे समायोजन स्थापित करने के लिए वाध्य करती रहती हैं। सामूहिक समाज कार्यकर्ताओं सामूहिक अनुभवों के द्वारा व्यक्ति में सामजिक स्थापित करने की कुशलता विकसित करता है। व्यक्ति जब समायोजन स्थापित करने में असमर्थ होता है, तब तक उसकी या उसके पर्यावरण में पाई जाने वाली कमियाँ ही होती हैं। व्यक्ति शासन करने, अधिकार जमाने, अनावश्यक हस्तक्षेप करने, बातचीत के भाव को कमी करने, उत्तरदातियों को पूरा करने, दूरी का सहयोग व्यक्ति करने आदि के कारण सामजिक स्थापित करने में असमर्थ होता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ताओं के माध्यम से उन कमियों को दूर करके सामान्य गुणों को विकसित करता है।

4. आत्म-विविधता एवं आत्मनिर्भरता को विकसित करना

जब तक व्यक्ति में आत्म-विविधता नहीं होता है तब तक वह न कोई अपने आप निर्णय ले सकता है और न ही कोई जीवन का कार्य करता है। आत्मनिर्भरता का होना व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक होता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ताओं व्यक्ति में इन गुणों का विकास करने के लिए प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग कार्य करने तथा उत्तरदातियों में प्रवृत्त ग्रहण करने का अवसर देता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं, शक्तियों एवं निपटाओं को प्रकट करने का पूरा अवसर देता है जिसके फलस्वरूप उनमें स्वतः आत्मविविधता एवं आत्मनिर्भरता विकसित हो जाती है।

5. प्रजातात्मिक नेतृत्व का विकास करना

सामूहिक समाज कार्यकर्ताओं का उद्देश्य जहाँ एक और व्यक्तियों में प्रजातात्मिक मूल्यों का विकास करना है वहाँ दूसरी और प्रजातात्मिक नेतृत्व का विकास भी करता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ताओं समूह के प्रत्येक सदस्य को नेतृत्व प्रदान करने के अवसर देता है। यद्यपि नेता धन देता है परंतु अन्ततः निर्णय समूह पर निर्भर होता है। नेता सभी सदस्यों को समान अवसर एवं उन्नति की समान सुविधायें प्रदान करता है।

6. सामाजिक सम्बन्धों का स्थ्रृढ़ बनाना तथा मनो-सामाजिक समस्याओं का समाधान करना

व्यक्ति समाज में पैदा होता है और सामाजिक सम्बन्धों में ही अपना जीवन जिताता है। इसीलिए मेकाइकल वस्तु पेज ने समाज को सामाजिक सम्बन्धों का जाल कहा है। सम्बन्धों के आधार पर ही समाज के कार्य सम्पन्न होते हैं। परंतु कभी-कभी व्यक्ति इन सम्बन्धों को निभाने में असमर्थ होता है जिसके परिणामस्वरूप मानसिक तनाव एवं अन्य मानसिक विकास उत्पन्न हो जाते हैं तथा कभी-कभी व्यक्ति मानसिक रोगों का शिकार भी हो जाता है। सामूहिक समाज कार्यकर्ताओं व्यक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार के द्वारा तनाव को कम करता है। कार्यकर्ताओं का उद्देश्य न केवल तनाव को कम करना है बल्कि सामान्य व्यक्तियों को सामूहिक अनुभव के द्वारा यह ज्ञात करना भी होता है। उसकी कठिनाइयों उसकी असफलताओं के कारण ही नहीं है बल्कि अन्य व्यक्ति भी इसी प्रकार के अनेक कठिनाइयों से पीड़ित हैं। ऐसा होने पर उनमें संतोष उत्पन्न होता है और समाधान की शक्ति आती है एवं सम्बन्ध स्थापित करने की शक्ति का विकास होता है। उनमें निर्बीरता का संचार होता है तथा वे स्वयं अपनी समस्या का समाधान करने का प्रयास करते हैं।
7. एकान्तता की समस्या का समाधान करना

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य एकान्त में रहना पसंद नहीं करता। परंतु वह इस प्रकार रहना तभी चाहता है जब उसमें वह विश्वास हो कि वह यहीं के द्वारा स्वीकृत है। प्रत्येक अधिकांश व्यक्ति एकान्त पसंद नहीं करते, यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी मनुष्य में रहते हैं। आज की परिस्थिति में जहाँ मनुष्य विज्ञान बड़ा रहा है, एकान्त जीवन एक समस्या बन गया है। कभी-कभी मनुष्य की बुद्धि आदर्श भी बन जाती है। सामूहिक कार्यक्रम समूह के माध्यम से इस समस्या का समाधान करता है।

8. स्वीकृति प्रदान करना

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसे समूह एवं समाज में स्वीकृति किया जाय, उसे उचित स्थान मिले और कार्य करने के लिए उचित अवसर देकर समाज उसे स्वीकार करे। इसमें समाज और समूह किसी व्यक्ति को स्वीकृति प्रदान नहीं करते तो वह अपना मानसिक संतुलन खो देता है जिससे वह समाज निराशी गतिविधियों का शिकार हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में यह समाज की मान-मूल्यज्ञक, कानून-व्यवस्था की परवर्ती चिंता बिना अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अविभाज्त और अनुप्रयोगिता दंग अपनाता है। वह अनेक प्रकार के मानसिक रोगों को शिकार हो जाता है। यदि एक समाज में आत्म समाप्ति की क्रिया होती है और वे एकान्तता से पीड़ित होते हैं। वे स्वयं अपने को स्वीकृति करते और दूसरों से रुक्त होते हैं। सामूहिक कार्य में व्यक्ति को उचित स्थान प्रदान किया जाता है। समूह में समन्वय स्थापित होते हैं और समूह के सदस्य परस्पर एक दूसरे को इसका आवश्यक अंग समझते हैं। इसीलिए उन रोगियों को समूह से अधिक लाभ होता है जो मानसिक समस्याओं से प्रस्त होते हैं।

9. आत्म विश्वास का विकास करना

व्यक्ति में आत्मविश्वास का होना परमात्मक और आवश्यक है। इसके विना न तो वह स्वयं कोई कार्य कर सकता है और न जोखिम उठाने के लिए तैयार हो सकता है। सामूहिक कार्य के द्वारा व्यक्तियों में इस गुण का विकास किया जाता है। जब समूह के प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग कार्य प्रदान किया जाता है तो उसे पूर्ण करने की क्षमता उसमें स्वतः विकसित होने लगती है और आत्मविश्वास पैदा होने लगता है। यह केवल अनुभव के द्वारा होता है।

10. निर्भरता को स्वीकार करना

व्यक्ति में कभी-कभी विश्वास परिस्थितियों के कारण स्वभाव परिवर्तन हो जाता है। इसमें समाज पर निर्भर रहना ही अपना जीवनयापन करता है। अपना हो जाना, अंधा हो जाना इत्यादि ऐसी परिस्थितियों हैं। इन परिस्थितियों में व्यक्ति बहुत अधिक परेशान हो जाता है, जिससे वह अपनी जिन्दगी को अधिशाप समझने लगता है। सामूहिक कार्य के माध्यम से कार्यान्वयन उसमें ऐसी विश्वसनीयता को उत्पन्न करता है, जिससे वह कभी को स्वीकार करने में सक्षम होता है। वह समूह में व्यक्तियों को स्थान देकर उनमें ऐसी भावनाओं का विकास करता है जिससे वे श्रेष्ठ जिन्दगी की सुखद बना सकें। सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति में स्वीकार करना का विकास होता है और जिन्दगी में नई आशाएं बंधती हैं।
11. समग्र का भाग होने की इच्छा की पूर्ति करना

व्यक्ति की सदैव यह इच्छा रहती है कि वह समाज का एक आवर्तक अंग बन सके और उसकी क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सके। सामूहिक कार्य-अनुभव द्वारा वह इस समग्र भाग का पहले हिस्सा बनता है जिसका कि वह ये रूप है और धीरे-धीरे उसकी महत्ता प्राप्त करने की इच्छा की पूर्ति होती है।

12. सामाजिक संबंधों को दूर एवं मधुर बनाना

समाज संबंधों का जाल है। प्रत्येक व्यक्ति एक दूरे से बंधा हुआ है। इसी सम्बन्ध के आधार पर समाज के कार्यों का संचालन होता है। परंतु कभी-कभी सम्बन्ध इतने बिगड़ जाते हैं कि बहुत अधिक घटनाएं तक घटित हो जाती हैं, आन्दोलन होते हैं और क्रांति तक हो जाती है। सामूहिक कार्य के द्वारा व्यक्तियों के असंतोष के कारण का पता लगाकर उनके बीच उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का दूर कर सम्बन्ध दूर एवं मधुर बनाये जाते हैं।

13. मनोसामाजिक समस्याओं को दूर करना

सामूहिक कार्य का प्रयोग मानसिक रोगियों के साथ भी किया जाता है। समूह में केवल वे ही सदस्य भाग लेते हैं जो मनोसामाजिक समस्याओं से प्रभित होते हैं, लोगों में मिल नहीं सकते तथा बिपुल रहते हैं। सामाजिक कार्यक्रम उनमें वैश्वीकृत सद्भावना का विकास करता है। परस्पर निर्भर क्रियाओं में रोगी अपने को सुसंधित रहते हैं। जब वह यह देखता है कि उससे भी अधिक लोग पीड़ित हैं तो उसे कुछ संतोष मिलता है। वह यह अनुमान करता है कि उसकी कठिनाइयों उसकी असफलताओं के कारण ही नहीं हैं। रोगी में ऐसी भावना उत्पन्न हो जाने पर उसमें समूह से समन्वय स्थापित करने की इच्छा जागृत होती है तथा चिंताओं कम होती हैं। उसमें तपस्ता का विकास होता है और समस्याओं का बोझ हटका हो जाता है।

14. मनोरंजन प्रदान करना

सामूहिक कार्य का शुभार्थिन मनोरंजन कार्यों से ही हुआ। लोग एक समूह के रूप में कलब में एकत्र हुए और मनोरंजन के लिए इन्होंने विभिन्न कार्यों का आयोजन किया। सामूहिक कार्य द्वारा आज बच्चों, युवकों एवं युवतियों को मनोरंजन भी प्रदान किया जाता है जो स्वस्थ विकास एवं उन्मति के लिए परमात्मक है।

15. व्यक्तित्व का विकास करना

व्यक्तित्व पर पर्यावरण एवं वंशानुक्रमण दोनों का प्रभाव पड़ता है। जीवन के प्रारंभिक समय में वंशानुक्रमण का प्रभाव अधिक पड़ता है परंतु वाद में पर्यावरण ही व्यक्तित्व के विकास में अपना प्रभाव डालता है। सामूहिक कार्य का मूल उद्देश्य व्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करना होता है जिससे उसके व्यक्तित्व का सर्वोत्तम सम्भव विकास हो सके।
15.2.3 उद्देश्यों का महत्व

उद्देश्यों की स्पष्टता निम्न कारणों से महत्वपूर्ण होती हैं:-

1. उद्देश्य कार्यक्रम की सही दिशा प्रदान करते हैं तथा निश्चित मार्ग को अनुसरण करते हैं।
2. उद्देश्यों के निश्चित होने पर साधनों के उपयोग में सुधार होती है।
3. उद्देश्यों के निश्चित होने से कार्यक्रम संस्था की सेवाओं तथा कार्यक्रमों का आवश्यकतानुसार उपयोग करता है।
4. उद्देश्यों के स्पष्ट होने से कार्यक्रम को यह जान सकता है कि किसके साथ कार्य करना है तथा सामूहिक कार्य के किस प्रारूप का उपयोग करना है।
5. उद्देश्यों से स्पष्ट होने पर ही संस्थाओं निश्चित करती है कि कार्य का प्रारंभ कैसे और किसके साथ किया जाए।
6. उद्देश्यों की स्पष्टता से नेतृत्व की आवश्यकता का ज्ञान होता है तथा पता चलता है कि किस प्रकार के नेतृत्व की आवश्यकता है।
7. उद्देश्यों की सहायता से ही कार्यक्रमों अपनी निर्देशनाओं तथा कार्यपद्धति में परिवर्तन एवं परिवर्तन करता है।
8. उद्देश्य के स्पष्ट होने से संस्था के लिए आवश्यक यंत्र, साधनों तथा कोष को निश्चित करने में सहायता मिलती है तथा बजट के निर्धारण में आसानी रहती है।
9. उद्देश्यों के निश्चित होने पर कार्यक्रमों की प्राथमिकता निर्धारित करने में आसानी रहती है।
10. उद्देश्यों की स्पष्टता से संबंधितों की एक दिशा निश्चित होती है तथा सम्बन्धितों का रूप निश्चित होता है।
11. उद्देश्यों की स्पष्टता पर ही जन भागीदारी सम्भव होता है।
12. मूल्यांकन के प्रक्रिया उद्देश्यों को आधार मानकर ही चलती है। कार्यक्रमों, समूह तथा संस्था तीनों ही अपने कार्यों, कार्यक्रमों तथा कार्य-विधियों का मूल्यांकन अपने-अपने उद्देश्यों के आधार पर ही करते हैं।

15.3 सामूहिक समाज कार्य की विशेषताएँ

सामूहिक समाज कार्य की सबसे उपयुक्त एवं पूर्ण परीक्षा ट्रेकर ने दी है। उनके अनुसार सामूहिक समाज कार्य की निम्न विशेषताएँ हैं:

1. सामूहिक समाज कार्य एक प्रणाली है

इसका तत्त्वात्य यह है कि सामूहिक समाज कार्य के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है। कार्यक्रमों को जब तक समूह की विशेषताओं, दराओं, मनोवृत्तियों आदि का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह कार्य नहीं कर सकता है। उसको व्यक्तित्व तथा समूह दोनों के व्यवहार का ज्ञान होना आवश्यक है। उसमें विशेष समझ होती है जिससे वह बिन्दु प्रतिटंत्रों में समूहों के साथ कार्य करने में समर्थ होता है। उसकी समूह की गतिशीलता का ज्ञान होता है। ट्रेकर का मत है कि सामूहिक कार्य के अपने कुछ सिद्धांत हैं जो दूसरी प्रणालियों से मिलने हैं। नियोजित समूह निर्माण, उद्देश्यांकन कार्यक्रमों-सेवाओं सम्बन्ध, निर्माण वैविध्यकरण, निर्माण सामूहिक अन्तःक्रिया, प्रजातात्त्विक
सामूहिक आमने-सामने करार, लचीला कार्यान्वयन संगठन, निरतता प्रगतिशील कार्यक्रम, संसाधनों का उपयोग तथा निरतता मूल्यांकन के सिद्धांत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

सामूहिक समाज कार्य की अपनी विशिष्ट निपुंशतयांहें जिनको सामूहिक कार्यकर्ताएं अपने व्यवसाय में लाता है। कार्यकर्ताओं के उद्देश्यपूर्ण समायोजन स्थापित करने की निपुंशता होती है। वह सामूहिक स्थिति का विशेष ध्यान देने में दक्ष होता है। वह समूह के साथ भाग लेने में निपुण होता है। अपनी भूमिका की व्याख्या तथा उसकी आवश्यकता को समयानुसार निष्ठावान्वित करने में समर्थ होता है। वह प्रत्येक नयी स्थिति के अनुसार रहस्यविभाजक रूप से अद्ययान करता है तथा समूह की समर्थनता तथा नकारात्मक भवनों को समझकर ही कार्यक्रम को आगे बढ़ाता है। वह समूह की रूचियों तथा आवश्यकताओं के अनुसार ही कार्यक्रम आयोजित करता है। उसमें संस्था तथा समुदाय के संसाधनों का उपयोग में लाने की निपुणता होती है।

2. सामूहिक समाज कार्य द्वारा समूह में संस्था के अन्तर्गत व्यक्तियों की सहायता की जाती है

ट्रेंकर की परिभाषा की दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि सामूहिक समाज कार्य में सामूहिक तथा अभिकरण दोनों महत्वपूर्ण हैं। अर्थात् व्यक्ति की सहायता समूह के माध्यम से अभिकरण के तत्वावधान में की जाती है। समूह की अपनी विशेषता होती है तथा उसके गठन का भी एक उद्देश्य होता है। यह समूह किसी संस्था के अन्तर्गत ही गठित किया जाता है। वे समूह समुदाय की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार होते हैं।

3. सामूहिक समाज कार्य एक कार्यकर्ता द्वारा किया जाता है जो समूह की कार्यक्रम क्रियाओं में होने वाली अन्तर्भाषा का स्वागत करता है

सामूहिक कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वह सभी कार्यों की धूरी होता है। अतः ऐसी उपयोग अथवा अभिरुचि होती है, समूह उसके प्रकार के अभिव्यक्ति के अधिकार पर अपनी भूमिका का समयानुसार करता है। जिस सीमा तक समूह उसको अपनी भूमिका पूरी करने की आवश्यकता है वह वही मानने के मूलभूत की सीमा को बढ़ाता है। कार्यकर्ता समूह के सदस्यों का वैधतिक सम्बन्ध करते हुए उनकी आवश्यकताओं, इच्छाओं तथा अन्तर्निहित क्षमताओं का ज्ञान प्राप्त करता है। उनके सदस्यों के निर्देशन का समूह की सहायता करता है तथा कार्यक्रमों को चलाने एवं उनकी आवश्यकताओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है। वह समूह को दोहराने को गंभीर रूप से निर्देशित करता है। कार्यकर्ता समूह की सहायता की आवश्यकता के बिंदु पर जहाँ कहीं उस आवश्यक होता है, करता है। वह सामाजिक संसाधनों के समूहों में भी समूह की सहायता करता है।

4. सामूहिक समाज कार्य का उद्देश्य आपसी सम्बन्धों में वृद्धि तथा अपनी क्षमताओं के अनुसार विकास करना है

सामूहिक समाज कार्य के अन्तर्गत कार्यकर्ताओं के प्रयास के कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जिसके द्वारा समूह के सदस्यों में दूसरे लोगों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता बढ़ती है। वे अपनी समस्याओं एवं क्षमताओं के अनुसार विकास के असरों का अनुभव करते हैं। समूह सदस्यों में सहभागिता की क्षमता आती है, समस्याओं को करने की विधि सीखते हैं, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है तथा उत्तमता के प्राप्त करने की सीख होती है। उनमें स्व-समूह रूप का काम करने लाती है तथा अपनी क्षमता की उन्नति के विकास करता है। इन सभी गुणों से वे अपने कार्यों के साथ समयानुसार करने में सफल होते हैं एवं वृद्धि के कार्यों के अनुसार होते हैं।
5. सामूहिक समाज कार्य सहायता का उद्देश्य वैयक्तिक, सामूहिक और सामुदायिक विकास करना है

सामूहिक समाज कार्य करने वालों के व्यवहार के परिवर्तन के लिए कार्यक्रमों का उपयोग करता है। चाहें वह समस्या हो अथवा विकास का प्रश्न हो, दोनों ही स्थितियों में व्यवहार ही बाधा बनाता है। अतः यदि दोनों प्रकार से सफलता प्राप्त करता है तब व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा। इस परिवर्तन से व्यक्ति एवं समूह में परिवर्तन आता है जिससे प्रजातात्त्विक लक्ष्यों की पूर्ति होती है।

15.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्यों का अध्ययन किया। जीवनपथों आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सामाजिक स्थापित करने की शक्ति का विकास के विषय में जानकारी प्राप्त की। सामाजिक सम्बन्धों को मजबूत बनाने तथा मनोसामाजिक समस्याओं का समाधान करने की क्षमता के विषय में आवश्यकताओं तथा सामूहिक समाज कार्य की विशेषताओं, निपुणताओं तथा आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त किया।

15.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. सामूहिक कार्य के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।
2. सामाजिक सामूहिक कार्य के विविध उद्देश्यों का वर्णन करते हुए सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्यों का स्वतंत्र वर्णन कीजिए।
3. सामूहिक समाज कार्य की विशेषताओं का वर्णन करते हुए सामूहिक समाज कार्य के उद्देश्यों के महत्व को समझाइए।
4. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए:-
   1. व्यवसायिक उद्देश्य
   2. समूह समाज कार्य के उद्देश्य
   3. सामूहिक कार्य के उद्देश्य

15.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

सिंह, सुनेत्र, मिश्रा, पी.डी., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2006.
सिंह, पी.डी. के, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक विजय लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुनेत्र, बर्मा, आर.बी.एस., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी.डी. मिश्रा, बी.ए., व्यक्ति और समाज, न्यूरायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सिंह, पी.डी. के, भारती, ए.के. सोशल वर्क कान्सेप्ट एंड मैथडज, न्यूरायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के.०, पालीचाल, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विधि: न्यू रायल कूक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी. डी.०, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.
मिश्र, पी. डी.०, सामाजिक वैचारिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम

16.0 उद्देश्य
16.1 प्रस्तावना
16.2 कार्यक्रम का अर्थ
16.2.1 सामूहिक कार्य में कार्यक्रम एक प्रक्रिया के रूप में
16.3 कार्यक्रम के प्रमुख अंगभूत
16.4 कार्यक्रम माध्यमों का उपयोग
16.5 समूह के लिए कार्यक्रम का महत्व
16.6 प्रभावात्मक कार्यक्रम की शरीर
16.7 कार्यक्रम की प्रकृति तथा उद्देश्य
16.8 कार्यक्रम के तत्व
16.9 कार्यक्रम के सिद्धांत
16.10 कार्यक्रम का महत्व
16.11 प्रभावपूर्ण कार्यक्रम की आवश्यक परिस्थितियाँ
16.12 समूह कार्य में कार्यक्रम माध्यम
16.13 सारांश
16.14 अभ्यासार्थ प्रश्न
16.15 सन्दर्भ ग्रन्थ

16.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आपके के अर्थ को समझ सकेंगे।
1. कार्यक्रम के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. कार्यक्रम के प्रमुख अंगभूतों तथा कार्यक्रम माध्यमों के उपयोग के विषय में वर्णन कर सकेंगे।
3. समूह में कार्यक्रम के महत्व का वर्णन तथा कार्यक्रम की शरीर के विषय में भी अध्ययन कर सकेंगे।
4. कार्यक्रम की प्रकृति तथा उद्देश्यों के विषय में भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. कार्यक्रम के तत्व तथा कार्यक्रम के सिद्धांत का उल्लेख कर सकेंगे।
118
6. कार्यक्रम के महत्व और प्रभावपूर्ण कार्यक्रम की आवश्यक परिस्थितियों के विषय में जान सकेंगे तथा समूह कार्य में कार्यक्रम माध्यम का वर्णन कर सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम विषय पर विचार प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्रम के अंतर्गत वह सब कुछ आता है जिसे समूह के सदस्य करते हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत शिल्प, अभिनय तथा खेल-आदि आते हैं। अन्य शाखाओं में समूह समाज कार्य के अंतर्गत कार्यक्रम का अर्थ कोई वस्तु तथा प्रयोजक वस्तु हो गया है जो समूह अपनी अभिव्यक्तियों की संस्थापक के लिए करता है। कार्यक्रम के द्वारा व्यक्तियों में 'टीम भावना' को विशेष तौर पर विकसित किया जाता है। इसके लिए कार्यकर्ताओं की रुचियों के अनुसार कार्यक्रम का निर्माण करता है तथा सदस्यों को विभिन्न भूमिकाओं के निर्वाह का अवश्रय प्रदान करता है। कार्यक्रम के द्वारा समूह किसी विशेष क्षेत्र में क्रियाएं सम्पन्न करता है। मनोरंजन, ड्रामा, नृत्य, संगीत, वाद-विवाद, बातचीत, खेल-खेल, कला, शिल्प आदि कार्यक्रम के माध्यम से।

16.2 कार्यक्रम का अर्थ
कार्यक्रम का उद्देश्य समूह की क्रियाओं और गतिविधियों को इस प्रकार से नियोजित करके सम्पन्न करता है जिससे समूह एवं समूह के सदस्यों को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। इस अर्थ में कार्यक्रम स्वयं एक प्रक्रिया है। कार्यक्रम में शिल्प, वस्तु तथा क्रम, लोगों से विचार व्यक्त करने का माध्यम तथा कार्यक्रम का दृष्टि के सम्मिलित होता है। कार्यक्रम विषयवस्तु में जीवन के सामान्य अनुभूमियों का निरूपण होता है, जो व्यक्तिव्यक्ति के लिए विकास की दृष्टि से अर्थपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए सामूहिक कार्य के कार्यक्रम विषयवस्तु में अधिकांशतः मनोरंजन से सम्बन्धित क्रियाओं होती हैं। यह क्षेत्र महत्वपूर्ण है, क्योंकि खाली समय का उपयोग सामाजिक महत्व का है। समुदाय के मामलों में जनभागीदार सामूहिक कार्य का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। कुछ संस्थाओं गुह तथा पारिशासिक जीवन क्षेत्र को अधिक महत्व देती हैं, क्योंकि इनमें आर्थिक तथा सामाजिक सन्दर्भों का अनेक समस्याओं होती हैं।

ट्रेक्ट कहते हैं कि “साधारण भाषा में समूह समाज कार्य के अंतर्गत कार्यक्रम का अर्थ कोई वस्तु तथा प्रयोजक वस्तु हो गया है जो समूह अपनी अभिव्यक्तियों की संस्थापक के लिए करता है।”

कल्पना ने कार्यक्रम को विश्लेषित करते हुए कहा कि “इसके अंतर्गत वह सब आता है जिसे समूह के सदस्य करते हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत शिल्प, अभिनय तथा खेल आदि आते हैं।”

मिल्डमैन का मत है कि “कार्यक्रम शावक उन क्रियाओं में प्रयोग किया जाता है जो बातचीत के स्थान करने पर अधिक महत्व देती हैं।”

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि “कार्यक्रम एक समूह द्वारा की जाने वाली वे क्रियाएं हैं जो समूह की व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों पर आधारित तथा निर्धारित होती हैं जिनके द्वारा समूह में समूह की भावना का विकास होता है और समूह अपनी समस्याओं का समाधान योजना है।”

कार्यक्रम के द्वारा व्यक्तियों में “टीम भावना” को विशेष तौर पर विकसित किया जाता है। इसके लिए कार्यकर्ताओं समूह की रुचियों के अनुसार कार्यक्रम का निर्माण करता है तथा सदस्यों को विभिन्न भूमिकाओं के निर्वाह का अवश्य प्रदान करता है।
16.2.1 सामूहिक कार्य में कार्यक्रम एक प्रक्रिया के रूप में

दृष्टिकोण ने निम्न प्रकार से कार्यक्रम को प्रक्रिया के रूप में दर्शाया है:  
कार्यक्रम में व्यक्तिकरण के माध्यम वे विशिष्ट साधन होते हैं जिनके द्वारा समूह किसी विशेष क्षेत्र में क्रियायों सम्मन करता है। मनोरंजन, ड्रामा, संस्कृति, नृत्य, संगीत, नाट-विवाह, बार्तलाप, खेलकूद, कला, शिल्प आदि कार्यक्रम के माध्यम हैं। कार्यक्रम सबसे पहले कार्यक्रम चलाने के लिए समूह का कार्यान्वयन संगठन बनाने के लिए सहायता करता है। यह समूह को विषयवस्तु का क्षेत्र तथा प्रणाली का माध्यम चुनने में सहायता करता है। परन्तु इससे पहले वह समूह की स्थिति की खोज करता है। वह समूह की सहायता इस प्रकार से करता है जिससे वह अपने ही संस्कृति का उपयोग अधिकारिक कर सके। कार्यक्रम रूप से समर्थ मुख्यत: तीन बातों से होता है:-

(1) क्या कार्यक्रम है (विषयवस्तु),
(2) कार्यक्रम किस प्रकार चलेगा, और 
(3) इस माध्यम से कौन का संप्रेर्ण शुरू: जानेगा। 
इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कार्यक्रम के 3 आवश्यक अंग हैं।

16.3 कार्यक्रम के प्रमुख अंगभूं

कार्यक्रम की व्याख्या में कार्यक्रम के निम्नलिखित तीन अंगभूं का उल्लेख आवश्यक है।

1. विषयवस्तु एवं क्षेत्र

विषयवस्तु का तात्पर्य है कि कार्यक्रम के अन्तर्गत हम किस-किस क्रियाओं का समावेश करते हैं, समूह क्या अनुभव प्राप्त कर रहा है और उसका विवाद किस दिशा में हो रहा है। कार्यक्रम की विषयवस्तु, मनोरंजन, शिक्षा, मनोवैज्ञानिक सहायता, शारीरिक विकास इत्यादि हो सकती है। साधारणतया इसका अर्थ उस क्षेत्र से समझा जाता है जिसको विशेष रूप से नोट करा है। कार्यक्रम की विषयवस्तु के आधार पर कथा-कथनी समूहों का संगठन होता है। परन्तु ऐसे स्थिति उस समय आती है जब अभिक्रिया समूह की रुचियों एवं आवश्यकताओं को अनुभव करके विषयवस्तु का चुनाव करता है। कार्यक्रम रूप से निर्धारित करने के पश्चात् ही क्रियाओं को सम्पन्न करने के माध्यमों का चुनाव करता है।

2. माध्यम

कार्यक्रम जब क्षेत्र तथा विषय-वस्तु का चुनाव कर लेता है तब कार्यक्रम के परिणामवर्ग के लिए माध्यम निर्धारित करता है। वह साधनों एवं तरीकों को उपयोग में लाकर समूह द्वारा क्रियाओं को सम्पन्न करता है या समूह इस साधनों बनाकर उपयोग करने का अनुभव करता है। अतः माध्यम का मतलब उन साधनों से है जिनका उपयोग समूह अपने अनुभव के लिए करता है। कार्यक्रम स्थान ने माध्यम प्रयोग किये जाते हैं, जैसे-नाच, गाना, कहानी, ड्रामा, खेल, कला, विद्यायता जैसे क्रियाओं समूह की अपनी भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा व्यक्त करने का अवसर देती है। इन माध्यमों के द्वारा न केवल रचनात्मक अनुभव प्राप्त होता है बल्कि
समूह की आवश्यकताओं को समझने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए ड्रामों में यदि स्वास्थ्य की समस्याओं को बूंद करने के उपायों के लिए अभियान किया गया है तब समूह के सदस्य ने केवल स्वास्थ्य के विषय में जान प्राप्त करें तो बल्कि उनकी सामाजिक स्वास्थ्य-स्तर की भी जानकारी हो जाती है।

3. कार्यक्रम के सम्पादन की प्रणाली

सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम के सम्पादन का तात्पर्य समूह की सम्पूर्ण प्रक्रिया से है। कार्यकर्ता सबसे पहले समूह की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की खोज करता है तथा समूह की कार्यात्मक संगठन के रूप में संगठित करता है, जिससे वह उत्तरदायित्वपूर्ण निर्णय ले सके में समर्थ हो। वह कार्यक्रम की विभेदितता का ज्ञान करता है और माध्यम निर्धारित करता है। कार्यक्रम के तत्वों का निरुपण करता है तथा समस्या का निदान करता है। अन्त में, उपचार की प्रक्रिया अंतिम होती है। उपचार होने के बाद समूह को स्थगित कर दिया जाता है।

16.4 कार्यक्रम माध्यमों का उपयोग

कार्यकर्ता की समूह की रचना, उद्देश्य तथा स्रोत के आधार पर कार्यक्रमों को निर्धारित करता होता है। कार्यकर्ता की समूह की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं का खोज करता है तथा समूह की कार्यात्मक संगठन के रूप में संगठित करता है, जिससे वह उत्तरदायित्वपूर्ण निर्णय ले सके में समर्थ हो। वह कार्यक्रम की विभेदितता का ज्ञान करता है और माध्यम निर्धारित करता है। कार्यक्रम के तत्वों का निरुपण करता है तथा समस्या का निदान करता है। अन्त में, उपचार की प्रक्रिया अंतिम होती है। उपचार होने के बाद समूह को स्थगित कर दिया जाता है।

1. खेल: इसके अंतर्गत शारीरिक, बौद्धिक, सुस्थि या मदद आदि सभी खेल आते हैं। खेलों के सम्बन्ध में खिलौनों, बालू तथा पानी आदि खेल भी समिलते हैं।

2. ड्रामा, हास्यनाटक, कठपुतली: कार्यक्रम का नाच तथा भूमिका निर्माण एवं समूह सदस्यों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को समझने के लिए उत्साहित किया जाता है जो उनकी कठिनाइयों तथा समस्याओं के लिए महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने अपने तथा बुध्दि के व्यक्ति के विषय में अन्तर्दृष्टि का विकास इसके माध्यम से करते हैं।

3. संगीत, कला तथा शिल्प: संगीत के माध्यम से मनुष्य से संबंधों की अभिव्यक्ति होती है। संगीत चाहे बैकलिक स्तर पर आयोजित हो अथवा सामूहिक, दोनों ही स्थितियों में हल्का एवं मन दोनों को रहत देता है। कलात्मक कार्यों से जहाँ एक मानक तनाव मिलता है, ज्यादा केन्द्रित होता है। वहीं बौद्धि और अत्यन्त प्रदर्शन का अवसर लागू, मिश्रित, कागज पर कला कृतियों द्वारा होता है। उसमें रचनात्मक कला का विकास होता है तथा व्यक्ति में सन्तुलन होता है।

4. वार्ता: वार्ता का प्रारंभ समूह के समूह के निर्माण के समय ही हो जाता है। कार्यकर्ता वार्तालाप के माध्यम से ही समूह सदस्यों की विशेषताओं से अवगत होता है तथा वैश्विक इतिहास प्राप्त करता है। इन क्रियाओं में भाषण, रचनात्मक, विचार-विविधता, संबंधों के साथ आदि समिलते हैं।

5. गति समस्या: इस प्रकार की क्रियाओं का उपयोग मौखिक संवार प्रक्रिया के प्रतिरोध स्वरूप होती है। इसके अंतर्गत हुआ जुड़ना, अभिव्यक्ति संवार, न्यूनता, हास्य, व्यक्ति तथा शारीरिक अभ्यास होता है।

6. कार्य: समूह सदस्यों को किसी परिपथ को पूरा करने के लिए निर्देश दिये जाते हैं तथा सहयोगिक क्रियाओं के आधार पर कार्यक्रम समाप्त होता है।

121
कार्यक्रम के लिए कार्यक्रम का महत्व

16.5 समूह के लिए कार्यक्रम का महत्व

समूह के लिए कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि कार्यक्रमों के माध्यम से ही विभिन्न किरियाओं को सम्पन्न किया जाता है, जिसके कारण समूह किसी न किसी किरिया को सम्पन्न करके मनोरंजन प्राप्त करते हैं। इसके द्वारा संबंधों की अभिव्यक्ति होती है, परिसंपर्क शारीरिक एवं मानसिक विकास सम्भव होता है। पारस्परिक अनु-किरिया के कारण सदस्य एक-दूसरे के निकट आते हैं और एक-दूसरे के विषय में बातचीत करते हैं। साथ ही साथ समाज आवश्यकताओं का पता चलता है। कार्यक्रम-किरियाओं समूह को प्रेरणा सुहाग, भित्तियों तथा उत्तराधिकार को व्यक्त करने का अवसर देता है। इससे उनमें परस्पर महत्व की इच्छा पूरी होती है।

कार्यक्रम के निर्देशन से समूह को निर्णय लेने तथा उत्तरदायित्व को स्वीकार करने का अवसर प्राप्त होता है।

प्रभावात्मक कार्यक्रम की शर्तें

16.6 प्रभावात्मक कार्यक्रम की शर्तें

सामूहिक कार्य-प्रक्रिया उस समय भलीभांति सम्पन्न होती है जब संस्थानत्व तथा समूह ऐसी बातचीत का निर्माण करते हैं जिसमें समूह-सदस्य अपनान अभूतपूर्व तथा व्यक्ति विकास के अवसर स्पष्ट दिखाया देते हैं। एक-दूसरे का उत्साह बढ़ता है, लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक सहयोग प्राप्त होती है, योजना बनाने, कार्यान्वयन करने तथा कार्यक्रम चलाने में महत्वपूर्ण होते हैं। लेकिन उससे अधिक कार्यक्रम किस प्रकार चलाया जा रहा है, महत्वपूर्ण होता है। अतः, कार्यक्रम प्रभावपूर्ण होने के लिए निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना चाहिए:-

1. कार्यक्रम उन व्यक्तियों की सुचियों पर आधारित होना चाहिए जिन्होंने समूह का निर्माण किया है।
2. कार्यक्रम के अन्तर्गत समूह-सदस्यों की आयु, सांस्कृतिक पूर्वज्ञान तथा आर्थिक अंतर होते हैं, जब भाषा अवकाश रखना चाहिए।
3. कार्यक्रम में व्यक्तियों को इन अनुभवों तथा अवसरों की प्राप्ति अवकाश देने की अनुमति होनी चाहिए जिनके कारण समूह के सदस्य बने हैं और उनके प्रति आत्मविश्वास मूल्य उमेद है।
4. कार्यक्रम को लाभदायक होना चाहिए तथा विषय प्रकार की सुचियों एवं आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता होनी चाहिए। यहाँ साथ ही साथ भाग लेने वाले सदस्यों का अधिकार प्राप्त होने का अवसर मिलना चाहिए।
5. कार्यक्रम को संचालन से जटिल की ओर अग्रसर होना चाहिए।

122
16.7 कार्यक्रम की प्रकृति तथा उद्देश्य

कार्यक्रम की प्रकृति प्रायोगिक होती है अर्थात कार्यकर्ता कार्यक्रमों का क्रियान्वयन प्रयोग के तौर पर करता है। इसकी सफलता का पता सदस्यों के व्यवहार मूल्यांकन द्वारा चलता है। कार्यक्रम में जीवन के सामाजिक अनुभवों का निरूपण होता है, जो व्यक्ति विवेक के लिए विकास की दृष्टि से अर्थपूर्ण होते हैं। समूह कार्य के कार्यक्रम में अधिकांशतः मनोरंजन से सम्बन्धित क्रियाएँ होती हैं। समुदाय के मामलों में सहभागिता समूह कार्य का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। सहभागिता के द्वारा ही समूह में ‘हम की भावना’ का विकास होता है। व्यक्ति अपने खाली समय के लिए अनुयोगी सामूहिक कार्यक्रम द्वारा कर सकता है। इससे वह नित रहे प्रयोग सीखता है, साथ ही साथ समाज के प्रति उसकी जानकारी भी बढ़ती है और उत्तरदायित्व का विकास भी होता है।

समूह कार्य में कार्यक्रम की सफलता कार्यकर्ता की दक्षता तथा कार्यक्रम निर्माण में इसकी कुशलता पर निर्भर करती है। कार्यक्रम में मानव जीवन के सामाजिक अनुभवों पर आधारित विभिन्न क्रियाएँ होती हैं जो व्यक्ति के विकास हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं। व्यक्ति के विकास के लिए कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. हम की भावना का विकास करना,
2. सदस्यों में उत्तरदायित्व निभाने की योजना का विकास करना,
3. व्यक्ति का व्यक्तिकरण करना,
4. प्रायोगिक सदस्य की सहभागिता सुनिश्चित करना,
5. सदस्य को जीवन के सामाजिक अनुभवों से सीख लेने हेतु प्रेरित करना, एवं
6. समाज के प्रति सदस्य की जानकारी के स्तर में वृद्धि करना।

16.8 कार्यक्रम के तत्व

कार्यक्रम प्रक्रिया के तीन आकर्षक तत्व हैं:

1. सदस्य
2. समूह कार्यकर्ता, तथा
3. कार्यक्रम की विषय-वस्तु

1. सदस्य

किसी भी समूह के कार्यक्रम की विषय-वस्तु लगभग समान होती है। परन्तु जहाँ पर सदस्य भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के होते हैं वहाँ इसमें परिवर्तन किया जाता है। कार्यक्रम की विषयवस्तु तथा इसका उपयोग समूह की सामाजिक शक्तियों द्वारा प्रयोग रूप से प्रभावित होता है। इन शक्तियों के प्रभाव के आधार पर समूह का आकार, संरचना तथा अन्य क्रियाएँ, जिनके द्वारा वह उद्देश्य को प्राप्त करता है, निकृष्ट की जाती है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन समाजों में अनुभव, सामाजिक उद्देश्य-धार्मिक तथा संघर्ष नष्ट नहीं रह पाते हैं तथा कार्यक्रम की विषयवस्तु के निर्माण का उत्तरदायित्व कुछ ही सदस्य प्रगति करते हैं। इन्हीं सदस्यों पर कार्यक्रम की सफलता एवं भविष्य का विकास निर्भर करता है।
2. समूह कार्यक्रम

समूह कार्यक्रम समूह एक अच्छे वैज्ञानिक कलाकार की भीति उन विषयों से पूर्ण परिचित होता है जिनके
अन्तर्गत वह कार्य करता है। वह कार्यक्रम की विषय-वस्तु में अन्तर्निहित शक्तियों, संस्था के कार्यों तथा उद्देश्य
सदस्यों की विकासात्मक आवश्यकताओं तथा रूपचार, समूह के मूल्यों तथा प्रतिमानों और समुदाय का सम्पूर्ण
ज्ञान रखता है। सदस्यों की अपनी रूपचार एवं आवश्यकताएं होती हैं, उनकी विशेष शक्तियाँ होती हैं, आपसी
संबंध होते हैं तथा कार्यक्रम से भी संबंध होते हैं उनके प्रतिमान एवं मूल्य समुदाय तथा परिसरवार जीवन से
संबंधित होते हैं तथा वे उनके जीवन पर गहरा प्रभाव भी डालते हैं। कार्यक्रम में व्यवसायिक ज्ञान, निगमन,
विशेष योग्यता, उत्तम सदस्यों से समवाय, संस्था के प्रतिमानों तथा मूल्यों का प्रतिनिधित्व आदि छोटे-छोटे
मौलिक तत्त्व उपयोगिता रहते हैं। कार्यक्रम में समूह सदस्यों की आवश्यकताओं एवं रूपचार को पूरा करने की
क्षमता होती है। वे रूपचार, समूहों, समुदायों तथा समूह प्रमाण के मूल्यों तथा प्रतिमानों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
कार्यक्रम-नियोजन में इस तौर पर तत्त्व की परस्पर अन्त:शिक्षा की आवश्यकता होती है। इन तत्वों के उचित
समान्तर के कारण सदस्यों की आवश्यकताएँ अधिक संतोषपूर्ण हो सकती हैं एवं समूह की निरंतरता बनी
रहती है।

3. कार्यक्रम की विषय-वस्तु

वास्तव में कार्यक्रम की विषय-वस्तु, एकीकरण करने वाला मुख्य कार्यकार होता है जिनमें सामान्य एवं
समान रूपचारों का समावेश होता है। सदस्य सामान्य शारीरिक संबंध होते हैं लेकिन समूह चाहे छोटा हो या बड़ा,
प्रशिक्षक समूह में छोटे-छोटे समूह होते हैं जो व्यक्तिगत प्रेम एवं भावना पर आधारित होते हैं। इस स्थिति में संस्था
समुदाय की रूपचार एवं आवश्यकताओं के अनुसूची विषय-वस्तु निक्षिप्त करती है। जब एक बार समूह संगठित हो
जाता है तो कार्यक्रम का महत्त्व इस बात पर निर्भर करता है कि सदस्य कार्यक्रम निर्माण-प्रक्रिया में किस रूप से भाग
ले रहे हैं। कार्यक्रम की विषय-वस्तु सदैव समूहों की रूपचारों पर निर्भर नहीं होती। यह परस्परिश्रेणी के अनुसार बदल
भी जाती है।

16.9 कार्यक्रम के सिद्धान्त

समूह समाज कार्य में कार्यक्रम का विषय-वस्तु महत्व है परंतु किसी भी कार्यक्रम की सफलता जहाँ उसके
व्यावहारिक पक्ष पर निर्भर करती है, वहाँ प्राथमिक रूप से वह उसके सिद्धांत पर भी निर्भर करती है। अतः समूह
समाज कार्य में कार्यक्रम भी निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित हैं।

(२) समूह विकल्पों के रूप में समूह समाज कार्य में कार्यक्रम का प्रयोग किया जाना चाहिए। अर्थात् किसी
भी कार्यक्रम का उद्देश्य लघुकृति व लघुकृति न होकर दीर्घकृति और स्थायी प्रभावकारी होना चाहिए।

(३) समूह जिम लक्ष्यों का निर्माण करता है उनमें के अनुसूच ही कार्यक्रम का उपयोग होना चाहिए।

(४) कार्यक्रम में समूह के प्रत्येक सदस्य की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे सदस्यों में
उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो सके।

124
(अ) कार्यक्रम क्रियाओं के चलाने का निर्णय समूह का होना चाहिए अर्थात् अपनी समस्या का समाधान के किस प्रकार करना चाहिए हैं, उन्हें निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए।
(ब) कार्यक्रम का उपयोग समूह प्रक्रिया को परीक्षित करने के लिए किया जाना चाहिए। अर्थात् समूह को नई दिशा प्रदान करने के लिए कार्यक्रम का उपयोग होना चाहिए।
(छ) सदस्यों की आवश्यकता, नियुक्तियों और रूपियों के अनुरूप ही कार्यक्रम होने चाहिए।
(ज) कार्यक्रम का उपयोग समूह कार्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाना चाहिए।

16.10 कार्यक्रम का महत्व

जब व्यक्ति पर जिम्मेदारी का बोझ डाला जाता है तब वह उन्हीं कार्यों को अधिक अच्छे ढंग से करता है जिन्हें वह पहले या तो गलत कर रहा था या फिर करने से कतरा रहा था। कार्यक्रम के द्वारा जहाँ सदस्यों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है वहाँ उन्हें मनोरंजन प्राप्त होता है। वह एक दूसरे के दोनों को समझने हैं तथा एक दूसरे की आवश्यकताओं एवं आदर्शों से भी परिचित होते हैं। वह एक दूसरे को यहाँ नहीं हैं तब उन्हें संगठन की स्थिति उपयोग करने का डर बना रहता है, परन्तु कार्यक्रम के दौरान वे एक दूसरे को जानते हैं जिससे वह अभी तक अभिमिल्लित थे। ऐसे सदस्यों की शारीरिक और मानसिक निकटता के कारण ही होता है। जब एक सदस्य एक दूसरे को जानते हैं तब उन्हें संगठन की स्थिति उपयोग करने का डर बना रहता है, परन्तु कार्यक्रम के दौरान वे एक दूसरे को जानते हैं जिससे संघर्ष की स्थिति नहीं उत्पन्न हो पाती है क्योंकि तनाव का निवारण होता है। एक दूसरे को समझते हुए वे पूर्व खाराब अनुभवों को भुला देते हैं तथा संकायात्मक सीढ़ियां के साथ मेट-मिलाप बनाते हैं। उनकी आवश्यक की, व्यक्तिगत एवं सामूहिक समस्याओं का निरूपण तथा निराशारोग्य कार्यक्रम द्वारा होता है। कार्यक्रम में प्रस्तुत विभिन्न अनुभवों इत्यादि से जहाँ उनके मन की बात प्रकट होती है वहाँ वे अपनी बातों का संकायात्मक तथा नकायात्मक प्रभाव भी जान पाते हैं। इससे आत्मरक्षक संघर्ष में कमी आ जाती है तथा उनका सांवेदिक तनाव भी कम होता है। कार्यक्रम सदस्यों में भागीदारी को बढ़ावा देता है तथा प्रजातात्त्विक मूल्यों की स्थापना में सहयोग करता है। सदस्यों में आपसी समन्वय भी कार्यक्रम के द्वारा ही बढ़ता है। उनकी शारीरिक एवं मौखिक विकास के अवसर प्राप्त होते हैं, उनमें सामूहिकता की भावना बढ़ती है तथा संकायात्मक का विकास होता है। कार्यक्रम का जीवन में अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है। कार्यक्रम के द्वारा ही समूह में हम की भावना का विकास होता है, जब एक की शक्ति को जानते हैं। कार्यक्रम से ही वे एक-दूसरे के पास व्यवहार करना सीखते हैं। समूह सत्य मिलकर कार्य का सम्पादन करते हैं जिससे वे अपने-अपने संकायात्मक से साथ-साथ एक दूसरे अधिकारों के विषय में जानकारी भी करते हैं।

16.11 प्रभावपूर्ण कार्यक्रम की आवश्यक परिस्थितियाँ

समूह कार्य-प्रक्रिया उस समय सम्पन्न होती है जब संस्था, कर्ता तथा समूह ऐसा वातावरण का निर्माण करते हैं जिसमें समूह सदस्य अपनाने अनुभव करते हैं एवं व्यक्तिगत विकास के अवसर रूप से दिखायी देते हैं। यद्यपि समूह कार्य के लिए कार्यक्रम महत्वपूर्ण होता है लेकिन कार्यक्रम किस प्रकार चलाया जा रहा है, वह अथवा अन्यून महत्वपूर्ण होता है। प्रभावपूर्ण कार्यक्रम संचालन के लिए निर्माणित परिस्थितियों को पूरा करना चाहिए।
16.12 समूह कार्य में कार्यक्रम माध्यम

कार्यक्रम माध्यम समूह के मध्य क्रियाकलापों को संयमन करने हेतु आवश्यक हैं। कार्यकर्ता समूह की रचना, उद्देश्य तथा स्तर के आधार पर कार्यक्रमों को निर्धारित करता है। अतः खेल तथा शिल्प क्रियाओं का आयोजन कार्यक्रम के आंशिक रूप में किया जाता है। समालंबिक विकास तथा अन्तर्विशेष के बहुत से संदेश गाँवों में लोकरूपियां के मध्यस्थ से किये जाते हैं, क्योंकि लोक रीतियां ग्रामीण व्यवस्था का आधार होती हैं। ये सभी कार्यक्रम क्रियाएं अर्थपूर्ण अंतर-क्रिया के लिए अवसर प्रदान करते हैं।

निम्नलिखित प्रकार के कार्यक्रम समस्या समाधान अथवा उपयोग के लिए उपयोग में लाए जाते हैं:

1. खेल

इसके अन्तर्गत शायरीक, बौद्धिक एवं स्मृति सम्बन्धी आदि सभी खेल आते हैं। कार्यकर्ता विभिन्न प्रकार के खेलों को समूह सदस्यों के मध्य सम्पन्न कराया जाता है। खेलों की प्रकृति समूह के सदस्यों की प्रकृति पर निर्भर करती है।

2. ड्रामा तथा हास्य नाटक

ड्रामा तथा हास्य नाटक के द्वारा समूह की विभिन्न समस्याओं को परिलक्षित किया जाता है। कार्यकर्ता द्वारा समूह सदस्यों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को सम्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो उनकी कठिनाइयों तथा समस्याओं के समाधान के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। व्यक्ति अपने तथा दूसरों के व्यवहार के विषय में अनुत्तम का विकास इनके माध्यम से करते हैं।

3. संगीत एवं कला

संगीत के माध्यम से मनुष्य के आत्मात्मिक भावों एवं संगीत की अभिव्यक्ति होती है। संगीत चाहे वैदिक स्तर पर आयोजित हो अथवा सामूहिक, दोनों ही स्थितियों में हदय एवं मन को, आंदोल और संतुष्टि देता है। कलात्मक क्रियाओं से जहाँ एक और मानसिक संतोष मिलता है, ध्यान केंद्रित होता है वहाँ दूसरी ओर आत्म प्रकरण का अवसर प्राप्त होता है। व्यक्ति में रचनात्मक शक्ति का विकास होता है तथा व्यक्तित्व में समृद्धि बना रहता है। कला व्यक्ति के मनोभावों को चित्रित करने का एक तरीका भी है। इसी के माध्यम से व्यक्ति अपने वियोग की अभिव्यक्ति भी करता है।

4. बातालाप

बातालाप का प्रभाव समूह के निर्माण के समय से ही हो जाता है। कार्यकर्ता, बातालाप के माध्यम से ही समूह सदस्यों की विशेषताओं से परिलक्षित होता है तथा वैदिक इतिहास की जानकारी प्राप्त करता है। इन क्रियाओं में भाषण, संगीतहरू, विचार-विमर्श, संस्कृति हरी खेल आदि सम्मिलित हैं।

5.विभिन्न गतिविधियां

इस प्रकार की क्रियाओं का उपयोग मौखिक संवाद, प्रशिक्षण के प्रतिरोध स्वरूप होती है। इसके अन्तर्गत छुआ-छुई, अमौखिक संवाद, नृत्य, हास्य-व्यंग तथा शायरीक अभ्यास आदि आते हैं।
6. कार्य संपादन
समूह सदस्यों को किसी परियोजना को पूरा करने के लिए निर्देश दिये जाते हैं तथा सहयोगिक क्रियाओं के आधार पर कार्यक्रम सम्पन्न होता है।

7. ध्यान
इसके अन्तर्गत कार्यक्रम सदस्यों को अपना ध्यान किसी किन्तु विशेष पर केन्द्रित करने को कहता है।
इसके द्वारा जरूरी कार्यक्रमों में आत्मबल का विकास होता है वहीं उनमें हुई इच्छाशक्ति का विकास होता है और वे स्वयं अपनी समस्याओं का हल खोजने में सक्षम बनते हैं।

माध्यम समूह में “टीम भावना“ का विकास करते हैं तथा यहाँ से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जनतात्मक प्रक्रिया भी सुदृढ़ होती है क्योंकि खेल, संगीत व नाटक इत्यादि से कार्यकर्ता समूह के सदस्यों में समूह समाज कार्य के मूल्यों को मजबूती प्रदान करता है।

कार्यकर्ता कार्यक्रम की सहायता से समूह की समस्याओं का समाधान करता है तथा समूह सदस्यों अपनी क्षमताओं, योगदानों और कीर्तियों का विकास करते हैं। उन्हें अपने पर निर्भरता रखने की योग्यता आती है, इस्तेमाल के अवसर प्राप्त होते हैं, व्यावहारिक तथा सामान्य व्यवहार विकसित होते हैं; वास्तविकता को समझने का अवसर प्राप्त होता है, उटिल एवं सामान्य उद्देश्यों का विकास होता है, तथा प्रेरणात्मक उद्देश्यों का विकास होता है। साथ ही साथ उन्हें समूह में काम करने तथा जीवनसाधन की कला आती है। अतः कार्यक्रम माध्यम समूह के विकास में अहम भूमिका का निर्माण करते हैं।

(क) कार्यक्रम समूह के सदस्यों की रूचियों पर आधारित होना चाहिए,
(ख) कार्यक्रम के अन्तर्गत समूह-सदस्यों की आदु, सामान्य पूर्वभूमि तथा आधिकारिक स्तर का ध्यान अर्जण रखना चाहिए,
(ग) कार्यक्रम को लचीला होना चाहिए,
(घ) कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार की रूचियाँ एवं आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता होनी चाहिए,
(ङ) कार्यक्रम में भाग लेने वाले सदस्यों की अधिकारिक आवश्यकताओं के पूरे अवसर मिलना चाहिए,
(च) कार्यक्रम सदैव सरल से जटिल की ओर होना चाहिए,
(छ) कार्यक्रम समूह सदस्यों के स्तर से अधिक जटिल नहीं होना चाहिए, एवं
(ह) कार्यक्रम के माध्यम से समूह सदस्यों को धीरे-धीरे परिपक्व बनाने का प्रयास करना चाहिए।

16.13 सारांश
प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत सर्वप्रथम कार्यक्रम के अर्थ, कार्यक्रम के प्रमुख आयुर्वेद तथा कार्यक्रम माध्यमों के उपयोग का वर्णन किया गया है। तत्परता कार्यक्रम के महत्त्व तथा कार्यक्रम की राशि के विश्लेषण में वर्णन किया है। इसके पश्चात कार्यक्रम की प्रकृति तथा उद्देश्य तथा कार्यक्रम के तत्व को समझा। कार्यक्रम के सिद्धांत तथा कार्यक्रम के महत्त्व का अध्ययन किया। अतः कार्यक्रम की आवश्यक परिस्थितियों तथा कार्यक्रम माध्यमों का अध्ययन किया।
16.14 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम के अर्थ को समझाइये तथा सामूहिक कार्य में कार्यक्रम का एक प्रक्रिया के रूप में वर्णन कीजिए।

2. सामूहिक कार्य में कार्यक्रम के प्रस्तुत अंशभूत का वर्णन कीजिए तथा कार्यक्रम के माध्यमों के उपयोग को वर्णित कीजिए।

3. प्रभावात्मक कार्यक्रम की शर्तों का उल्लेख करते हुए कार्यक्रम की प्रकृति एवं उद्देश्य को समझाये।

4. सामूहिक समाज कार्य में कार्यक्रम के तत्वों एवं इसके सिद्धांतों को समझाते हुए विस्तृत वर्णन कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी सिखिए:
   1. कार्यक्रम का महत्त्व
   2. प्रभावपूर्ण कार्यक्रम की आवश्यक परिस्थितियाँ
   3. समूह कार्य में कार्यक्रम माध्यम

16.15 सन्दर्भ प्रणाली

सिंह, डी. के., भारती, ए., के., सोषल वर्क कासेट्स एंड मेडिया, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालीवाल, सौभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विघटन के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी., डी. के., सामाजिक सामूहिक कार्य, उंतर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सूरेन्द्र, मिश्र, पी., डी. के., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्र, पी., डी. के., सामाजिक वैद्यकिक सेवा कार्य, उंतर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सूरेन्द्र, वर्मा, आर., बी., एस. के., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्र, पी., डी. के., मिश्रा, जीवन, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सामूहिक समाज कार्य में नियोजन एवं विकास

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य
17.1 प्रस्तावना
17.2 नियोजन का अर्थ
17.3 सामूहिक समाज कार्य में नियोजन का महत्व
17.4 नियोजन के क्षेत्र अथवा स्थितियाँ
17.5 नियोजन के चरण
17.6 नियोजन-प्रक्रिया का सिद्धांत
17.7 कार्यक्रम-नियोजन के लक्ष्य
17.8 विकास का अर्थ
17.9 विकास के सिद्धांत
17.10 कार्यक्रम नियोजन तथा विकास में कार्यकर्ताओं की भूमिका
17.11 सारांश
17.12 अभ्यासार्थ प्रश्न
17.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

17.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत

1. नियोजन की अवधारणा का वर्णन कर सकेंगे।
2. समाज कार्य में नियोजन के महत्त्व को समझ सकेंगे।
3. इसके पश्चात नियोजन के क्षेत्र अथवा स्थितियों के बारे में जान सकेंगे।
4. तत्पश्चात आप नियोजन के चरण तथा नियोजन प्रक्रिया के सिद्धांत के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
5. कार्यक्रम नियोजन के लक्ष्यों को समझ सकेंगे।
6. इसके बाद विकास के अर्थ तथा विकास के सिद्धांतों के बारे में जान सकेंगे।
17.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में नियोजन तथा विकास का सामूहिक समाज कार्य में भूमिका का वर्णन किया गया है। नियोजन मात्र योजना बना लेना ही नहीं बल्कि योजना बनाने के पूर्व आंकड़ों का विश्लेषण, योजना के दीर्घ काल तक किया जाना, उसका भूमिका का वर्णन किया गया है। अतः नियोजन समूह समाज कार्य में अन्यत्र महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा समवाहित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर ही योजना का निर्माण किया जाता है। अतः नियोजन समूह समाज कार्य में अन्यत्र महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा समवाहित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक नियमित, व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपसे तैयार की जाती है, जिससे भविष्य में परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुसूची नियोजित, निर्देशित तथा संशोधित किया जा सके। इसके अतिरिक्त विकास एक प्रक्रिया है।
विकास नीतियाँ कार्यक्रम का परिणाम नहीं है बल्कि उस प्रक्रिया का परिणाम है जिसके समूह उर्जा, गुणता, उत्तराधिकार, धार्मिकता, लाभकार, आदि दस्तावेज प्राप्त करने के साथ-साथ सरल जटिल रूप से प्रभावित करता है।

17.2 नियोजन का अर्थ
कार्यक्रम का अर्थ समझ लेने के बाद यह आवश्यक हो जाता है कि नियोजन का अर्थ समझें, क्योंकि कार्यक्रम-नियोजन द्वारा ही उद्देश्य पूर्ति के लिए वास्तविक प्रयास करते हैं। किसी कार्य को सन्तानित कदम प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित रूप से सम्बन्धित करना ही नियोजन होता है। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा समवाहित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक नियमित, व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपसे तैयार की जाती है, जिससे भविष्य में परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुसूची नियोजित, निर्देशित तथा संशोधित किया जा सके। नियोजन भीतिक पर्यावरण का कुल रासायनिक उपयोग करने की प्रक्रिया है।
समाजशास्त्रीय शब्दकोश में नियोजन की धारणा को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया गया है:
"नियोजन लक्ष्यों का आरोपण, उनकी पूर्ति के लिए साधनों की व्यवस्था और क्रियाओं के व्यवस्थित रूपों, जो कि सामान्य सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न होते हैं, का प्रयोग है।"
जब हम समूह द्वारा विकास एवं उन्नति का प्रयास करते हैं तब हमें उनके अनुकूल कार्य की पहलें की निश्चय करना होता है। हम नियोजन द्वारा समूह की समस्त क्रियाओं को इस प्रकार व्यवस्थित करते हैं कि समस्त क्रियाओं को समन्वित रूप से चलाया जा सके तथा समूह में परिवर्तन सम्भव हो सके।
नियोजन, मात्र योजना बना लेना ही नहीं बल्कि योजना बनाने के पूर्व आंकड़ों का एकीकरण, उनका विश्लेषण, योजना के दीर्घ काल तक किया जाना, उसका मूल्यांकन करने का लोहा प्रक्रिया तथा अंततः योजना लागू होने के पश्चात् उसका परिणाम उन चरणों को ध्यान में रखकर ही योजना का निर्माण किया जाता है। अतः नियोजन समूह समाज कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कहा भी जाता है कि नियोजित रूप से प्रयास करने पर निर्धरित लक्ष्यों की प्राप्ति का अवश्यक होता है। इसी प्रकार समूह में कार्यक्रम की सफलता नियोजन पर निर्भर करती है।
नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा समवाहित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक नियमित, व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपसे तैयार की जाती है, जिससे भविष्य में परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुसूची नियोजित, निर्देशित तथा संशोधित किया जा सके।
जब समूह द्वारा विकास एवं उन्नति का प्रयास किया जाता है तो नियोजन द्वारा समूह की समस्त क्रियाओं को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि समस्त प्रक्रिया को समन्वित रूप से चलाया जा सके तथा समूह में परिवर्तन सम्पन्न हो सके।

17.3 सामूहिक समाज कार्य में नियोजन का महत्व

यदि सामूहिक समाज कार्य सेवाओं आवश्यक हैं तो उनका नियोजन करना कार्यकर्ता का आवश्यक कार्य है। वर्तमान समय में नियोजन पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। यदापि सेवाओं का विस्तार हुआ है लेकिन अभी भी बहुत से लोग सामाजिक सेवाओं से बचित हैं। अतः सेवाओं को नियोजित आधार पर व्यवहार में लाना आवश्यक है। नियोजन करना समूह-कार्य में आवश्यक है, क्योंकि ये सेवायें उनको उपलब्ध बनायी जाती है जो इससे चंबित हैं, परन्तु उनके लिए आवश्यक है। उपलब्ध सेवाओं में सुधार केवल योजनाबद्ध तरीके से ही किया जा सकता है। यह कार्यकर्ता का उदाहरण है कि वह नियोजन-प्रक्रिया में नेतृत्व ग्रहण करे, इससे समूह को उच्चकोटित की सेवायें उपलब्ध कर सके।

नियोजन किसी समूह के भविष्य निर्माण में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। नियोजन कार्यकर्ता को भविष्य के अंदर में कदम रखने के पूर्व देखने को कहता है। यह भविष्य की क्रियाओं के वर्तमान का चिंतन है। अतः नियोजन एक समूह के लिए अनिवार्य होता है। संस्थापन में नियोजन के महत्व की निम्नलिखित शीर्षकों में विवेचना की जा सकती है:

1. भविष्य के क्रियाकलापों का सर्वोत्तम चुनाव

नियोजन विवेकपूर्ण सोच विचार एवं विशेषण की प्रक्रिया है तथा इसमें उपलब्ध विकल्पों से सर्वोत्तम विकल्प के चयन का कार्य सम्पन्न होता है। गहरा चिंतन एवं सावधानीपूर्वक चयन द्वारा कार्यकर्ताओं के लिए सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य का निर्धारण कर सकते हैं तथा भावी क्रियाओं का ऐसे संगठन, निर्देशन और निर्यात किया जा सकता है कि जिससे संगठन निरंतर बाँझीबाजी की ओर बढ़ सके तथा बिखरते से रुक सके।

2. व्यवस्थित प्रगति की सुनिश्चितता

नियोजन भूत और सुधार के मार्ग से मुक्त दिलाकर, एक सुसंचारित प्रगति का मार्ग प्रशास्त करता है। नियोजन के अभाव में कार्य निपटान में जटिलताएं, बेकाबू और अनिवार्यता इकट्ठा है।

3. क्रियाओं में एकरूपता

नियोजन क्रियाओं में समानता एवं उद्देश्य की एकता लाता है। स्थायी नीतियाँ, निर्देश और कार्यविधियों के निर्धारण से सदस्यों की स्वतंत्रता पर अंशुक्त हल्का है और इससे कार्य प्रणाली में एक रूपता का सुन्दर होता है।

4. प्रातियों एवं झगड़ों का निवारण

नियोजन एक सुनिश्चित गतिविधि तथा मार्ग को प्रदर्शित करके समूह वाली अनेकों प्रातियों, संघर्षों तथा दोहरकरण को दूर करता है।
5. **मितव्ययिता का आधार**

नियोजन कार्य के सत्तात्मक मार्ग को बताकर, समय, शक्ति एवं धन की बचत भी करता है। अनवारणक प्रयासों को न्यूनतम करता है और कार्यों में सुसंगति उत्पन्न करता है।

6. **जोखिम में कमी**

नियोजन भविष्य को देखना एवं उसके लिए पूर्व उपाय करना है। समूह का कार्य सुनिश्चित एवं परिवर्तनशील दशाओं में चलता है और नियोजन उनसे उत्पन्न जोखिम एवं अनिश्चितताओं को न्यूनतम करता है।

7. **मानवीय व्यवहार में सुधार**

नियोजन एक निर्धारित लक्ष्य, सुनिश्चित नीतियाँ, स्पष्ट कार्यविधि तथा सुनिश्चित साधनों को बताकर समूह के सदस्यों के मनोवाल में वृद्धि करता है। इससे संगठन का बातचीत सुंदर बनाता है और कर्मचारियों में संतोष बढ़ता है।

### 17.4 नियोजन के क्षेत्र अथवा स्थितियाँ

1. उन क्षेत्रों को प्राथमिकता देनी चाहिए जहाँ पर सामूहिक समाज कार्य सेवायें अभी तक उपलब्ध नहीं हों पायी हैं। यदि किसी विशेष समूह ने की ऐसी स्थिति हो तो समूह समूह के विषय में कार्यवाही कार्यव्रत म्या सकता है।

2. एक समूह में उस समूह का पता लगाना तथा उसके लिए सेवाओं का नियोजन करना जो ज्योतिः हुए हैं अथवा जो उपलब्ध सेवाओं का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। बच्चे, माता-पिता, बृद्ध आदि ऐसे हो सकते हैं।

3. उन समूहों तथा समूहों के लिए योजना बनाना जहाँ पर सेवायें तो उपलब्ध हैं लेकिन वे निम्न स्तर की हैं।

4. एक ही प्रकार की संस्थाओं में समन्वय होने के लिए योजना बनाना।

### 17.5 नियोजन के चरण

नियोजन प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण शामिल किये जाते हैं:

1. **लक्ष्यों का निर्धारण**

भविष्य में क्या किया जाना है, कैसे किया जाना है, कहां और किसके द्वारा किया जाना है आदि प्रश्नों के सुनिश्चित उत्तर के लिए नियोजन प्रक्रिया में सर्वप्रथम उद्देश्य, नीतियों एवं कार्यविधियों आदि के निर्धारण की आवश्यकता होती है। यदि उद्देश्य एवं नीतियाँ सुसंगत होती हैं तो क्रियाओं में किसी प्रकार की भ्रांति या असंगति की समाधान नहीं रहती हो और सहयोग को बढ़ावा मिलता है।

2. **नियोजन के आधारों का विकास**

आधारों से आशय उन बातचीत पटकों के अनुसार से है जिनके अन्तर्गत नियोजित क्रियाओं को सम्पन्न किया जाता है। इन पटकों के समूह को बहुत से बाहरी एवं अंतर्कार, भौतिक एवं आभासिक, सामाजिक
एवं आर्थिक तथा नियंत्रणीय तथा अनियंत्रणीय घटक प्रभावित करते हैं। अतः भविष्य का पूर्वानुमान कर इन घटकों का सही अनुमान एक प्रभावी नियोजन के लिए आवश्यक होता है। अगर नियोजन के आधार ही गलत हैं तो उस पर अधारित मूल कैसे ठीक हो सकता है। गलत अनुमान जोखिमों एवं अनिश्चिताओं में वृद्धि करते हैं और इसकी सफलता की सम्भावनाओं को घटाते हैं।

3. विकल्पों का विकास एवं विश्लेषण
किसी भी लक्ष्य, साधन या कार्य के अनेकों विकल्प हो सकते हैं अतः नियोजन करते समय इन विकल्पों की खोज या निर्णय किया जाना चाहिए तथा आर्थिक, सामाजिक, जन प्रतिष्ठा आदि पर्यायों के सन्दर्भ में उनके गुण, दोषों का समाहार तथा संरचना चित्र निर्माण किया जाना चाहिए।

4. समयों वैकल्पिक योजना का चयन
सभी विकल्पों का विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन करके उस वैकल्पिक योजना का चयन करना चाहिए जो उन परिस्थितियों में उतम सिद्ध हो।

5. नियोजन का क्रियान्वयन
नियोजन अपने में कोई साधारण नहीं है। अतः जिन्हें इस क्रियान्वयन करना है उनकी स्वैच्छिक स्वीकृति इनकी सफलता के लिए आवश्यक है। अतः नियोजन करते समय सभी सूचनाओं एवं समस्याओं को समझना चाहिए। संगठन में सहभागिता के द्वारा ही यह संभव हो सकता है। फिर नियोजन को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर सभी सम्बन्धित व्यक्तियों एवं क्रियाओं को क्रियान्वयन करने के लिए भेज देना चाहिए। नियोजन के प्रश्न के समय एवं डंग पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

6. नियोजन का अनुमान
बहुत साधारण एवं विश्लेषण के बाद बनायी गयी योजना भी गलत सिद्ध हो सकती है। अतः कार्यकर्ताओं को पुनः निर्देशन की व्यवस्था करनी चाहिए तथा योजनाओं के क्रियान्वयन पर धैर्य रखनी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर उनमें आवश्यक परिवर्तन एवं समायोजन करने चाहिए।

17.6 नियोजन-प्रक्रिया का सिद्धान्त
1. प्रत्येक समूह एवं समुदाय को एक प्रथम इंकार के रूप में देखना कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक होता है। उसे समूह-सिद्धांतों का ज्ञान होना आवश्यक होता है।
2. समूह व्यक्तियों की भाषा गतिशील रूप से होती है। उसमें निरंतर परिवर्तन होता है। अतः कार्यकर्ताओं को इस परिवर्तन के प्रति संबंधित सिद्धांत चित्र निर्माण करने चाहिए। नियोजन का कार्य उस स्थान से प्रारंभ हो जहाँ पर समूह हैं तथा उसकी क्षमताओं के अनुसार ही कार्यक्रम निर्धारित किये जाएं।
3. कार्यक्रम को समूह को जैसा है उसी प्रकार स्वीकार करना चाहिए जैसे व्यक्ति सेवा-कार्य में सेवाकर्मी को स्वीकार किया जाता है। नियोजन का आधार समूह की क्षमताओं तथा योजनाओं होनी चाहिए, जिससे समूह उन कार्यक्रमों को स्वीकार करें।
4. नियोजन में समूह-सदस्यों को पूरा अवसर मिलना चाहिए जिससे सदस्य लगात के अनुभव कर सकें।
5. समर्थन-समाधान की प्रक्रिया का नियोजन इस प्रकार से हो जिससे सदस्यों को उपचार दूर न हो सके।
6. नियोजन-प्रक्रिया में समूह की आवश्यकताओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए और उन आवश्यकताओं को पूरा करने का तरीका भी सदस्यों को स्वयं दूर न हो सके।

17.7 कार्यक्रम-नियोजन के तत्त्व

कार्यक्रम नियोजन के निम्नलिखित तत्त्व हैं:
1. समूह की अत्यधिक महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पहचानना,
2. सदस्यों की आवश्यकताओं को ऑकनाया,
3. सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अपनी तौलतों को पहचानना,
4. आवश्यकताओं के संरचन में कार्यक्रम बनाना तथा व्यक्त करना,
5. कार्यक्रम के द्वारा अपने प्रयासों के परीक्षण का मूल्यांकन करना,
6. सहयोगी एवं चलनित व्यक्तियों को उन परीक्षणों से परिचित करना, एवं
7. क्या करना अधिक आवश्यक है?
8. उच्च प्राथमिकता वाली आवश्यकताओं पर समय का व्यय कितना होगा?
9. सीमित संसाधनों के साथ किन आवश्यकताओं को पूरा करने पर पहले जो देना चाहिए तथा किन पर बाद में?

17.8 विकास का अर्थ

सामूहिक समाज कार्य में विकास शब्द का विशेष महत्त्व है। कार्यक्रम का नियोजन ही पर्याप्त नहीं है, उसका विकास करना उतम है आवश्यक है। सामूहिक समाज कार्य में हम विकास रहते हैं कि सामूहिक अनुभव के लिए कार्यक्रम का विकास अन्यन्त आवश्यक होता है। समूह में सदृश परिवर्तन होता है, क्योंकि परिवर्तन एक सामाजिक प्रक्रिया है। अतः विकास भी निरन्तर गति से चलता रहता है। कार्यक्रमों का विकास भी इसी कारण अनिवार्य होता है। इसमें विकास के एक स्तर से दूसरे स्तर के साथ सम्बन्ध होता है तथा उसकी एक निश्चित दिशा होती है। यह परिवर्तन स्तर स्तर से जाँचा स्तर की ओर होता है।

विकास एक प्रक्रिया है न कि कार्यक्रम। कहने का तात्पर्य यह है कि विकास नीतियों एवं कार्यक्रमों का परीक्षण नहीं है, बल्कि यह उस प्रक्रिया का परीक्षण है जिससे समूह ऊजां, गुणवत्ता, उपयुक्त क्षमता, व्यवस्था, सुविधाएं, आन्दोलन, दक्षता, इत्यादि प्राप्त करने के साथ-साथ स्तर से जाँचा स्तर की प्राप्ति करता है। चूंकि समूह में सदृश परिवर्तन होता रहता है तभी विकास भी सतत होता रहता है। विकास का प्रत्येक चरण पहले चरण से संबंधित दिशा है। विकास की प्रक्रिया सदा ही स्तर की प्राप्ति के लिए होती है, इससे स्तर-स्तर तक प्राप्ति करने के लिए उपयोग किए गए समूह धीर-धीरे पहुंचने के लिए तक प्राप्ति करने जाता है। समूह, विकास की प्रक्रिया में सामाजिक, आधिक तथा राजनीतिक और तकनीकी इत्यादि विभिन्न आयामों की स्थापना करता चलता है और ये आयाम उसके असल
को भी निर्धारित करते हैं। वर्तमान शही वार्षिक समूह के अस्तित्व की रक्षा के लिए ही कार्यक्रम, नियोजन तथा विकास कर्ता है।

विकास की प्रक्रिया में समूह के सदस्य जहाँ वैयक्तिक तौर पर भाग लेते हैं वहीं समूह, संगठन के रूप में भाग लेता है। कार्यक्रम का निर्माण समूह को दिशा देता है क्योंकि कार्यक्रम, विकास का आधार होता है और उन्होंने कार्यक्रम निर्माण समूह को विपक्ष होने से भी बचाता है।

17.9 विकास के सिद्धांत

समूह समाज कार्य में विकास के निम्नलिखित सिद्धांत होते हैं-

1. विकास एक प्रक्रिया है, न कि कार्यक्रम। विकास समूह पौर्ति तथा कार्यक्रम का परिणाम नहीं बल्कि यह एक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसके द्वारा समाज, ऊर्जा, कार्य कुशलता, गुणवत्ता, उत्पादकता, जिल्लता, समझ, सुन्दरता, मनोरंजन और समृद्धि के निम्न स्तर से उच्च स्तर को प्राप्त करता है,

2. विकास की प्रक्रिया उच्च शैली संस्थाओं के निर्माण से होती है। जो सामाजिक ऊर्जा को कुशलता पूर्वक उच्च कार्यों में प्रयोग करने में सक्षम होती है,

3. समाज, विकास हेतु तब तैयार होता है जब इसमें आवश्यक ऊर्जा, अभिलाषा एवं आकृष्टि होती है,

4. जब समूह नए अवसरों से परिवर्तित होता है तब इसमें ऊर्जा मुक्त होने लगती है और उसके पास इसे शोधित करने की सामूहिक इच्छा होती है,

5. विकास वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समूह का छोटा, समृद्ध, गुणवत्ता, जिल्लता और विस्तार की ओर बढ़ता है,

6. विकास की प्राकृतिक चेतना अच्छी है। यह धीमे, अकृतित प्रयोग, वृद्धिपूर्ण प्रक्रिया के द्वारा ज्ञान के अनुभव की ओर बढ़ता है। अधिक चेतन प्रक्रिया ही अधिक तीव्र विकास ला सकती है,

7. समूह, सुन्दरता अभिलाषक को आकार प्रदान करता है,

8. विकास हेतु समूह के प्रस्तुत सर्वेक्षण प्रयोग और उनकी प्राथमिक तैयारियों पर निर्भर होते हैं। यहाँ पर वह अवसर जो समूह की तैयारियों से परे होते हैं, वह विभेद, अस्तित्वीकृत एवं अवहेलना योग्य होते हैं,

9. जब एक नई धारावाहिक क्रिया स्वीकार कर ली जाती है तो समूह में उसके अनुसार नीतियाँ व विधियों का निर्माण होने लगता है,

10. जब समूह विकास की उच्च अवस्था की ओर आग्रह होता है तो विकास, मनोरंजन, व्यवहार आदि उसमें बदला बनते हैं। विकास की उस अवस्था में इन सबों परिवर्तन होता है, एवं

11. विकास से समाज के तुषारवाही ढाँचे में बुद्धि होती है तथा वह मजबूत बनता है।

17.10 कार्यक्रम नियोजन तथा विकास में कार्यक्रम की भूमिका

कार्यक्रम नियोजन एवं विकास में निम्न प्रकार से सहायता करता है:

1. सदस्यों को कार्यक्रम नियोजित करने में सहायता,
2. समूह की सचिवों की खोज करना तथा उनको उपयोग करना,
3. पर्यावरण का उपयोग,
4. सीमाओं का उपयोग,
5. सूचना, अवलोकन करना तथा कार्य करना,
6. विश्लेषण एवं अभिलेखन,
7. निरीक्षण तथा परामर्श,
8. शिक्षा तथा नेतृत्व,
9. निपुणता प्राप्त करने में सहायता,
10. नेतृत्व में सहायता,
11. विशेष्ठ का उपयोग
12. कार्यक्रम में अभिकरण का स्थान।

### 17.11 सारांश
प्रस्तुत इकाई में सर्वप्रथम नियोजन के अर्थ को समझा। नियोजन के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात् नियोजन के श्रेण अथवा स्थितियों के बारे में अध्ययन किया। तत्पश्चात् नियोजन के चरण, नियोजन प्रक्रिया के सिद्धांत तथा नियोजन के लक्ष्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात् विकास की अवधारणा का अध्ययन किया। विकास के सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा नियोजन तथा विकास में कार्यक्रम की भूमिका का अध्ययन किया।

### 17.12 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. नियोजन का अर्थ समझाइये तथा इसकी परिभाषाओं का वर्णन कीजिए।
2. सामूहिक समाज कार्य में नियोजन के महत्व के साथ इसके श्रेण अथवा स्थितियों का संक्षेप रूप से वर्णन कीजिए।
3. नियोजन के चरण एवं प्रक्रिया के सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए।
4. विकास का अर्थ समझाते हुए विकास के सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।
5. कार्यक्रम नियोजन तथा विकास में कार्यक्रम की भूमिका का वर्णन कीजिए।

### 17.13 सन्दर्भ ग्रन्थ
सिंह, डी. के., भारती, ए. के., सोशल वर्क कान्सेप्ट एंड मेथडज्स, नूर रायल कुक कंपनी लाखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी॰ के॰, पालीवाल, सौरभ, मित्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विषयन के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मित्र, पी॰ डी॰, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.

सिंह, सुंदर, मित्र, पी॰ डी॰, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2006.

मित्र, पी॰ डी॰, सामाजिक वैष्णविक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.

सिंह, डी॰ के॰, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अब्दुररहमान एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुंदर, वर्मा, आर॰ बी॰ एस॰, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मित्र, पी॰ डी॰, मित्र, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सामूहिक समाज कार्य में नेतृत्व: अर्थ एवं प्रकार

इकाई की रुपरेखा

18.0 उद्देश्य
18.1 प्रस्तावना
18.2 नेतृत्व
18.2.1 नेतृत्व का अर्थ
18.3 नेतृत्व के प्रकार
18.3.1 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नेतृत्व
18.3.2 पक्षपातपूर्ण एवं वैज्ञानिक नेता
18.3.3 सामाजिक, मानसिक तथा अधिशासी नेता
18.3.4 पैगम्बर, सन्त, विशेरज्ञ तथा मालिक
18.3.5 निरंजुशा तथा प्रजातात्मीक नेता
18.4 सारांश
18.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
18.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

18.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्यayan के पश्चात आप -

1. सामूहिक समाज कार्य में नेतृत्व के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. नेतृत्व के विभिन्न प्रकारों के विषय में वर्णन कर सकेंगे।

18.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में सामूहिक समाज कार्य में नेतृत्व के अर्थ एवं प्रकार विषय पर विचार किया गया है। नेतृत्व का अर्थ एक ऐसी स्थिति से है जिसमें कुछ व्यक्ति स्वेच्छा से किसी दूसरे व्यक्ति के आदेशों का पालन करते हैं। यदि किसी व्यक्ति में शक्ति के आधार पर दूसरे व्यक्तिओं से अपने मन के अनुसार व्यवहार करने की क्षमता हो तो इसे भी नेतृत्व की धारणा के अन्तर्गत मान लिया जाता है। नेतृत्व व्यक्तित्व और पर्यावरण के सम्बन्ध को स्पष्ट करने वाली
एक धारणा है यह उस स्थिति को स्पष्ट करती है। जिसमें एक व्यक्ति ने एक विशेष पर्यावरण में इस प्रकार स्थान प्राप्त कर लिया है कि उसकी इच्छा भावना और अंतर्दृष्टि किसी सामान्य लक्ष्य को पाने के लिए दूसरे व्यक्तियों को निर्देशित करती है तथा उनका नियंत्रण रखती है।

18.2 नेतृत्व

मानव सम्प्रदाय के समूहों इतिहास में ऐसा कोई भी युग नहीं मिलेगा जिसमें कुछ व्यक्तियों ने समाज के अंकन या अधिकार पूर्व प्राप्त करने, वाही समूहों से अपनी रक्षा करने और अपनी आक्रामकता की वस्तुओं का संचय करने में एक या कुछ व्यक्ति समूह का नेतृत्व अर्थव्यवस्था के रूप में मध्यम स्तर पर नेतृत्व का रूप छोटे-छोटे समुदायों को अनुप्रयोगिक करने में स्पष्ट होने लगा। वर्तमान जीवन में भी हमारी समूही सामाजिक व्यवस्था प्रत्यय या अनोखा रूप से नेतृत्व पर ही आधारित है। इसका कारण यह है कि समाज में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम होती है जिनमें किसी विषय पर अलग-अलग निर्णय लोके अनुप्रयोगिकताओं का पूर्वानुमान करने की क्षमता विश्वसनीय होती है। यहाँ से नेतृत्व का आरोप जो जाता है। यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि नेतृत्व एक तुलनात्मक धारणा है। इसका तात्पर्य है कि जब व्यक्ति में नेतृत्व के गुण होते हैं, उसमें अनुभव करने के भी कुछ गुण जबर पाये जाते हैं, लेकिन जब अनुभव करने की अपेक्षा व्यक्ति की मार्गदर्शक प्रतिकृति अधिक विश्वसनीय हो जाती है तथा अधिकारिक व्यक्तियों द्वारा इसे विचार जो जाता है, तभी वह व्यक्ति समूह में नेता का पद प्राप्त कर लेता है। यही वह धारणा है कि जिसमें नेता सामाजिक नियंत्रण स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका दे पाते हैं। प्रतिलोक विश्वास में हम नेतृत्व के वास्तविक अर्थ, लक्ष्य और प्रकार का उल्लेख करके यह स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं कि सामाजिक नियंत्रण में नेतृत्व की भूमिका क्या है।

18.2.1 नेतृत्व का अर्थ

बिभिन्न विद्वानों ने नेतृत्व को भिन्न-भिन्न प्रकार से स्पष्ट किया है। कभी-कभी नेतृत्व का अर्थ ‘प्रसिद्धि’ से समझा जाता है जैसे प्रमुख लक्ष्यों के अनुसार प्रसिद्धि नामक एक प्रदर्शन के लिए समाज से समस्या होती है। लोकतांत्रिक वृत्तिक्रमों से नेतृत्व का अर्थ एक ऐसी स्थिति से समझा जाता है जिसमें कुछ व्यक्ति लेखा से किसी दूसरे व्यक्ति के आदेशों का पालन कर रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति में वोट के आधार पर दूसरे व्यक्तियों से मनोभाव व्यवहार करने की क्षमता होती है, तो इस भी नेतृत्व की धारणा के अंतर्गत दिलचस्पित कर लिया जाता है। वास्तविकता यह है कि नेतृत्व इनमें से किसी एक प्रकार के व्यवहार से नहीं है बल्कि नेतृत्व व्यवहार का वह दंग है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे के व्यवहार से प्रभावित होने की अपेक्षा अपने तत्कालिणी से दूसरे व्यक्तियों को अधिक प्रभावित करता है, जो कार्य चाहे दबाव के अंतर्गत किया गया हो अथवा व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों को प्रदर्शित करते हैं।

पिगर ने नेतृत्व को पारिभाषित करते हुए कहा है कि ‘‘नेतृत्व व्यक्तित्व और पर्यावरण के सम्बन्ध में स्पष्ट करने वाली एक धारणा है। यह उस स्थिति को स्पष्ट करती है जिसमें एक व्यक्ति एक विशेष पर्यावरण में इस प्रकार स्थान प्राप्त कर लिया हो कि उसकी इच्छाओं, भावनाओं और अंतर्दृष्टि किसी सामाजिक लक्ष्य को पाने के लिए दूसरे व्यक्तियों को निर्देशित करती है तथा उन पर नियंत्रण रखती है।’’ इस परिभाषा के आधार पर समाज के रूप में कहा जा सकता है कि: विश्वास × व्यक्ति की स्थिति × निर्देश – नेतृत्व।

लेपियर और फार्मा बोर्ड के कथन है कि, ‘‘नेतृत्व वह व्यवहार है जो दूसरे लोगों के व्यवहार को उससे कहीं अधिक प्रभावित करता है जितना कि दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार नेता को प्रभावित करते हैं।’’ इस परिभाषा में
लेखक ने स्पष्ट किया है कि नेता का अपने अनुभवों पर एकपक्षीय प्रभाव नहीं होता। नेता के अनुभवों के अनुसार व्यवहारों का क्षेत्र में नेता के अनुभवों को प्रभावित करते हैं। अन्तर केबल इसका है कि नेता में इससे व्यवहारों को प्रभावित करने की तल्ली प्रभावित करता है और इसलिए अनुभव होता है और इसलिए अनुभव करने वाले लोगों के व्यवहारों को अधिक प्रभावित कर लेता है।

समीक्षेत्र तथा मारियम के अनुसार, “नेतृत्व का तत्त्व प्रथम एक व्यक्ति द्वारा की जाने वाली उन व्यक्तियों से है जो यूरोप व्यक्तियों को एक विवेक दिशा में प्रभावित करते हैं।” इससे स्पष्ट होता है कि यूरोप व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करना ही नेतृत्व नहीं है। बल्कि नेतृत्व का तत्त्व कुछ व्यक्तियों के व्यवहारों को एक निश्चित अथवा इस्तेमाल दिशा में प्रभावित करना है।

कुछ विद्वानों ने नेतृत्व’ और ‘प्रभुत्व’ शब्दों का उपयोग समान अर्थ में ही कर लिया है। नेतृत्व की विवेचना में यह ध्यान रखना होगा कि प्रभुत्व और नेतृत्व दो भिन्न धारणाएँ हैं। किम्बाल यंग के शब्दों में, “प्रभुत्व के लिए एशियाई देशों के लिए भिन्न है कि जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्तियों के बीच व्यवहार करना है।” इस प्रकार प्रभुत्व में शक्ति का उपयोग करना तथा उसका प्रयोग करना है। एडवर्ड का निष्ठूल होता है कि नेतृत्व से समर्पित ध्यान लेकर साधारणतः रुढ़िवादिता के तत्त्व अधिक होते हैं। इसके लिए यह स्पष्ट करना होगा कि नेतृत्व और प्रभुत्व का पूर्व तत्त्व एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इसका अर्थ है कि नेतृत्व में भी कुछ व्यक्ति नाम देते हैं और प्रभुत्व में भी कुछ व्यक्तियों को किसी व्यक्ति के अधीन रहकर कार्य करना पड़ता है। प्रभुत्व की इस प्रक्रिया की प्रकृति के आधार पर किम्बाल यंग का कथन है कि “‘जिसे हम साधारणतः नेतृत्व कहते हैं, उसकी विवेचना सही है तो प्रभुत्व के रूप में ही की जानी चाहिए।’

18.3.1 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नेतृत्व

प्रत्यक्ष नेता है जिसका समूह की अन्य सदस्यों के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क में होता है। इसका कारण है कि नेता का अनुभव होता है और उसके सदस्यों का अनुभव होता है। इस आधार पर किम्बाल यंग, बार्लेट और अनेक दूसरे विद्वानों ने नेतृत्व के अप्रत्यक्ष प्रकारों का विवरण दिया। इसमें बोगास्ट द्वारा दिया गया नेतृत्व का वर्णन सबसे अधिक उपयुक्त माना जाता है जिसके आधार पर नेता का अनुभव नेतृत्व के अनुभव सम्बन्धों को अप्रत्यक्ष सम्बन्ध जाता है।
तथा सेनानी इसी प्रकार के नेता होते हैं। बोगार्डस का विचार है कि ऐसे नेताओं को साधारणतया अपनी मूँग के बाद ही स्राविक यश और सम्मान प्राप्त होता है।

18.3.2 पक्षपातपूर्ण एवं वैज्ञानिक नेता

पक्षपातपूर्ण नेता को सफल नेता भी कहा जा सकता है। इसका कार्य सदैव अपने समूह का पक्ष लेना तथा अपने समूह के अंगदेशों को छिपाना होता है। जब कभी भी किसी समस्या पर विचार-विमर्श होता है तो वह अपने समूह की ही लाख पहुँचाने का प्रयत्न करता है, भले ही इससे दूसरे समूहों को हानि पहुँचानी हो। इस प्रकार ऐसे नेता को एक पक्षपाती नेता भी कहा जा सकता है। किसी राजनीतिक नेता द्वारा सदैव अपने दल का समर्थन करना इस प्रकार के नेतृत्व का उदाहरण है।

वैज्ञानिक नेता वह होता है जो यथार्थता बातों को ही प्रकाश में लाते हैं। चाहे वे बातें उसके समूह के हित में हो अथवा अर्धतः में, ऐसे नेता सामाजिक सिद्धांतवादी होते हैं तथा प्रत्येक कार्य को करते समय वे अपने सिद्धांतों को ध्यान में अवश्य रखते हैं। वैज्ञानिक नेता की किसी जाति, धर्म, प्रजाति या सम्राज्य में विशेष रूप से नहीं लगती; वह सभी के प्रति समान सृष्टिकृत रहता है। ऐसे नेताओं को सामाजिक सत्ता प्राप्त नहीं होती लेकिन उनका प्रभाव आत्मार्क होता है।

18.3.3 सामाजिक, मानसिक तथा अभिव्यक्ति वैज्ञानिक नेता

सामाजिक नेता प्रभुत्व सम्पन्न नहीं होता। वह सामाजिक कार्यों के द्वारा समूह में लोकप्रियता प्राप्त करता है। इसका प्रमुख कार्य समूह की समस्याओं का समाधान करना और व्यक्तियों से प्रत्यक्ष सम्भाषण बनाने से सम्पन्न होता है। ऐसे नेता उस्तादी होते हैं और व्यक्तिगत जीवन के त्योहार करते हैं। इनके कार्य का क्षेत्र सीमित होते हैं। यह जल्दी ही लोकप्रिय हो जाते हैं।

मानसिक नेता होते हैं जो अपने विचारों और क्रियाओं के द्वारा समूह के सदस्यों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन करते हैं। उन्में उर्जा की अपेक्षा बौद्धिकता अधिक होती है। ऐसे नेताओं के विचार वह व्यक्तित्व रूप से अधिकतर होते हैं। उन्हें शीघ्र ही ग्रहण कर लिया जाता है। मानसिक नेतृत्व केवल सफल हो पाता है जब ऐसे नेता को शान्ति पूर्व बातचीत मिला हो तथा आन्विक बातों के बारे में वह अधिक चिंतित न रहता हो।

अभिव्यक्ति नेता वह होता है जिसमें सामाजिक, बौद्धिक तथा प्रकृतिविद्या गुणों का समावेश होता है। ऐसे नेता का कार्य एक विशेष समूह अथवा क्षेत्र के व्यक्तियों को संगठित रखना तथा उनके लिए कार्य की योजना बनाना होता है। वह कार्य केवल सभी सम्भव है जबकि वह सामाजिक क्षेत्र में सेवा-कार्य कर रहा हो तथा व्यक्तियों को व्यावहारिक दृष्टि दे रहा हो। ऐसे नेताओं को राष्ट्र के द्वारा कुछ अधिकार मिले होते हैं जिनका वे जनहित में उपयोग करते हैं।

18.3.4 पैगम्बर, सन्त, विवेकज्ञ तथा मालिक

पैगम्बर भी एक प्रकार का नेता है जिसमें एक अलोकिक शक्ति होने का विश्वास किया जाता है। व्यक्ति यह विश्वास करते हैं कि उसका पैगम्बर जो कुछ भी कह और कर रहा है, उसके पीछे एक ईश्वरीय प्रेणा नजिक हुई है। ऐसे के मानसिक पैगम्बर और अनुयायियों का संबंध अत्यधिक आत्मार्क हो जाता है। जुदू, महारवीर, ईसामसिह तथा हज़रत मुहम्मद इसी श्रेणी के नेताओं में आते हैं। ऐसे नेता में अविश्वास तभी किया जाता है जब उसकी चमत्कारी शक्ति में व्यक्तियों का विश्वास कम होने लगता है।
सन्त श्रेष्ठ जीवन बिताने वाला वह व्यक्ति है जो अपनी पतितता, त्याग तथा प्रेम के द्वारा जनसाधारण में लोकप्रिय हो जाता है। ऐसे व्यक्ति जनसाधारण के नेता नहीं होते बल्कि केवल उसी समूह का नेतृत्व करते हैं जो उन्हें के समान आचरण करने का प्रयास कर रहा हो अथवा उनके विचारों में विवाद करता हो। ऐसे नेता उपदेश के द्वारा व्यक्तिगत व्यवहारों पर नियन्त्रण रखते हैं।

विशेषधर्म में ऐसे व्यक्ति से है जो एक क्षेत्र में विशेष योगदान रखने के कारण उस क्षेत्र से समाज सभी लोगों में लोकप्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति विशेषज्ञ में कुराल होने के कारण अपने बुद्धि प्रतिरोधियों से आगे निकल जाता है। इसके फलस्वरूप उस क्षेत्र के बुद्धि व्यक्ति भी उसके व्यवहारों को अनुसरण करने लगते हैं। सभी लोकप्रिय लेखक, निबंधकर तथा संगीतकार इसी श्रेणी के नेता होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन जीवन के किसी विशेष क्षेत्र के ज्ञान में जो व्यक्ति सर्वोच्च स्थान पर होता है, उसे ‘विशेषज्ञ नेता’ कहा जाता है।

मानिक नेता, प्रभाव क्षेत्र के दृष्टिकोण से, सबसे कम व्यक्तियों का नेता होता है। मानिक के निदेशों तथा संकेतों के माध्यम से सभी व्यक्ति प्रभावित होते हैं। जो उसके कर्मचारी या नौकर होते हैं, उसके कार्यावसायों के मानिक, कार्यकर्ताओं के सर्वोच्च अधिकारी तथा राजनीतिक क्षेत्र में मंत्री इस वर्ग के नेताओं में आते हैं। इसकी विशेषता चुनौती से अपने अनुभावों के व्यवहारों को प्रभावित करना होता है। ऐसे नेता सम्प्रदाय भी होते हैं और बही-बही मिरंगु के।

18.3.5 निरंकुश तथा प्रजातात्मक नेता

निरंकुश नेतृत्व से हमारा तात्पर्य ऐसे नेतृत्व से है जिसमें नेता समूह के समस्त अधिकारों को अपने प्राप्ति रखने का प्रयास करता है और अधिकांश कार्यों में स्वयं ही करता है। ऐसे नेता के लिए जनसाधारण के कल्याण का इतना महत्व है कि अपनी प्रभावशक्ति को बनावट रखने का अधिक प्रतिकृति बाला व्यक्ति होता है। जो स्वयं किसी विषय पर शीर्ष है निर्णय लेता है। इसके अनुबंध के व्यक्तियों को परिपूर्व के कृतियों की नीतियाँ से अवगत करता है। उसका कार्य समझौते करना नहीं बल्कि अपने आदेश का बिलकुल उसी रूप में पालन करना होता है, भले ही इसके लिए उसे कोई भी रास्ता बुधवा पड़े।

क्रू और एकुछ ने निरंकुश नेतृत्व की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, “निरंकुश नेता प्रजातात्मक नेता की अपेक्षा पूर्ण शक्ति रखने में विवाद करता है, वह अकेले ही समूह की नीतियों का निर्धारण करता है, अकेले ही मुद्दे समाधान बनाता है तथा भविष्य में समूह द्वारा किए जाने वाले कार्यों के समन्वय के तरीके आदिका निर्धारण करता है। वह अकेले ही व्यक्तिगत सदस्यों को दंड या पुरस्कार देने वाला न्यायाधीश और मध्यस्थ होता तथा इस प्रकार समस्त समूह में वहीं सदस्यों के भाष्य का अनियम निर्धारण होता है।”

प्रजातात्मक नेतृत्व वह है जिसमें नेता और अनुभावियों का सम्मिलन समन्वय का होता है तथा नेता सर्वजनिक कार्यों का पालन करना हुआ मनोरंजन की अपेक्षा उत्साह को प्राथमिकता देकर व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करता है। क्रू और एकुछ प्रजातात्मक नेतृत्व की शक्ति निरंकुश नेतृत्व से कम नहीं होती लेकिन ये दोनों नेतृत्व इस अर्थ में एक-दूसरे से भिन्न हैं कि प्रजातात्मक नेता के उद्देश्य केवल अपने सदस्यों से नीतियों को पूरा करना नहीं बल्कि पूरा समूह का अधिकार बनाना होता है। वह एक प्रकार से ‘समूह द्वारा नियुक्त नेता’ होता है जो अधिकार शक्ति के अभाव में व्यक्तियों के व्यवहारों को निर्देशित करता है।
क्रच तथा क्रचफील्ड के अनुसार, “एक प्रजातात्मिक नेता समूह की क्रियाओं और उद्देश्यों के निर्धारण में भाग लेने के लिए प्रत्येक सदस्य को अधिक से अधिक प्रेरणा करता है। वह उत्सर्जनों को अपने में ही केन्द्रित न करके इसे सदस्यों में विभाजित करता है। यह समूह की संरचना को शक्तिशाली बनाने के लिए सदस्यों के परस्पर सम्बन्धों और समर्थन को बढ़ाने का प्रयास करता है। प्रजातात्मिक नेता उन विविध समूह-संरचना से बचने की कोशिश करता है जिनमें अधिकार समय और उच्च स्थिति वाले व्यक्तियों का प्रभुत्व हो।”

क्रच और क्रचफील्ड का कथन है कि “प्रजातात्मिक नेता समूह के बौद्धिक तथा आचरण के रूप में कार्य करता है।” यद्यपि यह विशेषता निरंकुश नेतृत्व से मिलती-जुलती है लेकिन अन्तर्गत केवल इतना है कि निरंकुश नेता इस माध्यम से योजनाबद्ध रूप से प्रश्न करता है जबकि प्रजातात्मिक नेता की यह माध्यम समूह के द्वारा सीमित जाती है। इस प्रकार प्रजातात्मिक नेता का एक प्रमुख गुण समझोते के द्वारा कार्य करना तथा समूह के सदस्यों को एक-दूसरे से सामजिक करने के लिए प्रतिसाहन देना है।

18.4 सरांश
प्रस्तुत इकाई में सामाजिक समाज कार्य के अन्तर्गत नेतृत्व के अर्थ एवं परिभाषा का अध्ययन किया गया। तत्परता नेतृत्व के प्रकार के विषय में जानकारी प्राप्त की। प्रकारों के अन्तर्गत प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नेतृत्व को समझा।
प्रस्तुत पृष्ठ के विषय में अध्ययन किया। इसके पश्चात् पालिकाकर्मी, भारतीय और प्रजातात्मिक नेतृत्व के विषय में जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात् पैगम्बर, संत, विशेषज्ञ तथा मानव-योग्य अधिकारी की दृष्टि के ऊपर निरंकुश और प्रजातात्मिक नेतृत्व के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।

18.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. नेतृत्व के अर्थ को समझाते हुए इसके प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
2. प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष नेता कौन होते हैं इन्हें बारे में वर्णन कीजिए।
3. सामाजिक, मानसिक तथा अधिकारी नेता को समझाइये।
4. पैगम्बर, संत, विशेषज्ञ तथा मानव-योग्य नेता के गुणों का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए:-
   1. निरंकुश
   2. प्रजातात्मिक नेता

18.6 सन्दर्भ प्रणाली
सिंह, डी. के., भारती, ए. के., सोशल वर्क कार्य सेंटर ऐंड मैथिस. न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालिकाबाद, सौरभ, मित्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं सम्पत्ति के मूल तत्त्व. न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मित्र, पी. डी., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुप्रभात, मित्र, पी. डी., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रशासनिय, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मित्र, पी. डी., सामाजिक वैकल्पिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी॰ के॰, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सूरेन्द्र, वर्मा, आर॰ बी॰ एस॰, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी॰ डी॰, मिश्रा, जी॰ आ॰ और समाज, न्यूरायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
सामूहिक समाज कार्य में व्यावसायिक नेतृत्व

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य
19.1 प्रस्तावना
19.2 समाज कार्य में व्यावसायिक नेतृत्व
19.3 व्यवसायिक नेतृत्व में नेता के कार्य
19.3.1 लघु समूह वातालिप
19.3.2 कमेटी वातालिप
19.3.3 परिसंचार या गोष्ठी
19.3.4 भूमिका का निर्बाह
19.3.5 मनोरंजनात्मक क्रियायें
19.4 सारांश
19.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
19.6 सन्दर्भ प्रणय

19.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप

1. समाज कार्य में व्यवसायिक नेतृत्व को समझ सकेंगे।
2. सामूहिक नेतृत्व में व्यवसायिक नेतृत्व की भूमिका का अध्ययन करने के साथ ही व्यवसायिक नेतृत्व में नेता के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।
3. लघु समूह वातालिप, कमेटी वातालिप तथा गोष्ठियों के विषय में जान पाएं। नेतृत्व में भूमिका के निर्बाह तथा मनोरंजनात्मक क्रियाओं के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत सामूहिक समाज कार्य में व्यवसायिक नेतृत्व पर विचार किया गया है। सामूहिक समाज कार्य में नेतृत्व प्रजातात्प्रधान होता है। नेता सामूहिक सदस्यों का कार्य के प्रारूप से लेकर अंत तक पूर्ण अधिकारी होता है। नेता प्रत्येक सदस्य की राय को जानता है और उसकी आंतरिक इच्छा को जानने का प्रयास करता है।
19.2 सामूहिक कार्य में व्यवसायिक नेतृत्व

नेतृत्व सभी प्रकार के समूहों में पाया जाता है। सामूहिक परिस्थितियाँ ही बे दशाएँ हैं जो नेतृत्व को जन्म देती हैं। नेता की आवश्यकताओं को सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुभव होता है। समूह के सदस्यों में जो अधिक सत्ता होती है एवं सामूहिक परिस्थिति के उत्पादन करने में सहायता दे सकता है वहीं नेता चुना जाता है। समूह की स्थितियों की बिन्दुमात्रा के कारण नेता के कार्यों में भी उत्तरदायित्व होती है। इस कारण नेतृत्व के गुण किसी एक व्यक्ति के कार्यों में न होकर सभी समूह-सदस्यों में पाये जाते हैं क्योंकि, कोई भी व्यक्ति सभी प्रकार की स्थितियों के समाधान में निष्पाद नहीं होता। अतः समूह में परिस्थितियों के अनुसार जिस सदस्य में गुण होते हैं उसको नेतृत्व प्रदान करने का अधिकार दिया जाता है।

समूह के सदस्य नेता का चुनाव तथा उसके कार्यों को निधारित करते हैं। नेता को उतने ही अधिकार प्रदान होते हैं जितने समूह उसको होते हैं। उसके कार्यालय सभी-सदस्यों को आवश्यकताओं एवं इच्छाओं पर निर्भर होते हैं। उसकी भूमिका सदस्यों की अनुसूची में निर्धारित होती है। सामूहिक समाज एवं नेतृत्व का उत्तरदायित्व सभी सदस्यों में निर्धारित होता है परंतु व्यवहार में केवल कुछ ही सदस्य इस उत्तरदायित्व को प्रदान करते हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रखा जाता है कि धीरे-धीरे वह गुण सभी में विकसित हो।

सामूहिक समाज कार्य में नेतृत्व प्राप्त होता है। सामूहिक सदस्यों का कार्य के प्रारंभ से लेकर अन्त तक पूर्ण अधिकार होता है। नेता प्रत्येक सदस्य की राय को जा सकता है और उसकी आत्मा के इच्छाओं जानने का प्रयास करने हेतु। सदस्यों का सत्त्व नेता सदस्य प्रदान करने का होता है। उसका उत्तरदायित्व होता है कि प्रत्येक सदस्य में कार्य के प्रति सोचने एवं विचार की योग्यता का विकास करना। समूह के सदस्य सभी के लिए कार्य की भावनाएँ प्राप्त होती हैं। नेता का कार्य इन दोनों प्रकार की भावनाओं का उंचाई समायोजन करना होता है।

19.3 व्यवसायिक नेतृत्व में नेता के कार्य

समूह में व्यक्ति बातचीत करते हैं, क्योंकि उनको कुछ न कुछ कहना रहता है। परंतु जो कहना है उसके विषय में वे सदैव नहीं सोचते। प्रत्येक प्रकार की बातचीत में संबंध तथा विचार दोनों उत्साहित रहते हैं। व्यक्ति को सोचते हैं उसके स्वर नहीं जो अनुभव करते हैं, उसकी अक्सर कहते हैं। इस प्रकार का कार्य व्यक्ति के अंतर्गत भावों का प्राप्त करता है तथा इसलिए संबंधों का व्यक्तित्व होता है। और व्यक्ति बिना अपनी समस्या को समझ रखे हुए बातचीत ही नहीं कर पाते। उसके प्रति संबंधों को रखना या स्थान करने के अक्सर ही भाव लेने को प्रेरित करते हैं। परंतु इस विषय में अक्सर समूह में भुता दिया जाता है। हम अक्सर सोच लेते हैं कि व्यक्ति को कहना है उसका वही अर्थ है और उस विचार से वह पूर्ण संपूर्ण एवं सहमत है। परंतु बातचीत करना यह नहीं है। सामूहिक नेता का कार्य होता है कि वह स्थितियों से सावधानीपूर्वक निपटे तथा व्यक्तियों के संबंधों को स्पष्ट
19.3.1 लघु समूह वार्तालाप

इस प्रकार के वार्तालाप में सदस्यों का उत्तराधिकार स्पष्ट होता है तथा उन्हें संक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार के वार्तालाप में समानता का व्यवहार सम्भव होता है, नेतृत्व के विकास में सहायता मिलती है और दृष्टिकोण में परीक्षण आता है। वार्तालाप में भाग लेने वाले सभी सदस्यों को नेतृत्व के अवसर प्राप्त होते हैं। इस प्रकार वार्तालाप तथा लाभदायिक होता है जब समूह छोटा होता है और वार्तालाप में सभी सदस्यों को सम्मिलित कर दिया जाता है। समूह-सदस्य भी अपनी रुचि समस्या को सुलझाने में रखते हैं तथा उन्हें समाधान के साधनों को जानने की विज्ञापन होती है। इस स्थिति में सामूहिक नेता निम्न भूमिका निभाता है।

1. वह सदस्यों के समक्ष समूह-वार्तालाप के विषय को स्पष्ट करता तथा कार्यपद्धति का वर्णन करता है।
2. वह समूह की समस्या को समझने तथा उद्देश्य की प्रणाली में सहायता करता है।
3. सदस्यों की विचार व्यक्त करने का अवसर देता है।
4. प्रश्न समूह के समक्ष रखता है तथा उनका उत्तर प्राप्त करता है।
5. वह देखता है कि समस्या के सभी पहलुओं पर वार्तालाप हो रहा है या नहीं।
6. समूह में सहयोगी, अनीप्तमार्कित तथा योगिक बातचीत बनाये रखता है।
7. वह निर्देशन के स्थान पर सुझाव रखता है।
8. वह देखता है कि वार्तालाप सही दिशा में हो रहा है या नहीं।
9. वह वार्तालाप का सारांश तैयार करता है।
10. अस्पष्ट बातों को स्पष्ट करता है।

19.3.2 कमेटी वार्तालाप

जब किसी विषय पर विशेष भागवत, सलाह या वार्तालाप की आवश्यकता होती है तब कमेटी का निर्माण करके वार्तालाप किया जाता है। इसके द्वारा कार्यक्रम-नियोजन तथा नीतियों का निर्माण सम्भव होता है।
कमेटी वार्तालाप में सदस्य-संख्या बहुत कम होती है। प्रत्येक सदस्य को अपनी इच्छाओं, भावनाओं, विचारों तथा सुझावों को रखने का पूर्ण अवसर मिलता है। नेता का कार्य इस प्रकार के वार्तालाप में निम्नलिखित होता है:-
1. यह सम्मूच समूह को उसके उद्देश्य से अवगत कराता है। वह समय, सदस्य एवं तरीकों के विषय में समूह की सलाह लेता है।
2. कमेटी के सदस्यों को विरोधज्ञाता, अनुभव एवं निपुणता के आधार पर चुनता है और समूह की राय भी ले लेता है।
3. कमेटी-चेयरमैन का चुनाव करता है।
4. चेयरमैन को कमेटी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालने के लिए कहता है।
5. उन प्रश्नों को कमेटी के समक्ष रखता है जिन पर वार्तालाप करता है।
6. प्रत्येक सदस्य को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा वह चाहता है कि प्रत्येक सदस्य पूरी क्षमता से भाग लें।
7. समय का वह विशेष ध्यान रखता है। अगर वह आवश्यक समझता है तो कमेटी की अनुमति से वार्तालाप का समय बढ़ा देता है।
8. यह सदस्यों से मौखिक व लिखित प्रतिवेदन लेता है और उनका सारांश तैयार करता है।

19.3.3 परिसंवाद या गोष्टि
जब विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किसी एक विषय के विभिन्न पहलूओं पर विचार व्यक्त किये जाते हैं, भाषण होते हैं तथा वार्तालाप किया जाता है तो उसे परिसंवाद या गोष्टि कहते हैं। नेता या माण्डेटर समय एवं विषय को निर्धारित करता है। परिसंवाद का समय लगभग 1 घंटा ही होता है। परिसंवाद में नेता निर्देशक करता हैं:
1. यह वक्ताओं से परिसंवाद के पहले मिलता है। उनके विचारों को समझता है तथा गोष्टि के विषय से सम्बंधित ध्यान देते हुए कहता है। प्रत्येक का समय निर्धारित करता है तथा उन्हें एक तारतम्य में बोलने के अवसर प्रदान करता है।
2. जब परिसंवाद प्रारंभ होता है तो मूल्य-मुख्य बातों को नोट करता है।
3. वह सबसे पहले स्वयं समस्या पर प्रकाश डालता है, उसके महत्व को स्पष्ट करता है तथा उस विषय पर बोलने के लिए वक्ताओं को आमंत्रित करता है। यह सम्मूच समूह का सहयोग प्राप्त करता है।
4. समूह को परिसंवाद के वक्ताओं से परिचय करवाता है।
5. वह प्रत्येक सदस्य की भूमिका निर्धारित करता है।

19.3.4 भूमिका का निर्धार
मानव समयों की समस्याओं या स्थितियों के संदर्भ में भूमिका निभाना रोल प्लेंसिंग कहलाता है। संचार के साधनों में यह एक अद्वैत एवं महत्वपूर्ण प्रविधि है। यह एक ऐसी प्रविधि है जिसके द्वारा अपहरणकाव्य समूह का
शिक्षा, ज्ञान, अनुभव सम्बन्धी एवं बौद्धिक विकास किया जा सकता है। परन्तु इसके साथ ही साथ यह एक कठिन एवं मुश्किल प्रविधि है।

इस प्रविधि द्वारा समूह के उपर सर्विसिटी दरों, दशकों, ऑफिसर्स तथा सम्बन्धियों से नेता अवकाश कर देता है जिन्होंने व्यवसाय में लागू होता है। मौखिक तथा बारातीलाप में जिन जातियों को समझने में कठिनाई होती है, उनको भूमिका निर्धारण द्वारा उचित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। इसमें समूह के सदस्यों का मनोवैज्ञानिक भावनाक्रम भी समस्या हो जाता है। परन्तु यह प्रविधि तभी उपयोगी में लायी जा सकती है जब समूह-सदस्य काफी सीमा तक शैक्षिक, मानसिक तथा सांवैज्ञानिक रूप से परिवर्तन होते हैं तथा अपनी भावनाओं, विचारों तथा मनोक्षेत्रों का व्यक्त नहीं कर पाते।

भूमिका-निर्धारण में सामूहिक नेता उन सदस्यों एवं भागिनों को व्यक्त करना चाहता है जिन्होंने मौखिक रूप से व्यक्त करते हैं उसे कठिनाई होती है और समूह-सदस्य किसी प्रकार की परिणामी महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए परिचार-नियोजन समस्ती सदस्यों को भूमिका-निर्धारण द्वारा उचित प्रकार से समझाया जा सकता है। नेता का कार्य इस प्रविधि में बिशेष महत्वपूर्ण होता है। वह प्रारंभ से अन्त तक बहुत ही सावधानी से भूमिका अदा करता है।

19.3.5 मनोरंजनात्मक क्रियाओं

समूह अधिकांशतः मनोरंजनात्मक क्रियाएं इससे लिए करता है जब उसके सदस्य शारीरिक, मानसिक तथा सांवैज्ञानिक रूप से व्यक्त अनुभव करों। जब समूह प्राकृतिक आवश्यक होता है तो समूह सदस्य एक-दूसरे से भलीभाषा वर्णित नहीं होता। ऐसी दशा में मनोरंजन ही एक ऐसा साधन है जो प्रत्येक सदस्य को एक-दूसरे के नज़दीक लाता है। सामूहिक कार्यक्रमों समूह के प्रत्येक सदस्य को मनोरंजनात्मक क्रियाओं में भाग लेने के लिए उत्साहित करता है तथा वह देखता रहता है कि सदस्यों के भाग लेने के लिए उत्साहित करता है तथा वह देखता रहता है कि सदस्यों के भाग लेने की क्या गति है। वह समस्त प्रक्रिया का मूलभूत भी साथ ही साथ करता चलता है।

19.5 सारांश

प्रत्यय इंडाइय में समूह समाज कार्य में व्यावसायिक नैवित्त के विषय में जाना। व्यावसायिक नैवित्त में नेता की भूमिका तथा कार्यों का अध्ययन किया। तत्कालीन समूह बालरंग, कमेटी बालरंग तथा गोपिकाओं के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।

19.6 अध्यायास्तर प्रश्न

1. समाज कार्य में व्यावसायिक नैवित्त के अर्थ को समझाते हुए वर्णन कीजिए।
2. व्यावसायिक नैवित्त में नेता के कार्यों का वर्णन कीजिए।
3. लघु समूह बालरंग एवं कमेटी बालरंग के बारे में संक्षेप वर्णन कीजिए।
4. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये:
1. परिसंचार वा गोष्टी
2. भूमिका का निर्देश
3. मनोरंजनात्मक क्रियायें

19.7 संदर्भ ग्रन्थ

सिंह, डी. के., भारती, ए. के., सोशल वर्क कान्सेप्ट एंड मैथड्स, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. के., पालीवाल, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विपणन के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.
मिष्र, पी. डी. के., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुरेंद्र, मिश्र, पी. डी. के., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिष्र, पी. डी. के., सामाजिक वैचकित्र सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुरेंद्र, वर्मा, आर. बी. एस. के., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिष्र, पी. डी. के., मिश्र, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
एकाई-20

सामूहिक समाज कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका

इकाई की रूपरेखा
20.0 उद्देश्य
20.1 प्रस्तावना
20.2 सामूहिक कार्य के आंग
20.2.1 कार्यकर्ता
20.2.2 समूह
20.2.3 संस्था
20.3 सामूहिक कार्यकर्ता की भूमिका
20.4 सारांश
20.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
20.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

20.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप:
1. समूह समाज कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका का अध्ययन कर सकेंगे।
2. समूह समाज कार्य के अंगों का वर्णन कर सकेंगे।
3. प्राथमिक कार्यकर्ताओं के अधीक्षण, संस्थाओं विभागों के बारे में जान जाएंगे।
4. तथा अंत में समस्याओं के लिए सामुदायिक नियोजन के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में समूह समाज कार्यकर्ता की भूमिका पर विचार किया गया है। समूह कार्यकर्ता अपने कार्य का प्रारंभ समूह के साथ करता है और समूह के माध्यम से ही उद्देश्य की ओर आग्रह होता है। वह व्यक्ति को समूह के रूप में जानता है तथा उसकी आवश्यकताओं को पहचानता है। समूह एक आवश्यक साधन तथा चंत्र होता है जिसके उपयोग में लाखर सदस्य अपने उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। जिस प्रकार का समूह होता है, कार्यकर्ता को उसी प्रकार की भूमिका निभानी पड़ती है। सामाजिक गति से काम करने के लिए समूह सदस्यों में कुछ सीमा तक संधियों, उद्देश्यों, बौद्धिक स्तर, आदि तथा पसंदों की समानता होना आवश्यक होता है। सामाजिक कार्य की उत्पत्ति ही
संस्थाओं के माध्यम से हुई है। संस्था की प्रकृति एवं कार्य कार्यक्रम की भूमिका को निश्चित करते हैं। सामूहिक कार्यक्रम की आवश्यकता एवं सामूहिक स्थितियों की योग के अनुसार अनेक प्रकार की भूमिका पूरी करता है।

20.2 सामूहिक कार्य के अंग

सामूहिक सामूहिक कार्य एक प्रणाली है, जिसके द्वारा कार्यक्रम व्यक्ति को समूह के माध्यम से किसी संस्था अथवा सामुदायिक केंद्र में सेवा प्रदान करता है, जिससे उसके व्यक्तित्व का संरचित विकास सम्भव होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण सामूहिक कार्य तीन स्तरों पर आधारित है:

1. कार्यक्रम
2. समूह
3. संस्था

20.2.1 कार्यक्रम

सामूहिक सामूहिक कार्य में कार्यक्रम एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो उस समूह का सदस्य नहीं होता है, जिसके साथ वह कार्य करता है। इस कार्यक्रम में कुछ नियुक्ति योग्य होती है, जो व्यक्तियों की संधियाँ, व्यवहारों तथा भावनाओं के ज्ञान पर आधारित होती है। उसमें समूह के साथ कार्य करने की क्षमता होती है तथा सामूहिक स्थिति से निपटने की शक्ति एवं सहनशीलता होती है। उसका उद्देश्य समूह को आत्म निर्देशित तथा आत्म संचालित करना होता है तथा वह ऐसे उपयोग करता है जिससे समूह का नियंत्रण समूह सदस्यों के हाथ में रहता है। वह सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्ति में परिवर्तन एवं विकास लाता है। कार्यक्रम को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है:

1. सामुदायिक स्थापना
2. संस्था के कार्य तथा उद्देश्य
3. संस्था के कार्यक्रम तथा सुविधायें
4. समूह की विशेषतायें
5. सदस्यों की संधियाँ, आवश्यकताओं तथा योग्यताएं
6. अपनी स्वयं की नियुक्तियाँ तथा क्षमतायें
7. समूह की कार्यक्रम से सहायता प्राप्त करने की इच्छा

सामूहिक कार्यक्रम अपनी सेवाओं द्वारा सामूहिक लक्ष्यों का प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह व्यक्ति को स्वतंत्र विकास तथा उन्नति के लिए अवसर प्रदान करता है तथा व्यक्ति के सामान्य निमित्त के लिए अनुकूल परिस्थितियों उपयोग करता है। वह सामूहिक सम्बन्धों को आधार मानक संशोधन तथा विकासात्मक क्रियाओं का आयोजन व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए करता है।
20.2.2 समूह

सामाजिक सामूहिक कार्यकर्ताओं अपने कार्य का प्रारंभ समूह के साथ करता है और समूह के माध्यम से ही उद्देश्य की ओर अग्रसर होता है। वह व्यक्ति को समूह सदस्य के रूप में जानता है तथा उसकी विशेषताओं को पहचानता है। समूह एक आवश्यक साधन तथा यथार्थ होता है, जिसको उपयोग में लाकर सदस्य अपने उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। जिस प्रकार का समूह होता है, कार्यकर्ताओं उसी प्रकार की भूमिका निभानी पड़ती है। सामाज्य गति से काम करने के लिए समूह सदस्यों में कुछ सीमा तक संघीय, उद्देश्यों, बौद्धिक सत्ता, आयु तथा पश्चिम भी समानता होनी आवश्यक होती है। इसी समानता पर यदि निहित होता है कि सदस्य समूह में समान अवसर कहां तक या सन्न तथा कहां तक उद्देश्य पूर्ण तथा प्राप्त समायोजन स्थापित हो सकेगा। समूह तथा कार्यकर्ताओं सामूहिक, सरकारी नियोजन का तथा शिक्षात्मक हिस्से को सदस्यों के साथ सम्बन्ध करते हैं, तथा इसके द्वारा वे नियुक्ति का विकास करते हैं। लेकिन सामूहिक कार्य इस बात में बिस्माद रखता है कि समूह का कार्य नियुक्ति प्राप्त करना नहीं है। यदि प्रारंभिक उद्देश्य प्राप्त होता सदस्य का समूह में अच्छी प्रकार से समायोजन करता है तब यदि समूह के माध्यम से अंदर जाता के अनुरोध को प्राप्त करता है, जो उसके लिए आवश्यक होते हैं। समूह द्वारा वह मिश्र तथा संधियाँ का भाग उपलब्ध करता है, जिससे सदस्यों की महत्वपूर्ण आवश्यकता ‘मिश्र’ के साथ रहने की’ पूर्ति होती है। समूह के सदस्य अपनी संधियों को साकल रूप में उपलब्ध कराए जाते हैं, नियुक्ति तथा विशेषीकरण प्राप्त करने हैं, व्यक्तित्व की इच्छा पूरी होती है, स्थिति का निर्धारण होता है। वे माता-पिता के नियामक से अर्थ होकर अन्य लोगों के साथ सामंजस्य करना सीखते हैं तथा नियुक्ति प्राप्त करते हैं। इस प्रकार कहां जा सकता है कि व्यक्ति के विकास के लिए समूह आवश्यक होता है।

20.2.3 संस्था

सामाजिक सामूहिक कार्य में संस्था का विशेष महत्व होता है क्योंकि सामूहिक कार्य की उपस्थिति ही संस्थाओं के माध्यम से हुई है। संस्था की प्रकृति एवं उसके कार्यकर्ताओं की भूमिका को परिभाषित करते हैं। सामूहिक कार्यकर्ताओं अपनी नियुक्तियों को उपयोग एंटी-सी के प्रतिनिधित्व के रूप में करते हैं क्योंकि समुदाय एंटी-सी के महत्त्व को सम्बन्धित करते हैं तथा कार्य करने की स्वीकृति देते हैं। अतः कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक होता है कि वह संस्था के कार्यों से भलीभांति परिचित हो। समूह के साथ कार्य प्रारंभ करने से पहले कार्यकर्ताओं की संस्था की निम्न बातों को भलीभांति समझना चाहिए:

1. कार्यकर्ताओं को संस्था के उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए। अपनी रूपिया की उन कार्यों से तुलना करके कार्य करने को तैयार रहना चाहिए।

2. संस्था की सामान्य विशेषताओं से अवगत होना तथा उसके कार्य क्षेत्र का ज्ञान होना चाहिए।

3. उसको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किस प्रकार संस्था की सहायता के क्षेत्र में साधन तथा रोक सीरो है।

4. संस्था में सामूहिक समबंध स्थापन की दलालों का ज्ञान होना चाहिए।

5. संस्था के कर्मचारियों से अपने सम्बन्ध के प्रकार की जानकारी होनी चाहिए।

6. उसको जानकारी होनी चाहिए कि ऐसी संस्थाएं तथा समूह कितने हैं, जिनमें विशेष सामायिक सदस्य की पद्धति का ज्ञान होना चाहिए।
20.3 सामूहिक कार्यकर्ता की भूमिका

सामूहिक कार्यकर्ता समूह की आवश्यकता एवं सामूहिक स्थितियों की मांग के अनुसार एक प्रकार की भूमिका पूरी करता है। निम्नलिखित प्रमुख भूमिकाओं हैं:

(अ) समूह के साथ

1. सार्थकता की भूमिका
   कार्यकर्ता समूह-सदस्यों को अपनी आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझने में सहायता करता है। वह उन साथियों को बालकर्ता है जिनके आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है तथा सदस्य सहयोग ले सकते हैं। वह समूह के निर्देशन के लिए व्यक्तियों में अपनी बर्तमान स्थिति के प्रति असंतोष उत्पन्न करता है जिससे वे परस्पर सहयोग एवं संयुक्त प्रयास के लिए एकत्रित होते हैं। वह सर्वसम्मति के आधार पर समूह का निर्माण करता है। वह सदस्यों में अपनी समस्याओं के समाधान करने की शक्ति विकसित करता है तथा कार्यक्रमों के चयन की योग्यता का विकास करता है। वह सभी सदस्यों के भागीदारी को बढ़ावा देता है।

2. पथ-प्रदर्शक के रूप में
   वह सदस्यों को संस्था बल व समुदाय की सुविधाओं एवं अन्य सातों से अवगत कराता है, जिनकी उन्हें आवश्यकता है तथा उन्हें परंतु वे जानते नहीं हैं। वह सदस्यों की अपनी भूमिका का उत्पाद बनाता है तथा आवश्यक मुद्रों को सपा करता है। आवश्यकता बढ़ने पर प्रत्यक्ष रूप से समूह की सहायता करता है। वह सामूहिक अन्त:क्रिया का निर्देशन करता है।

3. अधिवक्ता के रूप में
   कार्यकर्ता सदस्यों की समस्याओं को उच्च अधिकारियों के सम्भावित संवाद करने की सुविधा करता है। वह संस्था की नीतियों, कार्यक्रमों व योजनाओं में परिवर्तन करने की भी सिफारिश करता है।

4. विशेषता के रूप में
   कार्यकर्ता सदस्यों को आवश्यकता पड़ने पर विशेष सलाह देता है। वह समूह-समस्या का विश्लेषण करता है तथा उसका निदान करता है। वह समूह को विवेचनों तथा अधिक प्रभावकारी होने के लिए उपयुक्त तरीके बताता है। वह संस्था द्वारा समूह के कार्यक्रमों का मूल्यांकन करता है।

5. विकल्पक के रूप में
   कार्यकर्ता समूह की कुछ समस्याओं के समाधान का प्रयास प्रदान करता है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है और जिनकी जड़ें काफी गहरी हैं। वह समूह का उन शक्तियों से परिचय करवाता है जो विचित्रात्मक हैं तथा
जिनका प्रयास रूप से प्रभाव पड़ता है। वह समूह को इस प्रकार से प्रेरित करता है जिससे सदस्य स्वयं परिवर्तन की मांग करते हैं। वह सदस्यों के अहं को सुदृढ़ करता है।

6. परिवर्तन के रूप में

कार्यकर्ताओं सदस्यों की आदेशों में परिवर्तन लाने के लिए अनेक कार्यक्रम करता है, क्योंकि बहुसंख्य आदेशों के कारण ही समस्या उठ खड़ी होती है और परिवर्तन व समाज में विधान उपयोग कर देती है। कार्यकर्ताओं सदस्यों के कार्य करने के तरीकों में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करता है, क्योंकि जब तक कार्य करने के ढंगों में बदलाव नहीं आयेगा तब तक समूह किसी भी प्रकार से विकास नहीं कर सकेगा। वह सदस्यों की मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन लाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। इस प्रकार से सारांश में कहा जा सकता है कि कार्यकर्ताओं सामाजिक आयोग को बदलने का वृहद उद्देश्य रखता है।

7. सुधारदाता के रूप में

कार्यकर्ताओं समूह-सदस्यों को संस्था से क्या-क्या सुविधायें प्राप्त हो सकती हैं और वे उनसे क्या लाभ उठा सकते हैं, इसकी जानकारी देता है। परन्तु संस्था की आवश्यक शर्तों को पूरा करना होगा अतः उन्हें भी विस्तार से समझाता है।

8. सहायक के रूप में

कार्यकर्ताओं समूह की सहायता तत्कालीन तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीकों को निश्चित करने में करता है। वह संस्था से सहायता लेने में समूह की मदद करता है। कार्यक्रमों के निर्धारण तथा उनका चयन करने में वह सहायता करता है। समूह में सामूहिक चेतना तथा सामूहिक भावना विकसित होने के लिए समूह की सहायता करता है। वह सदस्यों को उनकी क्षमताओं एवं योग्यताओं से सत्यान्वयन करने में समर्थ होते हैं तथा उन्हें अंशभूति कार्यक्रम चलाने का निर्णय लेते हैं। यह उन आत्मानीक समस्याओं की ओर समूह को रोकता है जिनके कारण समूह अपने अभिभावक लक्ष्यों को प्राप्त करने में विस्थापित रह जाता है। वह इन समस्याओं के समाधान में समूह की सहायता करता है। वह समूह संगठन को सुदृढ़ बनाने तथा प्रवृत्त सदस्यों को उत्साहित प्रशिक्षण करने में सहायता करता है। वह समूह के साथ कार्य का स्तर निर्धारित करता है तथा नियंत्रण के साधनों की प्रभावशाली बनाता है। वह समुदाय में उपलब्ध स्रोतों से परिचय कराकर सहायता दिलाता है एवं अन्य संस्थाओं से समर्थन लेता है।

(व) प्राथमिक कार्यकर्ताओं का अभिशेष

सामूहिक कार्यकर्ताओं समूह की सहायता करने के पश्चात कार्यकर्ताओं की ओर प्रभाव आकृति करता है। वह यहाँ पर अथवा अवधीक भूमिका अदा करता है, जिसके द्वारा समूह की अप्रार्थित ठोंड़ से सहायता करता है। उसका कार्य कार्यकर्ताओं में निर्भरता एवं दक्षता का विकास कराता है। वह उनमें ज्ञान एवं अनुभव की वृद्धि करता है तथा नये-नये तरीकों को समझाता है और नियुक्तियों का विकास करता है। अर्थव्यवस्थायें तथा तत्वें अधीन तथा नियंत्रण के साधनों के विभाग में अपने ज्ञान एवं अनुभवों का उपयोग करके सार्वजनिक संस्थान की सहायता कार्य को पूरा करने तथा उन उद्देश्यों को प्राप्त करने में करता है जिसके लाभ संस्था संगठित की गयी है।

वह कार्यकर्ताओं के कार्यों का अवलंबक करता है तथा सिद्धांतों, नियुक्तियों, प्रविधियों एवं अहं के उचित प्रयोग पर बल देता है। उनमें अस्थायी, नियुक्तियों, प्रविधियों एवं अहं के उचित प्रयोग पर बल देता है। उनमें अस्थायी, नियुक्तियों, प्रविधियों एवं अहं के उचित प्रयोग पर बल देता है। उनमें अस्थायी, नियुक्तियों, प्रविधियों एवं अहं के उचित प्रयोग पर बल देता है।
तथा उन मनोवृत्तियों, व्यवहारों तथा विचारों में परिवर्तन लाता है जो समस्त उदचित सम्पन्न-स्थापन में बाधक होते हैं। उनकी निषिद्द भूमिका पर दंड चलने की सलाह देता है और जहां कहीं वे चिह्नित होते हैं वहां उनकी अपने जान, अनुभव तथा बुद्धि द्वारा सहायता करता है।

अधीक्षक शिक्षालय आचरणकारियों तथा कार्यकर्ता के उद्देश्यों पर विशेष ध्यान देता है। कार्यकर्ताओं में ऐसी योग्यताओं का विकास करता है जिससे वे स्वयं उद्देश्य का प्राप्त करने में सफल होते हैं तथा स्वयं इच्छा से सम्मत के साथ कार्य कर सकते हैं। नवीन परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं में भूमिका निभाने की योग्यता का विकास करता है। वह कार्यकर्ता के उन कारणों का पता लगाता है जिससे वह किसी सदस्य से अप्रसन्न या पेरेशान रहता है। वह कार्यकर्ता को व्यवहार का उदचित अर्थ समझने में तथा अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर समूह-सदस्यों की भावनाओं पर प्रभावात्मक नियंत्रण रखने में मदद करता है।

अधीक्षक के रूप में वह कार्यकर्ता को समूह के प्रति अपनी सकारात्मक तथा नकारात्मक भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। वह ऐसी स्थिति उत्पन्न करता है जहां पर कार्यकर्ता अपनी इन भावनाओं को ज्ञात करने में मदद करता है। वह न केवल व्यक्त करने का अवसर देता है बल्कि इन भावनाओं के अर्थ को खोज करता है तथा वास्तविकता का पता लगाता है। वह कार्यकर्ता के कार्यों का मूल्यांकन भी साथ ही साथ करता चलता है।

अधीक्षक कार्यकर्ताओं की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को समझता है, विकास के स्तरों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है तथा जहां पर प्रतिक्रिया होता है वहां पर वह स्वयं सहायता करता है। अतः वह कार्यकर्ता को मूल्य ध्यान, स्क-स्क कर नयी शिखरा, कला, निपुणता, ज्ञान, शक्ति इत्यादि प्रदान करता है। कभी-कभी कार्यकर्ता कोई कार्य न चाहने पर अपने में ही भावना उत्पन्न कर लेता है। ऐसे अवस्थाओं में अधीक्षक बहुत ही साफ़तात्मक होते हैं, कार्यकर्ताओं के साथ मिलना होता है अतः वह प्रत्येक कार्यकर्ता का अध्ययन करता है और उनके स्तर के अनुसार कार्य करने में तथा काँग्रेस में भाग लेने में उनकी सहायता करता है।

वह कार्यकर्ताओं में सामूहिक कार्य के दर्शन का विकास करता है। वह उनकी अपनी सीमाओं को समझने में मदद करता है। वह उनकी सहायता करता है जो सहायता चाहते हैं तथा उनकी भी जो कार्य को समझ नहीं पाते हैं और विफलता एवं भमाशा की स्थिति उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार वह कार्यकर्ताओं की चारों तरफ से सहायता करता है।

(स) सामूहिक कार्य प्रदान करने वाली संस्थाओं एवं विभागों का प्रभाव

सामाजिक सामूहिक कार्य का तीसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र प्रशासन है। इसके अन्तर्गत वह सामाजिक संस्थाओं का संगठन इस आधार पर करता है जिससे सेवाखोजों को अधिक से अधिक लाभ पहुँचा सकें। उसका उद्देश्य सामूहिक क्रियाओं को उदचित प्रकार से सम्पन्न करना तथा रूकवाटों को दूर करना है। प्रशासकीय सेवाओं का समन्वय सामाजिक सेवा का लाभप्रद तरीकों द्वारा समृद्धि से तक पहुँचाना है। कार्यकर्ता यहाँ पर नियोजन, संगठन, कर्मचारियों के चयन तथा उनके नियंत्रण, निर्देशन, सहयोग, अभिलेखन तथा बजट क्रियाओं में भाग लेता है।

नियोजन द्वारा वह भविष्य के कार्यक्रमों को निर्धारित करता है तथा अपनी सीमाओं को ध्यान में रखकर उद्देश्य निर्धारित करता है। वह इस प्रकार से नियोजन करता है जिससे समय पड़ने पर परिवर्तन हो सके तथा सभी सदस्य एवं कर्मचारी उसका समझ सके। संगठन के कार्य में वह आध्यात्मिक संरचना का निर्माण करता है जिससे
संस्था के सभी सदस्य एक-दूसरे से कार्यात्मक समन्वय स्थापित कर सकें। प्रत्येक कर्मचारी का कार्य स्पष्ट होता है तथा कार्यक्रम की प्रक्रिया व्यवस्थित रूप से संचालित होती है।

संगठन एवं प्रशासन चार्ट जिन्हें उपयुक्त कृत्यों न हों, नियोजन सीमाओं के अन्तर्गत कृत्यों न हों, परंतु यदि कर्मचारी कुल-कुल नहीं हैं तो कोई भी संस्था उद्देश को प्राप्त नहीं कर सकती। उद्देश की पूर्ति समय पर नहीं होगी तो कार्यान्वयन उद्धत ढंग से नहीं हो सकेगा। कार्यक्रम का कार्य यहाँ पर संस्था के लिए अनुभवी, शिक्षित, योग्य कर्मचारी का चयन करना होता है। वह उनका नियोजन भी करता है तथा कार्यक्रम का निर्देशन भी करता है।

इस कार्य के अंतर्गत निर्णय लेना, उद्देश्यित का ढंग करना तथा शक्ति का विकसन करना आता है। यह कर्मचारियों के साथ इन कार्यों को सम्पन्न करता है। यह कर्मचारियों में सहयोग की भावना उन्नत करता है। वहां पर उसका उद्देश्य संस्था के कार्य की पूर्ति हेतु प्रशासन में ऊपर से नीचे तक मध्य सम्बन्ध बनाए रखना होता है।

उसका अन्य महत्वपूर्ण कार्य अभिलेख करना है, क्योंकि सभी व्यक्ति यह जानना चाहते हैं कि संस्था क्या कर रही है क्या विशेष आयात से यह जानना चाहते हैं कि सहयोग की भावना उन्नत करता है।

(द) सामाजिक सामूहिक कार्य-सेवाओं को प्रदान करने वाली संस्थाओं के लिए सामुदायिक नियोजन

कार्यक्रम संस्था के लिए सामुदायिक नियोजन करता है, जिससे उसकी उपयोगिता बढ़ती है तथा उसकी आवश्यकता का भान होता है। यह समुदाय की अवधारणाओं, जैसे-शिक्षा, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, सांस्कृतिक तथा अन्य विभिन्न उपयोगिताओं के आधार पर कार्यक्रम का नियोजन करता है। यह समुदाय के रीति-रिवाजों को भी ध्यान रखता है। यह समुदाय में समूह-नियोजन की आवश्यकता एवं उपयोगिता सम्बन्धी जन-जागृति को बढ़ावा देता है।

समुदाय के विभिन्न व्यक्तियों का समूह से सम्पर्क कराता है और इस प्रकार उनका सहयोग प्राप्त करता है। समूह के नियोजक के हित में वह सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों का परिमार्जन करता है। कार्यक्रम के लिए सामुदायिक नियोजन वह साधन है जिसके द्वारा संस्थाएं, व्यक्ति, समूह तथा संगठन ऐच्छिक रूप से समुदाय के स्वास्थ्य तथा कल्याणकारी कार्यों में भाग लेते हैं। यह समुदाय की समस्याओं का अवधारण करता है और उन पर शोध-कार्य करता है, तदनुसार सेवाओं की उपयोगिता तथा समस्या का योग्य अवगत करता है और नवीन सेवाओं का विकास करता है।

सारांश में सामूहिक कार्यक्रम अपनी सेवाओं द्वारा सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करता है, व्यक्ति को स्वचालित विकास तथा उन्नति के लिए अवसर प्रदान करता है तथा व्यक्तिकों का सामाजिक नियोजन के लिए अनुमूलक परिस्थितियों उपयोग करता है। वह सामाजिक समस्याओं का आधार राखने सामाजिक विकासधारी किस्मों का आयोजन व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए करता है और इस प्रकार उसके समाजी कार्यक्रम के लिए प्रयास शीर्ष है।

20.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में कार्यक्रम की भूमिका तथा महत्व को पहला। समूह और संस्थाओं में कार्यक्रम का अध्ययन किया। इसके पश्चात सामूहिक कार्यक्रम की समूह में भूमिका को समझा। कार्यक्रमों का अधीक्षण, विभागों, तथा संस्थाओं के सामुदायिक नियोजन विषय पर जान प्राप्त किया।
20.5 अथ्यासार्थ प्रश्न

1. सामूहिक समाज कार्य में कार्यकर्ताओं की भूमिका का विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।

2. सामूहिक कार्य के अंगों का वर्णन कीजिए।

3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये:-
   1. समूह
   2. संस्था
   3. सामूहिक कार्यकर्ताओं की भूमिका

20.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

सिंह, सुरेन्द्र, मिश्र, पी. डी., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.

सिंह, डी., के., पालीचार, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विभाग के भूमिका, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.

सिंह, डी., के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुरेन्द्र, वर्मा, अर. बी. एस., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्र, पी. डी., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.

मिश्रा, पी. डी., मिश्रा, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.

सिंह, डी., के., भारती, पे. के., सोशल वर्क कॉन्सेप्ट एंड मैथड्स, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्र, पी. डी., सामाजिक व्यक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
परामर्श: अर्थ एवं परिभाषा

इकाई की रूपरेखा
21.0 उद्देश्य
21.1 प्रस्तावना
21.2 परामर्श का अर्थ
21.3 परामर्श की परिभाषा
21.4 सारांश
21.5 अभ्यासार्थ प्रश्न
21.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

21.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप
1. परामर्श के अर्थ को समझ सकेंगें।
2. विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी परामर्श की परिभाषाओं के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
3. परामर्श किसी विशेष समस्या से सम्बन्धित होती है, इसको जान सकते हैं।
4. परामर्शादाता का उद्देश्य किसी एक समस्या का विश्लेषण विचारन तथा समाधान करना होता है, इसकी
   व्याख्या कर सकते हैं।

21.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में परामर्श के अर्थ एवं परिभाषा का वर्णन किया गया है। हमारे समाज की उन बहुत सी क्षेत्रों के
लिए निर्देशन तथा परामर्श शाब्दिक प्रयुक्त होता है, जबकि व्यक्तियों को अपनी क्षमताओं के पूर्व विकास में सहायता
देने के उद्देश्य को मंथन में रखकर रूचियों तथा योजनाओं के निर्माण में सहायता करने का प्रयत्न करते हैं। परामर्श
एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से परामर्शादाता परामर्श लेने वाले की रूचि योजना तथा समायोजन सम्बन्धी तथ्यों
की व्याख्या में होती है जिनको यह कहा चाहिए है। यह एक या एक से अधिक सेवार्थी तथा एक उपचारक के
बीच अन्तर्भाषित समक्षों की प्रतिक्रिया है।
21.2 परामर्श का अर्थ
परामर्श कला तथा विज्ञान दोनों हैं। इसके लिए न केवल यह आवश्यक है कि विश्व सबूत का ज्ञान हो बल्कि आत्म ज्ञान, अनुसंधान एवं अभिविन्वयन की विधाओं का भी ज्ञान हो। अभिविन्यन तब होती है जब परामर्शदाता वेतनी तथा अपने बीच सम्बन्धों को सुन्दर करने के लिए विभिन्न नियुक्तियों का उपयोग करता है तथा सेवायों की स्वायत्तता बनाए रखने का समर्थन करता है। परामर्श के लिए यह आवश्यक है कि परामर्शदाता अच्छा सम्बन्ध रखने और इस सम्बन्ध में सार्वजनिक नृत्य का अवलोकन करने पर निर्भर होता है। परामर्श एक विशेष प्रकार का वैज्ञानिक सम्बन्ध है, जिसमें भावाओं, विचारों एवं मनोवृत्तियों का प्रगति होता है। जिनका प्रगति नहीं हो पाता है, उनकी कृतिक प्रगति की स्थिति तैयार करने की जाती है और यदि कोई स्पष्टकरण की जरूरत होती है तो सिध्दांत का विश्लेषण करके उसे सेवायों को बदला भी जाता है।

परामर्श दूसरों से इस उद्देश्य के साथ होता है कि वह अपनी इच्छाओं, समस्याओं, जितनामों को समझ करके तथा उनका समाधान प्राप्त करके तथा संतोषप्रद दंग से रहने की कला को विकसित करने में समर्थ होगा। सम्बन्ध स्थापित करने की विधि है। एक प्रशिक्षित परामर्शदाता तथा सेवायों के बीच व्यवसायिक सम्बन्ध दर्शाता है। यह संबंध मायावत, दो व्यक्तियों के बीच होता है लेकिन कभी-कभी एक से भी अधिक सेवायों से सम्बन्ध हो सकते हैं। परामर्श का उद्देश्य सेवायों की सावधानी तथा अन्तर्वेतनक समस्याओं के कारणों का घटना लागू करना तथा समाधान के तरीकों को खोजने का प्रयास करता है। इस योग्य बनाना होता है कि वह सही मायावत व्यवस्था करे तथा अपने जीवन तथ्यों का प्राप्त कर सके। कभी-कभी व्यक्ति अपनी समस्याओं के प्रति उदासीन होता है अथवा सही अंतर्वेत्र करने में असमर्थ होता है अथवा अंतर्भूति की कमी होती है इसलिए यह दंग हो जुड़ना का भाजन बनता है। परामर्शदाता का कार्य इन्हीं समस्याओं को सुधारना तथा आत्म सुन्दर करना होता है।

परामर्श का सम्बन्ध सेवायों की व्यक्तिगत समस्याओं से होता है। उदाहरण के लिए संकटकालीन स्थिति में निपटना, दूसरों से विभेद तथा संयोग, अंतर्भूति विकास की समस्या तथा पारस्परिक सम्बन्धों में समलेख आदि ऐसी समस्यायें हैं जिनका समाधान परामर्श के माध्यम से किया जाता है।

परामर्श का कार्य उत्तम है प्रचुर है जितना कि हमारा समाज स्वयं। जीवन के प्रत्येक स्तर पर तथा दिन प्रतिदिन के जीवन में परामर्श की आवश्यकता होती है। परीक्षण के स्तर पर बच्चों को माना-ढाया परामर्श देते हैं; रोगियों को विकसित करने के प्रयास करने के परामर्श देते हैं, वकील अपने सेवायों को परामर्श देते हैं, अध्यापक विद्यार्थियों को परामर्श देते हैं। दूसरी तरफ़ में यह कहा जा सकता है कि समस्याओं को कोई सीमा नहीं है जिनमें परामर्श की आवश्यकता न महसूस होती है। लेकिन व्यवसायिक परामर्श का विकास अब कुछ ही वर्षों में हुआ है। विद्यालय, विश्वविद्यालय, कारावास, आदिवासियों का विभिन्न प्रतिष्ठान सभी परामर्शदाता की आवश्यकता अनुमोदन करते हैं।

21.3 परामर्श की परिभाषाएं
एटेकर हार्बर्ट एवं: “परामर्श उस समस्या समाधान की ओर लक्षित व्यक्तिगत सहायता है जिसको एक भौतिक समाधान करने में अपने की असमर्थ पाता है और जिसके कारण निश्चित व्यक्ति की सहायता प्राप्त करता है जिसका ज्ञान, अनुभव तथा सामाजिक अभिविन्यन उस समस्या के समाधान करने के उपयोग में लाया जाता है।”
शेफर राबर्ट एवं: “परामर्श को विभिन्न निर्देशन सेवाओं में से एक समझा जाता है। यह प्रत्येक उपकरण से एक व्यक्ति से आमने-सामने के सम्बन्धों में वस्तु भूमिका है। परामर्शदाता परामर्शकर्ता की भावाओं, स्थितियों तथा परिस्थितियों तथा किसी भी क्रिया का समझने तथा विश्लेषण करने में सहायता करने का प्रयत्न करते हैं।”

160
परामर्श शब्द को और अधिक स्पष्ट करने के लिए रोपर ने कहा है कि हमारे समाज की उन बहुत सी क्रियाओं के लिए निर्देशन तथा परामर्श शब्द प्रयुक्त होता है जब कि व्यक्तियों को अपनी अनेक अनुभवों से पूर्ण बिगादा में सहायता देने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर रूचियों तथा योजनाओं के निर्माण में सहायता करने का प्रयत्न करते हैं।

गार्डन हैंडल्टन: “परामर्श तर्क बितर्क के माध्यम से एक व्यक्ति की अपनी अनुभवों तथा इच्छाओं को तात्कालिक बनाने में सहायता करता है। परामर्श का मुख्य उद्देश्य सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक अनुभव के लिए चेतन अहम को प्रोत्साहित करता है।”

परामर्श प्रयोग उपचार की प्रमुख विधि है। यह एक व्यक्ति की मनो-सामाजिक संबंधताओं को स्पष्ट करने, उसके निर्देश तथा उपचार की ओर प्रवास करने का एक माध्यम है।

पी, एफ. म. “परामर्श परामर्शादाता तथा परामर्श लेने वाले के बीच एक अंतःर्कित प्रक्रिया है जिसमें परामर्श लेने वाला सहायता चाहता है और परामर्शादाता इस प्रकार की सहायता देने में शिखरता तथा प्रशिक्षित होता है।”

सिमेश जी. ई.: “परामर्श एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से परामर्शादाता परामर्श लेने वाले की रूचि, योजना अथवा समाजसेवा समस्याओं की जिनको यह चाहता है, व्याख्या करने में सहायता करता है।”

हान तथा मैकल्सेन: “परामर्श एक प्रक्रिया है जो एक समस्या से स्पष्टता स्पष्टता जिनका यह स्वयं समाधान करने में असमर्थ है तथा एक व्यक्तिके कार्यक्षमता जिनके प्रशिक्षण तथा अनुभव के कारण दूसरों की सहायता करने में पक्ष है, के बीच घटित होती है और माध्यम से वह अनेक प्रकार की व्यक्तिगत कठिनाइयों का समाधान प्राप्त करता है।”

पीपिन्स्की, एच.पी. तथा पीपिन्स्की, पी.: “परामर्श वह अंतःर्कित है जो (1) दो व्यक्तियों के बीच परामर्श एक प्रक्रिया है जिसमें परामर्शादाता तथा सेवार्थी कहा जाता है। (2) यह एक व्यक्तिके कार्यक्षमता में प्रतिष्ठित होती है। तथा (3) जो सेवार्थी के व्यवहार में परिवर्तनों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयास करती है तथा बनायी रखी जाती है।”

पेट्सम्ब: “यह (परामर्श) एक वह एक से अधिक सेवार्थी तथा एक उपचारक के बीच अंतःर्कित सम्बन्धों की प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा चिकित्सा मानव व्यवस्था के व्यवस्थापन तथा समस्याओं का समाधान करने, मनोवैज्ञानिक तरीकों का उपयोग किया जाता है।”

रोजर्स: “परामर्श एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सेवार्थी को चिकित्सालय से साथ समझने की सुविधा में उसकी आत्मा की संरचना को शिक्षित करती है और पूर्ण के अस्तित्त्व अनुभव प्रतिक्रियाका होकर परिवर्तन आता में आया होता है।”

प्रारम्भ दो व्यक्तियों के बीच एक गणतंत्र तथा उद्देश्यपूर्ण सम्बन्ध है जो परराम एक परिभाषण समस्या समाधान के लिए मिलता है तथा समस्या के समाधान का मार्ग बनाता है।

दे इंटरनेशनल राउंड एक्स्पीरींस फार दे आईसोसियटी आफ्रीका की अनुसार, “परामर्श के दूसरे से सम्बन्ध स्पष्टकर करने तथा प्रयुक्त होने की गणतान्त्रिक जिनका उद्देश्य तत्कालीन चाहती है जिसका उद्देश्य तत्कालीन करने, व्यावसायिक करने तथा कार्य करने के ऐसे अनुसर प्रदान करता है जिससे वे अधिक संतोषपूर्णतात्तत्ततत कर जाएं।”

अमेरिकन एसोसियेशन आफ्रीका की अनुसार, एक व्यक्ति की उपयोगिता महत्वाकांक्ष तथा एक्सप्रेस तौर पर चाहना जा रहा है और इस प्रकार समाज की सेवा करता है।
कनसाइज आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार: परामर्श (1) परामर्श देने की एक प्रक्रिया व कला है। (2) सेवार्थी को सहायता करने तथा निर्देशित करने की प्रक्रिया है। यह प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा व्यावसायिक आधार पर व्यक्तिगत, सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक समस्याओं के लिए होता है।

परामर्श एक सीखने की प्रक्रिया है। यह कार्य सामाजिक पर्यावरण में एक व्यक्ति द्वारा खुदेर व्यक्ति की सहायता के रूप में किया जाता है। परामर्श देने वाला एक परामर्शदाता होता है जो मनोवैज्ञानिक ज्ञान एवं निपुणताओं से पूर्ण होता है। उसे सेवार्थी के किस प्रकार सहायता की आवश्यकता है तथा किस प्रकार सहायता दी जानी चाहिए वह जानता है। इस परामर्श के माध्यम से सेवार्थी अपनी समस्याओं के समाधान तथा भविष्य में इसी प्रकार की समस्याओं के समाधान के उपायों से सीखता है।

परिभाषाओं का विश्लेषण

पैरे की परामर्श की परिभाषा में निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

1. परामर्श अंतर्क्रिया की एक प्रक्रिया है।
2. इस प्रक्रिया का उद्देश्य परामर्श लेने वाले तथा परामर्श देने वाले के बीच सम्बन्ध स्थापित करना है।
3. परामर्श लेने की आवश्यकता तभी होती है जब वह समस्या या समस्याओं से ग्रस्त होता है तथा समाधान करने में स्वयं समर्थ नहीं होता है।
4. परामर्शदाता आवश्यक सहायता देने में प्रशिक्षित तथा शिक्षित होता है।

सिद्ध ने परामर्श की परिभाषा में निम्नलिखित विशेषताएं बतायी हैं:-

1. परामर्श एक प्रक्रिया है अर्थात् वह सदैव कार्यरत है, जिसके माध्यम से व्यक्ति की समस्या का विश्लेषण, विवेचना तथा समाधान किया जाता है।
2. परामर्श की तकनीक के द्वारा परामर्शदाता परामर्श लेने वाले की रुचि को जानता है, समस्या को समझता है, समस्या के रूप को जानता है तथा तथ्यों को समझते हुए समस्या समाधान के उपाय बताता है।
3. परामर्शदाता परामर्श अथवा सलाह के शोधन में नहीं है बल्कि परामर्श लेने वाले की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह परामर्श को पूरा माने, आधा माने या विलक्कुल न माने।
हां तथा मैकलीन ने अपनी परिभाषा में निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है:-

1. परामर्श एक या एक से अधिक सम्बन्धों का दर्शाता है।
2. सम्बन्ध स्थापित करने के कारण कोई न कोई समस्या होती है।
3. व्यक्ति जो सहायता चाहता है वह उस समस्या को समाधान करने में अपने को अक्षम पाता है।
4. परामर्शदाता एक व्यावसायिक व्यक्ति होता है। अर्थात् परामर्श देने की कला में वह निपुण होता है, उसे उसका प्रशिक्षण मिला होता है।
5. परामर्श का उद्देश्य व्यक्तिगत कठिनाइयों का समाधान करना है।
पेपिन स्काई तथा पेपिन स्काई की परिभाषा में निम्नविशेषता पाई जाती है:-
1. परामर्श एक अंतःक्रिया है जो व्यक्तियों के बीच घटित होती है।
2. इन दो व्यक्तियों में एक परामर्शदाता होता है जो परामर्श देने की व्यक्तिगत भोग्यता तथा दक्षता रखता है तथा दूसरा व्यक्ति जो परामर्श या परामर्श चाहता है। वह ऐसी समस्या से ग्रस्त होता है जिसका उसके पास निदान एवं उपचार नहीं होता है। इसलिए उसे सेवार्थी कहा जाता है।
3. परामर्श का कार्य किसी संस्था के माध्यम से सम्भव होता है।
4. परामर्श का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना है जिससे वह समस्या के कारणों को समझते हुए उसका समाधान कर सके।

पैटर्सन की परिभाषा निम्न विशेषताओं को दर्शाती है:-
1. परामर्श प्रक्रिया में एक उपचारक होता है तथा दूसरा सेवार्थी होता है जो उपचारक के पास सहायता के लिए आता है।
2. परामर्श आंतःविचारक सम्बन्धों की प्रक्रिया है।
3. उपचारक को मानव व्यवहार का पूर्ण ज्ञान होता है तथा वह इसी के आधार पर सेवार्थी के व्यक्तित्व का अध्ययन करता है।
4. उपचारक का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को संरक्षित करना होता है।
5. वह इस कार्य के लिए मनोविज्ञान तथा मनोविज्ञानित्व का उपयोग करता है।

रोजर्स का विचार है कि-
1. परामर्श के द्वारा सेवार्थी अपने मन को हल्का करता है अर्थात् अपने तनाव को कम करता है।
2. सेवार्थी को अवसर प्राप्त होता है कि वह परामर्शदाता की सहायता से अपनी प्रतिभाओं को विकसित कर ले।
3. परामर्श का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी के नकारात्मक विचारों के स्थान पर सकारात्मक विचारों को स्थापित करना है।

रे का मत है कि-
1. परामर्श एक गत्यात्मक तथा उद्देश्यपूर्ण सम्बन्धों को दर्शाता है। अर्थात् परामर्शदाता जितना ही व्यक्तिगत दक्षता से युक्त होगा वह उतना ही अपना प्रभाव सेवार्थी के ऊपर डाल सकेगा तथा उसकी समस्याओं का समाधान करने में सफल होगा।
2. परामर्श किसी विशेष समस्या से सम्बन्धित होता है। परामर्शदाता का उद्देश्य किसी एक समस्या का विश्लेषण, विचारना तथा समाधान करना होता है। इसलिए परामर्श के क्षेत्र के अनुसार ही सेवार्थी को स्वीकार किया जाता है।
3. परामर्श कार्य में न केवल परामर्शदाता बिचार करता है एवं समाधान दृढ़ता है बल्कि सेवार्थी भी बराबर का भागीदार होता है।

इन्स्ट्रेटेड राउड टेक्नोलॉजी डिविजन फार डाइवर्सी-समेट अफ कौसिंग के अनुसार
1. परामर्श के माध्यम से एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित होते हैं तथा इस सम्बन्ध स्थापना
का उद्देश्य विचार विमर्श करता है।
2. इसके माध्यम से तथ्यों की छानबीन की जाती है, विवेचना किया जाता है।
3. इसके द्वारा दूसरों को ऐसे अवसरों की खोज की जाती है जहाँ पर वे एक ओर संतोष प्राप्त कर सकें तथा और अपने जीवन को सुखमय बनाकर आँल से रह सकें।

अमेरिका ऐसोसिएशन आफ्ट फ्रीलांसिंग एंड डेभलाप्मेंट के विचार इस प्रकार हैं-
1. परामर्शदाता का उद्देश्य व्यक्ति की उपयोगिता को बढ़ाना होता है।
2. वह व्यक्ति की महत्ता और शक्ति को बढ़ाता है।
3. प्रत्येक व्यक्ति को अनोखा बनाकर उसकी विशेषताओं को विकसित करता है।
4. इस वैश्विक एवं सामूहिक प्रयास के कारण वह पूरी समाज की सेवा के लिए संकल्पित होता है।

कन्साइज आस्ट्रोफोर्ड ईलिया दिक्सनारी के अनुसार
1. परामर्श, परामर्श देने की एक प्रक्रिया तथा कला है।
2. इसके द्वारा सेवाधीं की सहायता की जाती है तथा विभिन्न क्षेत्रों से उसे निर्देशन प्राप्त होता है।
3. परामर्श देने वाला प्रशिक्षित होता है तथा व्यापारिक के रूप में कार्य करता है।
4. व्यक्तित्व, सामाजिक तथा राष्ट्रीयान्तरिक सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के उपाय बताता है।

जेम्स मिचेल ली तथा नाथनियल जे पैर्स के अनुसार
1. परामर्श दो व्यक्तियों के बीच का समन्वय होता है।
2. इस समन्वय में एक व्यक्ति दूसरे की सहायता करता है।
3. इस सहायता का उद्देश्य दूसरे व्यक्ति को समायोजित करने की कला सिखाना होता है जिससे उसका जीवन सुखमय हो सके।
4. परामर्श के माध्यम से सेवाधीं की अभी की सभी क्षमताओं का पूर्ण प्रकटीकरण सम्भव होता है।
5. इसमें औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार के समन्वय हो सकते हैं।

मेरे तथा आलसेन के विचार से
1. परामर्श एक स्वीकृत तथा विश्वसनीय सम्बन्धों को दर्शाता है।
2. सेवाधीं इसके माध्यम से चिनताओं, परेशानियों को परामर्शदाता के सामने रखता है।
3. वह अपने उद्देश्यों को भी बताता है कि किस कारण वह आया है।
4. वह स्पष्ट करता है कि उसे किस प्रकार की सामाजिक निष्पादनों की आवश्यकता है तथा उसे किस प्रकार के आमबिश्वास की जरूरत है जिससे अपनी समस्याओं का समाधान वह कर सके।

अर्कुट ने परामर्श की निम्न विशेषताएं बताई हैं
1. परामर्श द्वारा व्यक्ति अपने विचार में जानकारी प्राप्त करता है।
2. वह जानता है कि उसमें क्या-क्या गुण हैं, विशेषताओं हैं तथा क्या-क्या नहीं है जिसके कारण वह समस्याग्रस्त है।
3. वह यह भी परामर्श के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है कि कौन से कार्य वह आसानी से पूरा कर सकता है, कौन कठिनाइ से तथा कौन नहीं कर सकता है।

सम्पूर्ण परिभाषाओं का विश्लेषण करने के बाद कहा जा सकता है कि-

1. परामर्श में दो व्यक्ति होते हैं-एक सहायता चाहता है तथा दूसरा व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित होने के कारण सहायता देने में समर्थ होता है।
2. यह आवश्यक है कि दोनों व्यक्ति के बीच सम्बन्धों का आधार पर व्यक्तिगत स्वीकृति हो तथा दोनों ही उसे आदर एवं सम्मान करें।
3. परामर्शदाता को मित्रबृत्त व्यवहार करना चाहिए तथा सहयोग देने की भावना प्रबल हो।
4. परामर्श प्राप्त करने वाले में परामर्शदाता के प्रति विश्वास तथा भरोसा हो।
5. परामृश के माध्यम से सेवाप्रद आत्मनिर्भरता तथा उत्तरदायित्व को पूरा करने की भावना का विकास किया जाता है।
6. परामर्श के माध्यम से सेवाप्रद की सहायता उसकी कमजोरियों को दूर करने तथा उन्हें पूरा तरह उपयोग में लाने का प्रयास किया जाता है जिससे उसकी सफलता वातावरण के रूप में प्रकट होकर उसे समस्याओं के समाधान करने में तथा सुधार जीवन बनाने में सफलता मिल सके।
7. यह केवल सलाह ही नहीं बल्कि उसके माध्यम से सेवाप्रद स्वयं समस्या का मार्ग बदलता है परामर्शदाता केवल सलाह बताता है।
8. परामर्श के माध्यम से व्यक्ति में परिवर्तन लाया जाता है जिससे समस्या का समाधान सम्भव होता है।
9. इसका समान्य मनोवृत्तियों के बदलाव से भी होता है।
10. यद्यपि परामर्श प्रक्रिया में सुधार और बैठकिक ज्ञान का महत्त्व होता है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भावनायें होती हैं जिस पर प्रक्रिया निर्भर होती है। परामर्श में कार्यक्रम का ध्यान सेवा पर न होकर केवल समय पर ही रहता है। परामर्शदाता किसी एक विशेष समस्या से सम्बन्धित सहायता करने में निरुप होता है। जैसा- विवाह परामर्श, व्यवसायिक परामर्श, परिवार परामर्श, विवाहलय परामर्श आदि। उसके ज्ञान, दक्षता, निरुपण, योग्यता तथा समय विशिष्ट सहायता प्रदान करने में ही उपयोग में लाया जाता है।

21.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में परामर्श के अर्थ एवं आवश्यकता के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। शेफर राब्ट एवं गार्डन फेम्स्टन द्वारा दी गई परामर्श की परिभाषा का अध्ययन किया। परामर्श दो व्यक्तियों के बीच एक गुणात्मक तथा उद्देश्यपूर्ण सम्बन्ध है जो परस्पर एक परिभाषित समस्या के समाधान के लिये मिलते हैं तथा समस्या के समाधान का मार्ग बदलते हैं।

21.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. परामर्श के अर्थ का वर्णन कीजिए।
2. परामर्श की प्रमुख परिभाषाओं का वर्णन कीजिए।
21.6 सन्दर्भ ग्रन्थ

अलम, डा. शह एवं गुरु, डा. मोहम्मद, निर्देशन एवं परामर्श का मूलभूत आधार, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

जायसचारा, डा. सीताराम, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, अगरबल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2011

सिंह, डी. के. 0, भारती, ए. के. 0, सोशल वर्क कॉनसेप्ट एंड मैथडज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, डी. के. 0, पालीवाल, सौरभ, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विपणन के भूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्र, पी. डी. 0, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.

सिंह, सूरेन्द्र, मिश्र, पी. डी. 0, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.

मिश्र, पी. डी. 0, सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.

सिंह, डी. के. 0, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सूरेन्द्र, बर्मा, आर. बी. 0, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्रा, पी. डी. 0, मिश्र, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.

166
परामर्श के सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

22.0 उद्देश्य
22.1 प्रस्तावना
22.2 परामर्श के सिद्धांत
  22.2.1 वैयक्तिकरण का सिद्धांत
  22.2.2 अर्थपूर्ण सम्बन्धों का सिद्धांत
  22.2.3 भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन का सिद्धांत
  22.2.4 नियमित सांविधानिक समिलन का सिद्धांत
  22.2.5 स्वीकृति का सिद्धांत
  22.2.6 अनियमित मनोवृत्ति का सिद्धांत
  22.2.7 आत्म निर्णय का सिद्धांत
  22.2.8 गोपनीयता का सिद्धांत

22.3 सारांश
22.4 अभ्यासार्थ प्रश्न
22.5 सन्दर्भ प्रश्न

22.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के उपरांत
1. परामर्श के सिद्धांतों के विषय में जान सकेंगे।
2. परामर्श के सिद्धांतों में वैयक्तिकरण के सिद्धांत का अध्ययन कर सकेंगे।
3. अर्थपूर्ण सम्बन्धों के सिद्धांत के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. इसके पश्चात् आप भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन के सिद्धांत की व्याख्या कर सकेंगे।
5. नियमित सांविधानिक समिलन के सिद्धांत के विषय में भी अध्ययन कर सकेंगे।
6. तत्पश्चात् स्वीकृति के सिद्धांत का वर्णन कर सकेंगे।
7. अनिवृतित मनोवृत्ति के सिद्धांत तथा आत्मनिर्णय सिद्धांत के विषय में भी जान प्राप्त कर सकेंगे तथा
8. अंत में गोपनीयता के सिद्धांत के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।

22.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में परामर्श के सिद्धांत पर विचार किया गया है। परामर्श का उद्देश्य आत्मनिर्णय में बृद्धि करना,
आत्म-विभाषा में बृद्धि करना तथा परावर्तीक एवं सामाजिक सम्बन्धों एवं उनकी गुणवत्ता में बृद्धि करना है।
परामर्श का महत्वपूर्ण कार्य लोगों के विवाह को प्राप्त करने उनकी जीवनचर्या में परावर्तन लाना है। परावर्तन तभी
लाया जा सकता है जब परामर्शदाता को परामर्श के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान हो। परामर्शदाता का यह भी एक
वृद्धिकोष होता है कि प्रत्येक सेवार्थी की समस्या तथा उसका प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है तथा उसके उसी के
अनुसरण सहायता की आवश्यकता होती है। सेवार्थी भी यही चाहता है कि परामर्शदाता उसकी बात को गुप रखे
तथा उस पर पूर्ण ध्यान दे। सभी प्रक्रियाओं में सेवार्थी की सहभागिता महत्वपूर्ण होती है।

22.2 परामर्श के सिद्धांत
परामर्श अत्यूक्तिक सम्बन्ध का एक तरीका है जिसके अन्तर्गत भावनाओं, विचारों तथा मनोवृत्तियों का प्रकटन
सम्भव होता है। परामर्श का उद्देश्य आत्मनिर्णय में बृद्धि करना, आत्म-विभाषा में बृद्धि करना तथा परावर्तीक एवं
sामाजिक सम्बन्धों एवं उनकी गुणवत्ता में बृद्धि करना है। परामर्श का महत्वपूर्ण कार्य लोगों के विवाह को प्राप्त
cरके उनकी जीवनचर्या में परावर्तन लाना है। परावर्तन तभी लाया जा सकता है जब परामर्शदाता को परामर्श के
मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान हो। इस सिद्धांतों के आधार पर ही वह सेवार्थी से समन्वयों को स्थापित करता है तथा
उसमें इसी के आधार पर परावर्तन भी लाता है।
परामर्श के महत्वपूर्ण सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

22.2.1 वैज्ञानिककरण का सिद्धांत
वैज्ञानिककरण का सिद्धांत प्रभावात्मक परामर्श अभ्यास में मूलभूत है क्योंकि इसमें यह विवाह किया जाता है कि
प्रत्येक व्यक्ति की विशेषताओं भिन-भिन होती है। उसकी इच्छाओं, भावनाओं तथा विचार भी भिन-भिन होती हैं।
अतः उसका पुष्ट रूप से अध्ययन करना आवश्यक होता है। परामर्शदाता का यह भी एक दृष्टिकोष होता है कि
प्रत्येक सेवार्थी की समस्या तथा उसका प्रभाव भिन-भिन होता है। अतः उसके उसी के अनुप्रयोग सहायता की
आवश्यकता होती है। सेवार्थी भी यह चाहता है कि परामर्शदाता उसकी बात को गुप रखे तथा उस पर पूर्ण ध्यान
दे। अतः परामर्शदाता के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह सेवार्थी से समन्वयित सभी बातों को जैसे उसका
स्वभाव, अन्तर्वर्ती तथा बाह्य समस्याओं का समाबृत कारण तथा सेवार्थी की मनोवृत्ति, व्यवहार का दंग तथा
परावर्ती एवं सामाजिक सम्बन्धों के विषय में जानकारी प्राप्त करे, जिससे कि सेवार्थी की सहायता सम्बन्ध
के सकने परामर्शदाता सेवार्थी को एक व्यक्ति के रूप में देखता है। उसका तत्त्वात्मक यह है कि वह सेवार्थी की सभी प्रकार
की विशेषताओं को जानने का प्रयत्न करते हुए समस्या की पूर्णता से पहुँचने का प्रयास करता है। यह वैज्ञानिककरण तीन स्तरों पर चलता है। जरुरतमान में वैज्ञानिक समस्याओं के माध्यम से परामर्शदाता सेवार्थी के
अनुभवों को जानने का प्रयत्न करता है। बिगाद के रूप में सेवार्थी अपने सभी प्रकार के अनुभवों का वर्णन करता है।

168
22.2.3 अर्धपूर्ण सम्बन्धों का सिद्धान्त
सम्बन्ध ही वह माध्यम होता है जिसके आधार पर परामर्शदाता सेवार्थी की समस्याओं को समझता है, वास्तविक समस्या का पता चलता है तथा उन तथ्यों एवं कारणों का ज्ञान होता है जो सांस्कृतिक समस्याओं के रूप में संस्कार उत्पन्न करते हैं। प्राप्तात्मक संदर्भ में व्यवसायिक सम्बन्धों में पर्याप्त उत्तरदायित्व, दूरबीन आदि कोंत्राओं की स्वीकृति, तथा सेवार्थी की समस्याओं को एक विशेष सन्दर्भ में देखा जाता है। व्यवसायिक सम्बन्ध अन्य सामाजिक सम्बन्धों में पर्याप्त उत्तरदायित्व, दूरबीन के अधिकारों की स्वीकृति तथा सेवार्थी की समस्याओं को एक विशेष सन्दर्भ में देखा जाता है। व्यवसायिक सम्बन्ध अन्य सामाजिक सम्बन्धों से पृथक प्रकार से मिलता होता है। सामाजिक सम्बन्धों की कोई समय सीमा नहीं होती है, वह व्यवसायिक भावीकरण पर निर्भर होता है। सेवार्थी संस्थाएं में देखा जाता है। यह चाहे अधूरा भोजन पर आमंत्रण नहीं किया जाता है। व्यवसायिक सम्बन्धों के ध्यान पारस्परिक नहीं होता बल्कि सेवार्थी की आवश्यकता पर निर्भर होता है। सेवार्थी के जीवन से सम्बन्धित उसकी भावनाओं का परीक्षण किया जाता है तथा उसके आधार पर सहायता की रूपरेखा निकटता की जाती है। सेवार्थी की रूपरेखा के आधार पर सहायता अन्य समस्याओं को निकटता किया जाता है। सेवार्थी को एक वास्तविक व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। परामर्शदाता यह जानना करता है कि सेवार्थी के संबंध में व्यक्ति घरित हो रहा है। किस प्रकार की संस्था चल रही है वह सेवार्थी की सहायता अन्य निष्पक्षता को समझने तथा एक व्यक्ति के रूप में उसकी महत्ता का अनुभव करने के लिए करता है।

22.2.3 भावनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रकटन का सिद्धान्त
इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी को अपनी भावनाओं विशेष रूप से नकारात्मक भावनाओं के प्रकटन की पूर्वबूँथ तैयार करना है। सेवार्थी की अनेक प्रकार की भावनाओं होती हैं। उसमें संकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार की भावनाएं सम्प्रभुगित होती है। संकारात्मक भावनाओं का प्रकटन घटिणि आदर्शहूँ है लेकिन नकारात्मक भावनाओं का प्रकटन भी अति आदर्श होता है। यह न केवल परायमशों में आदर्श समझा जाता है बल्कि सभी प्रकार की चिकित्सकीय सेवाओं प्राप्त करने के लिए आदर्श होता है, बाह्यक इसके आधार पर सेवार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए संकारात्मक कठोर उठाने जा सकते हैं। उससे समस्त लाभ होते हैं।

- सेवार्थी आयाम अनुभव करता है।
- सेवार्थी को अपनी समस्याओं को समझने में सहायता प्राप्त होती है।
- संकारात्मक संबंध अभी हो जाते हैं।
- सेवार्थी का समस्या के प्रति दृष्टिकोण का पता चलता है।
- यह निर्देशन तथा उपचार में सहायता है।
- मनोवैज्ञानिक आलाम्बन की सेवार्थी की कितनी आवश्यकता है, पता चलता है।
- सेवार्थी की शक्तियों तथा क्षमताओं का ज्ञान होता है।
- सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए सेवार्थी को कितनी आवश्यकता है, पता चलता है।

परामर्शदाता का यह कार्य होता है कि वह इस प्रकार का सामाजिक पर्यावरण तैयार करे, जिसमें सेवार्थी अपने विचारों, भावनाओं तथा अन्य निर्भरता में दर्शित विभिन्न समस्याओं के प्रकट करने में सक्षम हो सके। यद्यपि यह कहना कठिन होता है कि अच्छे सामाजिक बातचीत को कौन-कौन सी विशेषताओं होती हैं लेकिन निम्न विशेषताओं का होना अच्छे सामाजिक पर्यावरण के लिए आवश्यक समझा जाता है।

- परामर्शदाता को सेवार्थी की भावनाओं को महत्वदेना आवश्यक होता है।
- सेवार्थी यह अनुभव करे कि वह अपनी भावनाओं को अपने तरीके से प्रकट कर सकता है।
- परामर्शदाता को जब भी नकारात्मक व्यवहार नहीं प्रदर्शित करना चाहिए।
- परामर्शदाता को अवास्तविक तरीकों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
- सेवार्थी को परामर्शदाता पर विश्वास होना चाहिए।

लेकिन प्रश्न उठता है कि किस प्रकार से अनुकूल वातचीत तैयार किया जाये क्योंकि यह परामर्शदाता के अनुभव पर आधारित होता है। परामर्शदाता का आवश्यक ज्ञान तथा सेवार्थी में सहायता प्राप्त करने की इच्छा अनुकूल वातचीत को बनाने में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्न सहायक होते हैं।

- परामर्शदाता को चाहिए कि वह सेवार्थी से खुलकर वातचीत करे तथा वह स्वयं एवं सेवार्थी दोनों आराम अनुमोद करी।
- परामर्शदाता को शीघ्रता में नहीं होना चाहिए।
- सशक्तकार के लिए अलग से कमरा होना चाहिए जहां पर किसी प्रकार के साशक्तकार के मध्य व्यवहार न उत्पन्न हो।
- परामर्शदाता को बातचीत में प्रश्न पूछना चाहिए तथा कुछ न कुछ भी विचार रखने चाहिए अन्यथा सेवार्थी सोचेगा कि परामर्शदाता कोई रूचि नहीं ले रहा है।
- सेवार्थी की समस्या कितनी सुलझी है तथा कितना समाधान हो पाया है, मूल्यांकन करते हुए चाहिए।
- उसे समय से पहले कोई भी निर्णय नहीं लेना चाहिए।

22.2.9 नियन्त्रित सांबंधिक सम्मलन का सिद्धांत

नियन्त्रित सांबंधिक सम्मलन का तात्पर्य परामर्शदाता की सेवार्थी की भावनाओं, उनके अर्थों तथा उनका उनके अनुकूल प्रयोग से होता है। सम्प्रेषण दोहरी प्रक्रिया होती है। जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कुछ कहता है, वह यह भी चाहता है कि उसका प्रयोग उचित प्राप्त होता है। यदि दूसरा व्यक्ति प्रयोग नहीं करता है तब फिर किसी भी प्रकार का अन्त:प्रक्रिया नहीं होता है।

नियन्त्रित सांबंधिक सम्मलन सिद्धान्त के तीन अंग हैं।

- अ. संवेदनशीलता
- ब. ज्ञान
- र. प्रयोग
(अ) संबंधीतता:
संबंधीतता का तालंपय सेवार्थ की भावनाओं को समझना होता है। कभी-कभी सेवार्थी अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं कर पाता है। कभी-कभी वह बताना नहीं चाहता है। यह प्रायः प्रथम साक्षात्कार के समय घटित होता है।

(ब) ज्ञान
मानव व्यवहार को समझना अत्यंत कठिन होता है। विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार व्यवहार करें यह हम मनोविज्ञान, मनोचिकित्सा विज्ञान तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों से सीखते हैं। आत्म तथा मनोचिकित्सा विज्ञान तथा अन्य विज्ञानों से सीखते हैं। आत्म ज्ञान तथा व्यवसायिक अनुभव मानव व्यवहार को समझने में सहायता करते हैं।

(स) प्रत्युत्तर
प्रत्युत्तर के साधन हैं संबंधीतता तथा ज्ञान, जिनके माध्यम से सेवार्थी की समस्याओं को समझ जाता है तथा सहायता की जाती है। प्रत्युत्तर मनोविज्ञानिक रूप से सेवार्थी की सहायता करते हैं। सेवार्थी महसूस करता है कि उसको एक सेवार्थी के स्थान पर नहीं बल्कि मानव के रूप में परामर्शदाता व्यवहार करता है।

22.2.10 स्वीकृति का सिद्धांत
परामर्शदाता सेवार्थी को जिस रूप में वह है उसी रूप में स्वीकार करता है। उसकी कमियों पर अपनी दुष्टि नहीं दालता है। वह उसे सहयोग, सहानुभूति तथा आवश्यक ज्ञान प्रदान करता है। सभी प्रकार की सहायता में स्वीकृति परमार्शक होती है क्योंकि विभिन्न स्वीकृति के सेवार्थी मानसिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकता है। वह वह मानसिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकता है। यदि वह मानसिक रूप से संतुष्ट न हुआ तो वह न तो अपनी समस्याओं को बतायेगा और न ही दिये जाएँगे सलाह तो पूर्णतः मानेगा। स्वीकृति के सिद्धांत में दो बातें प्रमुख हैं।

एक नकारात्मक तथा दूसरा सकारात्मक। परामर्शदाता सेवार्थी व्यवहार की न तो भर्तियां करता है और नहीं आलोचना करता है, यदि उसका व्यवहार मानव से भिन्न होता है। परामर्शदाता इस सिद्धांत के अनुसार निम्न कार्यों का सम्पादन करता है:

1. वह व्यक्तिक समन्वय का आधार रख वास्तविक तथा मजबूत आधार प्रदान करता है।
2. वह सेवार्थी की समस्याओं के तत्त्वों की खोज करता है।
3. वह सेवार्थी की कमियों तथा अच्छाइयों को जानने का प्रयत्न करता है।
4. सेवार्थी कहाँ-कहाँ असफल हुआ है पता लगता है।
22.2.11 अनियंत्रित मनोवृत्ति का सिद्धान्त

परामर्श सेवा एक विशेष प्रकार के समवेत्यों की सेवा है। निर्णय का तात्पर्य किसी एक व्यक्ति को उसके कार्य अन्यथा अहसास के प्रति उद्देश्य बताना होता है। लेकिन परामर्शदाता का कार्य किसी प्रकार का अन्य मत देना अथवा निर्णय देना नहीं होता है। उसका विश्वास है कि सेवार्थी के समवेत्यों में कोई निर्णय लेना अतार्किक है। वह सेवार्थी को दोषी नहीं दर्शाता है। सेवार्थी की सहायता के लिए वह सेवार्थी तथा उसकी समस्याओं को पूरी तरह से समझने में समय डिविड देगा ताकि वह सक्षम हो। उसका प्रयास उद्देश्य समस्या के कारणों का पता लगाना होता है जिससे परामर्श प्रक्रिया ठीक प्रकार से चल सके तथा सेवार्थी की समस्याओं को सुलझाने का प्रभाव दिखाई दे। इन सुलझाओं को एकत्रित करते समय वह न तो सेवार्थी को आरोपित करता है और न दोषी ठहराता है।

जब सेवार्थी को यह ज्ञान हो जाता है कि न तो उसे दोषी ठहराया जा रहा है और न ही उसकी आलोचना की जा रही है तो वह सुलझाकर साधनों का उपयोग करने लगता है। उसको विश्वास हो जाता है कि परामर्शदाता बास्तव में उसकी सहायता करना चाहता है। वह उचित प्रस्तुत देना प्रारम्भ कर देता है। परामर्शदाता सेवार्थी के मूल्यांकन के स्थान पर अपनी मनोवृत्तियों, कार्यों, समस्याओं को सुलझाने के लिए उपयोग करता है।

22.2.12 आत्म निर्णय का सिद्धान्त

सामाजिक उत्पादन, संबंधित समाजविज्ञान तथा व्यक्तित्व विकास तथा संबंधही ज्ञान में व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता लेने की स्वतंत्रता रोकता है। परामर्श का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी को आत्म निर्णय का अधिकार प्रदान करना होता है। परामर्शदाता को यह अवसर सौंपता कि व्यक्ति में अन्तर होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति के आत्म अनुभूति का अधिकार तथा आतंक छोड़ना, ज्ञान तथा निर्णय करने एवं सामाजिक सम्बन्धों को सुधारने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण सूचक होता है। वह विश्वास करता है कि पारस्परिक सम्बन्धों के माध्यम से सेवार्थी में परिवर्तन आती है तथा अपनी जीवन की समस्याओं को सफलतापूर्वक समाधान करने में सहयोग को प्रोत्साहित करना होता है। दूसरों पर उसकी निर्भरता कम हो जाती है। परामर्शदाता का कार्य सेवार्थी को प्रोत्साहित करना होता है जिससे वह अपनी समस्या की निष्पक्षता रूप से देख सके तथा समाधान के सही एवं मान्यता तरीकों के विषय में ज्ञान अर्जित कर सके। वह सेवार्थी को अनुप्रयोग प्रदान करता है जिससे वह उन दिशाओं में काम कर सके जो उनके लिए आवश्यक होते हैं। इस दिशा में सेवार्थी परामर्शदाता की सहायता चाहता है।

परामर्शदाता आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त का पालन करते हुए सेवार्थी की सहायता सही रूप से समस्या को देखने में करता है। वह सेवार्थी को उभरायांकन से अवगत करता है जिससे समस्या का समाधान सम्भव हो सकता है।

22.2.13 गौरिनीतित का सिद्धान्त

गौरिनीतित के तीन स्तर होते हैं-  
1. वह सूचना जो व्यक्तित्व होती है जिसका यदि लोगों को पता चल जाता है तो उस व्यक्ति की भूमिका लोग ही लगते हैं।  
2. किसी सूचना की गौरिनीतित का उल्लंघन होता है तो भी सेवार्थी की समस्या बढ़ती है।
3. सूचना गूंगा रखने का एक प्रकार का समझौता होता है। परामर्शदाता का यह कर्तव्य होता है कि सभी प्रकार के समझौतों का पालन करे। यदि सेवार्थी को परामर्शदाता में विश्वास नहीं होगा तो फिर उसकी समझौता का समाधान किसी प्रकार से नहीं हो सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परामर्शदाता अपने उत्तरदायित्वों का पालन करने में उपरोक्त सभी प्रकार के सिद्धांतों को ध्यान में रखता है।

22.3 सारांश
प्रस्तुत इंकाई में परामर्श के सिद्धांतों का अध्ययन किया। वैध्यक्तिकता के सिद्धांत तथा अर्थपूर्ण सम्बन्धों के सिद्धांत का अध्ययन किया। तत्पश्चातः भावनाओं के प्रगटन के सिद्धांत तथा निर्धारित सांस्कृतिक सिद्धांत के विषय में जाना। स्वीकृति सिद्धांत तथा अनियंत्रित मनोवृत्ति सिद्धांत के बारे में भी अध्ययन किया तथा अंत में आत्मनिर्णय सिद्धांत तथा गोपनीयता के सिद्धांत के विषय में अध्ययन किया।

22.4 अभ्यासार्थ प्रश्न
1. परामर्श के सिद्धांतों के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।
2. वैध्यक्तिकता का सिद्धांत एवं अर्थपूर्ण सम्बन्धों के सिद्धांत को समझाने के उद्देश्य से वर्णन कीजिए।
3. प्रगटन का सिद्धांत तथा निर्धारित सांस्कृतिक सम्मिलन के सिद्धांतों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त रिपोर्ट प्रणालियों का प्रयोग करें:
   1. स्वीकृति का सिद्धांत
   2. अनियंत्रित मनोवृत्ति का सिद्धांत
   3. आत्म निर्णय का सिद्धांत
   4. गोपनीयता का सिद्धांत

22. सन्दर्भ ग्रंथ
अलम, डा. शाह एवं गुफ्रान, डा. मोहम्मद, निर्देश एवं परामर्श का मूलभूत आधार, जानवर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
जायसबाल, डा. सीतारम, शिक्षा में निर्देश एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन, अगर, 2011
सिंह, डी. ०, राजस्थान, पर्यावरण एवं पर्यटन के लिए, न्यू राउंड बुक कंपनी, लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डी. ०, पालीबाल, सीरियल, मिश्र, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विविधता के नीतियों न्यू राउंड बुक कंपनी, लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी. ०, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुप्रिया, मिश्र, पी. ०, समाज भाषा- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियों, 173
रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्रा, पी. डी., सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी. के., भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुरेन्द्र, वर्मा, आर. बी., भारत में समाज कार्य के क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी. डी., मिश्रा, बी. ना., ब्रह्मा और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
परामर्श के प्रकार

23.0 उद्देश्य
23.1 प्रस्तावना
23.2 परामर्श
   23.2.1 शैक्षिक निर्देशन तथा परामर्श
   23.2.2 जीवनवृत्ति, व्यवसायिक निर्देशन तथा परामर्श
   23.2.3 वैयक्तिक निर्देशन तथा परामर्श
   23.2.4 वैयक्तिक परामर्श
   23.2.5 परामर्श के विकासात्मक कार्य
   23.2.6 सामूहिक परामर्श
23.3 परामर्श के प्रकार
   23.3.1 नैतिक परामर्श
   23.3.2 मनोवैज्ञानिक परामर्श
   23.3.3 मनोविकित्सकीय परामर्श
   23.3.4 छात्र परामर्श
   23.3.5 नियोजन परामर्श
   23.3.6 वैवाहिक परामर्श
   23.3.7 व्यावसायिक एवं जीवनिक परामर्श
   23.3.8 परामर्श के प्रकारों के सम्बन्ध में रोजस्त तथा बैलेन के विचार
23.4 निर्देशात्मक तथा अनिर्देशात्मक परामर्श
   23.4.1 निर्देशात्मक परामर्श
   23.4.2 अनिर्देशात्मक परामर्श
   23.4.3 संग्रही परामर्श
23.5 सारांश
23.6 अभ्यासार्थ प्रश्न
23.7 संदर्भ प्रणय
23.0 उदेश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप- 
1. परामर्श के शीक्षक निदेशन तथा वैचारिक निदेशन परामर्श को समझ सकेंगे।
2. सामाजिक परामर्श के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
3. परामर्श के विकासात्मक कार्यों का अध्ययन कर पाएंगे।
4. परामर्श के प्रकारों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. नैदानिक परामर्श, मनोवैज्ञानिक परामर्श, मनोविकल्पित परामर्श तथा छात्र परामर्श के विषय में ज्ञान कर सकेंगे।
6. तत्परता निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्श के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

23.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में परामर्श के प्रकारों का ज्ञान किया गया है। परामर्श की आवश्यकता आपकाल, तुरंत, जीवनक्रम, अपना स्थिति, जीवन को संकट में डालने वाली वीमारी तथा रोग, कार्यकुम्भ अथवा दौड़ी से निकाल दिया जाना, वैचारिक संचरण तथा अन्य इसी प्रकार की स्थितियों में पड़ती है। नैदानिक शास्त्र व्यक्ति को उसकी भविष्यवाणी के अन्तर्गत में सम्मानित प्रतिक्रिया की अंतिम व्यक्ति की अनुमान दिखाने में मदद कर सकता है। इसके द्वारा व्यक्ति श्रृंखला का निरीक्षण किया जा सकता है तथा विशिष्ट गुणों को निर्देशन के रूप में ध्यान देने का संभवता होता है। किन्तु लक्ष्य व्यक्ति बिशेष को समझना ही होता है। मनोवैज्ञानिक परामर्श व्यक्ति के बारे में उपस्थित समस्या से ही सम्बन्धित नहीं रहता अपितु यह परामर्श प्रारंभ के व्यक्तित्व के विकास पर भी ध्यान देता है। वैचारिक परामर्श में व्यक्ति को उपयोगी जीवन-साधन जैसे चुनाव के लिए राष्ट्र या सहायता प्राप्त की जाती है। निदेशात्मक परामर्श को मान्यता के लिए अनुमति देता है। निदेशात्मक परामर्श में सेवायें को अपनी भावनाओं को स्वतन्त्र रूप से व्यक्त करने का अधिकार प्राप्त किया जाता है और इससे उसकी भावनाओं एवं अभिव्यक्तियों का सही ज्ञान प्राप्त होता है और इस प्रकार समस्या के वातावरण के सही तरीके से सुविधा होती है।

23.2 परामर्श
परामर्श निदेशन का अविकार एवं अपरिलक्षित पश्चात है। रोजमर्रा ने परामर्श को व्यक्ति की मनोवृत्ति तथा व्यवहार परिवर्तन के लिए दी जाने वाली सहायता के रूप में माना है। गिलबर्ट ने इसे दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली गतिशील प्रक्रिया माना है। मायर्स परामर्श की दो व्यक्तियों के मध्य होने वाले समर्थन के रूप में मानता है। इसमें एक व्यक्ति समझ अनुकूलन करने में सहायता पहुँचाता है। व्यक्तियों को उस समय परामर्श की आवश्यकता अधिक होती है जब वे विभिन्न से शिष्य अनुभव करने के पक्षात्मक कार्य जगत में प्रवेश करते हैं। सामाजिक रूप से जो पिछड़े हैं, उन्हें भी अपने विकास के लिए परामर्श सेवाओं की
आवश्यकता होती है। बाल अपराध तथा बुद्धिमानी व्यक्तियों के लिये भी ज्यादा लाभ होता है। इसके अतिरिक्त
उच्चशिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक शिक्षा के लिए भी परामर्श महत्वपूर्ण भूमिका निभाती
हैं। मंजूरिदाता का अपना योगदान मुख्य रूप से निम्न बोगों में आता है:

(1) शैक्षिक, (2) वैयक्तिक तथा सामाजिक (3) जीवनवृत्ति विकासा।

परामर्श सेवा किसी भी व्यक्ति को शैक्षिक, प्रशिक्षण, व्यवसायिक जुआत तथा अपनी जीवनवृत्ति के प्रबंधन में
सहायता करता है। परामर्शदाता निम्न सहायता करता है।

- विद्यालय में विद्यार्थियों की सहायता अपने जीवन लक्ष्यों को निर्धारित करने तथा बाह्य जगत को
  समझने में सहायता करता है।
- प्रारंभिक अध्यापन दिशा, व्यवसायिक प्रशिक्षण, आगे की शिक्षा तथा प्रशिक्षण, नौकरी की पसंद,
  व्यवसाय में परिवर्तन आदि में सहायता करता है।
- वह नौकरी के सम्बन्ध में सूचनाये देता है। कौन सा व्यवसाय उसके लिए उपयुक्त है, यह बताता है।

23.2.1 शैक्षिक निदेशन तथा परामर्श

1. साइकोमेट्रिक परीक्षण करता है।
2. निपुणताओं का अभ्यास करता है।
3. सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने के तरीकें को बताता है।
4. सामन्थरिक निपुणताओं का उपयोग करता है।
5. सेवाओं को जीवन लक्ष्य को निर्धारित करने में सहायता करता है।
6. निर्णय प्रतिक्रिया की निपुणताओं का विकास करता है।

23.2.2 जीवनवृत्ति, व्यवसायिक निदेशन तथा परामर्श

इसके अन्तर्गत निम्नकार्य प्रमुख हैं-  

1. वैयक्तिक बृत्ति का पथ नियोजन करना,
2. बृत्ति सम्बन्धी सूचनाओं देना,
3. व्यवसायिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करना,
4. निर्णय प्रतिक्रिया तथा नियोजन की निपुणता का विकास करना,
5. सेवा प्राप्त करने की निपुणताओं का विकास करना,
6. मोक्षवृत्ति प्रदान करना,
7. रूचियों का परीक्षण करना,
8. रोजगार के अवसरों का ज्ञान करना।
23.2.3 वैयक्तिक निर्देशन तथा परामर्श
इस क्षेत्र में कार्यक्रम की निम्न क्षेत्रों में सहायता करता है:
1. सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करता है।
2. सांस्कृतिक मुद्दों पर विचार करता है।
3. आर्थिक मुद्दों से सम्बन्धित बातचीत करता है।
4. सांवेदिक मुद्दों को स्पष्ट करता है।
5. समस्याओं से संबंधित मुद्दों में गति प्रदान करता है।
6. आपातकालीन स्थिति से समायोजन करने से सम्बन्धित तरीकों को बताता है।
7. संक्रमक कार्य से निपटने से सम्बन्धित मुद्दे पर चर्चा करता है।
8. वैयक्तिक संबंधों को समझने से सम्बन्धित मुद्दों की विवेचना करता है।

23.2.4 वैयक्तिक परामर्श
इस परामर्श सूत्र में निम्नलिखित प्रक्रिया होती है:
1. स्तर का उद्देश्य निर्धारित करना।
2. मित्राधिक और उससाहबद्ध वातावरण तैयार करना।
3. सूचनायें एकजुट करना।
4. सेवाध्यक्ष की आवश्यकताओं का पता लगाना।
5. योजनायें बनाना, प्रक्रिया का निर्माण करना तथा सेवाओं के मूल्यांकन के लिए प्रणालियां विकसित करना।
6. अन्य सदस्यों की सहायता करना।
7. विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान हेतु नयी-नयी योजनायें बनाना।

परामर्श तथा निर्देश के लिए सामाजिक दिशा निर्देश यह है:-
1. किसी परामर्श कार्यक्रम को प्रारंभ के साथ ही साथ इस बात पर विचार करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है।
2. परामर्श सेवा प्रशिक्षण, नियुक्तियों के विकास में तथा जीवन दर्शन को समझने, सुचारू रूप से कार्य समाधान में, नेतृत्व की भूमिका तथा सताहास की भूमिका निभाने में होती है।
3. इस प्रकरण से प्रयास करना चाहिए जिससे वातावरण सेवाध्यक्ष के अनुसरण को सके तथा हर प्रकार से सहायता करने लगे।
4. सेवाध्यक्ष को जब तक आवश्यकता हो तब तक निर्देश सेवाएं प्राप्त होती रहें।
5. सामाजिक पर्यावरण तथा सेवार्थि के बीच परस्पर सहयोग की सतह भरी स्थिति उत्पन्न हो।

23.2.5 परामर्श के विकासात्मक कार्य

1. निर्भरता तथा स्वतंत्रता के तरीकों को उचित प्रकार से निर्धारित करना। बालक शारीरिक रूप से तो आत्म निर्भर हो जाता है लेकिन सामाजिक रूप से मानव सम्बन्धों पर निर्भर होता है। इसी से उसकी वृद्धि सम्भव होती है।
2. आवाहन प्रदान में तरीकों की यथिधृत प्राप्त करना। बालक दूररों के स्वेच्छाप से योग्य योग्यता विकसित करता है साथ ही दूररों के प्रेम को प्राप्त करने की योग्यता विकसित करता है। वह पारस्परिकता के माध्यम से बहुज्ञ के प्रति सबकारात्मक सोच को जन्म देता है।
3. परिवारित होने वाले समुदायों से सम्बन्धित रखने की क्षमता विकसित करता है।
4. चेतना, नैतिकता तथा मूल्यों का विकास करता है।
5. लैंगिक भौमिका का उचित पालन करना सिखाता है।
6. स्वायत्तता की भावना को विकसित करता है।
7. प्रतीक व्यवस्था तथा प्रत्यय मूल्यता का उचित विकास करता है।
8. आत्म अभिज्ञान तथा आत्म प्रकृति का विकास करता है।
9. आप का दूररों जानना तथा दूररों के आत्मसम्बन्ध की रक्षा करता है।
10. विश्वास, पारस्परिकता तथा परस्पर रहने की योग्यता विकसित करता है।
11. अनुकूल तथा अध्ययनशील होने की शक्ति विकसित करता है।
12. आत्मकारिता पर नियंत्रण करना सिखाना एवं सांस्कृतिक प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण करना बताता है।

23.2.6 सामूहिक परामर्श
इस प्रकार की परामर्श सत्र में सेवार्थि एक दूररों की बात को सुनते हैं, एक दूररों की सहायता करते हैं, तथा आवश्यक सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं। परामर्शदाता का कार्य दिशा निर्देशित करना होता है।

23.2.7 मूल्यांकन सेवायें
मूल्यांकन के लिए अनेक प्रकार के परीक्षण किए जाते हैं जिनसे सेवार्थि को मनोवृत्ति तथा योग्यता एवं क्षमता का ज्ञान होता है। निम्नलिखित परीक्षण प्रमुख हैं:

1. उपलब्धि परीक्षण।
2. मनोवृत्ति परीक्षण।
3. योग्यता परीक्षण।

179
23.3 परामर्श के प्रकार

इस दृष्टि से समस्या तथा विषयी अथवा उपबोध्य की दृष्टि से परामर्श को अनेक भागों में बांटा जा सकता है।

1. नैदानिक परामर्श
2. मनोवैज्ञानिक परामर्श
3. मनोचिकित्सकीय परामर्श
4. छात्र परामर्श
5. नियोजन परामर्श
6. वैचारिक परामर्श
7. व्यवसायिक एवं जीविका परामर्श

परामर्श का समबंध जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से समबंध रखने वाली समस्याओं से होता है। उसके अनेक प्रयोजन होते हैं जिन पर हम परामर्श की प्रक्रिया के अंतर्गत विचार कर चुके हैं। प्रयोजनों, क्षेत्रों एवं लक्ष्यों की भिन्नता के आधार पर परामर्श के विभिन्न प्रारूप विकसित हो गये हैं।

23.3.1 नैदानिक परामर्श

एवं बी- पेपिंस्की ने नैदानिक परामर्श शब्द का प्रयोग करके यह सुझाया कि परामर्श का एक प्रारूप नैदानिक परामर्श भी है। नैदानिक परामर्श का अर्थ है-(अ) पूरी तरह न दबे एवं अक्षम न बना देने बाले, असाधारण कार्य-व्यापार समर्थ (ऐतिहासिक अथवा आधिकारिक के अधिकार) अपसमायोजनों का निदान एवं उपचार तथा (ब) परामर्शदाता एवं उपबोध्य के बीच मुख्यतः व्यक्ति तथा आमने-सामने का समबंध।

पेपिंस्की के अनुसार नैदानिक परामर्श का समबंध व्यक्ति के सामान्य कार्य-व्यापार-समवेती अपसमायोजनों से है। उसमें उपबोध्य एवं परामर्शदाता का आमने-सामने का समबंध होता है। इंग्लिश तथा इंग्लिश के अनुसार, “नैदानिक शब्द व्यक्ति को उसकी अधिक अपमानित अपमानिता में अपमान करने की विद्या की ओर संकेत करता है। इसके द्वारा विश्लेषण बोधित करने के निरीक्षण किया जा सकता है तथा विश्लेषण रूपों को निरीक्षण के रूप में प्रश्न किया जा सकता है किन्तु लक्ष्य व्यक्ति विशेष को समझा ही (तथा सहायता करना) होता है।”

इस प्रारूप के अन्तर्गत समस्या का विश्लेषण करने एवं उसका उपचार बताने का प्रयास भी किया जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति की असामान्य दशाओं तथा असामान्य बोधित कर जो सुझाव दिये जाते हैं तथा उपचार बताने जाते हैं। नैदानिक परामर्श के अन्तर्गत आते हैं। नैदानिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान तथा व्यक्ति बोधित उपचार कार्य प्रस्तुत करता है। ऐसे उपबोध्य की
23.3.2 मनोवैज्ञानिक परामर्श

आरो डब्लू.ब्लैट ने मनोवैज्ञानिक परामर्श शब्द का प्रयोग करते हुए लिखा है- "मनोवैज्ञानिक परामर्श का सन्दर्भ अपेक्षाकृत एक जैसे क्रिया-कलापों की बहुरुपता से है। इसको विधेयकविक ढंग की अपेक्षा विशेषतात्मक ढंग से लक्षित करना आमने आमना है। अपनी विशिष्ट प्रक्रियाओं-मुक्त साहचर्य, व्याख्या, अन्यायोग्यता तथा स्पष्ट-विशेषण से मुक्त मनोविषेषण तक की उन क्रिया-कलापों की संख्या नहीं दी जा सकती। वे समोह, मनोवैज्ञानिक आदि विषेष साधनों का प्रयोग नहीं करते। वे केवल उपत्यका एवं चिकित्सक के माध्यम से बातचीत करते हैं। यह बातचीत प्रश्नोत्तर के रूप में हो सकती है, इतिहास के पुनर्विवाद अथवा वैज्ञानिक समस्याओं पर अर्थात बातचीत का रूप हो सकता है। उपन्यास का बनाम बिच्छेदशाली होकर विषय गणित आलाप हो सकता है। अलाप इसके विषयक चिकित्सक उपत्यका को सब कुछ खुलवाने के लिए आगमन करता है। चिकित्सक उत्साहित कर सकता है, जानकारी दे सकता है एवं सलाह दे सकता है। ये अपेक्षाकृत ऐसे विधेयकविक कार्य हैं जो चिकित्सक द्वारा किये जाते हैं और मनोवैज्ञानिक परामर्श के सामान्य अर्थ के अन्तर्गत होते हैं।"

मनोवैज्ञानिक परामर्श में परामर्शदाता एक चिकित्सक की भूमिका होती है और परामर्श चिकित्सक का एक रूप होता है। सामान्य बातचीत द्वारा परामर्शदाता उपदेश का उसकी दमित भावनाओं एवं संबंधों की अभिव्यक्ति करने में सहायता करता है। इस कार्य में पारम्परिक तथा आवश्यक सुविधाएं सुझाव देता हुआ आशावाद करता है जिससे वह अवधि रूप से अपने भावों एवं समस्याओं के व्यक्त कर सकें। इसके द्वारा परामर्श और चिकित्सा बदलों को सामाजिक व्यवस्था करते के लिये कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने जिनमें स्नाइडर का नाम प्रमुख है, तथा शरीर मनोवैज्ञानिक समृद्धि परामर्श प्रचारित कर दिया।

23.3.3 मनोवैज्ञानिक निर्देशन

मनोचिकित्सकीय परामर्श की परिभाषा करते हुए स्नाइडर ने लिखा है- "मनोचिकित्सा यह पत्तन सम्बन्ध है, जिसमें मनोवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति अपने व्यक्ति या व्यक्तियों के सामाजिक अपमानों जो भावात्मक दृष्टिकोणों के परिचार के लिए शाब्दिक माध्यम से सचेत रूप में प्रर्थना करता रहता है और इसमें विषयी (उपोध्य) साम्प्रदेय: अपने व्यक्तिके पुनर्गठन से अवगत रहता है जिसमें से वह गुरु रहा है।"

स्नाइडर की इस व्याख्या पर चर्चा करते हुए मनोवैज्ञानिक परामर्श के दो पहलु हमारे सामने आते हैं। प्रथमतः वह परामर्श दृष्टिकोणों के परिचार से सम्बन्धित है, विषेष रूप से वे दृष्टिकोण जो सामाजिक अपमानों के लिए उत्तरदायी होते हैं। दूसरा पहलु यह है कि मनोवैज्ञानिक परामर्श के दीर्घ उपोध्य में जो परिवर्तन लक्षित होते हैं उससे वह अवगत रहता है। चिकित्सात्मक शाब्द औपचारिक एवं इलाज के क्षेत्र का है। किन्तु जब परामर्श के सन्दर्भ में इसका प्रयोग किया जाता है तो इसका चिकित्सा-सम्बन्ध गुरुत्वाभूत हो जाता।
है और वह केवल उन क्रिया-कलायों का प्रतीक माना जाता है जो उपभोग की कठिनाइयों के समाधान में सहायता करते हैं।

रूप रेग ने मनोविकित्सा एवं परामर्श का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए लिखा है- परामर्श एवं मनोविकित्सा में काफी सामय है। दोनों में भेद करना चाहिए और सम्भवतः अनुपयोगी होगा। एक लालच पर कौनसी या उपभोग की व्यक्तित्व-रचना में परिवर्तन की विश्लेषण, बिशेषता की गहराई तथा भावात्मक अनुरूपता की मात्रा को व्यक्तित्विक करने पर एक प्रक्रम बुद्धि में अन्तर्निहों हो जाता है।

रूप रेग के इस कथन से यह स्पष्ट है कि परामर्श एवं मनोविकित्सा, दोनों एक-दूसरे से मिले हुए हैं। आज यह स्वीकार किया जाना लगा है कि परामर्श में ऐसे तत्त्व हैं जो चिकित्सात्मक प्रकृति के हैं। परामर्श के अन्य अनेक विकासों में महत्व-क्रम की दृष्टि से आजकल सामाजिक अपराधस्थों की समस्याओं को पर्याप्त महत्व दिया जाता है। सामाजिक अपराधस्थों को दूर करने की दृष्टि से मनोविकित्सक परामर्श की प्रयोगिता असंदिध है।

नैदानिक, मनोवैज्ञानिक तथा मनोविकित्सात्मक परामर्श की तुलना-हमने नैदानिक, मनोवैज्ञानिक एवं मनोविकित्सात्मक परामर्शों पर अलग-अलग विचार किया हमने देखा कि परामर्श एवं मनोविकित्सा में अलग निकट का सम्बन्ध है। जहाँ तक नैदानिक एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श का सम्बन्ध है, कुछ बातों को शिरोष रूप से स्पष्ट करना आवश्यक है। नैदानिक परामर्श की सबसे पहली विशेषता यह है कि इसमें व्यक्ति को एक संघटित समूहों के रूप में प्रामाण नहीं होता है। इस और स्पष्ट होते हैं कि नैदानिक परामर्श व्यक्ति की निजी समस्या को ही अपनी केंद्र नहीं बनाता अधिक यह समूह व्यक्तित्व को परिष्कार में रखकर चलता है।

<table>
<thead>
<tr>
<th>परामर्श का नैदानिक</th>
<th>मनोवैज्ञानिक</th>
<th>मनोविकित्सात्मक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. पारस्परिक सम्बन्ध</td>
<td>1. पारस्परिक सम्बन्ध</td>
<td>1. पारस्परिक सम्बन्ध</td>
</tr>
<tr>
<td>2. व्यक्ति की समृद्धि</td>
<td>2. उपभोग की अवस्थानता</td>
<td>2. प्रकृति तथा गहराई की समझना</td>
</tr>
<tr>
<td>3. प्रेरक तथा व्यवहार का समझना</td>
<td>3. उपस्थित समस्या पर विचार</td>
<td>3. सापेक्षता</td>
</tr>
<tr>
<td>4. विकास-अवस्था की दूर करना</td>
<td>4. अपराधस्थों की दूर करना</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

परामर्श का नैदानिक व्यक्ति को संगठित समूहों मानकर चलता है। वह व्यक्ति के समूह व्यवस्था के अंतरिक्ष में प्रेरक एवं व्यवहार को समझने का प्रयत्न करता है। व्यक्ति नैदानिक ने लिखा है- "नैदानिक उपाय का प्रावधान का प्रतिपादन है। यह किसी व्यक्ति के व्यवहार के ठीक की यादों के विषय में सफलता की अध्ययन में रूप से आता है।"

अभिप्राय यह है कि नैदानिक परामर्श व्यक्ति को उसकी समस्या का समाधान एवं संगठन में प्रगति करने का पक्षपाती है।

जहाँ तक मनोवैज्ञानिक परामर्श का सम्बन्ध है, वह स्पष्ट किया जा सकता है कि वह उपाय के व्यक्ति की उपस्थित समस्या से ही सम्बन्धित नहीं रहता अपि हम परामर्श-प्राप्ति के व्यक्तित्व के विकास की ओर भी ध्यान देते हैं। जैसे एम.एम.एस्ट ने अनुसार मनोवैज्ञानिक परामर्श का उद्देश्य "उपभोग के भावना विकास-प्रक्रमों में अवरोध उत्पन्न करने वाली बाधाओं को समझना तथा व्यक्तित्व के विकास को गतिशील करने के लिए उन्हें दूर..."
करता है।'' इस प्रकार मनोवैज्ञानिक परामर्श, परामर्श का यह प्रारूप है जिसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करने में सहायता करना होता है।

मनोवैज्ञानिक एवं मनोविकित्सक परामर्श के अन्तर का जोहार तक सम्बन्ध है, यह कहा गया है कि यह अन्तर पारस्परिकता एवं उपयोग के सम्बन्धों की प्रक्रिया एवं गहराई की सापेक्षता में है। तुम्हारे अंतर यह है कि मनोवैज्ञानिक परामर्श सामान्य व्यक्ति के अपसामान्यों को दूर करने में सहायता करता है। बाद में प्रोटोकल के विकास एवं बेहतर समझ किरकिरी करने में सहायता करता है।

एफ० सी॰ ठाणे के अनुसार 'मनोवैज्ञानिक परामर्श मनोविकित्सक का एक प्रकार है।' उपयुक्त विवेचन के आधार पर कहा जाता है कि नैदानिक, मनोवैज्ञानिक एवं मनोविकित्सक परामर्श की भिन्नताएं उनके उपयोग, विधियों तथा प्रक्रियाओं की भिन्नताओं में खोजी जा सकती हैं।

23.3.4 छात्र परामर्श

छात्र-परामर्श का समस्या छात्रों की समस्याओं से होता है। ये समस्याएं शैक्षणिक संस्था को चुनौती, पाठ्यक्रम, अध्ययन की विधियों, समाजसेवा शैक्षणिक चयन आदि से सम्बंधित होती हैं। नैदानिक परामर्श की भीति ही छात्र-परामर्श का समस्या के कारणों के समय, शैक्षिक परिवेश की समस्याओं से होता है। यह छात्र के समस्या व्यक्तित्व की श्रद्धा करता है। अन्तर के रूप में इससे प्रभावित है कि ''छात्र-परामर्श में छात्रों का मूल चेहरा शैक्षिक होता है। शिक्षा का प्रयोग वैज्ञानिक सम्पर्क की स्थिति में सीधे व्यक्ति की आवश्यकताओं के लिए होता है।'' इस प्रकार छात्र-परामर्श का शैक्षिक्रेखन जीवन को प्रभावित करने वाली समस्याओं से होता है। इसमें शिक्षा का व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रयुक्त किया जाता है।

23.3.5 नियोजन परामर्श

वह परामर्श उपयोग को उसकी योग्यताओं, अभिवृद्धियों एवं दृष्टिकोणों के अनुसार व्यवसाय का चयन करने में सहायता देता है। वहूँशंकरों में, उपयोग जिस प्रकार के कृत्य अथवा पद के अनुरूप योग्यता रखता है एवं जिससे उसे कार्य संतोष मिल सकता है। इस प्रकार के कृत्य में नियोजन प्राप्त करने में नियोजन-परामर्श अनुप्रयोग करता है। नियोजन परामर्श के द्वारा व्यक्तिगत विस्तार विकास के लिए परामर्श प्राप्त करता है और दस्तगीर कार्य करता है। यह परामर्श सही व्यवस्था या वृत्ति अपनाने पर बल देता है। इससे व्यक्ति की शक्ति तथा समय के बचत होता है, और इसके अटक निरीक्षण आते हैं।

23.3.6 वैविध्य परामर्श

परामर्श के इस प्रकार में व्यक्ति को उपयुक्त जीवन-साथी के चुनाव के लिए राय या सहायता प्रदान की जाती है। यदि उपयोग शादीशुदा है तो उसको वैविध्यिक जीवन से सम्बन्ध रखने का साधारण का परामर्श प्रदान किया जाता है। पाश्चात्य देशों में अर्थव्यवस्था के शाहीकरण एवं अधीनीकरण के कारण परिवारों में विपिन की गति ठेज हो रही है। फलस्वरूप वहाँ पर आवश्यक बैविध्यिक परामर्श की जरूरत है। भारत में भी महानगरों की स्थिति बुजुर्ग पास्चात्य देशों से हो रही है और यहाँ पर भी लोग वैविध्य परामर्श की आवश्यकता गम्भीरता से महसूस करने लगे हैं। अनुभविक करण और शाहीकरण की प्रक्रियाएं जितनी ठेज हो रही, पारिवारिक विपिन भी उसी अनुपात में नीचें होगा। अधीनीकरण के क्षेत्रों में पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक सुविधाओं एवं दशाओं के कभी रहती है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी ऐसी स्थिति नहीं है।
23.3.7 व्यावसायिक एवं जीविका परामर्श

जंगलिश तथा जंगलिश के अनुसार इस प्रकार के परामर्श का सम्बन्ध उन प्रक्रियाओं से होता है जो व्यक्ति के द्वारा किसी व्यवसाय के चरण एवं उसकी तैयारी की समस्याओं पर केंद्रित होती है। बुरे शब्दों में, व्यावसायिक परामर्श व्यक्ति की उन समस्याओं को अपना केंद्र बनाता है जो किसी व्यवसाय या जीविका के चुनाव और उसके लिए तैयारी करते समय उसके समस्याओं में समस्याओं आती है।

23.3.8 परामर्श के प्रकारों के सम्बन्ध में रोजर्स तथा वैलेन के विचार

परामर्श के विभिन्न प्रकार के केवल समस्याओं के उन क्षेत्रों का संबंध देते हैं जिनके लिए परामर्श की आवश्यकता पड़ती है। यह उपाधि द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं की प्रकृति पर आधारित होते हैं।

रोजर्स तथा वैलेन के अनुसार परामर्शदाता को हर स्थिति में व्यक्ति उपाधि में रूचि लेने चाहिए न कि केवल प्रारंभिक समस्या में। यह मान लेने पर व्यक्तिगत समस्याओं में परामर्श प्रदान करते तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक कल्याणकर्ताओं में परामर्श देने में कोई नतून अंतर दृष्टिकोण नहीं होता। रोजर्स तथा वैलेन के इस विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति की समस्याओं में परामर्श प्रदान करते समय उपाधि को एक व्यक्ति के रूप में समझना होता है तथा उपाधि का व्यक्तित्व ही परामर्श का केन्द्र होता है। अपने भी व्यक्तित्व को विभिन्न आंशों में विभाजित करके देखना कठिन एवं अनुभावी है।

23.4 निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्श

परामर्श के जिन स्रोतों पर विचार किया गया वे प्रकारात्मक तथा परामर्श के विभिन्न विषयों में सम्बन्धित हैं।

वस्तुतः स्वरूपान्तर अधार पर परामर्श के दो ही प्रारूप किये जा सकते हैं- निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्श। यह प्रारूप उपाधि एवं परामर्श के समस्याओं को निर्धारित करने के उपायों तथा उनके अवलोकन के क्रम पर आधारित है। इन दोनों प्रारूपों पर अलग-अलग विषयों से विचार करना बांधनीय होगा।

23.4.1 निदेशात्मक परामर्श

निदेशात्मक उपाधि में परामर्शदाता का महत्व अधिक होता है। यह उपाधि की समस्याओं के समाधान के लिए उपाय बताता है एवं निदेश देता है। इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता समस्या पर अधिक ध्यान देता है। निदेशीय परामर्श में साक्षात्कार एवं प्रश्नावली पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

2. विशिष्ट तथा एक्सक्रूट के अनुसार निम्नलिखित अभिव्यक्ति निदेशीय परामर्श के विषयों को स्थापित करते हैं- अपने प्रश्नाक्षण, अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर परामर्शदाता समस्या के समाधान के लिए अच्छी सलाह कर सकता है।
3. परामर्श का बौद्धिक प्रक्रिया है।
4. अपने पुरुषों तथा सुननेवालों के अभाव के कारण उपाधि समस्या का समाधान नहीं मिलता।
5. समस्या के समाधान की प्रक्रिया के माध्यम से ही परामर्श का प्रयोग उपलब्ध होता है।
6. निदेशात्मक परामर्श में परामर्शदाता उपाधि की समस्या के समाधान में विशेष दिलचस्पी लेता है। वह विभिन्न प्रक्रियाओं तथा उपकरणों के माध्यम से उनके लिए सही संप्रभुत करता है तथा उनका विशेषण करके छात्र की
समस्या के कारणों की खोज करता है। कारणों का निदान कर लेने पर वह समस्या के समाधान के लिए निदेशात्मक परामर्श करता है। इस प्रकार निदेशात्मक परामर्श की समस्या-केन्द्रित परामर्श भी कहा जा सकता है।

23.4.2 अनिदेशात्मक परामर्श

निदेशात्मक परामर्श के विपरीत अनिदेशात्मक परामर्श उपबोध्य-केन्द्रित होता है। इस प्रकार के परामर्श में उपबोध्य को बिना किसी प्रत्येक निर्देश के आत्मप्रभुव्व एवं आत्मसिद्धि तथा आत्मनिरंतरता की ओर उन्मुख किया जाता है।

अनिदेशीय परामर्श का प्रमुख एवं जोरदार व्याख्याता कारों रोजगर को माना जाता है। उन्होंने परामर्श के इस प्रारूप का उपयोग शैक्षिक, व्यवसायिक तथा वैज्ञानिक आदि अनेक समस्याओं के समाधान के लिए किया है। रोजगर ने अनिदेशीय परामर्श की तीन विशेषताएं बताई हैं:-

1) उपबोध्य-केन्द्रित सम्बन्ध - रोजगर ने अनिदेशात्मक परामर्श में उपबोध्य एवं परामर्शदाता के सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ऐसे परामर्श में परामर्शदाता उपबोध्य की वैकल्पिक स्थितियां को समाधान करता है। परामर्शदाता उपबोध्य के लिए किसी निर्णय विशेष को नहीं सुझाता अर्थात् अनितम निर्णय उपबोध्य को ही करता होता है। परामर्शदाता ऐसा बातचीत उपनन करता है जिसमें उपबोध्य अपनी समस्या का समाधान स्वयं खोज लेता है।

2) भावना तथा आवश्यक के महत्व - अनिदेशात्मक परामर्श में उपबोध्य को अपनी भावनाओं को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है और इससे उसकी भावनाओं एवं अभिभावकों का सही ज्ञान उपलब्ध होता है और इस प्रकार समस्या का वास्तविक हल प्राप्त करने में सुविधा होती है। इसमें महत्व भावों की अभिव्यक्ति को दिया जाता है तथा वैदिक विशेषता का गौण माना जाता है।

3) उचित बातचीत - उपबोध्य-केन्द्रित होने के कारण अनिदेशीय परामर्श में उपबोध्य को भावों तथा अभिभावकों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है। वह तभी सम्भव है जबकि परामर्शदाता इस प्रकार का बातचीत उपनन करने में सहयोग दे जिसमें भावों अपने विवेक का उपयोग निर्णय लेने के लिए कर सके तथा वह अपने को अच्छी तरह ज्ञान सके। इसमें परामर्शदाता तत्स्थानांतरण से उपबोध्य की गातों पर गौर करता है, वह कोई निर्णय नहीं होता।

अनिदेशात्मक परामर्श के सम्बन्ध में स्नाइडर के रूढ़ियां के विवरण

अनिदेशात्मक परामर्श के रूप में रितियाँ स्नाइडर के मनमोलन विषय के बढ़े उपयोगी हैं जो उन्होंने एक लेख में व्यक्त किये हैं। उन्होंने अनिदेशीय परामर्श के चार प्रमुख अभिग्रह स्वीकार किये हैं:-

1. जीवन लक्ष्य में स्वतंत्रता - उपबोध्य अपने जीवन के प्रयोजन को निर्धारित करने में स्वतंत्र है, चाहे परामर्शदाता की राय कुछ भी हो।
2. अधिकारिक सन्नोष - अधिकारिक सन्नोष की प्राप्ति के लिए उपबोध्य उद्देश्य का बरण स्वयं करेगा।
3. स्वतंत्र निर्णय की क्षमता - परामर्श की प्रक्रिया के द्वारा वह योगदान देने के बाद स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर लेगा।
4. समायोजन समस्या - भावात्मक संधर्म वालवृत्त समायोजन के प्रमुख बाधाएं हैं।

अनिदेशात्मक परामर्श के प्रमुख विषय
उपयुक्त विशेषता के आधार पर अनिदेशात्मक परामर्श के आधारभूत सिद्धान्तों का उलेख इस प्रकार किया जा सकता है -

(1) उपबोध की सत्य्क्षण का आदर- अनिदेशात्मक परामर्श में उपबोध की सत्य्क्षण एवं उसकी वैधिकता स्वायत्त को परिवर्त आदर प्रदान किया जाता है। परामर्शदाता बिना कोई निर्णय या निर्देशन दिये उपबोध की सहायता के लिए तत्पर रहता है। अत्यंत निर्णय उपबोध को ही लेना होता है। यह कहा जा सकता है कि अनिदेशीय परामर्श की समायोजन एवं अनुकूलन क्षमता को स्वीकार करता है। उपबोध का इस क्षमता में विश्वास अनिदेशात्मक परामर्श का आधारभूत सिद्धान्त स्वीकार किया गया है।

(2) उपबोध के समग्र व्यक्तित्व का ज्ञान - अनिदेशीय परामर्श का स्वूरा प्रमुख सिद्धांत यह है कि उपबोध के समग्र व्यक्तित्व को अपनी दृष्टि में रखता है इसलिए इस प्रकार के परामर्श का लक्ष्य उसी उपस्थिति अथवा विशेष समस्या का समाधान प्रस्तुत करना न होकर व्यक्ति की समायोजन एवं अनुकूलन क्षमता का विचार है।

(3) उपबोध के विचारों की भिन्नता के प्रति सहिष्णुता एवं स्वीकृति का सिद्धान्त- अनिदेशात्मक परामर्श के दौरान या बिकल्प स्वाभाविक है कि उपबोध परामर्शदाता के विचारों से भिन्न विचार रखता है। इसलिए वैचारिक भिन्नता के प्रति सहिष्णु होना अनिदेशात्मक परामर्श का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत है। परामर्शदाता को तत्कालीन उपबोध में वह विश्वास उत्पन्न करना चाहिए कि वह उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुन रहा है और मान रहा है।

(4) उपबोध को स्वयं को तथा अपनी शक्ति को समझने में समर्थ बनाना - अनिदेशात्मक परामर्श का लक्ष्य उपबोध को अपनी शक्तियों को समझने एवं अपनी सम्भवनाओं को यथास्थिति जानने में सहयोग देना होता है। परामर्श की अवस्थाओं का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिए जिससे परामर्शदाता की निर्णय लेने की एवं अनुकूलन की शक्ति का विकास हो।

निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्श के अन्तर

निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्श के अन्तर विभिन्न परामर्शदाताओं द्वारा स्वीकृत सिद्धान्तों एवं प्रयुक्त प्रतिबिधियों पर आधारित है। बसतूँ: दोनों में कोई लक्ष्यवाद भिन्नता नहीं है। कहा जाता है कि निदेशात्मक एवं अनिदेशात्मक परामर्श एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने के अलग-अलग साधन हैं। फिर भी साधनगत अन्तरों को समझ लेने वाले नहीं है। दोनों में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित हैं-

(1) समस्या हल करने की क्षमता - अनिदेशीय परामर्श में यह स्वीकार किया जाता है कि व्यक्तियों में अपनी समस्याओं के हल के लिए शक्ति एवं क्षमता मौजूद होती है, उसे केवल इस शक्ति एवं क्षमता के अभावस्था अथवा पहचान करने की आवश्यकता होती है। निदेशीय परामर्श इसे स्वीकार नहीं करता। निदेशात्मक परामर्श का यह अभिव्यक्ति है कि व्यक्ति की क्षमता की सीमाएं होती हैं। उसके लिए अपनी समस्याओं का पूर्वोपहरुका अध्ययन सम्बन्ध नहीं हो पाता।

(2) भावात्मक दृष्टिकोण - स्वूरा अन्तर यह है कि अनिदेशात्मक परामर्श में उपबोध के भावात्मक दृष्टिकोण को अपना महत्वपूर्ण मानता जाता है और भावात्मक सीटों की अभिव्यक्ति का प्रयत्न किया जाता है, जबकि निदेशीय परामर्श में समस्या के बाह्यिक पहलू को अधिक महत्व दिया जाता है। समस्या के समाधान का प्रयत्न निदेशीय परामर्श के द्वारा किया जाता है।
(3) व्यक्ति केन्द्रित होना - अनिदेशीय परामर्श व्यक्ति-केन्द्रित है तथा निदेशीय परामर्श समस्या केन्द्रित है।

(4) संशोधन को महत्व - अनिदेशात्मक परामर्श में संशोधन को अधिक महत्व दिया जाता है तथा निदेशात्मक परामर्श में विशेषण को।

(5) अधिक समय लगना - समय की दृष्टि से अनिदेशीय परामर्श अपेक्षाकृत अधिक समय लेता है।

(6) जीवन-इतिहास का अध्ययन - अनिदेशीय परामर्श उपबोध्य के जीवन-इतिहास का अध्ययन नहीं करता है जबकि निदेशात्मक परामर्श के अन्तर्गत व्यक्ति के गत जीवन का अध्ययन अनवार्त समझा जाता है।

23.4.3 संग्रही परामर्श

जो परामर्श दाता निदेशात्मक अथवा अनिदेशात्मक विचारधाराओं से सहमत नहीं हैं उन्होंने परामर्श के अन्य प्रारूप का विकास किया है जिसे संग्रही या समन्वित परामर्श कहा जाता है। संग्रही परामर्श में निदेशात्मक एवं अनिदेशात्मक दोनों प्रारूपों की अच्छी बातों को प्राप्त किया गया है। इस प्रकार से यह दोनों के बीच का परामर्श प्रारूप है जिसे मतभेदात्मक कहा जा सकता है।

संग्रही परामर्श की प्रकृति के अनुसार इसमें आवश्यक होने पर तथा उपबोध्य के हित में होने पर भावात्मक अभिव्यक्ति को नियन्त्रित भी किया जाता है। इसमें परामर्श-दाता पूर्वानुमान तत्काल नहीं रहता। यह प्रारूप उपबोध्य को अन्वेषणकृत रूप से अध्ययन करने में उचित नहीं समझता। अवस्था के अनुसार उपबोध्य एवं परामर्श-दाता के समन्वय में कुछ अधिकारिकता दूरी विचयम करती है।

परामर्श का संग्रही प्रारूप अभी विकसित हो रहा है और इसका निष्पक्ष स्वरूप निर्धारित हो पाया है। ज्यादा परामर्श-दाताओं द्वारा जिन प्रतिबिधियों का उपयोग किया जा रहा है वे संग्रही ही हैं। वे प्रतिबिधियों निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक दोनों प्रकार के परामर्शों से ग्राहण की जाती है। वस्तुतः संग्रही परामर्श अतिवादी विचारधाराओं से हटकर परामर्श का एक सत्त्वित प्रारूप विकसित करने का एक महत्वपूर्ण पथ है। अच्छी ओर आवश्यक बातों का ग्रहण एवं अन्वेषणकृत तथा कम उपयोगी बातों का परित्याग करके इससे परामर्श के समन्वय स्वरूप को प्राप्त करने का यति किया जाता है।

23.5 सारांश

प्रयोगियों, शेषों एवं लक्ष्यों की भिन्नता के आधार पर परामर्श के समन्वय व्यक्ति के विकास हुआ है। एच० बी० पेपिकासी ने नैदेशिक परामर्श को परामर्श का एक प्रारूप माना। नैदेशिक परामर्श का समन्वय व्यक्ति के सामान्य कार्य-व्यापार-सम्बन्धी अभ्याससंशोधनों से है। इसमें उपबोध्य तथा परामर्श-दाता के आयोजन-सामने का समन्वय विचयम करता है। ज्या० डब्लू० हाइट मनोवैज्ञानिक परामर्श को चिकित्सा का एक प्रारूप मानी। इस प्रारूप में परामर्श को चिकित्सा का एक रूप माना जाता है। किन्तु इसमें उपबोध्य तथा चिकित्सक के वातावरण का महत्व अधिक होता है।

परामर्श का समन्वय चिकित्सा से जुड़ा जाने पर मनोवैज्ञानिकों ने मनोवैज्ञानिक परामर्श का विकास किया। इन मनोवैज्ञानिकों में स्वाइड के नाम प्रसुख है। स्वाइड के अनुसार, “मनोवैज्ञानिक परामर्श समन्वय समस्या है जिसमें मनोवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति या व्यक्तियों के सामाजिक अपसमायोजन बाले भावात्मक दृष्टिकोणों के परिखार के लिए शान्तिक माध्यम से संचेत रूप से व्रत्य करता रहता है और इसमें विषयी सापेक्षता अपने
23. अभ्यासार्थ प्रश्न

1. परामर्श को समझाते हुए इसके प्रकारों का विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।

2. परामर्श के विकासात्मक कार्य एवं सामूहिक परामर्श में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

3. नैदानिक, मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सकीय परामर्श में अन्तर स्पष्ट करते हुए समझाइये।

4. टिप्पणी लिखिए:-
   1. वैज्ञानिक परामर्श
   2. मिश्रित परामर्श
   3. निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्श

23. सन्दर्भ ग्रन्थ

आलम, डा. शाह एवं शुक्रान, डा. मोहम्मद, निर्देशन एवं परामर्श का मूलभूत आधार, जानवा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

जायस्वाल, डा. सीताराम, विश्व में निर्देशन एवं परामर्श, अग्रज प्रकाशन, अगर, 2011

सिंह, डी. के. भारती, ए. के., सामाजिक विश्व एंड पारमेट्रेक्स, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, डी. के. भारती, ए. के., पालीबाल, सीरर्त, मिश्रा, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विचारण के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्रा, पी. डी. के., सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.

सिंह, सुनेत्रा, मिश्रा, पी. डी. के., समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2006.

मिश्रा, पी. डी. के., सामाजिक वैज्ञानिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1985.

सिंह, डी. के. भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डियो लखनऊ, वर्ष 2011.

सिंह, सुनेत्रा, बर्मा, नारायण, ए. बी. भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2009.

मिश्रा, पी. डी. के., मिश्रा, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कंपनी लखनऊ, वर्ष 2007.
परामर्श के लक्ष्य

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य
24.1 प्रस्तावना
24.2 परामर्श
24.3 परामर्श के उद्देश्य की दिशाएँ
24.4 परामर्श सेवा के लक्ष्य
24.5 समाज कार्य में परामर्श का लक्ष्य
24.6 सारांश
24.7 अभ्यासार्थ प्रश्न
24.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

24.0 उद्देश्य
प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -
1. परामर्श के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. तत्पश्चात् परामर्श के उद्देश्य तथा दिशाओं के विषय में अध्ययन कर सकेंगे।
3. इसके पश्चात् परामर्श सेवा के लक्ष्यों को समझ सकेंगे।
4. समाज कार्य में परामर्श की भूमिका के विषय में जान सकेंगे।

24.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में परामर्श के लक्ष्य का वर्णन किया गया है। कुछ विद्वान् ने परामर्श एवं मनोविकित्व को एकाधिकारी माना है। जब कोई व्यक्ति मनोविकित्वक है हैसियत से कार्य करता है तब उसका उद्देश्य प्रभाव डालने अथवा सहमति प्राप्त न होकर केवल अन्ध्य स्वास्थ्य की दशा की पुनर्स्थापित करना होता है। एक मनोविकित्व को न तो कुछ बेचना होता है और न ही बिहितोकरण करना। परामर्श का लघुकालीन लक्ष्य सेवार्थी को लाना अपराध या राहत पहुँचाना है तथा कार्यात्मक, शारीरिक एवं मानसिक गिरावट को रोकना है। दीर्घकालीन लक्ष्य के अंतर्गत सेवार्थी को कार्यात्मक व्यक्तित्व बनाना, आत्मविश्वास को जागृत करना तथा ऐसी ऊर्जा पैदा करना जिससे अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त जिसके लिए सेवार्थी आया है तथा
24.2 परामर्श

परामर्श के दर्शाई भरे बचत करने समय हमें परामर्श के लक्ष्यों पर विचार किया था। किन्तु यहाँ पर परामर्श की प्रक्रिया का मुख्य या होने के कारण लक्ष्य को विबेचन विस्तार से अपेक्षित है। परामर्श पर मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृत कुछ उद्देश्यों का पुनरायण यहाँ प्रस्तुत है। ध्यान रखने की बात यह है कि इन विधानों ने परामर्श एवं मनोवैज्ञानिकों को एकाक्तवादी माना है। अतः जहाँ परामर्श एवं परामर्शदाता से समबन्ध रखते हैं वहें मनोवैज्ञानिकों से भी इन्हें समबन्ध लगा जाता है।

रार्बे, डॉ. यू.एल. वाइट के अनुसार, जब कोई व्यक्ति मनोवैज्ञानिक की हैसियत से कार्य करता है तब उसका उद्देश्य प्रभाव दर्ज करने अथवा सहायता प्राप्त न होकर केवल अच्छे स्वास्थ्य की दशा को पुनर्गठित करना होता है। एक मनोवैज्ञानिक को न तो कुछ बतोता होता है और न ही बिहिनेत्रकर्म करना है। हालांकि इस वृद्धिकोण से यह स्पष्ट है कि मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदाता का कार्य केवल उपयोगिक के मानकीक स्वास्थ्य को सामाय बनाना होता है। अपना कोई आघात या वृद्धिकोण योजना पर आरोपित करना उसका लक्ष्य नहीं होता। परामर्श में परामर्शदाता उपयोग को किसी खास विचारधारा या जीवन पद्धति को स्वीकार करने का आघात नहीं करता।

ग्राहक केन्द्रित उपयोगिक की प्रकृति पर विचार करते हुए ५० बी.ई. व्याय तथा जी.ए जेने पाईने पर परामर्शदाता द्वारा विशेष रूप से माध्यमिक स्कूल रतन पर विद्यार्थी को अपने प्रा्यं एवं स्वयं क्रियाशील बनाने, विभिन्न रूप तथा रचनात्मक दिशा में बदले बदले, अन्य साधनों एवं सामाजिकाओं के उपयोग व समाजीकरण की ओर बढ़ते में सहायता देने के लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित रखने के लिए कहा है। इस प्रकार परामर्श का लक्ष्य विद्यार्थी को अच्छे परिपक्व अक्ष से बचारा करने एवं स्वयं कार्य करने में सहायता देना है। विद्यार्थी को अपने योग्यता एवं समाज का पता लगाने तथा उनका उसके सामाजिक विकास में उपयोग करना परामर्श का लक्ष्य है।

सामाजिक नैदानिक परामर्श पर विचार करते हुए ब्याय एवं पाईने ने जिन लक्ष्यों को ध्यान में रखने को कहा है, वे हैं: “उपयोग को अच्छा अच्छा करने में सहायता देने अर्थात् उपयोग को अपने महत्त्व को स्वीकार करने, वृद्धिकोण ‘स्व’ एवं ‘आदर्श’ स्व’ के बीच के अन्तर को मिटाने में सहायता देने तथा लोगों को अपनी वृद्धिकोण समस्याओं में अपेक्षाकृत स्पष्ट से विचार करने में सहायता देने से समभागित है।

इस प्रकार ब्याय तथा पाईने व्यक्ति को अपनी क्षमता एवं सीमाओं से परिचित करना एवं अपनी समस्याओं के प्रति संदृश्य का विचार करना परामर्श का लक्ष्य स्वीकार करते हैं। प्रा्यं लोग अपने सम्बन्ध में एक अच्छे वास्तविक आदर्श धारणा बिकसित कर लेते हैं जो उनकी वास्तविक क्षमता से भिन्न होती है। इसी भिन्नता को दूर करने के लिए ब्याय तथा पाईने वास्तविक ‘स्व’ एवं ‘आदर्श’ स्व’ की दूसरी मिटाने की कार्य करते हैं।

अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ ने परामर्श के उद्देश्यों को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया है:

(अ) उपयोग द्वारा अपनी क्षमताओं, अभिप्रेक्षा तथा आत्म वृद्धिकोण की वयस्कत वृद्धिकृत; (ब) उपयोग के द्वारा सामाजिक, आर्थिक तथा व्यवस्थापक परीक्षण के साथ तर्कसंगत सामाज्य की प्राप्ति; तथा (स) वृद्धिकोण भिन्नताओं की समाज द्वारा स्वीकृति तथा समस्या, रोजगार एवं वैचारिक समस्याओं के क्षेत्र में उनका निश्चित
उपयुक्त उद्देश्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि परामर्श के लक्ष्य में कई बातें आ जाती हैं। सर्वप्रथम व्यक्ति का अपने सम्बन्ध में यही मूल्यांकन प्राप्त करना परामर्श का लक्ष्य है। तत्पश्चात् व्यक्ति का अपने परिवेश के साथ किस प्रकार का समाजज्ञ है, इस पर व्यक्ति देना चाहिए। व्यक्ति जीवन में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक अपने परिवेश के साथ उसका सन्नाटनक सामाजिक स्थायित्व न हो जाया। समाज में उपलब्ध आर्थिक एवं ध्वनिशारणक क्षेत्रों एवं समाजवादों को उसे अपनी गोत्रवादों एवं सीमाओं के सन्दर्भ में देखना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य के लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से उसका सामाजिक प्रावधान पर होना चाहिए। परामर्श के उद्देश्य की जिन तीन दिशाओं को ऊपर विचार किया गया है उन पर अब अलग-अलग विचार करें।

### 24.3 परामर्श के उद्देश्य की दिशाएं

1. **आत्म-ज्ञान**
   
   व्यक्ति को अपने मूल्यांकन में सहायता करना परामर्श का लक्ष्य है। व्यक्ति को अपने विषय में जानने, अपनी शक्ति और समाधानाओं को पहचानने हेतु इस परामर्श की आवश्यकता पड़ती है। परामर्श एक प्रकार से उस ज्ञाति की तरह है जिसके आधार पर व्यक्ति को अपने अस्तित्व का स्वरूप को पहचानने में सहायता मिलती है। इनमें कोई सदैव नहीं कि व्यक्ति के आत्म-ज्ञान के लिए तथा उसके मूल्यांकन के लिए परामर्श की अभाव विभिन्नकारी हेतु सहायता लेना पड़ता है। परामर्श साथाकार अथवा ग्राहक-केन्द्रित परामर्श अथवा अनिवार्यकार उपयोग आदि अनेक प्रकार से व्यक्ति की अपने यथार्थ व्यक्ति से परिचित होने में सहायता की जाती है। परामर्श प्रावधान की सफलता इस ग्राहक-द्वारा आकृति जाती है कि कहाँ तक उस उपयोगी ने उसके व्यवस्थापन आत्म-ज्ञान से अद्यावधि करते में सहायक रहा है। लियोगा टायलर के अनुसार, ‘‘हम परामर्श को एक सहायक प्रकार के रूप में प्रमुख करना है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को बल्लिदान नहीं है अन्यतः उसको उस गोत्रों के उपयोग में समर्थ बनाना है जो उसके अनुयाय इस समय जीवन का समाप्त करने के लिए मौजूद हैं।’’ हम परामर्श से इस उपलब्धि की आशा करें कि उपयोगी अपनी ओर से कुछ रचनात्मक क्रिया करें।

   
   इस प्रकार परामर्श की प्रक्रिया व्यक्ति को आत्म-परिशुष्ठ के साथ-साथ उसे अपनी सहायता स्वरूप करने योग्य बनाता अथवा यह विभिन्न समस्याओं के प्रति अपनी अन्तर्दृष्टि विकसित कर अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार उसका समाधान खोजने में समर्थ है।

2. **आत्म-स्वीकृति**
   
   परामर्श का दूसरा प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का आत्म-स्वीकृति में सहायता करना है। व्यक्ति का जो व्यक्तित्व अथवा प्रतिभा होती है उसे यह स्वच्छ स्वीकार करें। कई बार लोग अपने बारे में उचित दृष्टिकोण नहीं बना पाते, बे दूसरों के द्वारा जैसे व्यक्ति करिये जाते हैं उसी रूप में अपने को मान लेते हैं। किंतु व्यक्ति का जहाँ एक खुशरोशी के द्वारा स्वीकृत रूप होता है वहाँ उसको अपने स्वरूप को स्वच्छ भी स्वीकार कर पड़ता है। कोई व्यक्ति यदि बाहर आकृति से दृष्टिगत हो तो उसे अपने प्रति कुल अथवा निर्भरता के धारणा नहीं बना लेने चाहिए, अथवा उचित परामर्श द्वारा उसे समझाया जाए। व्यक्ति का व्यवहार से अत्यन्त सुन्दर है किंतु उसका स्वभाव एवं आचरण अच्छा नहीं है तो वह यथार्थ: सुन्दर नहीं होगा। इस प्रकार उद्देश्य होने हेतु भी व्यक्ति अपने गुणों एवं अर्जे स्वभाव से सुन्दर लगता है और लोग उसकी ओर आकृति होते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि व्यक्ति अपने यथार्थ मूल्यांकन के रूप में अपने व्यवस्थापित रूप को जीवन करें। परामर्श इस कारण में उसकी सहायता कर सकता है।
(3) सामाजिक समस्या

परामर्श का एक त्रुटि जीवन के लक्ष्यों का निर्धारण भी आसानी से कर सकता है तथा उसकी प्राप्ति में सफल हो सकता है।

24.4 परामर्श सेवा के लक्ष्य

किसी भी प्रकार की सेवा करने के लिए उसके लक्ष्यों का जानना आवश्यक होता है। लक्ष्य ढालने की विशेष प्रकार करने हेतु उसके प्रकार का जानना आवश्यक होता है। तथा कायम मूल्यांकन में सहायता मिलती है। लक्ष्य निश्चित होने पर सेवा ढालने वाले तथा सेवार्थी दोनों के झाँस में रहता है कि उन्हें किस प्रकार की सेवायें प्राप्त हो सकती है। परामर्शादाता के लिए भी यही वात महत्त्व की होती है।

1. सेवार्थी के व्यवहार का झाँस प्राप्त करना: मानव व्यवहार को समझना एक कठिन समस्या है। यह व्यवहार निश्चित उद्देश्यों तथा प्रवृत्तियों का अनुसार प्रवृत्तिगत होता है। वैज्ञानिक तथा सामाजिक कार्य दोनों ही व्यवहार को प्रभावित करते हैं। परामर्शादाता का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह पहले सेवार्थी के व्यवहार की विचारण कर तथा निश्चित कर पहुँचे कि वे कौन से कार्य है जो उस पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। इस कार्य के लिए उसे न केवल सेवार्थी के विषय में ज्ञान प्राप्त करना होगा। बल्कि सामाजिक अवतारण से विभिन्न पहलुओं को भी समझना होगा।

2. सेवार्थी की समस्याओं का व्यक्ति का व्यवहार प्रेरकों के द्वारा संचालित तथा निर्दिष्ट होता है। उसके मूल में कोई न कोई इस प्रेरणा होती है जिसके प्रभाव से तब तक वह कार्य करता रहता है जब तक उसके लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है। सम्प्रेषण के द्वारा सामाजिक समस्या का पता लगाना है कि व्यक्ति को विशिष्ट व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है? साथ ही वह व्यवहार के विभिन्न कार्यों के प्रश्न होते हैं। परामर्शादाता का पता लगाना है कि सेवार्थी में किस प्रकार की शक्तियों सहायता हैं। तथा कौन विभिन्न दिशा में कार्य कर रहे हैं। सम्प्रेषण के स्तर को जानकार सेवार्थी में अनुकूल सम्प्रेषण को प्रेरित करता है। जिसमें जब आपनी समस्या सुलझाने में सफल होता है।

3. सेवार्थी की भवनाओं का पता लगाना: भवनाओं में बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है तथा उनका समायोजन प्रमाण भी महत्व रखता है। भवनाओं तथा तो कई प्रकार की होती है फर्स्ट सीकरस्ट पर आपको प्रेरित करने की
प्रमुख हैं तथा एक दूरे की विरोधी भी है। सकारात्मक भावनायें आगे बढ़ने तथा समस्या सुलझाने में सहायता करती है। इसके विपरीत नकारात्मक भावनायें समायोजन को कठिन बनाती है। व्यक्तिव्यक्त का विपदन करती है तथा पण गया बाधा खड़ी करती है। परामर्शदाता सेवायें की भावनाओं से परिचित होता है और यदि नकारात्मक भावनायें हैं तो उनको सकारात्मक रूप में बदलने का पूरा पर्याय प्रयास करता है। ऐसा करके ही वह सेवायें की सहायता कर सकता है।

4. सेवायें को तत्कालिन सहायता पहुँचाना: सेवायें जब परामर्शदाता के पास आता है तो उसकी दो प्रकार की समस्याओं होती है। एक तो तत्कालिन तथा दूसरी दौरी की। तत्कालिन समस्याओं का समाधान होने पर ही सेवायें अपना सही पदार्पण करता है। इसके तत्कालिन समस्याओं का समाधान करना गरीब या उसकी समस्याओं का समाधान कर सकता है। अतः परामर्शदाता सर्वप्रथम सेवायें की तुरंत सहायता पहुँचाता है जिससे उसके तनाव में कभी आती है तथा आराम अनुभव करता है।

5. आत्म विकास के अवसर प्रदान करना: व्यक्ति में विकास की अनेकों प्रक्रियाओं होती है। जिन प्रतिभाओं के अनुसार प्रेणा तथा अवसर पाए होते हैं वे प्रकृति हो जाते हैं। परामर्शदाता न केवल तत्कालिन समस्याओं का समाधान करता है बल्कि उसमें उन क्षमताओं के विकास की दिशाएं उत्पन्न करता है जिससे वह अपनी प्रतिभाओं को मुखरित करने में सफल होता है।

6. समयोग की समस्याओं का निराकरण: अनेक समस्याओं के कारण कुछ समयोग होता है। समयोग एक सार्वभौमिक तथा मिश्रण चलने वाली प्रक्रिया है। इसका भूमिका, तथा, नमों, व्यक्तित्व, समाज की संरचना, इत्यादि आदि से होता है। इसके साथ ही साथ प्रेम, वातावरण, स्वीकृति, आत्मप्रदर्शन आदि के अवसरों का सुनिश्चित होना समयोग की स्थिति के होते हैं। हमारी दिन प्रतिदिन की क्रियाओं का अधिकांश समय समयोग का अनुशीलन से होता है। समयोग प्रक्रिया की महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है। इसके द्वारा वह अपने को मलिक भावित समझता है, तथा इसके माध्यम से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समयोग के अवसर का होता है। (1) व्यक्तित्व समयोग (2) अनुभववृत्ति समय समयोग। व्यक्तित्व समयोग का तात्त्विक व्यक्ति के मूल्य एवं मनोवृत्तियों में एकीकरण एवं संतुलन बनाये रखता है। इसका समन्दर व्यक्ति की अंदर शक्ति से होता है। अनुभववृत्ति समय समयोग का तात्त्विक व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों के मध्य समन्दर से है। जब कभी इतनी दो क्षेत्रों में असर्वसंधि उत्पन्न हो जाता है अथवा समयोग की पूर्ति प्रक्रिया पूरी करते हुये उसे इस योग्यता बनाता है कि वह दोनों प्रकार के समयोग करने की शक्ति विकसित कर दे।

7. सेवायें की आत्म अनुभूति करना: परामर्शदाता सेवायें को इस प्रकार से सहायता करता है कि वह अपनी शक्तियों, अच्छे गुणों तथा क्षमताओं का ज्ञान प्राप्त करते हुए अपनी कमियों को भी ज्ञान प्राप्त करता है तथा उसे स्वीकार करके उसें दूःख करने का प्रयास करते लगता है। इससे विकास की प्रक्रिया स्वतंत्र: चतायमान में हो जाती है। जब तक सेवायें को सकारात्मक तथा नकारात्मक शक्तियों का ज्ञान नहीं होता है तथा ज्ञान होने पर स्वीकार नहीं करता है तब तक समस्या का समाधान नहीं हो सकता है।

8. पूर्ण कार्यान्वयन व्यक्ति बनाने में सहायता करना: परामर्शदाता सेवायें के केवल उसी समस्या का समाधान नहीं करता है जिसके लिए वह परामर्श केन्द्र पर आया है बल्कि उसे इस प्रकार से निरंतरित करता है कि वह अपनी पूर्ण प्रतिभा का विकास भी प्रदान किया जा सकता है।
9. वैयक्तिक कार्यालयका में संवर्धन करना: समस्या तभी उत्पन्न होती है जब व्यक्ति सही समय पर सही निर्णय नहीं लेता। उसके कई कारण हो सकते हैं। उसकी अपनी कमियं हो सकती है तथा सामाजिक कारक भी उतरदायी हो सकते हैं। परामर्शदाता इन दोनों प्रकार की शिक्षितों का आकलन करता है तथा वैयक्तिक कुट्टे को दूर करने सेवाओं का समय उत्तेजना निर्णय करने की शक्ति में वृद्धि करता है।

10. निर्णय की शक्ति बढ़ाने का कारण: समस्या तभी उत्पन्न होती है जब व्यक्ति सही समय पर सही निर्णय नहीं लेता। उसके कई कारण हो सकते हैं। उसकी अपनी कमियं हो सकती है तथा सामाजिक कारक भी उतरदायी हो सकते हैं। परामर्शदाता इन दोनों प्रकार की शिक्षितों का आकलन करता है तथा वैयक्तिक कुट्टे को दूर करने सेवाओं का समय उत्तेजना निर्णय करने की शक्ति में वृद्धि करता है।

11. मनोसामाजिक समस्याओं का समाधान: व्यक्ति मनोसामाजिक प्राणी है और इसे इन्हीं क्षेत्रों में समायोजन करना होता है तथा समस्याओं का समाधान करना होता है। उसकी समस्याओं के इन्हीं क्षेत्रों से सम्बन्धित होती है। कभी-कभी वह भाषण, खुट्टा, हीनभावना, तनाव आदि से प्रभावित होता है। तब वह सामाजिक स्थितियों से अनुपस्थि हो गया कर पाता है। यह दिशा उसके लिए कुछ तरीकों होती है। उसकी कार्य क्षमता, समायोजन समता तथा कार्यालयका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने से व्यक्ति की खोज रहने लगता है। सेवाओं का मार्ग केंद्र पर आता है तो परामर्शदाता उसका इस प्रकार की समस्या की रोज़ सेवाओं के निदान एवं उपचार के करीब बनाता है।

12. मानसिक स्वस्थ्य के संरचन करना: जब व्यक्ति मानसिक कुट्टे से स्वस्थ होता है तब वह अपना कार्य सही दृष्टि से कर सकता है लेकिन जब विपरीत परिस्थि में होती है उसका संतुलन विगड़ जाता है और समस्याग्रस्त हो जाता है। मंत्रालाय के अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करके उसके मानसिक स्वस्थ्य का संरचन करता है।

13. सेवाओं में आमूल चूल परिवर्तन लाना:- कभी-कभी ऐसी शिक्षितों उत्पन्न होती है जहाँ पर सेवाओं के विचारों ने व्यावहारिक मनोवृत्तियों, भवनाओं जैसे परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है। ऐसी दशा में मंत्रालाया का वर्तमान संरचना प्राप्तिकरण करता है।

14. सेवाओं में प्रजातन्त्रक मूल्य के संरचन करना: जब व्यक्ति की सोच अपने तक ही सीमित रह जाती है तो उसके संवर्धन कियाएँ लगती है। इस प्रकार की समस्याओं के लिए संवर्धन करने की आवश्यकता होती है जब अपने प्रजातन्त्र मूलकों वाले प्रजासत्तात्त्विक आवागम करता है। परामर्शदाता का वह कार्य महत्वपूर्ण होता है और वह सेवाओं की सोच की उपराश बनाने का उपाय करता है।

24.5 समाज कार्य में परामर्श का लक्ष्य

लक्ष्यों का स्पष्ट निर्णय न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि आवश्यक भी है क्योंकि इससे दिशा और उद्देश्य का ज्ञान होता है। इसके साथ कार्य के मूल्यांकन में भी सहायता मिलती है। परामर्श में दो प्रकार लक्ष्य होते हैं- (1) लक्ष्यकारीलाहरु (2) दीर्घकालीन लक्ष्य

परामर्श का लक्ष्यकारीलाहरु सेवाओं को तुलना आगाम या राहत लाना है तथा कार्यार्थी, शासिक एवं मानसिक प्राप्ति को बढ़ावा देना है। दीर्घकालीन लक्ष्य के अन्तर्गत सेवाओं को कार्यालयका व्यक्तित्व बनाना, आवश्यकताओं का जागृत करना एवं ऐसी उपाय लाना जिससे अपनी जीवन लक्ष्य का प्राप्त कर सकें।

परामर्शदाता का उद्देश्य सेवाओं की आवश्यक समस्याओं का समाधान जो अति आवश्यक है करना होता है तथा उसे अनिवार्य समस्याओं, गुणों तथा तकनीकियों से अवरोध करना होता है जिससे भविष्य में इस प्रकार की समस्याओं का समाधान बनते कर सकें। परामर्श सेवाओं की विवेचनाओं एवं गुणों पर निर्भर होती है क्योंकि
प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न होता है। अतः समस्या एक होने पर भी समाधान के उपाय भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

परामर्श का लयुक्तालीन लक्ष्य उसे संभांत करता है। इसके लिए सेवाधी आया है तथा तुर्न समाधान चाहता है। वह चूंकि अपनी क्षमताओं के बिषय में ज्ञान नहीं रखता है तथा उसका उपयोग करने में सक्षम है इसलिए वह प्रभावशून्य तैयार कर नहीं पा रहा है। परामर्शदाता परामर्श द्वारा सेवाधी में आत्म विश्वास जागृत करता है तथा ज्ञान प्रदान करता है कि वह किस प्रकार से चर्चामान समस्या का समाधान कर सकता है।

दीर्घकालीन लक्ष्य के अन्तर्गत परामर्शदाता सेवाधी की क्षमताओं का पूर्ण प्रकट में सहायक है, आत्म-अनुभव में वृद्धि करता है तथा पूर्ण कार्यान्वयन व्यक्ति बनाता है।

इसके अतिरिक्त परामर्श के निम्नलिखित लक्ष्य हैं:  
1. सेवाधी में सक्रातात्मक मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि करना।
2. सेवाधी की वैयक्तिक प्रभावशून्य से सुधार करना।
3. सेवाधी की समस्याओं का समाधान करना।
4. सेवाधी के अधिकार में परिवर्तन लाना।
5. निर्णय लेने में दक्षता बनाना।

### 24.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में सर्वप्रथम परामर्श की अवधारणा की समझा। परामर्श के उद्देश्य एवं दिशाओं के बिषय में जानकारी प्राप्त की। तत्पश्चात् परामर्श सेवा के लक्ष्यों के बारे में अध्ययन किया। परामर्श के अत्युक्तालीन तथा दीर्घकालीन लक्ष्यों को जाना तथा अंत में समाज कार्य में परामर्श के लक्ष्य का अध्ययन किया।

### 24.7 अध्ययनार्थ प्रश्न

1. परामर्श के लक्ष्यों को समझाइये।
2. परामर्श के उद्देश्यों को समझाइये इसकी दिशाओं का वर्णन कीजिए।
3. समाज कार्य में परामर्श के लक्ष्यों का वर्णन कीजिए।

### 24.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

आलम, डा. शहा एवं गुफान, डा. मोहम्मद, निर्देशन एवं परामर्श का मूलभूत आधार, ज्ञानदार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

जायसवाल, डा. सीताराम, विशेषता में निर्देशन एवं परामर्श, अभ्याजन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2011

सिंह, डी॰ के.०, भारती, पृ. के.०, सोयाल, बकर कॉन्सेप्ट एंड मेथड्स, न्यूरायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.

सिंह, डी॰ के.०, पालिवाल, सोय, मिश्रा, रोहित, मानव समाज, संगठन एवं विधिवत के मूल तत्त्व, न्यूरायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2010.

मिश्रा, पी. डी॰, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, वर्ष 1977.

सिंह, सुरेंद्र, मिश्रा, पी. डी॰, समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियाँ,
रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्रा, पी॰ डी॰, सामाजिक वैधानिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डी॰ एन॰, भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अवधारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुरेन्द्र, वर्मा, आर॰ बी॰ एस॰, भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्रा, पी॰ डी॰, मिश्रा, जीना, व्यक्ति और समाज, न्यूरायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.
इकाई-25

समूह समाज कार्य में परामर्श

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य
25.1 प्रस्तावना
25.2 समाज कार्य की दृष्टि से परामर्श
25.3 परामर्श की विशिष्ट प्रकृति
25.4 परामर्शदाता के लिए दक्षताओं का क्षेत्र
25.5 परामर्श के लिए ज्ञान का क्षेत्र
25.6 समूह के साथ परामर्श
25.7 समूह परामर्श का महत्व
25.8 समूह परामर्श में अवस्थाएँ
25.9 सारांश
25.10 अन्यासार्थ प्रश्न
25.11 सन्दर्भ प्रणय

25.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

1. समाज कार्य की दृष्टि से परामर्श को समझ सकेंगे।
2. परामर्श की विशिष्ट प्रकृति के बारे में वर्णन कर सकेंगे।
3. इसके पश्चात् परामर्शदाता की विशेष दक्षताओं के विषय में ज्ञान सकेंगे।
4. परामर्श के लिए प्रतिकृत ज्ञान के क्षेत्रों का उल्लेख कर सकेंगे।
5. तत्पश्चात् समूह के साथ परामर्श का वर्णन कर सकेंगे।
6. समूह परामर्श की विभिन्न स्तरों तथा अवस्थाओं का अध्ययन कर सकेंगे। अंत में समूह परामर्श के महत्व के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
25.1 प्रस्तावना
प्रस्तुत इकाई में समाज कार्य में परामर्श के विषय पर विचार किया गया है। समूह परिस्थितियों के अन्तर सामाजिक सुधारक, अनुरूपता तथा सुझाव जैसे सामाजिक प्रश्नों का उपयोग विभिन्न तकनीकों की प्रभावितता के लिए किया जा सकता है। समूह परिस्थितियों का एक अन्य महत्वपूर्ण कदम है कि व्यक्ति अपने वैयक्तिक को भूल जाता है तथा इसलिए कम आत्म-रोक्त होकर अधिक चर्चात्मक रूप से अनुक्रिया करता है। यह मिलते-मिलते भी होता है। इसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक व्यक्ति जो अपने परामर्शक हित के लिए जिसी तत्त्व को प्राप्त करने हेतु एवं साथ मिलकर अंतःक्रिया करते हैं, के रूप में परीक्षण दिया गया है। समूह में अनुभव, उद्योग तथा आकार में भिन्न होते हैं। समस्त समूहों में कठिनाइयों का निवारण तथा उपचार अथवा वैचारिक वृद्धि, समूह की गतिविधि के लिए गत्यात्मक अंतःक्रिया अंतिमित्त होती है। समूहों में सदस्यों को यह अनुभव हो सकता है कि वे अकेले, अथवा अपूर्ण पूर्वत हैं। किसी सामाजिक परिस्थिति के अन्तर अन्य व्यक्तियों के साथ अंतःक्रिया करते समय वह स्वयं के बारे में भी अधिगम करते हैं।

25.2 समाज कार्य की वृद्धि से परामर्श
सन् 1930 से पूर्व वैचारिक कार्यक्षमता द्वारा दी जाने वाली सहायता प्रायः परामर्श कहकर संरचनित की जाती है तथा व्यक्तिमत समाजों में सम्मिलित सेवा कार्य की चिकित्सा कहा जाता था। जब कार्यान्वयन सम्बन्धी का विकास हुआ तो वैचारिक सेवा कार्य की चिकित्सा को पुर्वत करने का प्रयास किया गया। तब कार्यक्षमता के व्यक्तिमत समस्याओं से सम्बन्धित कार्य को ‘परामर्श’ शब्द से अर्थात् चिकित्सा किया जाने लगा और यह वैचारिक सेवा कार्य तथा चिकित्सा कंपनी का प्रतिनिधि हो गया।

गत अंतर्गत वैचारिक सेवा कार्य के स्वरूप को बदलने में सहयोग दिया। यूड के समय सामाजिक संस्थाओं ने यह अनुभव किया कि व्यक्तिमत समस्याओं से सम्बन्धित व्यक्तियों की संस्था में निरंतर बढ़ता हो रही है। अतः, अनेक कार्यों में परामर्श का कार्य भी वैचारिक कार्यक्षमता माना जाने लगा। समाज कार्य के अंतर्गत परामर्श कार्य का विकास सार्वजनिक वैचारिक जरूरतों सन् 1932 में हुआ। समाजसेवा अंतर्गत कार्य के साधन-साथ कार्य करने का अनुभव जैसे-जैसे होता गया। वैचारिक कार्यक्षमता में नये-नये विचार उद्योग होते गये। परामर्श की एक वैचारिक प्रक्रिया माना गया। इसके अंतर्गत कार्यक्षमता सेवाओं को उसकी समस्या के विषय में शिक्षा देने के लिए प्रारंभ होता है।

25.3 परामर्श की विशिष्ट प्रकृति
1. परामर्श विशिष्ट होता है। जिस स्थिति को जिस प्रकार की सहायता की अवशर्तता होती है, वह उसी के विश्वास के पास जाता है। इस विश्वास के कारण ही निपुणताओं, अभिव्यक्ति तथा उद्यभर में अन्तर होता है।

2. विशेषकरण होने पर भी इन विशिष्ट शाखाओं को पूर्ण से एक-दूसरे से प्रभाव नहीं किया जा सकता। 

उदाहरण के लिए वैचारिक प्रारंभिक कार्य का लाभ निर्देशन की भी अवशर्तता होती है क्योंकि यह सम्भव है कि सेवायों वैचारिक समस्याओं के साथ-साथ बच्चों की समस्या का भी उल्लेख किया।

3. सेवायों की समस्या का केंद्र बिना एक ही होता है तथा एक क्षेत्र में ती गयी सहायता का महत्व दूसरे से भिन्न होता है।
4. समस्या का केन्द्र चाहें वैचारिक या बाल सम्बन्धी क्यों न हो, यदि वह इस दिशा में कोई प्रयास करना चाहता है तो उसे रथ्य के विषय में समझ प्राप्त करनी चाहिए। यह प्रयास सेवाधिकारी की मनोविकल्तता की ओर अग्रसर करता है।

5. कार्य की परिभाषा आवश्यक है। परामर्शदाता सेवाधिकारी की समस्या को समझने का तथा सेवाधिकारी को स्वयं अपनी तरीक़े से समझने का अवसर देता है। वह सेवाधिकारी को स्वयं निश्चित करने का अवसर देता है कि किस प्रकार की परामर्शदाता की स्वयं आवश्यकता है। इस प्रकार का निर्णय कभी-कभी चिकित्सकीय पद्धति का आर्थिक बिनु होता है।

6. परामर्श में प्रतिभागियों का विकास वैचारिक सेवा कार्य तथा चिकित्सा से हुआ है। यह सहायता का एक ऐसा रूप है जिसको न तो निदानात्मक और न ही कार्यात्मक रूप निरूपित अपना कहते हैं। दोनों सम्प्रदाय परामर्श के लिए मनोविकल्तता के प्रति आभार निरूपित करते हैं।

7. परामर्श के अन्तर्गत सेवाधिकारी की सहायता का उद्देश्य सामाजिक सेवा होता है। बल्कि मुख्य बिन्दु समस्या होती है और वैचारिक पुर्त उसमें अधिक होता है।

8. पहले परामर्श के लिए किसी संस्था की आवश्यकता नहीं होती थी लेकिन अब इसके लायक संस्था विषय का होना आवश्यक हो गया है।

9. परामर्श में सामाजिक, कोई भी सेवा नहीं प्रदान की जाती है। सेवाधिकारी तथा परामर्शदाता मिलकर समस्या से सम्बन्धित बातों करते हैं तथा समाधान का मार्ग पूर्व दृष्टि है।

10. सामाजिक, परामर्शदाता आत्मनिर्भरता होता है, लेकिन आवश्यकतानुसार सेवाधिकारी को वह सन्दर्भित करता है।

25.4 परामर्शदाता के लिए दक्षताओं का क्षेत्र

1. मनोवैज्ञानिक परीक्षण तथा अन्य मनोवैज्ञानिक अभिक्रियाओं की व्याख्या तथा उपयोग करने की क्षमता।

2. संदर्भित करने का ज्ञान।

3. वैचारिक इतिहास तैयार करने की योग्यता।

4. योजना बनाने तथा कार्यक्रम लागू करने की योग्यता।

5. केस कार्यान्वयन करने की योग्यता।

6. व्याख्यातारी समस्याओं के समाधान की निपुणता।

7. समुदाय की संस्थाओं के सहायता प्राप्त करने की क्षमता।

8. माता-पिता से बालक के प्रश्नों एवं सही सम्बन्धों को बनाने की निपुणता।

9. होम बिजीत करने की योग्यता।

10. पारिवारिक परामर्श की निपुणता।

11. माता-पिता से बालक के विकास सम्बन्धी निपुणताओं के विकास का ज्ञान देने की क्षमता।

12. माता-पिता से उचित वार्तालाप करने की क्षमता।
13. माता-पिता को बालक को देखभाल करने तथा उस पर आवश्यकता निर्यात रखने की नियुक्ति बताने की क्षमता।
14. मनोवैज्ञानिक सेवाओं के उपयोग करने की क्षमता।
15. आमने-सामने के समस्याओं को अधिक प्रमाण बनाने की क्षमता।
16. सेवायें के मनोवृत्तियों को जानने की क्षमता।

25.5 परामर्श के लिए ज्ञान का क्षेत्र

परामर्श के लिए निम्न ज्ञान आवश्यक है:-

1. परामर्श का दर्शन तथा उद्देश्य का साही ज्ञान।
2. मानव व्यवहार का ज्ञान।
3. अपने विश्व में सही ज्ञान।
4. परामर्श की प्रतिक्रियाओं तथा निर्देशन कार्यक्रम।
5. अध्यापकों की परामर्श का ज्ञान।
6. माता-पिता की साक्षात्कार करने की सही विधि।
7. अध्यापकों की भूमिका का ज्ञान।
8. सामाजिक भूमिका निष्पादन का ज्ञान।
9. समूह निर्देशन का ज्ञान।
10. विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं की स्थितियों तथा कार्य सम्पादन का ज्ञान।

25.6 समूह के साथ परामर्श

भारत एक विकासशील देश है अतः यहाँ के लोग परामर्श के महत्व तथा उपयोग के बारे में अभी जागरूक हो रहे हैं। विभिन्न चिकित्सालय, गैर-सरकारी संगठन तथा पुरातन स्कूल परामर्शविदारों की सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं। जबकि दूसरी ओर व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षित परामर्शविदारों की संख्या भारतवर्ष की जनसंख्या की तुलना में अत्यंत ही कम है। इसलिये इसका एक विक袒य यह है कि समूह परामर्श को अपनाया जाए।

समूहों में कार्य करना सामाजिक रूप से परामर्श का एक नया प्रतीक है। यदापि मेंसरिय, एक विक袒य चिकित्सक ने समूहों में चिकित्सा प्रदान किया है। यह तर्क दिया जाता है कि एक समूह परिस्थिति के अन्दर सामाजिक सुधारकारण, अनुभवता तथा सुझाव जैसे सामाजिक प्रक्रियाओं का उपयोग चिकित्सकीय प्रक्रिया की प्रभावित बिल्कुल ज्ञान बन जाता है। समूह परिस्थिति का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि व्यक्ति अपने वैकल्पिक को भूत जाता है तथा इसलिये कम आराम-चेतन होकर अधिक स्वभाविक रूप से अनुक्रियात करता है।

यह मित्तव्यी भी होता है। एक समूह को, जो या जो से अधिक व्यक्ति जो अपने वास्तविक हित के लिये तथा किसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु आपस में अन्तर:क्रिया करते हैं, के रूप में परिभाषित किया गया है। परामर्श में समूह का एक अनुमान स्थान है। समूह अन्तर:क्रियाओं के माध्यम से अनेक प्रकार के कौशलों का अधिग्रहण होता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक दिन अपना कुछ समय समूह क्रियाओं में व्यतीत करता है। एक समान समस्याओं का
अनुभव कर रहे व्यक्तियों को सहायता प्रदान करने का समूह एक प्रभावी माध्यम है। समूह अनु-क्रिया से मनोवृत्ति, विचारों तथा अनुभवों को परिवर्तित करने तथा किसी सामाजिक परिस्थिति के अंदर व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता मिलती है। परंतु कुछ परिस्थितियां ऐसी भी हो सकती हैं जिसमें समूह सहायता प्रदान करने का उल्लंघन अध्ययन करता है। उदाहरणार्थ, किसी समूह परिस्थिति के अंदर एक विभाजन पर्याप्तता उस समय असाधारण हो सकता है जब बच्चों का व्यवहार विख्यात सामाजिक होने के कारण। बच्चों के लिए इच्छुक ओर परिवार जो अमेरिका के मानव जीवन की दृष्टि से समस्याओं के प्रकार और स्तरों पर व्यावहारिक समस्याओं की स्थिति का अनुभव करने अथवा बीमार व्यक्ति का लाभ हो सकता है। ऐसी दशाओं में प्रमाणितता एक शांतिपूर्ण व्यवहार, जिस किसी रूपकांवर जीवन से मिलने तथा उनके साथ अनुक्रिया करने हेतु सामान्यतः एक नियमित समय अनुसूची तैयार कर लेता है।

समूह अपनी संचार, उद्देश्य तथा आकार में भिन्न-भिन्न होते हैं| समाज समूहों में कठोरित किया गया नियामक नियामक तथा उपचार अथवा मानव के नियामक अनतिक्रिया संबंध होती है। समूहों में दर्शनीय को यह अनुभव हो सकता है कि वे अन्यतः, अथवा अपील करते हैं। किसी सामाजिक परिस्थिति के अंदर अंतः व्यक्तियों के साथ, अनुक्रिया करने समय वे स्थल में भी बहुत कुछ अपेक्षा कर लेते हैं। समूहों में पर्याप्त प्रांत न्यूयॉर्क के नए स्थल प्रस्तुति तथा अनुक्रिया करने के नए स्थलों को आमतौर पर संकेत करते हैं क्योंकि समूह परिवेश परिवर्तन के साथ प्रभावित तथा प्रतिरोध प्राप्त करने के लिए एक सुरक्षित व्यवहार प्रदान करता है। समूह व्यक्तियों को सहायता देने, व्यक्तिगत पर्याप्त किसी इच्छा अथवा किसी आवश्यकता का अनुभव करने अथवा किसी व्यक्तिगत लघु नियामक में एक प्रेक्षक के रूप में कार्य कर सकता है।

समूह पर्याप्त के कुछ विशेष लघु हैं। यह विभिन्न प्रांत की समस्याओं एवं चिनाउओं से जुड़े रहे सेवार्थियों की सहायता करने में उपयोगी तथा लाभदाय हो सकता है। हिपोकेटिस, सुकार जैसे प्राचीन दर्शनिकों ने भी समूह के साथ ही कार्य किया।

समूह पर्याप्त का उपयोग निम्न-नियामक बाले विद्यार्थियों की अभिप्रेत ने प्रत्येक एवं संकेत में पढ़े विद्यार्थियों के आतंक प्रत्येक को सुधारने हेतु सहायता प्रदान करने हेतु किया जा सकता है (हैडबैक तथा माइरिक 1999). ।

समूह पर्याप्त तथा मनो-वैज्ञानिक कार्यक्रम ऐसे व्यक्ति जो हदय-आधार के प्रत्येक की सहायता करते हैं, की सहायता अपने जीवन में प्रतिबिंब पर्याप्त करने के लिए भाग लेते हैं (लिबनह तथा धारुल-हवस 1993).

समूह पर्याप्त की इन उपयोगिताओं के बावजूद इसके कुछ दोष तथा सीमाएं भी हैं, बहुत से सेवार्थियों की समस्याएं तथा व्यक्तिव ऐसा होता है कि समूहों में कार्य नहीं कर सकते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनकी देखभाल समूहों में नहीं की जा सकती है। समूह रचाव किसी सेवार्थि को ऐसी क्रिया करने के लिए बाध्य कर सकता है, जिसे कुछ सेवार्थियों को पसंद नहीं हो सकता है। समूह एक समूह-चिनान्त मानविकी में व्याप्त हो सकता है, जिसमें रूढ़िवृद्धि, सुरक्षा तथा स्थिर चिनान्त प्रक्रिया मानक बन जाते हैं तथा सुनिक्षिप्तता एवं समान्त-समाधान की योजना न हो जाती है। कभी-कभी समूह इसका प्रयास प्रयास करना हेतु कार्य कर सकते हैं। मैकलेन (1993) के अनुसार यदि समूह अपने विकास्तत्व अवस्थाओं के माध्यम से सफलतापूर्वक कार्यन कर सकता है, तो हमें दिलचस्प के लघु हो सकता है तथा शह ऐसा व्यवहार कर सकता है जो निष्पक्ष, अनुयायक तथा विनाशकारी भी हो सकते हैं, जैसे दूसरों पर दोष रखकर पता लगाने की प्रकृति, समूह-निष्पक्षीयता तथा प्रेक्षक की
प्रवृत्तियों में वृद्धि हो सकती है। समूह में व्यक्ति की एकान्तता बाधित होती है तथा उसका हुष्ययोग भी हो सकता है जो परामर्श की नीतियों के विरुध्द है।

25.7 समूह परामर्श का महत्व

1. एक व्यक्ति के एक पूर्ण सामाजिक प्राणी होने का क्या अर्थ है, इसे जानने तथा खोजने में यह सहायक होता है।
2. यह किसी व्यक्ति के स्वयं के प्रत्यक्ष अभाव में अधिक विचार विकसित करने में सहायक होता है।
3. यह अन्य लोगों को अच्छी तरह समझने तथा अन्य व्यक्तियों को यथार्थ रूप से सुनने को, सिखाने में सहायता करता है।
4. यह अपनी भावनाओं तथा विचारों को एकीकृत करने में सहायता देता है।
5. यह समाज में अधिक प्रभावी बनने में सहायता देता है।

अतः समूह परामर्श किसी व्यक्ति के वर्तमान मूल्यों को पुनःनिरीक्षित करने तथा नवीन मूल्यों के लिये प्रयत्न करने में महत्वपूर्ण दायित्व है। प्राथमिक रूप परामर्शदाता का सरोकार विकासात्मक समस्याओं तथा व्यक्तिगत सदस्यों के सामाजिक परिस्थितिक सरोकारों से होता है। समूह परामर्श का मूल सरोकार एक ऐसे अन्तर्विष्टिक वातावरण के सूत्र द्वारा होता है, जो प्रत्येक सदस्य को एक स्वस्थ वैयक्तिक समर्थन को प्राप्त करने हेतु अपने अन्दर एक अंतर्दृष्टि को विकसित करने में सहायक हो। एक प्रभावी स्तर पर व्यक्तिगत समस्याओं पर विचार-विचार करना इस तरह की प्राप्ति का सबसे उपयुक्त माध्यम है। बोऩी (1965) बोऩीं एवं अन्य (1963) ने समूह परामर्श को एक गत्यात्मक अन्तर्विष्टिक प्रक्रम के रूप में परिभाषित किया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति समायोजन के अपने सामाजिक विस्तार के अन्तर्गत अपने साथी समूह तथा व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित परामर्शदाता के साथ कार्य करते हुए अपनी भावनाओं तथा समस्याओं का पता लगाने, अपनी मनोवृत्तियों को संशोधित करने का प्रयत्न करते हैं, जिससे कि वे विकासात्मक समस्याओं के साथ अच्छी तरह निपटने के योग्य हो जाएं।

समूह परामर्श की उपरोक्त विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह समस्या-केंद्रित तथा भावना-अभिव्यक्तिवादित है। भावनाओं का स्पष्टकरण एवं प्रतिविश्वासकरण तथा मनोवृत्तियों का संयोजन उसके मुख्य उद्देश्य है। व्यक्ति की समस्याओं तथा अनुभवों में सहायता प्रदान करना उसका प्राथमिक उद्देश्य है तथा उसके अन्तर्गत वृद्धि एवं समायोजन पर जोर दिया जाता है।

25.8 समूह परामर्श में अवस्थाएँ

सामान्यतः: समूह-परामर्श को चार अध्वार पौंच अवस्थाओं में विभाजित किया गया है। टचमैन (1965) समूह-परामर्श हेतु अवस्था प्रक्रम को बनाने वाले प्रथम सिद्धांतकारों में एक था। उन्होंने प्रस्तावित किया कि समूह-परामर्श की चार अवस्थाएँ होती हैं। इसे अवस्थाए का आकार देना, हल्ला बोलना, रूप प्रदान करने तथा निर्देशित करने की है। परंतु टचमैन तथा जेनसेन ने 1977 में एक और अवस्था को इसमें सममित किया जो स्थान की है। प्रत्येक अवस्था के अन्तर्गत विशेष अवस्था भी सममित होते हैं। प्रत्येक अवस्था का संक्षिप्त वर्णन निम्न है:-

आकार देने की अवस्था

आकार प्रदान करने की अवस्था में जिसको भी समूह के अन्तर्गत विचार-विचार में सममित करना होता है या समूह से बाहर करना होता है, के लिये सामान्यतः आधार बनाया जाता है। इस अवस्था को सामान्यतः
रैशाकर्ष्य के रूप में माना जाता है जिसमें सदस्य चिंताओं तथा निर्भरता को व्यक्त करते हैं तथा असमस्यात्मक विषयों के बारे में चारात्मक रूप से बात करते हैं। इस अवस्था में व्यक्तिगत प्रकरणों को समूह के रूप में परिवर्तित करने का एक तयारका यह है कि इसकी संचाना इस प्रकार की जाए जिसमें सदस्य तनाव रोहित होने का अनुभव करते हुए अपने उद्देश्यों के बारे में विश्वास हो जाए। इसलिये प्रत्येक सदस्य को स्व-परिचय हेतु कुछ समय देना बहुत महत्वपूर्ण है।

हल्ला बोलना

द्वितीय अवस्था, हल्ला बोलना को सामान्यतः एक खलबली तथा संघर्ष के रूप में लिया जाता है तथा यही कारण है कि इसे किसी रूप में लिया जाता है। समूह के सदस्य समूह के पदानुक्रम में स्वयं स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं तथा चिनता तथा भावी प्रत्यावर्तीयों से समन्वित प्रकरणों को एकता से सफलतापूर्वक परिपक्व निपटाते हैं।

रूप प्रदान करना

तृतीय अवस्था रूप प्रदान करने की अवस्था है | इसमें लक्ष्यों तथा एक साथ मिलकर कार्य करने के तरीकों के बारे में निर्णय लिया जाता है (सिमिलिंग 1990)। प्रभाव-क्रम ही इस अवस्था को हल्ला बोल साहित्यिक अवस्था के साथ समर्पित कर दिया जाता है तथा यह निष्ठादंडन करने की ओर ले जाती है। उस अवस्था में, समूह के सदस्य एक दूसरे के साथ समन्वित हो जाते हैं तथा अपने व्यक्तिगत एवं सामूहिक लक्ष्यों से साथ-साथ लेते हैं। यह समूह के सृजनात्मक होने का समय होता है।

निष्ठादंडन करना

अन्तिम अवस्था जो कि स्थिति की अवस्था है, जिसमें समूह समापन पर आ जाता है। इस अवस्था में समूह के सदस्य या तो संतुष्ट होने का अनुभव करते हैं या फिर तत्क अनुभवों के साथ वापस हो सकते हैं।

समूह की संचाना करना

समूह को संचालित करने हेतु अत्यधिक तैयारी की आवश्यकता होती है। यह कार्य पूर्व-समूह साक्षात्कारों, छानबीन तथा प्रशिक्षण के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इस दृष्टि के लिए समूह के प्रमुख राष्ट्रिय नेताओं ने नैतिक दिशा पाठ्यक्रमों। (1989) जिसी पूर्व-साक्षात्कार के साथ समझौता है। ए एस जी डब्ल्यू के समूह प्रामाण्यवालों हेतु नैतिक दिशा पाठ्यक्रमों। अनुपालन (1989) यह मुफ्त एवं साक्षात्कार के साथ समझौता है। जो समूह प्रामाण्यवाला है जो समूह अनुपालन द्वारा सिख अवश्यकता के बिना है। इसलिये समूह सदस्य के समूह साक्षात्कारों में समूह नेताओं के लिए यह आवश्यक है कि समूह प्रामाण्यको वास्तविक रूप आरम्भ करने से पूर्व समूह प्रक्रम की उन्हें पूर्व से जानकारी हो। यह समूह प्रक्रम को संतुलित करने में सहायक होता है कोरी (1995) के अनुसार पश्चिम को ध्यान में रखना आवश्यक है।

1. समूह के उद्देश्य का एक स्पष्ट कदन।
2. समूह फामेट, आधारभूत नियम तथा मूल प्रक्रियाओं का एक विवरण
3. समूह नेताओं के शीर्षक एवं प्रशिक्षण अहंकारों के बारे में एक कदन।
4. यह सुनिश्चित करने हेतु कि समूह नेता तथा सदस्यों की क्षमता (विभव) किसी व्यक्ति की उस समय की आवश्यकताओं के लिये उपयुक्त है, एक पूर्व समूह साक्षात्कार।
5. किसी समूह में समन्वित होने पर पेश आने वाले खतरों का तथा समूह के सदस्य के अधिकार एवं कर्त्त्वों का एक प्रकटन।
6. गोपनीयता की सीमाओं तथा समूह-नेता एवं सहभागिता की भूमिकाओं के बारे में एक चर्चा भी आवश्यक है।

समूह का आकार तथा अवधि

समूह परामर्श में समूहों का आकार प्रायः छोटा ही होता है। वह सामान्यतः लघु संख्या तक होता है। समूह के सामान्यतः लघु आकार का निर्धारण किसी उद्देश्य के द्वारा होता है। इस आकार की समस्याएँ, युद्ध तथा कठिनाईएँ एक समान होने चाहिए। समूह अपने स्वभाव में समानतात्मक होना चाहिए। गज़ा (1989) का कहना है कि यदि समूह की अवधि अधिकतम जैसे 6 महीने तक की हो तो इसमें 10 सदस्य तक को सम्मिलित किया जा सकता है परंतु बच्चों का समूह छोटा होना चाहिए। इसमें तीन या चार सदस्य होना चाहिए।

मुक्त बनाम प्रतिबिंधित समूह

प्रतिबिंधित या संकृत समूहों में समूह परामर्श को आर्थिक कर देने के पक्षात्मक किसी नए सदस्य को सम्मिलित नहीं किया जाता है, जबकि मुक्त संगठनों में समूह परामर्श आर्थिक हो जाने के बाद भी नये सदस्यों को प्रवेश मिल सकता है। प्रतिबिंधित समूह बड़ा है तालाबादर होते हैं। परंतु मुक्त समूह में अनुमति सदस्यों को हटा देने की सुविधा रहती है। प्रतिबिंधित समूह में नए सदस्य को प्रवेश इसलिए नहीं दिया जाता है क्योंकि नये सदस्य को समूह के साथ समायोजित होने में समय लेते हैं।

गोपनीयता

किसी भी परामर्श कार्यक्रम की सफलता के लिये गोपनीयता एक महत्वपूर्ण कारक है। इससे यह तात्पर्य है कि समूह-स्थिति के अन्दर जो भी चर्चा हो उसे बाहर न जाने दिया जाए। गोपनीयता की बनाये रखने में समूह नेता एक संक्रिय भूमिका का निभाया करता है। समूह परामर्श का व्यावसायिक आर्थिक से पूर्व तथा इसकी पहली मोटिवेशन में ही गोपनीयता के महत्व को बता दिया जाना चाहिए। गोपनीयता के विषय में के बारे में जब भी कोई प्रश्न उठता है तो उस पर तुरंत ध्यान दिया जाना चाहिए। गोपनीयता पर बार-बार बतल दिया जाना चाहिए।

भौतिक संरचना

इसका तात्पर्य उस स्थान से है जहाँ पर एक समूह किया जाता है। जैसे तथा लार्ज़ी (1985) ने एक ऐसी भौतिक संरचना जो समूह सदस्यों की सुरक्षा तथा व्यवस्था को सुनिश्चित करने वाली हो, की आवश्यकता पर बल दिया। क्षेत्र के अंतर्गत प्रकाश के सुसंगतता तथा आर्थिक होना चाहिए। व्यावसायिक शांति होना चाहिए जिससे समूह का कार्य निरंतर रूप से चलता रहे।

सह-नेतृत्व

यदि समूह का आकार बड़ा है तो दो नेताओं की आवश्यकता होती है। एक नेता को समूह के साथ कार्य करता है जबकि दूसरा समूह की प्रतिक्रिया की प्रगति का अवलोकन करता है। सह नेता की व्यवस्था उस दर्शा में भी लाभदायक होती है जब एक नेता अनुभवी हो तथा नेता मिल जुल कर कार्य कर रहे हों। ऐसी पर्याप्तता में अनुभवी नेता अनुभव बाले नेता से सीख सकता है। डिकमेन तथा मूरों (1979) ने सुझाव दिया कि सफल, अनुभव बाले सह-नेताओं के अन्दर (1) समान दार्शनिक तथा संक्रियात्मक रूप से शैली होती है, (2) समान अनुभव तथा समानता रखते हैं, (3) प्राथमिक मानव अनुभव हेतु एक माध्यम संबंध निर्माण करते हैं (4) एक दूसरे के साथ सदस्यों के नियामक बनने तथा विनिमय के बारे में सचेत होते हैं (5) परामर्श लाभों के तथा उनकी प्राप्ति की
प्रक्रियाओं पर सहमत होते हैं, जिससे कि शक्ति संघर्ष से बचा जा सके। एक अन्य महत्वपूर्ण बिनूँ यह है कि समूह
सह-नेता के लिये आवश्यक नहीं है कि वे विचारों लिंग एवं कीशोरों के हो।

आत्म-प्रकाशन

शर्ट्जर तथा सोन (1981) ने आत्म-प्रकाशन को वर्तमान एवं तत्कालीन अनुभवों, मनोवृत्तियों एवं
विश्वासों के रूप में परिभाषित किया है। आत्म प्रकाशन की प्रक्रिया उस विश्वास पर निर्भर करती है जो समूह के
सदस्य एक कूर्तेर पर रखते हैं। (शंकु तुंडा तथा विर्जिनसा, 1983))। इसे विश्वास अधिक हो तो आत्म-प्रकाशन भी
अधिक होगा, जबकि दूसरे ओर सदस्यों के मध्य अविश्वास कम होने पर आत्म-प्रकाशन नकारात्मक रूप से
प्रभावित होगा। इसे विकसित करने हेतु सदस्यों का यथामय भागीदारी से हो प्रतिस्पर्धित किया जाना आवश्यक है।

प्रति पुष्टि

यह एक बहुयान्त्रिकी प्रक्रिया है जिसमें समूह के सदस्यों का एक कूर्तेर के प्रति आकर्षण सदस्यों तथा
अभीचारित व्यवहार के लिये अनुकूलन करना सम्मिलित होता है। यह जिसी भी समूह अनुसूची का एक महत्वपूर्ण
भाग होता है। जब प्रतिपुष्टि ईमानदारी तथा साहाबतानी के साथ दी जाए तो समूह के सदस्य अन्य व्यक्तियों
पर अपनी रॉयलिया के प्रभाव को देख सकते हैं तथा नवीन व्यवहार के लिये प्रयत्न कर सकते हैं। इसलिये, प्रत्येक सत्र
के बाद सदस्यों से प्रतिपुष्टि प्राप्त करना आवश्यक होता है। एक बड़ी रूप से तथा उनके सहयोगियों ने एक सहायक
प्रतिपुष्टि को प्राप्त न के लिये पाँच संस्थाएं दी हैं:

1. प्रतिपुष्टि को प्राप्त करने के लिये लाभदायक होना चाहिए न कि यह प्रदानकारी की आवश्यकताओं की
   पूर्ति करे।
2. प्रतिपुष्टि उस समय अधिक प्रभावी होती है जब यह इच्छित व्यवहार पर आधारित हो।
3. समूह विकास की आमिक्षिक अवस्था में नकारात्मक प्रतिपुष्टि की तुलना में सकारात्मक प्रतिपुष्टि अधिक
   लाभदायक तथा अधिक तपतता के साथ स्वीकार कर ली जाती है।
4. प्रतिपुष्टि उस समय और अधिक प्रभावी होती है जब इसके तुल्य (तत्काल) बाद उद्दीक्षण व्यवहार आए
   तथा अन्य द्वारा प्रमाणीकृत हो जाए।
5. प्रतिपुष्टि उस समय और अधिक लाभकारी होती है जब प्राप्त करने वाले तर्क एवं भाषा हो तथा प्रदानकारी
   पर विश्वास करे।

अनुवर्तन

(फालोँ-अप)

यह ज्ञात करना महत्वपूर्ण है कि समूह क्रियाकलाप कितना सफल है। समूह परिवार में अनुवर्तन का
उपयोग समूह के साधन हो जाने के बाद भी सदस्यों के साथ सम्पर्क बनाये रखने में किया जाता है। अनुवर्तन से यह
ज्ञात करने में सहायता मिलती है कि समूह के लड़कों को यह मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है कि समूह अनुभव से उन्हें का प्राप्त हुआ है
तथा यदि आवश्यक हुआ तो समूह के किसी सदस्य सहायता हेतु संस्थापित करने में नेता को अनुमति मिल जाती है।
(स्लेडंग, 1995) कोरो (1995) ने उद्धृत हो कहा है कि किसी तरु-कालिक समूह हेतु अनुवर्तन तथा समूह के
समाजा हो जाने के लाभ तीन माह बाद सम्पन्न किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत सदस्य को यह ज्ञात करने के योग्य
भी बनाना आवश्यक है कि समूह परिवार सत्र के लिये कितना लाभदायक था।
समूह परामर्श लोगों को सहयोग प्रदान करने का सापेक्षात्मक एक नया कार्य का तरीका है। वह विशेष रूप से उन लोगों को सहयोग देने का लाभदायक उपाय है, जिनके लिये हमजोड़ी-समूह अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। शिक्षार्थी समूह-परामर्श में अंतःस्रोत के समय अन्य विधायिक व्यक्तियों को अपनी कठिनाइयों की चर्चा करते हुये सुनकर अपनी स्वयं की समस्याओं में अनुभूति तथा बोध प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार से विद्यार्थी अन्य व्यक्तियों को स्वीकार करना तथा समावेश देना सीखते हैं तथा अंत में वे समाज के उत्पादक सदस्य बन जाते हैं।

25.9 सारांश

प्रस्तुत इकाई में सवाग्रहण समाज कार्य की दृष्टि से परामर्श का अध्ययन किया। परामर्श की विशिष्ट प्रकृति के विषय में जाना। परामर्श के ज्ञान क्षेत्र का अध्ययन किया। परामर्शवाद में योग्यता तथा दक्षता का अध्ययन किया। तत्परतात्त्वक समूह के साथ परामर्श करने समूह परामर्श के महत्व को समझ तथा अंत में समूह परामर्श की अवधारणाओं का अध्ययन किया।

25.10 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. समूह समाज कार्य में परामर्श को समझाइये।
2. समूह समाज कार्य में परामर्शप्रदाता के लिए दक्षताओं के क्षेत्र का वर्णन कीजिए।
3. समूह के साथ परामर्श को समझाते हुए परामर्श के लिए ज्ञान का क्षेत्र का वर्णन कीजिए।
4. समूह परामर्श के महत्व के को समझाते हुए इसकी अवधारणाओं को समझाइये।

25.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

अलम, डॉ. शाह एवं गुफरान, डॉ. मोहम्मद, निर्देशन एवं परामर्श का मूलभूत अध्घार, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
जायसवाल, डॉ. सीताराम, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, अध्यावल विक्रेता, आगरा, 2011
सिंह, डॉ. के.जी. भारती, पृ. 20, सीलोल वर्क काटेड्रा एंड मैथिस, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
सिंह, डॉ. के.जी. पार्लियाल, सीलोल, मिथ्र, रोहत, मानव समाज, संगठन एवं विपणन के मूल तत्त्व, न्यू रायल बुक कम्पनी, लखनऊ, वर्ष 2010.
मिश्र, पी.डी. दूर, सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1977.
सिंह, सुरेन्द्र, मिश्र, पी.डी. समाज कार्य- इतिहास, दर्शन एवं प्राणादि, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2006.
मिश्र, पी.डी. दूर, सामाजिक वैज्ञानिक सेवा कार्य, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, वर्ष 1985.
सिंह, डॉ. के.जी. भारत में समाज कल्याण प्रशासन: अध्घारणा एवं विषय क्षेत्र, रायल बुक डिपो लखनऊ, वर्ष 2011.
सिंह, सुरेन्द्र, बर्मा, आर.डी. एस., भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2009.
मिश्र, पी.डी. दूर, मिश्रा, बीना, व्यक्ति और समाज, न्यू रायल बुक कम्पनी लखनऊ, वर्ष 2007.

207